ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला : अपभ्रंश ग्रन्थांक-18

महाकवि पुष्पदन्त विरचित

# महापुराण

[भाग-4]

(सन्धि 68 से 80 तक)

रामचरित
तथा
तीर्थंकर मुनिसुव्रत एवं नमि का जीवनचरित
हिन्दी अनुवाद, प्रस्तावना तथा टिप्पण सहित

मूल-सम्पादक

(स्व०) डॉ० पी० एल० वैद्य

हिन्दी अनुवाद

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन, एम० ए०, पी-एच० डी०
प्रोफ़ेसर हिन्दी एवं सेवा-निवृत्त प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, म० प्र०
इन्दौर

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

वीर नि० संवत् 2509 : वि संवत् 2040 : सन् 1983
प्रथम संस्करण : मूल्य पचास रुपये

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA
MŪRTIDEVĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

*FOUNDED BY*

**LATE SAHU SHANTI PRASAD JAIN**
**IN MEMORY OF HIS LATE MOTHER SHRIMATI MURTIDEVI**
AND
**PROMOTED BY HIS BENEVOLENT WIFE**
**LATE SHRIMATI RAMA JAIN**

IN THIS GRANTHAMALA CRITICALLY EDITED JAINA AGAMIC, PHILOSOPHICAL, PURANIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS AVAILABLE IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRMSHA, HINDI, KANNADA, TAMIL, ETC., ARE BEING PUBLISHED IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THEIR TRANSLATION IN MODERN LANGUAGES.

ALSO

BEING PUBLISHED ARE CATALOGUES OF JAINA BHANDARAS, INSCRIPTIONS, STUDIES ON ART AND ARCHITECTURE BY COMPETENT SCHOLARS

AND ALSO

POPULAR JAINA LITERATURE.

☐

General Editors

**Siddhantacharya Pt. Kailash Chandra Shastri**
**Dr. Jyoti Prasad Jain**

☐

Published by
**Bharatiya Jnanpith**
B/45-47, Connaught Place, New Delhi-110001

**Printed at Pooja Press, Q 52, Shahdara, Delhi-32**

**Founded on Phalguna Krishna9, Vir Sam. 2470, Vikrama Sam. 2000, 18th Feb., 1944.**

भारतीय ज्ञानपीठ    संस्थापना 1944



मूल प्रेरणा
दिवंगता श्रीमती मूर्तिदेवी जी
मातुश्री श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन



अधिष्ठात्री
दिवंगता श्रीमती रमा जैन
धर्मपत्नी श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन

# समर्पण

उस तपस्विनी पूज्या
स्व० माँ (रामप्यारी बाई) की
पुनीत स्मृति को

जिनकी ज़िन्दगी के आँगन मे
सुख-दुख की आँख-मिचौनी खेलते रहे,
जहाँ दुख ने सुख की आँख
कुछ ज्यादा ही मीची;
जिनका पल-क्षण जिजीविषा के
संघर्ष में बीता, पर जो अपने
जीवन मूल्यों पर दृढ़ रहीं;
जिन्हें दिवंगत हुए
(3 अप्रैल, रामनवमी 1970)
एक युग से भी अधिक हो गया।

—देवेन्द्र कुमार जैन

# अनुवादकीय

महाकवि पुष्पदन्त के 'महापुराण' का यह चौथा खण्ड, वस्तुतः मूल रचना के दूसरे खण्ड का एक अंश है। संधि 68 से 80 तक 13 संधियों के इस भाग को स्वतन्त्र चौथे खण्ड के रूप में प्रकाशित करने का कारण यह है, कि आम पाठकों को पुष्पदन्त द्वारा विरचित 'रामायण काव्य' स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हो जाए। 68वीं संधि में बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ का चरित्र है, क्योंकि इन्हीं के तीर्थंकाल में राम, लक्ष्मण और रावण जो क्रमशः आठवें नारायण, वासुदेव और प्रतिवासुदेव हैं, उत्पन्न हुए।

ग्रंथ का अगला खण्ड पांचवां होगा, जिसमें 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ और नौवें नारायण वासुदेव और प्रतिवासुदेव (बलराम, कृष्ण और कंस) का वर्णन है।

प्राचीन भारतीय साहित्य, विशेषतः प्राकृत और अपभ्रंश के क्षेत्र में भारतीय ज्ञानपीठ उपलब्ध साहित्य को व्यवस्थित करने और अनुपलब्ध साहित्य को प्रकाश में लाने की दिशा मे जो काम कर रहा है वह सचमुच सराहनीय है। इस काम के लिए वह, तब तक सम्मान के साथ जाना और माना जाएगा जबतक यह देश है और उसमें प्राचीन भाषाओं की साहित्य कृतियों को जानने की उत्सुकता रखने वाले लोग रहेंगे। जो रहेंगे ही।

इस अवसर का उपयोग करते हुए, मैं ज्ञानपीठ के न्यासधारियों और खासकर उसके अध्यक्ष समाजरत्न साहू श्रेयांस प्रसाद जी तथा प्रबंधक न्यासी श्री अशोक जैन से यह अपील करना चाहूँगा (हालांकि मैंने उन्हें देखा नही है, और न उनकी रुचियों की मुझे जानकारी है) कि वे इसके लिए कुछ अधिक धन की व्यवस्था कर सकें तो अच्छा है। क्योंकि, अभी अपभ्रंश के महाकवि स्वयंभू के 'रिट्ठणेमिचरिउ' का प्रकाशन नहीं हो सका है। मैं दो साल पहले उसके एक खण्ड (यादवकाण्ड) को सम्पादित करके दे चुका हूँ। परन्तु शायद प्रकाशन बजट की सीमाओं के कारण हर वर्ष उसका प्रकाशन रुक जाया करता है। 'रिट्ठणेमिचरिउ' 'पउमचरिउ' के बराबर महत्त्वपूर्ण, बल्कि कई बातों में उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। उसमें समग्र महाभारत की कथा है। 'पउमचरिउ' का मूल भाग 1960 के आस-पास संपादित होकर उपलब्ध था, जबकि 'रिट्ठणेमिचरिउ' अभी-अभी संपादन की प्रक्रिया में है। इसके दूसरे काण्ड भी संपादित होकर तैयार हैं, लेकिन जबतक पहला काण्ड नहीं छप जाता तबतक दूसरे काण्ड की 'प्रेस कापी' तैयार करने में कोई औचित्य नहीं है। अलावा इसके कुन्दकुन्दाचार्य के, जो जैनों की आध्यात्मिक विचारधारा के पुनः प्रवर्तक आचार्यों में महत्त्वपूर्ण हैं, ग्रन्थों का वैज्ञानिक संपादित संस्करण एक शृंखला में उपलब्ध नहीं है। भाषिक दृष्टि से उसका अध्ययन, आज तक नहीं हुआ, व्युत्पत्ति मूलक शब्द कोश आदि बातें तो बहुत दूर की हैं। कुन्दकुन्दाचार्य की भाषा अकेली नहीं है, वह उस भाषा से जुड़ी है जिसमें भूतबलि पुष्पदन्त और धरसेनाचार्य ने षट्खंडागम की रचना की है, अतः उसकी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन वस्तुतः पूरे युग की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसी प्रकार श्वेताम्बरों के आगमों की प्राकृत के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के निष्कर्षों का प्रकाशन एक ऐतिहासिक आवश्यकता है। उसके बाद आती है शौरसेनी और महाराष्ट्री प्राकृतों की प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता। इस देश में

सम्प्रदायों के मिलन और विश्व मानवतावाद की बातें बहुत होती है, परन्तु ऐसे महानुभाव कितने हैं जो इस दिशा में गहरी रुचि रखते हैं ? जो हैं उनमे से अधिकांश के पास साधनों का अभाव है। अतः उन साधन-सम्पन्न श्रीमानों, संस्थापकों से मेरा अनुरोध है कि भाषा के खाते में जो कुछ उनके पास है उसे यदि पूरी प्रामाणिक व्यवस्था के साथ वे उपलब्ध करा सकें, तो यह उनका अविस्मरणीय प्रदेय होगा। ऐसा किसी पर कोई दबाव नही है, सिर्फ़ अनुरोध ही कर सकता हूँ।

प्रस्तुत कृति के प्रकाशन के लिए मैं सदा की तरह ज्ञानपीठ के निदेशक भाई लक्ष्मी चन्द्र जी, ग्रन्थमाला संपादक श्रद्धेय पं० कैलाशचन्द्र जी और डा० ज्योतिप्रसाद जी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। ज्ञानपीठ के प्रकाशन अधिकारी डा० गुलाब चन्द्र जैन ने शीघ्र प्रकाशन के लिए जो अथक प्रयास किया है उसके लिए वे साधुवाद के सच्चे पात्र है।

15 अगस्त, 1983 — देवेन्द्र कुमार जैन

114 उषा नगर,
इंदौर, 425 `09

# INTRODUCTION

**[A Part of Dr. P. L. Vaidya's 'Critical Apparatus' in the Second Volume of Mahapurana Published in the Manikacandra Granthamala]**

The 68th saṁdhi narrates the life of the twentieth Tīthaṅkara Munisuvrata.

Saṁdhis 69 to 79, these eleven saṁdhis narrate the story of the eighth set Baladavas etc., and are popularly known as the Rāmāyaṇa, Paumacariya, or Padmapurāṇa. The story of the Rāmāyaṇa is so well-known that it need not be reproduced here fully, but there are some factors in the Jain version which have to be brought to the notice of the general reader. Rāma and Lakṣmaṇa in their previous births were sons respectively of king Prajāpati and his minister, and were named Candracūla and Vijaya. In youth they were intimate friends and carried off Kuberadattā, the wife of a merchant named Śrīdatta. The king got a report about this affair, got angry with them, and ordered his minister to take them to the forest and kill them. The minister took them to the forest, but instead of killing them showed them to a Jain monk, Mahābala by name, who told the minister that these youths were destined to be Baladeva and Vāsudeva in their third birth. They then became monks and practised penance. Candracūla once saw Suprabha Baladeva and Puruṣottoma Vāsudeva on their way, and formed a hankering that he should have a similar fortune in his next birth. Both the young monks after death were born as gods named Maṇicūla and Suvarṇacūla In their next birth they were born as sons to king Daśaratha by his queens Subalā and Kaikeyī, Suvarṇacūla (Vijaya in his former birth) becoming Subalā's son named Rāma, and Maṇicūla (Candracūla in his former birth) becoming Kaikeyī's son named Lakṣmaṇa.

According to the Jain version Sītā is the daughter of Rāvaṇa, a Vidyādhara, and Mandodarī. As it was predicted that Sītā would bring calamity on her father, she was put into a box and left buried in a field. She was discovered by a farmer while ploughing his fields, was brought to king Janaka, who adopted her as his daughter. He gave her in marriage to Rāma.

Once Nārada came to Rāvaṇa and told him that Rāma married the beautiful Sītā who was really fit for him. This created a desire in the mind of Rāvaṇa to have Sītā. Rāvaṇa then sent Candranakhā (better known as Sūrpaṇakhā) to Sītā to ascertain her mind, but she failed in her mission.

Rāvaṇa thereupon went in his celestial car to the forest where Rāma and Sītā were then enjoying pleasures, asked Mārīca to assume the form of a golden deer and to tempt the mind of Sītā to have it. While Rāma was away in search of the golden deer, Rāvaṇa carried off Sītā to Laṅkā.

Rāma made a careful search of Sītā but did not get any trace of hers. Daśaratha at this juncture dreamt a dream which indicated that Sītā was carried off by Rāvaṇa. While Rāma was thinking how he should proceed to search Sītā, Sugrīva and Hanūmat came to Rāma to seek his aid for Sugrīva to get his place in the kingdom of his brother Vāli. In the course of their conversation Hanūmat promised to Rāma that he would obtain the news of Sītā. Hanūmat then went to Laṅkā. Assuming the form of a bee he entered the palace of Rāvaṇa, searched and at last found Sītā in the garden being coaxed by Rāvana to yield to his desires. Rāvaṇa, however, did not succeed in his attempt to win her. She did not look at him. Mandodarī came there and recognised Sītā to be her daughter and comforted her. After her departure Hanūmat saw Sītā, convinced her that he was the messenger of Rāma, and conveyed to her his message. Hanūmat then returned to Rāma and told him that he saw Sītā in the garden of Rāvana. Before Rāma undertook marching against Rāvaṇa he sent Hanūmat as a messenger to ascertain if Rāvana would return Sītā peacefully, but Rāvaṇa insulted Hanūmat.

In the meanwhile Laksmaṇa fought with Vāli, killed him, and gave his kingdom to Sugrīva. Rāma and Laksmana practised fasts to acquire the magic lores which would enable them to fight successfully with Rāvaṇa. Vibhīsana, his brother, did not like Rāvaṇa's behaviour, left him, and came over Rāma. Then there was a fight between Rāma and Rāvaṇa in which Laksmaṇa killed Rāvana. After his death Rāma placed Vibhīṣaṇa on the throne of Laṅkā. Lakṣmana thereafter became the Ardhacakravartin After enjoying the kingdom he died. Rāma, grieved over his brother's death, renounced the world, became a monk, and attained emancipation.

In Saṁdhi 80, for the life of Nami and details of Jayasena, the tenth Cakravartin, see Tables in the last Volume.

# आलोचनात्मक मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य के प्रथम प्रामाणिक इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ मानते हुए, उक्त अपभ्रंश को प्राकृताभास हिन्दी कहने के पक्ष में थे। उनके अनुसार, तान्त्रिकों और योगमार्गी बौद्धों द्वारा रचित पद्यों (दोहों) में यही भाषा प्रयुक्त है। इसके अलावा, इस अपभ्रंश और 'पुरानी हिन्दी' का प्रचार शुद्ध साहित्य या काव्य-रचनाओं में भी 1050 से 1375 तक (भोज से लेकर हम्मीरदेव तक) पाया जाता है। इस प्रकार सवा तीन सौ वर्ष के इस काल के प्रथम डेढ सौ वर्ष के भीतर लिखित रचनाओं की स्पष्ट प्रवृत्ति का निश्चय करना कठिन है। अतः यह अनिर्दिष्ट लोकप्रवृत्ति का काल है। उसके बाद मुसलमानों के आक्रमण शुरू होने पर उनकी प्रतिक्रिया से हिन्दी साहित्य में एक प्रवृत्ति उभरती है, जो काफी बँधी हुई है। रीति शृंगार आदि के अलावा यह प्रवृत्ति चारण या राजाश्रित कवियों द्वारा निबद्ध अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरितों या गाथाओं में लक्षित होती है। यह प्रबन्ध-काव्य परम्परा ही रासो-काव्य या वीर-गाथा काव्य कहलाई। कुल मिलाकर 'आदिकाल' के दो भेद हैं : 1. अनिर्दिष्ट काल 2. वीर-गाथा या रासो काल। भाषा के बारे में शुक्ल जी का कहना है कि इन काव्यों की भाषा परम्परागत है, उस समय की बोलचाल की भाषा नहीं है। उसमें प्राकृत की रूढ़ियाँ हैं। वह तत्कालीन बोलचाल की भाषा से लगभग दो सौ वर्ष पुरानी भाषा है।

आदिकाल के अन्तर्गत शुक्ल जी, अपभ्रंश (देवसेन, पुष्पदन्त, सिद्धों की रचनाओं, हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत दोहों की भाषा) और देशी भाषा (रासो काव्यों की भाषा) का उल्लेख करते हैं। आचार्य शुक्ल ने अपने उक्त विचार 1929 में उस समय व्यक्त किये थे जब अपभ्रंश साहित्य प्रकाश में नहीं आया था। परन्तु 1960 तक अपभ्रंश के स्वयंभू और पुष्पदन्त जैसे शीर्ष कवियों की रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। फिर भी डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनका विचार इसलिए नहीं किया क्योंकि यह साहित्य हिन्दी प्रदेश में लिखा गया साहित्य नहीं है। बड़े विस्तार से उन्होंने इस बात का विचार किया है कि ऐसा क्यों हुआ। उनका कहना है कि गाहड़वार राजाओं ने (वैदिक धर्म मानने के कारण) देश्यभाण के कवियों को आश्रय नहीं दिया; दूसरे, इस प्रदेश में वर्जनशील ब्राह्मण समाज का प्रभाव था। हो सकता है उनका कहना सही हो, परन्तु उससे उपलब्ध साहित्य के अध्ययन न करने का औचित्य सिद्ध नहीं होता। क्योंकि भाषा मानसून की तरह, ऊपर ही ऊपर उड़कर नहीं निकल जाती, किनारों को छूने के लिए उसे मध्य में से गुजराना होता है। मध्यदेश उससे अछूता नहीं रह सकता, वह अछूता रहा भी नहीं। सूर, तुलसी, कबीर, जायसी की रचनाएँ इसका सबूत हैं। आखिर ब्रज और अवधी एकदम पैदा नहीं हो गई। यदि डॉ० द्विवेदी अध्ययन करते तो कम से कम उन्हें इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना पड़ता कि हिन्दी साहित्य का आदिकाल विरोधों और स्वतो वदतो व्याघातों का काल है। या उन्हें यह नही लिखना पड़ता कि 'इस युग मे एक ओर श्रीहर्ष जैसे बड़े-बड़े कवि हुए, जिनकी रचनाएँ अलंकृत काव्य-परम्परा की सीमा पर पहुँच गई थी। दूसरी ओर, अपभ्रंश में ऐसे कवि हुए जो अत्यन्त सरल और संक्षिप्त शब्दों में अपने मनोभावों को प्रकट करते थे। यह बात 'नैषधकाव्य' के श्लोकों और 'सिद्ध-हेम-व्याकरण' में आये दोहों की तुलना से स्पष्ट हो जाएगी।'

मेरे विचार में, इसमें अन्तर्विरोध की कोई बात नही। श्रीहर्ष की भाषा की तुलना पुष्पदन्त की अपभ्रंश से करने पर यह स्वतः स्पष्ट हो जाएगा।

पुष्पदन्त के दो नमूने उद्धृत हैं—

"धीरं अविहिय मामयं
सीहं हयसर सामयं
दूसिय सेत्तिय सामयं
विद्धिसिमं हिंसामयं"

एक सरस नमूना—

"पर उवयारि स जीवउ बंतहं
दीण्णुद्धरणु विहूसणं संतहं।
पविमल किलि भमिय महीमंडलि
हरिगुण कहा हुई आहंडलि।"

(महापुराण 85/17)

इसमें विरोध कहाँ है? विरोध तुलनीयों के गलत चयन मे है।

आलोच्ययुग में दूसरा विरोधाभास यह है कि एक ओर उसमें दिग्गज आचार्य हुए तो दूसरी ओर निरक्षर सन्त जिनके द्वारा ज्ञान प्रचार के बीज बोए गए। परन्तु ऐसा किस युग में नहीं हुआ? क्या आज ऐसा नहीं है? वास्तव में यह बीज बोने का नही, फसल काटने का काल है। बुद्ध और महावीर ने लोकभाषाओं में उपदेश देकर ऊँचा तत्त्वज्ञान आम जनता को सुलभ कराने की जो परम्परा डाली थी, या बीज बोये थे वे इस युग में अंकुरित पल्लवित होकर झाड़ बन चुके थे। और फिर आत्मज्ञान के लिए साक्षर या पढ़ा लिखा होना इस देश में कतई जरूरी नहीं रहा। पढे-लिखे भी मूर्ख हो सकते हैं और निरक्षर भी आत्मज्ञानी।

यह कितनी अजीब बात है कि आचार्य द्विवेदी इस युग को अन्धकार का युग मानें और लिखें, 'अन्धकार के इस युग को प्रकाशित करने वाली जो भी चिनगारी मिल जाए, उसे जलाए रखना चाहिए क्योंकि वह एक बहुत बड़े आलोक की सभावना लेकर आई होती है। उसमें युग के संपूर्ण मनुष्य को उद्भासित करने की क्षमता होती है।' चिनगारी से द्विवेदी जी का अभिप्राय मध्यदेश में लिखी गई छोटी-मोटी रचना से है: 'हमें घर की चिनगारी चाहिए, पड़ोस की धधकती आग से कोई मतलब नहीं।' आखिर क्यों? क्या घर की चिनगारी ही पूर्ण मनुष्य को प्रकाशित कर सकती है, पड़ोस की आग नहीं? वास्तव में डॉ० द्विवेदी चाहते थे कि हिन्दी वाले अपभ्रंश और अवहट्ठ या देश्य मिश्रित अपभ्रंश के साहित्य का गहन अध्ययन करें परन्तु प्रश्न था कि हिन्दी अनुवाद के बिना वह करे कौन? भारतीय ज्ञानपीठ ने सचमुच इस दिशा मे बहुत बड़ा ऐतिहासिक कार्य किया है।

## पुष्पदन्त की रामकथा

आदिपुराण (महापुराण 1-37 संधियाँ) की रचना के बाद कवि पुष्पदन्त का मन कई कारणों से सृजन से उचट जाता है। मंत्री भरत यदि हाथ जोड़कर उनके सामने बैठकर धरना नहीं देते तो शायद ही कवि महापुराण का शेष भाग लिखता। भरत अपने अनुरोध से कवि को मना लेते हैं और पुष्पदन्त बीस

तीर्थंकरों (अजितनाथ से लेकर मुनिसुव्रत तक) का वर्णन करने के बाद रामकाव्य की रचना करते हैं। रामायण के सृजन क्षणों में पुष्पदन्त का मन आशा और उत्साह से फिर भर उठता है, क्योंकि इसमें बलदेव (राम) और वासुदेव (लक्ष्मण) के गुणों का कीर्तन है। कवि अपनी बुद्धि के विस्तार के अनुसार उनका वर्णन करता है। यद्यपि वह कलिकाल की दुरवस्था से खिन्न है, दुर्जनों के स्वभाव का वह भुक्तभोगी है, फिर भी, भरत के अनुरोध पर सृजन के अपने संकल्प को पूरा करने के लिए वह तैयार है।

कवि एक बार फिर अपनी लाचारी की याद दिलाता हुआ कहता है : प्राचीन कवियों की पंक्ति में होना तो बहुत दूर की बात, मेरे पास कोई सामग्री नहीं है। अपभ्रंश में रामायण के कर्ता कवि स्वयंभू महान् हैं, जो हजारों लोगों से सम्मानित हैं। दूसरे कवि हैं चतुर्मुख जिन्होंने रामायण की रचना की है, जिनके चार मुख हैं मेरा तो एक ही मुख है और वह भी खंडित, वह भी दुष्टता से भरा हुआ :

'महु एक्कु तं पि मुहुं खंडियउं
विहिणा पेसुण्णउं मंडियउं।'

हो सकता है मेरा कहा विद्वानों की सभा को अच्छा न लगे। फिर भी मैं उससे अपने ढीटपन की क्षमा मांगते हुए, काव्य रचना प्रारम्भ करता हूँ। मेरा विश्वास है कि रामकथा के कुछ प्रसंग विचक्षणों को आकर्षित किए बिना नही रह सकते। ये हैं—राम का यश, लक्ष्मण का पुरुषार्थ और सीता का सतीत्व।'

कवि कहता है कि जिस तरह जलबिंदु कमलपत्र पर मोती की शोभा को धारण करता है, उसी तरह उत्तम आश्रय पाकर काव्य शोभा पाता है—

'जलबिंदु व पोमपत्ति थियउं
मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ
आसयगुणेण कव्वु वि सहइ।' 69/2

जिन घटनासूत्रों की बुनावट में कवि राम के यश, लक्ष्मण के पुरुषार्थ और सीता के सतीत्व के रंगों को उभारता है, वे है सीता का अपहरण, हनुमान् का गुणविस्तार, कपटी सुग्रीव का मरण, तारापति (सुग्रीव) का उद्धार, लवण समुद्र का संतरण और निशाचर कुल का नाश। कवि सीता के अपहरण को केन्द्र में रखकर ही उक्त सूत्रों को बुनता है। पुष्पदन्त के रामायण-सृजन का दूसरा महत्त्वपूर्ण बिन्दु है—भरत का भक्तिभाव और नाना रसभावों से युक्त राम-रावण युद्ध।

## 69वीं संधि

दूसरी जैन रामायणों की तरह, पुष्पदन्त भी अपनी रामायण राजा श्रेणिक और गणधर गौतम के संवाद से प्रारम्भ करते हैं, यद्यपि, उनकी रामकथा गुणभद्राचार्य की परंपरा पर आधारित है, जो विमलसूरि के 'पउमचरियं' की रामकथा से भिन्न है। इससे स्पष्ट है कि समान स्रोत होने पर भी रामकथा के कवि विभिन्न घटनाओं प्रभावों को ग्रहण करते रहे हैं, या उनकी नई व्याख्या करते रहे हैं। उनका संबंध श्रेणिक-गौतम संवाद से जोड़ना एक पौराणिक रूढ़ि मात्र है।

गुणभद्राचार्य की रामकथा में राम का सीता से विवाह जनक के पशुयज्ञ से जुड़ा हुआ है। सगर का आख्यान भी यज्ञसंस्कृति से जुड़ा हुआ है, जो उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है। काव्य के रंगमंच पर जो पात्र आते हैं या जो घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं, वे जैन दार्शनिक विश्वास के अनुसार पूर्वजन्म के नेपथ्य से

शुरू होती हैं। अपने तीसरे जन्म में राम और लक्ष्मण, विजय और चन्द्रचूल के रूप में मित्र थे। रत्नपुर के राजा प्रजापति का बेटा चन्द्रचूल था। मंत्री के पुत्र का नाम विजय था। भर-जवानी में उन्होंने युवा सेठ श्रीदत्त की पत्नी कुबेरदत्ता का अपहरण कर लिया। प्रजा के विरोध करने पर राजा ने दोनों को जंगल में लेजाकर वध का आदेश दिया। मन्त्रियों और पौरजनों के कहने पर मारने के बजाय, उन्हें गहन जंगल में ले जाया गया। वहाँ मंत्री ने जैन महामुनि महाबल से दोनों कुमारों का भविष्य पूछा। मुनि ने कहा—दोनों बालक तीसरे भव में बलराम और नारायण होंगे। तब उन दोनों ने जैनदीक्षा ग्रहण कर ली। एक बार तप करते हुए उन्होंने मधुसूदन और पुरुषोत्तम का वैभव देखकर निदान किया कि जैन तप का यदि कोई प्रभाव हो, तो मुझे भी अगले जन्म में यह सब वैभव प्राप्त हो। विजय मरकर सनत्कुमार देव हुआ, उसका नाम स्वर्णचूल था। इधर चन्द्रचूल मणिचूल नाम का देवता हुआ। स्वर्ग से च्युत होकर उनमें से मणिचूल काशी के राजा दशरथ की सुबला रानी का पुत्र राम हुआ। और, स्वर्णचूल दूसरी रानी कैकेयी से लक्ष्मण नाम का पुत्र हुआ। बड़े होने पर उनकी धाक दूर-दूर फैल चुकी थी। गोरे और काले रंगवाले वे दोनों कुमार ऐसे लगते थे मानो राजा दशरथ रूपी गरुड के श्वेत और काले दो पंख हों। संख्यातीत काल बीतने पर दशरथ को काशी से अयोध्या आना पड़ा था। इसी बीच दशरथ के पुत्र भरत और शत्रुघ्न भी उत्पन्न हुए।

राजा जनक ने यज्ञ की रक्षा और सीता के स्वयंवर का जो निमंत्रण भेजा उसमें राम भी आमंत्रित थे। दशरथ के पास भी लिखित पत्र आया। उसमें लिखा था कि जो इस परम कृत्य वाले यज्ञ की रक्षा करेगा, उसे मैं अपनी सुकन्या सीता दूंगा। मंत्री बुद्धिविशारद ने पत्र का समर्थन करते हुए यज्ञ की रक्षा को परम कर्तव्य बताया। दूसरे मंत्री अतिशयमति ने इसका विरोध करते हुए राजा सगर का उदाहरण दिया। उसने कहा कि चारण नगर के राजा सुयोधन की रानी अतिथि की सुंदर कन्या सुलसा के स्वयंवर में अयोध्या का राजा सगर पहुँचा। कन्या की माँ अतिथि उसे अपने भाई के पुत्र मधुपिंगल को देना चाहती थी। तब सगर के पुरोहित मंत्री ने झूठा सामुद्रिक शासन बनाकर उसे धरती में गड़वा दिया। एक किसान को वह मिला। द्विजवर के रूप में मंत्री वहाँ पहुँचा और उसने अलग अर्थ किया कि जो मधुपिंगल को विवाह मंडप में प्रवेश देगा उसकी कन्या विधवा हो जाएगी। मधुपिंगल लज्जा के कारण वहाँ से भाग गया। बूढ़े सगर ने कन्या से विवाह कर लिया। मधुपिंगल ने जैनदीक्षा ले ली। एक दिन नगर में भिक्षा के लिए जब मधुपिंगल घूम रहा था वहाँ उसे सगर के कपटजाल का पता चला। उसने आक्रोश में आकर यह निदान बाँधा कि सगर मेरे हाथ मे मरे यदि जैन तप का कोई प्रभाव हो। वह मरकर असुरेंद्र का वाहन यानी भैंसा हुआ, साठ हजार भैंसाओं का अधिपति। जिनवर के धर्म को स्वीकार करते हुए भी वह क्षमाभाव के बिना दुर्गति में गया। उसे ज्ञात हो गया कि किस प्रकार वह सगर के द्वारा ठगा गया। उसने मन-ही-मन कहा कि देखें अयोध्या का राजा यह अब कैसे बचता है। वह सालकायण नाम का वेदमंत्रों का उच्चारण करनेवाला ब्राह्मण बन गया, श्रेष्ठ मुनियों को दूषित करनेवाला और हिंसक।

इसी बीच, पर्वतक की कथा शुरू होती है। विप्रवर क्षीरकदंब के तीन शिष्य थे, एक उसका बेटा पर्वतक जो पढ़ने में कमजोर था, दूसरा राजा बसु और तीसरा नारद। एक दिन वे वन में गये। क्षीरकदंब ने वहाँ एक जैनमुनि से उनका भविष्य पूछा। उन्होंने कहा कि नारद सर्वार्थसिद्धि जाएगा, और बाकी दो नरक, यज्ञ के फल के कारण। क्षीरकदंब की पत्नी राजा बसु को पीटने से बचाती है। वह उसे वर देता है। आचार्याणी उसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखती है। वह पति से झगड़ा करती है कि वह नारद को विशेष पढ़ाते हैं, अपने लड़के को नहीं। क्षीरकदंब विविध प्रयोगों द्वारा पत्नी को बताता है कि नारद जन्म से प्रतिभाशाली है, जबकि पर्वतक मंदबुद्धि है। अन्त में क्षीरकदंब नारद को परिवार सौंपकर जैन हो गया। वह मर कर स्वर्ग गया। बहुत दिनों बाद नारद और पर्वतक में 'अज' शब्द के अर्थ को लेकर विवाद हो गया। नारद

के अनुसार अज का अर्थ तीन साल का पुराना जौ था, जबकि पर्वतक के अनुसार बकरा। लोगों ने पर्वतक को नगर से निकाल दिया। पर्वतक सालंकायण का शिष्य हो गया। वे दोनों अयोध्या नगरी पहुँचे। पशुयज्ञ का प्रचार करते हुए तथा यज्ञ में होमे गए पशुओं को साक्षात् देव बनाते हुए, राजा सगर को उन दोनों ने धोखा दिया। उनके बहकावे में आकर राजा ने अपनी पत्नी सुलसा भी यज्ञ में होम दी। पत्नी के वियोग से दुखी होकर सगर ने एक दिन जैन मुनि से पूछा, 'क्या पशुओं का वध धर्म है ?' उन्होंने कहा कि निश्चय ही अहिंसा से धर्म होता है और हिंसा से अधर्म। सगर के पूछने पर मुनि ने बताया कि सातवें दिन उसके ऊपर बिजली गिरेगी। सगर ने आकर पर्वतक से कहा। उसने जैनमुनि की निंदा की। असुरेन्द्र ने राजा को नभ में मुनि सुलसा देवी के दर्शन करा दिए। सगर दुगुने उत्साह से यज्ञ में लग गया। अन्त मे राजा सगर पर गाज गिरती है और वह मारा जाता है। असुरेन्द्र ने एक बार फिर कपट भाव किया और राजा वसु को स्वर्ग के विमान मे स्थित बताया।

सगर का मन्त्री आनंदित हुआ। उसने कहा कि मूर्खों ने यज्ञ की निंदा की। उसने भी राजसूय यज्ञ किया, विद्याधर दिनकर ने उसे आड़े हाथों लिया और राजा के एक मास के होम को नष्ट कर दिया। महाकाल के विस्तार को भी नष्ट कर दिया। नारद का मन आनंदित हुआ। असुरेन्द्र ने घोषणा की कि पर्वतक तुम नाश को प्राप्त मत होओ। तुम चारों तरफ जिनप्रतिमाएँ स्थापित कर दो जिससे विद्याधर विद्याएँ प्रवेश न कर पाएँ। वे दोनों नरक गये। असुरेन्द्र ने लोगों से कहा कि उसने अपना बदला ले लिया।

70 वीं संधि

अतिशयमति मंत्री के हित वचन सुनकर राजा दशरथ का मिथ्या दर्शन नष्ट हो गया। उसने जैन धर्म ग्रहण कर लिया। राजा के मंत्री महाबल ने पुत्रों का प्रताप देखने के लिए, उन्हे यज्ञ में भेजने का प्रस्ताव रखा। राजा दशरथ ज्योतिषी से राम लक्ष्मण के भविष्य के बारे में पूछता है। वह बताता है कि वे दुनिया को सतानेवाले रावण को मारकर विजयी होंगे। दशरथ भुवनविख्यात रावण के बारे मे पूछता है। पुरोहित कहता है कि नागपुर में राजा नरदेव था। उसने दीक्षा ले ली। आकाश में जाते हुए चपलवेग और विचित्र-केतु विद्याधरों को देखकर उसने निदान बाँधा कि तप के प्रभाव मे मेरा इन विद्याधरो जैसा ऐश्वर्य हो। विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी में मेघ शिखर में सहस्रगीव नाम का राजा था। वह झगडा करके वहाँ से त्रिकूट नगर में आ गया। उसने लंका का निर्माण कराया। बीस हजार वर्ष उसने उस नगरी का पालन किया। शतग्रीव ने पच्चीस हजार वर्ष। पंचदशग्रीव बीस हजार वर्ष जीकर मर गया। पुलस्त्य पन्द्रह हजार वर्ष। उसकी पत्नी मेघलक्ष्मी की कोख से राजा नरदेव रावण के रूप में उत्पन्न हुआ। उसका कोई प्रतिमल्ल नहीं था। राजा मय ने अपनी कन्या मन्दोदरी से उसका विवाह कर दिया। एक दिन आकाशमार्ग से जाते हुए उसने ध्यान मे लीन मणिवती को देखा। रावण की मति चंचल हो गई। उसने कन्या को ध्यान से विच-लित करना चाहा। क्रुद्ध हो मणिवती ने यह निदान बाँधा कि अगले जन्म में वह उसकी कन्या होकर उसकी ही मौत का कारण बने। अगले जन्म में वह मंदोदरी की कन्या हुई। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुनकर रावण ने उसे मारना चाहा। परन्तु मारीच ने मंदोदरी को समझाकर उसे मजूषा में रखवाकर मिथिलानगर के उद्यान में गड़वा दिया। एक किसान को वह मंजूषा मिली जिसे उसने वनपाल को देदी। उससे वह राजा जनक को दी गई। जनक ने उसे अपनी पत्नी को दे दिया। सीता जब बड़ी हो गई तो उसके स्वयंवर के सिलसिले में राजा दशरथ ने राम लक्ष्मण को वहाँ भेजा। राम ने उससे विवाह कर लिया। वे उसे विनीतपुरी (अयोध्या) ले आए। बसंत के आने पर अयोध्या में बसंत क्रीड़ा की धूम मच गयी। राम ने पिता से अनुमति लेकर परंपरागत वाराणसी पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार राम, लक्ष्मण और सीता काशी में रहने लगे।

**71 वीं संधि**

कलहप्रिय नारद ने जाकर रावण से कहा, 'सीता जैसी अनिन्द्य सुन्दरी तुम्हारे योग्य है।' रावण सीता को समझाने के लिए पहले अपनी बहन चंद्रनखा को भेजता है। लेकिन वह असफल लौटती है और उल्टे रावण को ही समझाती है। रावण उसे मना कर, पुष्पक विमान में जा बैठता है।

**72 वीं संधि**

रावण मारीच को लेकर वाराणसी गया। उस समय राम और सीता वसंतक्रीड़ा के अनंतर वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे। रावण वहाँ पहुँचा। उसने कपटपूर्वक उसके अपहरण का निश्चय किया। मारीच सोने का मृग बनकर दौड़ता है, राम पीछे-पीछे दौड़ते हैं। बहुत दूर ले जाकर मारीच संकेत करता है और इधर रावण सीता का अपहरण कर लेता है। वह उसे ले जाकर नंदन वन में रखता है और विद्याधरियों से उसको समझाने के लिए कहता है। सीता विलाप करती है। वह रावण के प्रस्ताव को ठुकराती है।

**73 वीं संधि**

सीता के अपहरण से दुखी राम मूर्छित हो जाते हैं। दशरथ स्वप्न में सीता के अपहरण की बात जानकर इसकी सूचना राम को देते है। विद्याधर सुग्रीव और हनुमान् राम से भेंट करते हैं। सुग्रीव अपना परिचय देते हुए, अपनी समस्या उनके सामने रखता है कि उसके भाई बालि ने उसे निकाल कर उसकी पत्नी ले ली है। हनुमान् सीता का पता लगाने का आश्वासन देते हैं। सम्मेदशिखर पर जाकर वे सिद्धकूट जिनालय की वंदना करते हैं। हनुमान् लंका के लिए कूच करते हैं। वह भ्रमर का रूप धारण कर लंका नगरी में प्रवेश करते हैं। वहाँ वह रावण को सिंहासन पर स्थित देखते हैं।

इधर अनुचरों को सीता के शरीर का वस्त्र मिलता है। वहाँ सीता में आसक्त रावण का किसी भी काम में मन नहीं लगता। वह सीता को समझाता है। सीता उसे मुँहतोड़ उत्तर देती है। मंदोदरी रावण को समझाती है। मंदोदरी सीता को उसके पैरों के कुछेक विशेष चिह्नों से पहचान लेती है।

हनुमान् सीता से भेंट करते हैं और प्रत्यभिज्ञान के साथ राम का सदेश देते हैं। वह राम के वियोग की भी स्थिति के बारे में बताते हैं। हनुमान् सीता को आश्वासन देते हैं। राम का वृतान्त मिलने पर सीता मदोदरी के अनुरोध पर भोजन करती है। हनुमान् राम के पास सीता का संदेश लेकर पहुँचते हैं।

**74 वीं संधि**

हनुमान् विस्तार से सीता के वियोग का वर्णन करते हैं। राम की पंचांगमंत्रणा। राम एक बार फिर रावण के पास दूत भेजते हैं। हनुमान् दुबारा दूत बनकर जाते हैं। राम विस्तार से दूत को समझाते हैं। हनुमान् लंका में प्रवेश करते हैं। उनके सौंदर्य को देखकर लंका की विद्याधरियों का मन विचलित हो उठता है। हनुमान् रावण को समझाते हैं। रावण इसे रंडा कहानी कहकर दूत की बात टाल देता है। रावण के विभिन्न सामंत भी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

**75 वीं संधि**

हनुमान् लौटकर आते हैं। इधर लक्ष्मण बालि से युद्ध करते हैं। हनुमान् अपने दौत्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत करता है। राम से मिलने के लिए बालि का दूत आता है। वह कहता है कि यदि राम सुग्रीव को निकाल बाहर करें, तो बालि उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार है। वह सीता को

वापस ला सकता है। राम ने कहा यदि वह अपना हाथी देता है तो वही इस मित्रता का कारण हो सकता है। राम ने दूत के साथ अपना आदमी भेजा। बालि के राजमंत्री ने उससे कहा—राजा बालि हाथी नहीं, असि-प्रहार देगा। दूत ने वापस आकर, कानों को कटु लगनेवाले वे शब्द राम से कहे। राम स्वयं को कठिन स्थिति में पाते हैं, इधर कुआ उधर खाई। लक्ष्मण और हनुमान् उस पर चढ़ाई करते हैं। बालि-वध।

### 76 वीं संधि

राम लंका पर चढ़ाई के लिए प्रस्थान करते हैं। विभीषण रावण को समझाता है। सेना और युद्ध का वर्णन।

### 77-78 वीं संधि

हनुमान् के न लौटने पर राम की चिन्ता। विभीषण उन्हें समझाता है। युद्ध का वर्णन। रावण विभीषण को बुरा-भला कहता है। युद्ध का वर्णन। लक्ष्मण के द्वारा रावण का वध। मंदोदरी का विलाप। विभीषण भी पश्चात्ताप करता है। उसके अनुसार रावण का एक ही दोष है कि उसने जैनधर्म का आदेश न मानते हुए परस्त्री का अपहरण किया। राम रावण का दाह संस्कार करते हैं। पुष्पदन्त का कथन है कि दूसरे की स्त्री से राग होने पर सभी हलके समझे जाते हैं। विभीषण को राजपट्ट बाँधा जाता है।

### 79 वीं संधि

उसके बाद राम पृथ्वी का परिभ्रमण करते हुए, कोटिशिला पहुँचते हैं। लक्ष्मण कोटिशिला उठाते हैं। दोनों भाई गंगा के किनारे-किनारे चलते हैं और उसके उद्गम स्थान पर पहुँचते हैं। वहाँ उन्होंने पटमंडप ताने। लक्ष्मण ने समुद्रपर्यन्त अपना रथ हाँका। वे मगध देश आए। वहाँ उनका अभिषेक किया गया। और भी कई कीमती वस्तुएँ उपहार स्वरूप प्राप्त हुईं। समुद्र के किनारे-किनारे जाकर वरतनु को, फिर सिंधु को जीतकर प्रभास तीर्थ को जीता। फिर म्लेच्छ दिशा के समस्त शत्रुओं को जीता। विजयार्ध की दोनों श्रेणियों को जीत कर, हतमातंग विद्याधर की कन्याएँ ग्रहण कीं। देव दिशा के म्लेच्छ खंड को जीतकर, भूमिमंडल पर अपना राजदंड घुमाकर वे अयोध्या लौट आए। वहाँ राजा राम लक्ष्मण का अभिषेक हुआ। वे दोनों इन्द्र की लीला करते हुए रहने लगे। उन्हीं दिनों शिवगुप्त मुनि का नंदनवन में आगमन होता है। वे जैनधर्म का उपदेश देते हैं। जैन दृष्टिकोण से वे संसारचक्र का विचार करते हैं, दूसरे दार्शनिक के मतों का खंडन भी। उपदेश सुन-कर राम श्रावक व्रत धारण कर लेते हैं। लक्ष्मण ने एक भी व्रत ग्रहण नहीं किया। दशरथ के मरने पर भरत और शत्रुघ्न साकेत में अधिष्ठित हुए। राम और लक्ष्मण वाराणसी गए। राम का पुत्र विजयराम हुआ, उनके सात पुत्र और हुए। लक्ष्मण का पुत्र पृथ्वीचन्द्र था। उसके और भी पुत्र हुए। बहुत समय बीतने पर पृथ्वी पर अनिष्ट लक्षण प्रकट हुए। राम ने दान दिया और जिन पूजा की। लक्ष्मण की मृत्यु। राम और सीता का शोक। राम ने चार घातिया कर्मों का नाश किया, देवताओं ने पुष्पों की वृष्टि की। राम को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। परमार्थवादी लोग यही कहते हैं कि धन किसी के साथ नहीं जाता। धरती रूपी राक्षसी ने किस-किस को नहीं खाया!

## रामकथा की पृष्ठभूमि

पुष्पदन्त की रामकथा में कथा कम, काव्य-तत्त्व अधिक है। कवि मनुष्य की भौतिक इच्छाओं की निस्सारता, तप-त्याग और नैतिक मूल्यों का चित्रण तत्कालीन सामन्तवादी पृष्ठभूमि में करता है। जीव का अपना कर्म ही उसके सुख-दुःख, बन्धन और मोक्ष के लिए उत्तरदायी है। चूँकि कर्म का कर्ता और

भोक्ता वह खुद है इसलिए वर्तमान मे वह जो है उसके लिए वह खुद जिम्मेदार है। जैन दर्शन का यह सिद्धान्त कवि के सृजन का आधारभूत सिद्धान्त है जो उसके चरित्र-चित्रण और घटनाओं के वर्णन में प्रतिबिम्बित है। यह होते हुए भी उनकी कविता के कुछ भौतिक मूल्य भी हैं जिन्हें रामकथा के पात्र जीते हैं और जिन के प्रति कवि का संवेदनशील लगाव है। कवि के रामकाव्य के आध्यात्मिक मूल्य परम्परा से प्राप्त हैं, पहले से निर्धारित हैं और जिनके अनुसार पात्र अपना जीवन जीने के लिए बाध्य हैं। जो घटित हो चुका है उसे कलात्मक अभिव्यक्ति देना ही कवि का उद्देश्य है।

पुष्पदन्त ने जिस परम्परागत रामकथा को चुना है और उसे जिस रूप में काव्य के साँचे मे ढाला है, उसमें सामन्तवाद के आदर्शों की स्पष्ट छाप है। उदाहरण के लिए, राम और लक्ष्मण ने पूर्वकालीन तीसरे भव में, जब वे राजपुत्र और मंत्री-पुत्र थे, युवा सेठ की पत्नी कुबेरदत्ता का अपहरण किया था। प्रजा के विरोध करने पर दोनों को फाँसी होती, परन्तु वृद्धजनों के बीच-बचाव के कारण वे बच गए, और जैन तप करके वे बलभद्र और वासुदेव हुए। उन्हें फाँसी पर नही लटकाए जाने का दूसरा कारण महाबल मुनि का यह भविष्य-कथन रहा है कि दोनों तीसरे जन्म मे महापुरुष होने वाले हैं। प्रश्न है कि यदि भविष्य कथन में यह बात निकलती कि वे दोनों महान् की जगह सामान्य पुरुष या आम आदमी होने वाले हैं तो क्या राज्य मृत्युदण्ड माफ कर देता? दूसरा निष्कर्ष यह है कि लोग सत्ता का दुरुपयोग करने के लिए ही सत्ता में जाते हैं। सत्ता का सुख ठोस, जबर्दस्त और सम्मोहक है। चाहे वह सामंतवाद हो या प्रजातन्त्र, राजपुरुष और उनके निकट के लोग सुरा-सुन्दरी मे लिप्त रहते रहे हैं। लिप्त तो दूसरे भी है। मर्यादित लिप्त होना बहुत बुरा भी नही है। परन्तु जिसके हाथ में सत्ता होती है (चाहे धन की हो या राज्य की) उन्हें मनोरंजन के क्षेत्र और साधन अधिक सहजता से सुलभ होते हैं। हो सकता है राम-लक्ष्मण ने अपने तीसरे भव में वह सब न किया हो जो कर्म फल विश्वासी जैन कवियों ने उनके साथ जोड़ दिया है, सत्-असत् कर्म का फल बताने के लिए। लेकिन जब हम राम के वर्तमान जीवन मे उतार-चढ़ाव देखते है तो सोचते हैं कि उसका कोई न कोई कारण जरूर रहा होगा। संसार मे अचानक कुछ भी घटित नही होता, कारण कार्य बनता है और कार्य कारण। कारण-कार्य की इस शृंखला का नाम ही ससार है। प्रत्येक दर्शन इस शृंखला की व्याख्या अपने ढंग से करता है। जैन-दर्शन ने भी इसकी व्याख्या कर्म-सिद्धान्त के आधार पर की है। इसका उद्देश्य यह बताना है कि व्यक्ति जो कुछ करता है उसका फल उसे ही भोगना पड़ता है। उसमें किसी की भागीदारी नही हो सकती। राम की तरह रावण का वर्तमान जीवन भी उसके पूर्व कर्मों का फल है। रागद्वेष की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ जन्म-जन्मान्तरों तक चलती हैं।

पुष्पदन्त की रामकथा मे कैकेयी के वरदान, राम का वनवास, सीता की अग्नि परीक्षा, राम द्वारा सीता का निर्वासन, राम लवणांकुश, जटायु, वनयात्रा आदि प्रसंग नही हैं। एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि राजा दशरथ को स्वप्न में रावण द्वारा सीता के अपहरण का आभास मिल जाता है जिसकी सूचना वे राम को भेज देते हैं। विभीषण को लंका का राजा बनाकर राम लक्ष्मण और सीता के साथ दिग्विजय पर निकलते हैं, जो लक्ष्मण के अर्धचक्रवर्ती बनने के लिए जरूरी है। उसकी यह दिग्विजय, भरत चक्रवर्ती की दिग्विजय से मिलती-जुलती है।

## चरित्र-चित्रण

**दशरथ**—पुष्पदन्त के अनुसार, दशरथ जन्मत: जैन नहीं थे। प्रारम्भ में वे हिंसक यज्ञों में विश्वास रखते थे। अपने मन्त्री अतिशयमति के, जो जैन था, समझाने पर उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया।

उनका महत्त्व यही है कि वे राम-लक्ष्मण के पिता हैं। लक्ष्मण कैकेयी से उत्पन्न है, इसलिए भरत को राजपाट दिलाने के लिए वर माँगने और उससे सम्बन्धित घटनाएँ पुष्पदन्त की रामायण में नहीं हैं। मन्त्री के उपदेश से यद्यपि दशरथ का मिथ्यादर्शन दूर हो जाता है फिर भी मन्त्री महाबल के अनुरोध पर वे राम-लक्ष्मण को मिथिला भेज देते है। परम्परा से प्राप्त काशी के छिन जाने पर दशरथ के मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। राम के अनुरोध करने पर वे सीता सहित राम-लक्ष्मण को वाराणसी भेज देते हैं। स्वप्न में सीता के अपहरण का आभास पाकर, वे इसकी सूचना राम को भेजकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

जनक—जनक का चरित्र भी स्पष्ट रूप से उभरकर नहीं आता। सीता उनकी पालित कन्या है। वह मिथिला नगरी के राजा हैं, जो यह सोचते हैं कि यज्ञ में पशु वध से स्वर्ग मिलता है। यज्ञ की रक्षा करना उनके लिए सम्भव नहीं है। इसलिए उन्होने दूसरे राजाओं सहित दशरथ के पास यह पत्र भेजा कि जो विद्याधरों से यज्ञ की रक्षा करेगा उसे वे पृथ्वीपुत्री सीता देंगे। बहुत से उपहारों और लेख के साथ दूत दशरथ के पास आया। राम के शत्रुओं का विनाश करने पर जनक सीता का विवाह राम से कर देते हैं।

राम—जैन पुराणों के अनुसार, राम आठवें बलभद्र हैं। वे कौशल्या के नहीं, सुबला के पुत्र हैं। सुन्दर शरीर होने से उन्हे राम कहा गया। जिस समय राम का सुबला से जन्म हुआ तभी कैकेयी से लक्ष्मण का। कवि ने दोनों के शौर्य और सौन्दर्य का वर्णन एक साथ किया है। एक हिमगिरि के शिखर के समान है तो दूसरा अजन गिरि के शिखर की तरह। दोनों गगा और यमुना के प्रवाहों की तरह है। राम के तीरो के प्रसार को देखकर दुश्मन काप जाते है। शस्त्र और शास्त्र दोनो म उनका समान अभ्यास है। मन्त्री महाबल और चतुरग सेना के साथ राम जनकपुरी जाते हैं, विद्याधरों से यज्ञ की रक्षा करने के साथ वे हिंसक यज्ञ की निन्दा करते है। जनक राम को सीता अर्पित कर देते हैं। राम के साथ सीता ऐसी प्रतीत होती है जैसे धवल मेघ के साथ बिजली। कुछ दिन राम और लक्ष्मण मिथिला में रुकते है। इस बीच पिता दशरथ के दूत भेजने पर राम, वधू के साथ अयोध्या आते हैं। सबसे पहले वे जिन-प्रतिमा की पूजा करते हैं। प्रसन्न होकर दशरथ सात दूसरी कन्याओं का राम के साथ विवाह कर देते हैं। इसी प्रकार सोलह कन्याओं से लक्ष्मण का विवाह किया गया। वसन्त क्रीड़ा के बाद राम, दशरथ से कहते हैं कि परम्परा से प्राप्त वाराणसी नगरी अपने अधिकार में कर लेना उचित है। पिता के सामने वे राजनीति शास्त्र का लम्बा-चौड़ा बखान करते हैं। अन्त में पिता की अनुमति पाकर राम लक्ष्मण एवं सीता को साथ ले वाराणसी पहुँचते है। नगर की वनिताओं पर उनके कामतुल्य सौन्दर्य की तीव्रतर प्रतिक्रिया होती है। धीरोदात्त कुलीन सामन्त राजाओं की तरह लक्ष्मण के साथ राम का नगर में प्रवेश होता है। दही, अक्षत और सरसों स्वीकार करते हुए दोनों भाई राज्यालय में प्रविष्ट होते हैं। किसी को प्रिय वचन से, किसी को उपहार से, किसी को रण के उद्भट शब्द से, किसी को उपकार से, किसी को नौकरी देकर सभी को संतुष्ट करते हैं। इस प्रकार दोनों भाई किसी को प्रेम से, और किसी को बाहुबल से अपने अधीन करते है। कितने ही वनपालों और माण्डलीक राजाओं को जीत लेते है।

नारद के उकसाने पर रावण मारीच की सहायता से सीता के अपहरण की योजना के साथ वाराणसी के उद्यान में पहुँचता है, जहाँ राम वसन्त-क्रीड़ा के अनन्तर वृक्ष की छाया में सीता के साथ विश्राम कर रहे थे। उन्हें देखकर रावण को लगता : "विश्व में एक मात्र राम कृतार्थ हैं कि जिनके पास सीता जैसी सुन्दर स्त्री है।" राम मायावी स्वर्ण मृग को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं और इधर रावण सीता को उड़ा ले जाता है। लम्बा रास्ता चलने से थके हुए राम जब लौटते हैं, तो शाम को ढलता हुआ सूरज उन्हें परदार (रावण) की तरह दिखाई देता है। लक्ष्मण के यह कहने पर कि जब आप मृग के पीछे गए थे और मैं सरोवर में था, तभी

से सीता वन में नहीं है। यदि वह जीवित हैं (हिंसक पशु यदि उन्हें नहीं खा गया हो) तो यह आपका प्रबल पुण्य माना जाएगा। राम मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ते हैं। उपचार के बाद होश में आने पर सीता के बिना उन्हें कुछ भी अच्छा नही लगता। वह अन्य प्राणियों और पेड़-पौधों से सीता के बारे में पूछते है। खोज करने वाले अनुचरों को बांस पर टँगा सीता का उत्तरीय मिलता है, जिसे लाकर वे राम को देते हैं। राम उसे छाती से लगाते हैं और अपनी आँखें पोंछते है। दशरथ के स्वप्नदर्शन से यह मालूम होने पर कि सीता का अपहरण रावण ने किया है, भरत और शत्रुघ्न भी उनकी सहायता के लिए वहाँ पहुँचते है।

राम का दूत बनकर गए हुए हनुमान् सीता से राम के बारे में कहते हैं : वह तुम्हारे वियोग मे दुबले हो गए हैं। वे प्रतिदिन आपकी याद करते है। वह न तो बोलते हैं और न किसी चीज में उनका मन रमता है। वह किसी स्त्री को देखने तक नही। तुम्हारा ध्यान वह उसी तरह करते हैं जैसे योगीश्वर शाश्वत सिद्धि का। हनुमान् राम और सीता के मिलन की अतरंग पहचान बताते हैं। उससे स्पष्ट है कि दोनो मे एक दूसरे के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। हनुमान् जब सीता की कुशलवार्ता लेकर आते हैं तो देखते हैं कि दुर्ग के भीतर राम 'हा सीते, हा सीते' चिल्ला रहे है और अपनी छाती पीट रहे है—

"हा सीय सीय सकलुणु कणंतु
णिय करयलेण ऊरु सिरु हणतु"

हनुमान् को देखकर वह पूछते है—"क्या मेरे बिना, मूर्छित होकर त्यक्त प्राण वह गिरी पड़ी है या मृत्यु को प्राप्त हो गई है ? वह कुशलवार्ता लाने वाले हनुमान् का प्रगाढ़ आलिंगन करते हैं। पचांग-मंत्रणा के बाद, राम एक बार फिर हनुमान् को दूत बनाकर भेजते है। रावण की चुनौती स्वीकार कर राम लका पर चढ़ाई के लिए प्रस्थान करते हैं। विभीषण के मिलने पर राम कहते है कि यदि चित्त से चित्त मिल जाय तो पराया भी भाई के समान हितकारी है। इसके विपरीत भाई यदि नित्य बैर बढ़ाता है तो वह दुश्मन है। युद्ध में रावण माया के बल से सीता के सिर को काटकर राम के सामने डालता है। राम सीता को मरा हुआ जानकर मूर्छित हो जाते हैं। कठिनाई से होश में आते है। लक्ष्मण के द्वारा रावण के मारे जाने पर, आनन्द से उद्वेलित राम रोमांचित हो उठते हैं। वे लोगों की मनोकामनाओं को पूरा करते है। कवि कहता है कि राम के समान कोई नहीं है जिन्होंने रावण की मृत्यु होने पर विभीषण को राज्य दिया और सुधियों तथा सुभटों का प्रतिपालन किया।

पुष्पदन्त की रामायण में सीता के अपहरण या रावण के नन्दनवन में रहने के कारण लोक में कोई सुरसुरी नही उत्पन्न होती। और, न स्वयं राम के मन में इस बात को लेकर उथल-पुथल है कि रावण ने सीता का अपहरण किया। बल्कि राम के आदेश से अंगद हनुमान् आदि अशोक वन में जाकर सीतादेवी की प्रशंसा कर केशव की विजय की सूचना देते हैं और उन्हें ले आते हैं। सीता राम से मिलती है। कवि उपमाएं हैं—

"आणिय मिलिय देवि बलहद्दहु, अमरतरंगिणि णाइ समुद्दहु।
हेमसिद्धि णावइ रससिद्धउ, केवलणाणरिद्धि णं बुद्धहु।
दिव्ववाणि जाणिय परमत्थहु, वर-कइमइ णं पंडियसत्थहु।
थिरासुद्धि णं चारुमुणिदहु, णं संपुण्णकंति छणयंदहु।
णं वर मोक्खलच्छि अरहंतहु, बहुगुणसंपय णं गुणवंतहु। 78/27

—मानो गंगा समुद्र से जा मिली हो, स्वर्णसिद्धि रससिद्धि से मिल गई हो; मानो केवलज्ञान की ऋद्धि बुद्ध से, दिव्यवाणी परमार्थ से जा मिली हो; मानो पंडित समूह से श्रेष्ठ कविबुद्धि मिल गई हो; भव्य मुनियों को चित्तशुद्धि मिल गई हो, या फिर पूर्णचन्द्र को सम्पूर्ण कान्ति। मानो अरहन्त से श्रेष्ठ मुक्ति लक्ष्मी जा मिली हो, या गुणवान् को मानो बहुगुण संपत्ति मिल गई हो।

राम रोती हुई मंदोदरी को समझाते हैं, शोक विह्वल इन्द्रजीत को धीरज बंधाते हैं, रावण के समस्त भाइयों को बुलाकर, नागरिकों की शंका दूर कर, महामंत्रियों से विचार-विमर्श कर, विघ्नकारी तत्त्वों का उन्मूलन कर, जिनेन्द्र का अभिषेक कर, यज्ञ और विविध दान कर, शत्रु और मित्र के प्रति मध्यस्थ भाव धारण कर, सामन्तों को अपने पक्ष मे यथायोग्य निमन्त्रित कर, गृहों और ब्राह्मणों आदि की पूजा कर, धर्म का पालन कर और अधर्म से डरकर, राम विभीषण को लंका के राज्य पर आसीन कर देते है, उन्हें राजपट्ट बाँध देते हैं। राम के विजयाराम तथा सात और पुत्र होते हैं। पश्चात् राम दुस्वप्न देखते है। वे शान्ति विधान करते हैं। लक्ष्मण की मृत्यु से राम शोक मग्न हो उठते है और अंत में शिवगुप्त मुनि से श्रावक व्रत और फिर दीक्षा ग्रहण कर मोक्ष प्राप्त करते है।

राम का अन्तर्द्वन्द्व—हनुमान् और सुग्रीव को शरण देने के कारण, जब बालि युद्ध की चुनौती देता है तो राम की स्थिति 'इस ओर कुआं और उस ओर खाई' वाली हो जाती है। इधर बालि उधर रावण। एक तो सूर्य और फिर ग्रीष्म काल! एक तो तम और दूसरे मेघजाल! एक तो अश्व और फिर कवच से युक्त! एक तो यम और फिर पूर्णकाल! एक तो साँप और दूसरे विषैली दृष्टि! एक तो शनि और दूसरे वृष्टि! एक तो दुर्धर दशमुख विरुद्ध है, और दूसरे बालि क्रुद्ध है!···मित्र क्षीण है और शत्रु बलवान हैं!' (75/4)

हनुमान् सीता की कुशलवार्ता के प्रसंग में राम से कहते हैं—

"णववणकंतहु, जेंव वसंतहु।
सुमरइ कोइल, धीरत्तें हल।
जिणगुण जाणइ, तिह तुह जाणइ।
तुह सा राणी, खंति समाणी।
भव्वहं रुच्चइ, खणु वि ण मुच्चइ।
कुल हर जुत्ति व, धम्मपवित्ति व॥" (74/1)

—जिस तरह नववन से सुन्दर वसंत को कोयल याद करती है, उसी तरह वह तुम्हें याद करती है। जिस तरह जानकी धीरता से धरती और जिनगुण को जानती है वैसे ही तुम्हें जानती है। तुम्हारी यह रानी शांति के समान भव्यों को अच्छी लगती है। वह कुलधर की एक क्षण को भी नहीं छोड़ी जाती युक्ति और धर्म की पवित्रता की तरह है।

सीता—पुष्पदन्त के अनुसार सीता रावण की पुत्री है, पूर्वभव की, विद्यासाधना मे रत मणिवती नाम की। पूर्वभव में काम पीड़ित रावण ने उसका ध्यान विचलित करना चाहा था, तब तपस्विनी कन्या ने यह निदान बाँधा था कि वह अगले जन्म में इस कामान्ध की बेटी के रूप में जन्म ले और इसकी मौत का कारण बने। अनिष्ट की आशंका से रावण शैशव अवस्था में उसे मंजूषा में रखवाकर मारीच के जरिए जनकपुरी के उद्यान मे गड़वा देता है। वनपाल लाकर उसे राजा जनक को देता है। जनक उसे बेटी की तरह पालते है। सीता अनिन्द्य सुन्दरी है। उसकी सुन्दरता पर कवि सारे सौन्दर्य-उपमान निछावर कर देता है। धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा देने पर, राम से उसका विवाह होता है।

सीता का वास्तविक चरित्र तब शुरू होता है जब नारद मुनि के उकसाने पर रावण सीता के अपहरण की योजना बनाता है। सबसे पहले चन्द्रनखा दूती बनकर सीता के पास आती है। उसे देखकर वह विद्याधरी कहती है कि रूप में सीता के सामने उर्वशी और रंभा भी कुछ नहीं हैं। चन्द्रनखा राम को पुण्यवान मानती है। पूछने पर वह स्वयं को वनपाल की माँ बताती है। वह जानना चाहती है कि उन्होंने पूर्व जन्म मे कौन-सा व्रत किया जिससे इतनी सुन्दर हुई, वह भी उस स्वाधीन यौवन को साधेगी। सीता उससे कहती है—तुम नारीत्व क्यों चाहती हो? रजस्वला होने पर वह चडाल के समान है। वह अपने कुटुम्ब का स्वामित्व प्राप्त नही कर सकती। किसी कुल मे पैदा होती है और बड़ी होने पर किसी दूसरे कुल में ले जाई जाती है। स्वजनों के वियोग पर रोती है, आँसू बहाती है। मंत्रणा के समय किसी को अच्छी नही लगती। जब तक जीती है पराधीन जीती है। दुर्भग, दुष्ट, दुर्गंध, दुराशय, अंधा, बहरा, रोगी, गूंगा, क्रोधी, निर्धन, कुटिल जैसा भी पति मिलता है नारी को उसी को मानना होता है। दूसरे का पति कितना ही बड़ा हो, वह पिता के समान है। विधवा होने पर मूड़ मुडा कर तप करना पड़ता है। बचपन में पिता रक्षा करता है, जवानी में पति रक्षा करता है, बुढ़ापे में बेटा रक्षा करता है, ताकि वह कोई खोटा काम न कर बैठे। भोजन और सोने मे उसे दूसरे के अधीन रहना पड़ता है। इसलिए तुम महिलापन को क्यों मागती हो? यह सुनकर चन्द्रनखा अपना-सा मुँह लेकर रावण के पास जाकर कहती है—सीता अपने व्रत से नहीं टल सकती। भले ही धरती अपने स्थान से डिग जाए। रावण के अपहरण करने पर सीता मूर्छित हो जाती है, स्वर्णपुत्तलिका की तरह वह धरती पर पड़ी है। सुधीजनों की याद से उसकी वेदना दुगुनी बढ़ जाती है। सीता यद्यपि निश्चेतन हो जाती है फिर भी उसका वस्त्र नही ढलता। जार की चंचल दृष्टि आखिर कहां ठहरेगी? कवि कहता है कि सती और सुभट के मजबूती से बंधे हुए वस्त्र (परिकर) हाथ से नही छूटते। मौत का अवसर आ जाने पर भी दोनो का परिकर बन्ध नही छूटता—

"दढ णिवसणु सइहि सुहडहु करासि ण विघट्टइ।
मरणि समावडिइ परियरिविहि विहिं वि ण फिट्टइ।।" 72/7

रावण उसको इसलिए नहीं छूता क्योंकि उसे अपनी विद्या के चले जाने का डर है।

दूतियों द्वारा रावण की प्रशसा किये जाने पर, सीता उन्हें मूर्ख समझकर चुप रहती है। रावण को चक्ररत्न की प्राप्ति होने पर भी सीता डरती नहीं। राम की खबर मिलने तक वह भोजन छोड़ देती है। हनुमान् जब उनसे राम का सन्देश कहते हैं तो वह समझती है कि उसे भोजन कराने के लिए शत्रु का यह कूट-कपटजाल है। लेकिन हनुमान् के गूढ़ अभिज्ञान वचन सुनकर वह विश्वास कर लेती है कि यह रामदूत है, और भोजन कर लेती है। वह मदोदरी से कहती है कि उसके जीते-जी उसे राम के पास भेज दिया जाए। अंत में तपश्चरण कर वह सोलहवें स्वर्ग जाती है।

**भरत और लक्ष्मण**—यद्यपि पुष्पदन्त ने प्रस्तावना में कहा है, कि इसमें (उनकी रामकथा मे) राम का यश और लक्ष्मण का पौरुष है। परन्तु लक्ष्मण के चरित्र का पूर्ण विकास नहीं हो सका है। इसी प्रकार कवि राम और रावण के युद्ध को अनेक रसभाव का उत्पादक और भक्ति से भरे भरत के चरित्र का कारण मानता है, परन्तु उसमें भरत का चरित्र कहीं नहीं दिखाई देता। फिर पुष्पदन्त द्वारा रामकथा में राम का वनवास है ही नहीं। राम लक्ष्मण के साथ अपने पूर्वजों को पुनः अपने आधिपत्य में लेने के लिए जाते हैं, जहा नारद के कहने पर रावण सीता का अपहरण करता है। इसकी सूचना दशरथ राम को भेज देते है। परंपरागत रामकथा के जिन प्रसंगो को पुष्पदन्त ने विस्तार दिया है, वे हैं—सीता अपहरण, हनुमान् के गुणों का विस्तार, कपटी सुग्रीवराज का मरण, तारा का उद्धार, लवण-समुद्र का संतरण और राक्षस वंश का विनाश।

## शृंगार, ऋतु और प्रकृति वर्णन

शत्रुओं के दमन और यज्ञ की निवृत्ति के फलस्वरूप राजा जनक, सीता को राम के लिए दे देते हैं। हलधर सीता को ऐसे ग्रहण करते हैं, मानो जलधर ने बिजली को पकड़ लिया हो। मानो परमात्मा ने त्रिभुवन लक्ष्मी को ग्रहण किया हो, मानो चन्द्रमा से कुसुममाला विकसित हुई हो। दशरथ दूत भेजकर राम को अयोध्या बुलवाते हैं। राम सीता के साथ अयोध्या आकर घी, दूध और धाराजलों से जिनेश्वर प्रतिमा का अभिषेक करते हैं। राजा दशरथ संतुष्ट होकर सात दूसरी कन्याओं से राम का विवाह कर देते हैं तथा लक्ष्मण का सोलह दूसरी कन्याओं से। इसी पृष्ठ भूमि में वसंत ऋतु का आगमन होता है। कवि कहता है मानो वसन्त राम-लक्ष्मण का विवाह देखने आया हो।

वसन्त का यह रूप देखिए—'अभिनव सहकार वृक्षों से महकता हुआ, कलाली की तरह मधु धाराओं से बहता हुआ, हेमंत की प्रभुता को समाप्त करता हुआ, दसों दिशाओं में अपने चिह्नों को प्रेषित करता हुआ, नवांकुरों से चमकता हुआ, पल्लवों से हिलता हुआ, सुन्दर बावड़ियों के जलरूपी चीर को हटाता हुआ, नीले शैवाल तीर, सूर्य के तीक्ष्ण प्रताप और दिनों की लम्बाई को दिखाता हुआ, अशोक वृक्षों की पत्र-ऋद्धि, मोक्ष (अर्जुन) वृक्षों की दुष्ट फागुन के द्वारा मोक्षसिद्धि (पत्र क्षरण) प्रकट करता हुआ, वाउल पक्षियों के शरीरों को छाया करता हुआ, वनलक्ष्मी के ओस रूपी आँसुओं को पोंछता हुआ, तिलक वृक्षों के पत्रों में तिलक विलास करता हुआ, लतारूपी कामनियों में रस उत्पन्न करता हुआ, प्रियों के अभिलाषा कवच को चीरता हुआ, कनेर पुष्पों के पराग से धूसरित करता हुआ, मानिनियों के मानगिरि को चूर करता हुआ, मँड़राती हुई भ्रमरमाला से गुनगुनाता हुआ, उत्तुंग वृक्षों पर दिनों को गँवाता हुआ, मन्दार कुसुमों के पराग से महकता हुआ, रमण की अभिलाषा के विलास से घूमता हुआ।'

कवि कहता है कि जो अभी तक वन में चुपचाप विचरण कर रहा था वह सुन्दर कोकिल अब मधु का सेवन कर रहा है और बार-बार आलाप कर रहा है। मतवाला कौन प्रलाप नहीं करता ?

(70/4)

वसंत की उन्मादकता में राम का अपनी प्रेयसियों के साथ क्रीड़ा करने का दृश्य अनोखा ही है—

"वीणा बज रही है, आपानक पिया जा रहा है। प्रियजनों के चित्त साधे जा रहे हैं। सप्त स्वरों में मधुर गाया जा रहा है। निरन्तर गहरा प्रेम बढ़ रहा है। पराग से प्रचुर मल्लिका पुष्पों की माला बाँधी जा रही है। सुगंधित द्रव्यों का छिड़काव किया गया है। नूपुरों की झंकार की तरह मयूर नाच रहे हैं। जहाँ भ्रमर भ्रमण कर रहे हैं ऐसे दमनक पुष्पों के घर मे फूलों की सेज पर सोया जा रहा है। कामदेव अपने पुष्प तीरों को साध रहा है और तपस्वियों के बड़प्पन को नष्ट कर रहा है। रूठी हुई प्यारी को मनाया जा रहा है, उसे काम की सुखद पीड़ा दी जा रही है। सरोवर की जलक्रीड़ा से शरीरों को सिंचित किया जा रहा है, यंत्रों से केशर मिश्रित जल छोड़ा जा है। दिखाई पड़ने वाले अंगों से रस बढ़ रहा है। प्रणयिनियों के सूक्ष्म कटिवस्त्र गीले हो रहे है। नील कमलों की मालाओं के ताड़न से, सुन्दर खिले हुए पलाश वृक्षों से प्रज्वलित तथा जिसमें प्रिय-प्रियतमाएँ अपनी इच्छानुसार एक-दूसरे को मना रहे हैं ऐसा वसन्त तेजी से बढ़ रहा है।" (70/15)

रावण की दूती जब बाराणसी पहुँचती है, तो उसके निकट स्थित नंदन वन इस प्रकार दिखाई देता है—

"जिसमें धरती वृक्षों की जड़ों से अवरुद्ध है, आकाश पुष्प-पराग से धूसरित है। जहाँ वृक्ष-शाखाओ पर बन्दर क्रीड़ा कर रहे हैं; ताड़ और तमाल के वृक्ष आसमान को छू रहे हैं। जहाँ बिल्व चिंचा और पुष्प

वृक्षों के दल हैं, जिसमें हिरनों ने दांतो से अंकुरों को कुतर डाला है, जहाँ स्वच्छ और प्रकंपित जलकण उछल रहे हैं, जो अगुरु और देवदार वृक्षों से सघन है, जिसमें वृक्षों की रगड़ से आग निकल रही है, दिशाओं के मुख सुरभित धुएँ की गन्ध से सुवासित है, अशोक वृक्षों के पत्ते हिल-डुल रहे हैं, हवा से प्रेरित माधवी-लता के पत्र धरती पर उड़ रहे है, जहाँ कीर, कुरर, कारण्ड बाल-लताओं के घरों में कलरव कर रहे है, अलकों की तरह जहां भ्रमर समूह उड़ रहा है, जो विविध केलिगृहों से विराट् है, जहाँ मनुष्य केतकी के पराग से सुवासित हो उठे हैं, जिसमें विद्याधर, यक्षेन्द्र और दानवेन्द्र की समांतर क्रीड़ा हो रही है।" (71/12)

कवि रावण की दूती के माध्यम से लक्ष्मण की प्रेम-क्रीड़ा का शब्दचित्र इस रूप में खींचता है—

"कोई एक मयूर के साथ हास्य-पूर्वक नृत्य करती हुई लोगों के नयनों को भाती है, मृणाल के अंत में स्थित भ्रमरों की पूंछ से अलंकृत तथा दोनों पार्श्व भागों पर रखा हुआ कमल ऐसी शोभा देता है जैसे कामदेव का बाण हो, जिसे वह देवों और मनुष्य के हृदय को विदारण करने के लिए दिखा रही है। हंस के साथ जाती हुई कोई अपनी गति का लीला-विलास भी भूल जाती है। भौंरा किसी के करतल पर आकर क्या बैठ जाता है वह मूर्ख अपने को शतदल पर बैठा हुआ मान रहा है! किसी के निकट आ लगा हुआ हरिन उससे दीर्घ कटाक्ष की माँग करता है। किसी ने कमल को अपने कान पर धारण कर लिया है पर नेत्रों से विजित होने के कारण बेचारा मुरझा गया है। किसी ने नील कमलों की किंकिणियों से युक्त लता का कटिसूत्र बांध रखा है। किसी एक ने जाकर जबर्दस्ती राम को पकड़ लिया और उन्हें पराग पिंजरित (पीला) कर दिया मानो संध्या राग ने चांद को पीला कर दिया हो। या फिर शारदीय मेघ शोभित हो उठा हो। किसी ने जुही का फूल उपहास मे दिया। किसी ने अपना सरस मुख दिखाया। जाति कुसुम को जातिवाला क्यों कहा जाता है जबकि उसका आनन्द सैकड़ों भ्रमर उठाते हैं फिर भी आदरणीया वह उसे अपने सिर पर बांधती है! अपना मतलब सधने पर सभी लोग मोह में पड़ जाते हैं। कोई धूर्त भ्रमरी मोगरे के पुष्प को छोडकर अपनी देह हिलाकर गुनगुनाकर सर्वांग सुरभित प्रिय मरूबक पर जा बैठती है।" (71/13)

"कोई दर्पण में चमकते हुए अपने दाँतों के साथ कुंद पुष्पों को देखती है। अपनी देहगंध से मौलश्री पुष्प की ओर अधरों के सबंध से बिम्बाफल की परीक्षा करती है। कोई फूले हुए सहकार वृक्ष को देखती है, कोई बाला वासुदेव के साथ बाहुयुद्ध चाहती है। नवकलियों से मतवाला और बोलता हुआ निष्कपट शुक वियोग दुःख को कुछ भी नहीं मानता। मन को कुपित करनेवाले उसे उसने कसकर पकड़ लिया, इसी से वह (शुक) मुख मे (चोंच मे) लाल रंग का हो गया। कोई शुभ करनेवाली, हाथ में इक्षुदंड लिये हुए ऐसी प्रतीत होती है, मानो विषम धनुष को धारण किये हुए हो। कोई पुष्पमाला का इस प्रकार संचार करती है, मानो कामदेव तीरों की पंक्तियाँ दिखा रहा हो। कोई पलाश पुष्पों को इकट्ठा करती है, और लक्ष्मण के लिए उपहार में देती है। स्निग्ध लाल कुटिल और तीखे वे ऐसे मालूम होते हैं, मानो वसंत रूपी सिंह के नख हों। कोई काली कोयल को देखती है और पूछती है। दूसरी हँसकर उत्तर देती है कि लोगों के विरहानल के धुएं से काली यह इस समय भी बोल रही है। इसका मधुर मधु में रत विष दोनों ही प्रवासियों के मानस को आहत करता है। यदि आज मुझ से लक्ष्मण रमण करता है तो कोयल का यह प्रलाप मुझे सुख देता है।"

"सीता की अंजुलियों के पानी से सींचा गया नील कमल पुण्य से पवित्र राम के उर पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो दर्पणतल में मृग से लांछित पूर्ण चन्द्र शोभित हो। श्याम नारायण (लक्ष्मण) ने किसी महासती को इस प्रकार सींच दिया, मानो मेघ ने वनस्पती को सींच दिया हो, मानो वह (नाभि का) रोमावली रूपी अंकुर को छोड़ रहा हो, मानो वह मुखकमल से खिल गई हो। कोई सघन स्तन रूपी फल-संपदा को दिखाती है। जैसे कामदेव की सुन्दर लता हो। बार-बार सींचे जाने पर वह, जिसमें कपूर के कण

उछल रहे हैं, ऐसे लीलापूर्वक हंसती है। प्रिय के हाथों से नहलाई गयी किसी की चोली का सूत्रजाल टूट जाता है, शिथिल गीला वस्त्र गिर जाता है, वह लजा जाती है, और पानी में अपना अंग छिपाती है। कोई लक्ष्मण के मुख की कांति से श्याम रक्त कमल को काला देखती है, सखियों को दिखाकर अपना विचार बताती है। कोई कानों से लग कर कहती है, हे ललित ! इसे सींचो यह पद्मावती है। जिससे यह आदरणीय विरहिणी जीवित रह सके इसे केशर का लेप दो। हे देव, इसे वक्षस्थल से पीड़ित करो।

यह सुनकर मानश्रेष्ठ कुमार ने एक को वस्त्र के अंचल से पकड़ लिया तथा एक और दूसरी के स्तनों पर थोड़ा-थोड़ा मुसकाते हुए उसने जलयंत्र से जल छोड़ा दिया।" (71/15-16)

## स्त्रियों के प्रकार

सुन्दर वर या वधू पाने की चाह मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जो मानव-मात्र में पाई जाती है। भारत की पितृप्रधान संयुक्त परिवार प्रथा मे (राजपरिवारो को छोड़कर) वर-वधू के चयन का अधिकार परिवार के प्रमुख को था। परिवार के स्तर और वर-वधू के भावी सुखी जीवन की दृष्टि से सम्बन्ध तय करते समय जिन बातों पर विचार किया जाता रहा है उनमे एक बात यह भी थी कि सामुद्रिक शास्त्र के लक्षणों के अनुसार वर और कन्या उपयुक्त है या नही। कभी-कभी इसका दुरुपयोग भी होता था। दुरुपयोग करनेवाले हर युग मे रहे हैं। राजा सगर की घटना इस बात का बड़ा दिलचस्प उदाहरण है कि किस प्रकार चाटुकार मन्त्रियों द्वारा सत्ता-प्रमुख उल्लू बनाए जाते रहे है। राजा सगर चारणयुगल नगर के राजा सुयोधन की कन्या सुलसा के स्वयंवर में जाता है। कन्या की माँ अतिथि अपने भाई के पुत्र मधुपिंगल से उसका विवाह करना चाहती है। इधर, सगर की दासी मंदोदरी कन्या को बरगला लेती है। जब यह पता चलता है कि कन्या मधुपिंगल को ही दी जाएगी, तो सगर का मंत्री एक चाल चलता है। वह एक कपट-वाक्य ताड़पत्र पर लिखकर चुपचाप मंजूषा में बन्दकर खेत मे गड़वा देता है। दूसरे दिन हल चलाते समय किसान को वह मंजूषा मिलती है। वह राजा सुयोधन को दिखाई जाती है। उसे भली-भाँति पढ़ा जाता है। इतने में मंत्री ब्राह्मण के छद्म वेश में आकर अत्यन्त मीठे राग में राजा को समझाता है कि जो वर काना, बौना, पीला, अन्धा, गूँगा, लंगड़ा, निर्धन, दुर्बल, बुद्धिहीन, विह्वल, मान और लज्जा से रहित, रोग से पराजित, कोढ़ के कारण नष्ट शरीर, कटे हाथ-पैर वाला, निम्न काम करनेवाला, स्त्रियों और बच्चों की हत्या करनेवाला, कठोर, निर्दय, साधुकर्म की निन्दा करने वाला, जिसका अपयश बढ़ रहा हो, खोटे कुल वाला, आलसी, वृद्ध और कुत्सित देह वाला तथा दैन्य को प्राप्त हो ऐसे लोगों को तो कुल और धन से हीन कन्या भी नहीं दी जानी चाहिए। जो राजा पिंगल को विवाह के मंडप मे जाने की अनुमति देता है वह अपनी कन्या के लिए वैधव्य और दुख ही लायेगा।" (69/20-21)

ऊपर खोटे वर के जो लक्षण गिनाये गये है, उन्हें देखकर सामान्य आदमी भी अपनी कन्या ऐसे वर को नही देगा। लेकिन यह कहना कि पिंगल को कन्या देना उसके वैधव्य को बुलाना है, मंत्री का कपट कथन है।

सुनकर मधु पिंगल चुपचाप चल देता है और राजा सगर सुलसा से विवाह कर लेता है। जब रावण सीता पर अनुरक्त होता है तो मय उससे कहता है कि किसी स्त्री को अपने अधिकार में करने के पहले यह देख लेना जरूरी हैं कि वह भी अनुरक्त है या नहीं; और यह भी कि कामशास्त्र के अनुसार वह उपयुक्त है या नहीं। कामशास्त्र में स्त्रियों की चार जातियाँ बताई गई हैं भद्रा, मंदा, लता और हंसा। इनमें भद्रा सर्वांग सुन्दर होती है, जबकि मंदा मोटी, भारी और बडे स्तनोंवाली। लता लम्बी, छरहरी, पत्ते की तरह दुबली होती है, जबकि हंसा ठिगनी और मांसल।

ऋषि, विद्याधर यक्ष, पिशाच आदि की स्त्रियों के कई प्रकार होते हैं। तापसी स्त्री सीधी और नासमझ होती है। खेचरी (विद्याधरी) मदिरा और फूलों की शौकीन होती है। पैशाचिनी तामसिक और घुमक्कड़। यक्षिणी धनकण के लोभ के अधीन होती है। सारंगी, मृगी, रिट्ठनी, शशि, धृतराष्ट्रणी, महिषी, खरी और मदकरी—ये आठ युवतियां कही गई है। इनमे सारसी अपने स्तन-कलशों से प्रिय के वक्ष को प्रेरित करती है और उसके साथ को नही छोड़ती। मृगी अपने बान्धवों को दान देने से संतुष्ट होती है। डांटने पर डरती है और गीत सुनती है। रिट्ठणी पुत्र रूपी पात्र से दुखी रहती है, उसका कौए जैसा शब्द होता है और युद्ध से भयकर स्थान को छोड़ देती है। शशि दुख की भाजन और निमीलित नेत्रों वाली होती है, निर्दय और दूसरे घर के कौर को देखने वाली। धृतराष्ट्रणी कमलों के सरोवर में क्रीड़ा करनेवाली; महिषी भयकर क्रोध के आवेग में बोलने वाली। खरी खेलती हुई हँसती है, कहकहा लगाकर किए गये हाथ और पाद के प्रहार को सहन करती है। मदकरी मांस खानेवाली, मजबूत पकड़वाली, साहस दिखानेवाली और कुकर्म का निर्वाह करनेवाली होती है।

कवि पुष्पदन्त ने देशी स्त्रियों का भी उल्लेख किया है—मालवी स्त्री शिव चाहनेवाली होती है। वाराणसी में उत्पन्न होनेवाली वनवासिनी स्वभाव से लम्पट और दुष्ट बोलनेवाली होती है। अर्बुददेश की स्त्री मदगामिनी होती है, उसका पहला काम दूसरे के धन को छीनना है। दिन की मर्यादा बाँधकर रतिरस का संधान कर तब कामक्रीड़ा करती है। सिंधु देश की स्त्री प्रिय के घर में शोभित होती है और अपने प्रिय को प्राण और धन दोनों अर्पित कर देती है। कोशल देश की स्त्री का भाव मायावी होता है। सिंहल देश की बाला को रति के गुण से पाया जा सकता है। द्रविड़ देश की स्त्री को दन्त और नखच्छद से पाया जा सकता है। आंध्र महिला परिपूर्ण रस से चौक जाती है। सुन्दर आलाप से लाट देश की स्त्री लजा जाती है। उड़ीसा देश की स्त्री कामविज्ञान से भेदन करने योग्य है। कलिंग देश की महिला उपचार का प्रयोग करती है। रक्ष देश की स्त्री शुष्क और रूखी होने पर भी रंजन करती है। सौराष्ट्र की स्त्री चुम्बन मात्र से संतुष्ट हो जाती है। गुजरात देश की स्त्री अपने काम मे दक्ष होती है। महाराष्ट्र देश की स्त्री को कितना भी अनुशासित किया जाए तब भी उसका धूर्तपन दिखाई देता है। कोंकण देश की स्त्री को कुछ भी दिया जाए, वह उसका विचार करती हुई क्षीण होती रहती है। पाटलिपुत्र की स्त्री प्रसन्न काम लीलाओं का प्रदर्शन करनेवाली, जांघ पर जांघ रखनेवाली होती है। पारियात्र की महिला पुरुष के अनुकूल या प्रतिकूल कुछ भी व्यवसाय करनेवाली होती है। हिमवत देश की महिला कुछ मंत्र बीजाक्षर जानती है जिससे वर उसके पैरों पर जा पड़ता है। मध्यदेश की नारी कला का घर होती है तथा कमल की तरह कोमल होती है। (71/6,7,8)

प्रकृति के विचार से भी युवतियाँ तीन प्रकार की होती हैं—वात, कफ और पित्त के भेद से। पित्त-प्रकृति वाली बात-बात में रूठती है। उसे दिन-प्रतिदिन धूर्तता से संतुष्ट करना चाहिए। पीले नखोंवाली बुद्धिमान और गोरी को कोमलता से रतिविह्वल करना चाहिए। यदि वह उन्नत स्तनों और उत्तम अंगवाली समझो तो शीतल आलिंगन देना चाहिए। जिसकी शीतल गन्ध हो, श्वेत दुपट्टा हो उसे भी शीतल आलिंगन देना चाहिए। श्लेष्म प्रकृतिवाली श्यामल उज्ज्वल वर्णवाली होती है, अभिनव कदली के अंकुर के समान कोमल। दोष देख लेने पर वह निश्चय से चूक जाती है। फिर इस जन्म में वह कभी भी पास नही पहुँचती। उसे सत्य, विनय और दाम से ग्रहण करना चाहिए, नहीं तो उसके अंग को नहीं छूना चाहिए। जिसका रति-जल से भरपूर कोमल कटितल है, दुर्गंध- रहित शरीर का सुन्दर सौरभ, लाल नाखून, सुन्दर हाथ-पैर हैं ऐसी सुन्दरी साधारण सूरत में आदर करनेवाली होती है। वात प्रकृतिवाली विलासिनी, श्याम और कठोर होती हैं। खूब खाती है और खूब बोलती है। उसके साथ कठोर प्रहारों और गम्भीर शब्द से रमण किया जाय

तभी उसकी कामाग्नि शान्त होती है। प्रकृति की भिन्नता के आधार पर इनके भी मन्द, तीक्ष्ण तीक्ष्णतर तथा विशुद्ध-अशुद्ध आदि भेद होते हैं।

### यज्ञ-संस्कृति

नारद, पर्वतक और राजा वसु आचार्य क्षीरकदंब के शिष्य हैं। इनकी कथा तत्कालीन यज्ञ-संस्कृति और शिक्षा-व्यवस्था पर प्रकाश डालती है। पर्वतक आचार्य का पुत्र है। पढ़ने में निहायत कमजोर। आचार्य-पत्नी पति से झगड़ा करती है: 'तुमने अपने बेटे को कुछ नहीं सिखाया, दूसरे के बेटों को विद्वान बना दिया।' यह सुनकर आचार्य कहते हैं: 'भ्रमरों को गंध लेना, बगुलों को मछली पकड़ना किसने सिखाया? हंसों को नीर-क्षीर विवेक की शिक्षा किसने दी? शुभे! तुम्हारा बेटा जड़बुद्धि है जबकि यह नारद स्वभाव से ही पटु है। आचार्य दोनों से विविध प्रयोग करवाकर अपना कथन सिद्ध कर देते हैं। उस जमाने में पुस्तकों के बजाय, प्रकृति निरीक्षण और सहज तर्क से शिक्षा दी जाती थी। आचार्य ही शिक्षक और परीक्षक दोनों था। बहुधा वह निष्पक्ष होता था। उस समय 'ताडन' की भी प्रथा थी। गुरु राजपुत्र की भी पिटाई से नहीं चूकता था। एक दिन आचार्य क्षीरकदंब ने छडी से राजा वसु की जमकर पिटाई कर दी, यदि पत्नी नहीं बचाती तो उसका कचूमर निकल जाता। क्षीरकदंब, अन्त में, पुत्र पर्वतक और पत्नी दोनों नारद को सौंपकर तथा राजा वसु से कहकर जिनदीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। बहुत दिन बाद 'अज' शब्द के अर्थ को लेकर दोनों में विवाद हो जाता है। नारद के अनुसार, 'अज' का अर्थ तीन साल पुराना जौ है जबकि पर्वतक के अनुसार 'बकरा'। नारद के अर्थ के समर्थक दूसरे अहिंसक बुद्धजीवियों ने पर्वतक को श्रावस्ती से निकाल बाहर कर दिया। लगता है, यज्ञ-संस्कृति के विरोध का मुख्य कारण उसमें होने वाला पशुवध था। अपमानित और क्रुद्ध पर्वतक की नील तमालवन में सालंकायण विप्र से भेंट होती है। वह एक शिलातल पर बैठा हुआ पेड की छाँव में अपवित्र शास्त्र पढ़ रहा था। वास्तव में वह पूर्व जन्म का मधुपिंगल था, जिनका विवाह बुआ की लड़की सुलसा से होनेवाला था। परन्तु राजा सगर का मंत्री झूठे सामुद्रिक शास्त्र की रचनाकर, उसे लक्षणहीन बताकर, सगर से सुलसा का विवाह करवा देता है। हताश मधुपिंगल जैन मुनि बन जाता है। बाद में वस्तुस्थिति मालूम होने पर वह प्रतिशोध की भावना से प्राण त्याग कर स्वर्ग में असुरेन्द्र का वाहन बनता है। सगर से बदला लेने के लिए वह झूठी श्रुति का पाठ करता हुआ साथी की खोज में है। सालकायण पर्वतक को पूर्व जन्म का गुरुभाई बताकर कहता है: मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, मैं चाहता हूँ कि तुम्हे यह विद्या सौंपकर निश्चिन्त हो जाऊँ—

हउं कंचुइ अज्जु परइ मरमि
णियविज्जइ पइं जि अलंकरमि। (69/29)

पर्वतक उसका शिष्य बन जाता है। सालंकायण कपटनीति और मंत्रशक्ति से राजा सगर और उसकी पत्नी सुलसा को यज्ञ में होम कर अपना बदला चुका लेता है। इस प्रकार व्यक्तिगत रागद्वेष के कारण यज्ञों की हिंसा और भी विकृत हो गई। नारद अयोध्या पहुँचकर इसका विरोध करता है। उसका तर्क है कि यदि ऐसा वेद, जो पशु मारने, हड्डियाँ चूर-चूर करने, चमड़े को छेदने-भेदने का विधान करता है, प्रशस्त है और ऋषियों के द्वारा देखा गया है, तो खड्ग (गेंडा) वेद क्यों नहीं? कुविवेकी! जा जा, हट यहाँ से।···

"वणयरइं मारंतु अट्ठियइं चूरंतु
चम्माइं छिदंतु चम्माइं भिदंतु।

इसिविट्ठु सुपसत्थु जइ वेउ परमत्थु ।
तइ खग्गु किं णेय, जज्जाहि कुविवेय ।" (69/32)

वेद मूलतः ज्ञान को कहते है, वह जिस ग्रथ मे हो वह भी वेद कहा जाता है। नारद का कहना है कि 'वेद' हिंसामूलक नही हो सकता। उनका दूसरा तर्क यह है कि यदि 'वेद' पुरुषकृत नहीं है, तो प्रश्न उठता है कि वर्ण (क ख ग घ ङ. आदि) आकाश में उत्पन्न होते है या मनुष्य के मुख में ? यदि आकाश में स्फुरित होते हैं तो अक्षर कहाँ ? बिन्दु कहाँ ? अर्थ कहाँ और छन्द कहाँ ? जिसमें मन ने प्रयत्न किया है, ऐसे मनुष्य के मुख के बिना उक्त चीजें (अक्षर, बिन्दु आदि) पैदा नही हो सकते। कहाँ कार्य और कहाँ कारण ? कहाँ ज्ञान और कहाँ ज्ञेय ? कहीं आकाश मे कमल हो सकता है ? कहीं निरूप में शब्द हो सकता है ? अरे दूसरों का मांस निगलनेवाले द्विज (सभी नहीं) वेद में हिंसा कैसे ?

"जई पोरिसेओ वि, णउ होइ भणु तो वि ।
वण्णउब्भूणि गयणि किं फुरइ णरवयणि ।
अक्खरइं कहिं बिंदु कहिं अत्थु कहिं छंदु ।
कय मणपयत्तेण, विणु पुरिसवत्तेण ।
कहिं हेउ कहिं वेउ, कहि णाणु कहिं णेउ ।
कहिं गयणि अरविंदु णीरूवि कहिं सद्दु ।।" (69.32)

नारद का उक्त तर्क वस्तुतः पुष्पदन्त का तर्क है जो एक भाषा वैज्ञानिक तर्क है। 'वेद' उच्चरित या लिखित ज्ञान का नाम है जो वर्णों (स्वरों और व्यंजनों) वाला है, वर्ण (ध्वनि) आकाश मे नही, मनुष्य के मुंह में ही स्फुटित होते है। वे अपने आप नही होते, स्थान और प्रयत्न के योग से ध्वनि की उत्पत्ति मानवमुख में होती है। (पुरुषवत्रेण)। मनुष्यमुख से ध्वनि के उच्चारण के पूर्व मन प्रयत्न करता है। भाषा का आधार ध्वनि है। ध्वनि के उत्पन्न होने की उक्त व्याख्या ध्वनि-उत्पत्ति की पुष्पदन्त की भाषा व्याख्या से पूरी मेल खाती है—

"आत्मा बुद्धया समेत्यर्थान्, मनो युङ्क्ते विवक्षया ।
मनः कायाग्निमाहान्त स प्रेरयति मारुतम् ।।"

अर्थात् आत्मा बुद्धि से अर्थों को इकट्ठा करती है और बोलने की इच्छा से मन को प्रेरित करती है। मन कायाग्नि को उद्बुद्ध करता है, वह हवा (प्राणवायु) को प्रेरित करता है। उससे स्वर पैदा होता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा अभिव्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया है। पुष्पदन्त का तर्क है कि वेद चाहे लिखित हों या उच्चरित, अक्षरात्मक होने से वह पौरुषेय है। कहने का अभिप्राय यह कि धर्म का निर्णायक तत्त्व मनुष्य का विवेक है। धर्म का काम धारण करना है। जो चेतना का संहार करनेवाला हो, वह धर्म नहीं हो सकता।

"होई अहिंसइ धम्मु
हिंसइ पाउ णिरुत्तउं"

(महापुराण 69/30)

## मनुष्य की पवित्रता की कसौटी

मनुष्य की पवित्रता उसके आचरण की पवित्रता है। "यदि गंगा का जल पवित्र है तो वह मल-मूत्र क्यों बनता है ? गंगा का स्नान यदि पापों का हरण करनेवाला है तो फिर मछलियों को मोक्ष क्यों नहीं होता ? यदि मिट्टी देह में लगाने से अंधकार दूर होता है तो सुअर को स्वर्ग विमान मे होना चाहिए ? यदि मृगचर्म धर्म से उज्जवल है तो मृग समूह को दुनिया में श्रेष्ठ होना चाहिए ? इसलिए जो द्विज मास खाता है, वह श्रेष्ठ नहीं हो सकता। यदि दूब (दर्भ) से धर्म होता है तो मृगकुल धरती मे क्यों भटकता फिरता है ? वह रात दिन घास चरता है, फिर इन्द्र के विमान में क्यों नहीं प्रवेश करता ? गाय या काकपंख के स्पर्श से अथवा सोकर उठने पर घी देखने से यदि पाप नष्ट होते हैं और लोग प्रवर (देव/बड़े) बनते हैं तो बैलों और कौओं को स्वर्ग में देव होना चाहिए ? निष्कर्ष यह कि मनुष्य की पवित्रता की कसौटी हिंसक कर्मकाण्ड नहीं बल्कि दूसरे को अपने समान समझना है—

'जो परु अप्पाणउ समु गणइ'

## दूती प्रसंग और नारी मूल्य

मारीच के परामर्श पर, रावण अपनी बहन चन्द्रनखा को सीता के पास दूती बनाकर भेजता है। वाराणसी के निकट चित्रकूट वन में सीता को देखकर पहले तो विद्याधारी चन्द्रनखा सोचती है कि सीता मान को चूर-चूर करने वाली उर्वशी, गौरी, तिलोत्तमा और रंभा से भी अधिक रूपवती है, वह काम की मल्लिका है। यह विचारती हुई वह शीघ्र बुढ़िया बन जाती है और युवतियों का मनोरंजन करने लग जाती है। एक रानी पूछती है—"तुम कौन हो ! किस लिए यहाँ आई ? क्या देख रही हो ? चित्रलिखित की तरह क्यों रह गई हो।" उत्तर में दूती कहती है—"मैं यहाँ के वनपाल की माँ हूँ। यह बताओ कि पूर्वभव मे तुमने क्या व्रत किया था जिससे तुम्हें यह रूपराशि मिली ? मैं उस व्रत को करना चाहती हूँ।" यह सुनकर सीता ने उसे डाँटा, "तुम स्त्रीत्व क्यों चाहती हो ? यह तो सबसे खराब है। रजस्वलाकाल मे वह चंडाल की तरह है। उसे कभी अपने घर का स्वामित्व नहीं मिलता। किसी एक कुल में उत्पन्न होती है और बड़ी होने पर किसी दूसरे के द्वारा ले जाई जाती है। स्वजन के निधन पर आठ-आठ आँसू बहाती है। जब घर में कोई मंत्रणा की जाती है तो कोई उससे नहीं पूछता। जब तक वह जीती है वह परवश जीती है। फिर उसे जैसा भी पति (अभागा, दुष्ट, दुर्गन्धयुक्त, दुराशयी, अंधा, बहरा, पागल, गूंगा, असहिष्णु, निर्धन और कुटिल) मिले उसी को स्वीकारना पड़ता है। उधर चाहे चक्रवर्ती हो या इन्द्र, कुलगुणधारी स्त्री होकर उसे पिता-तुल्य मानना चाहिए। अपनी कुल मर्यादा का उल्लंघन करना ठीक नही। इस नारी जीवन से क्या ? विधवा पन में सिर घुटाओ और तपश्चरण से स्वयं को दण्डित करो। मूक बचपन में पिता रक्षा करता है, जवानी में पति रक्षा करता है, उसी प्रकार बुढ़ापे में बेटा रक्षा करता है जिससे वह कुल में कलंक न लगाए। उसका घूमना-फिरना दूसरों के अधीन है। घर यानी सोने और खाने के जेलखाने से महिला की मुक्ति नही। बुढ़ापे के समय बुड्ढी होने पर जो महिलापन अत्यन्त अभागा होता है, उसमें आग लगे, वह तुमने क्यों मांगा ?" सीता की यह प्रतिक्रिया सुनकर दूती का मुख स्याह हो जाता है। वह समझ जाती है कि सीता के चरित्र का खंडन संभव नही। इसके दृढ़ संकल्प के सामने मेरी धूर्तता नहीं चल सकती। वह नौ दो ग्यारह हो जाती है। यह तो हुआ एक पक्ष। उक्त कथन का दूसरा पक्ष यह है कि इसमें मध्ययुगीन भारतीय नारी (कुलीन) की स्थिति और पीड़ा की यथार्थ अभिव्यक्ति तो है परन्तु उसका समाधान आध्यात्मिक है। (महापुराण 72/22)

## रावण का सामतवादी दृष्टिकोण

प्रेम प्रसंग में बहन से बढ़कर विश्वसनीय दूती दूसरी नहीं हो सकती, हालांकि सभी बहनें दूती नहीं होतीं। रावण चन्द्रनखा की बात भी नहीं मानता यद्यपि वह कहती है कि चाहे रागद्वेष जिनेन्द्र को नष्ट कर दे परन्तु तुम सीता जैसी सती का उपभोग नहीं कर सकोगे।" रावण का उत्तर है, "जो अच्छा लगे उसे अवश्य वश में करना चाहिए। क्या सांप के भय से नागमणि को छोड़ दिया जाए? वह सीता के सतीत्व में विश्वास नहीं करता। उसका तर्क है कि सज्जन की सज्जनता, पुरिष की प्रभुता, पहाड़ की हरियाली और सती का सतीत्व, दूर तक रहते हुए ही सुनने में अच्छे लगते हैं। पास आने पर वे तार-तार खण्डित दिखाई देते हैं—

"अवसु वि वसि किज्जइ जं रुच्चइ,
किं विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ
अलसहु सिरिदूरेण पवच्चइ।
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु,
गिरिमसिणत्तणु सइहि सइत्तणु।
दूरयरत्थु सुणंतहं चंगउं,
पासि असेसु वि वरिसियभंगउं।"
(महापुराण 71/21)

सीता को देखकर रावण की प्रतिक्रिया है कि जो ऐसे स्त्रीरत्न का भोग नहीं करता उसे घरबार छोड़कर मुनि होकर वन में चले जाना चाहिए।

रावण जब सीता से कहता है: "राम-लक्ष्मण की बात छोड़ो, दशरथ भी मेरा दास था। जब सिर का चूड़ामणि उपलब्ध हो, तो पैरों के आभूषण का क्या करना? नौकर की स्त्री को देह का क्या गौरव? खड़ाऊँ को मणिमण्डन से क्या? मेरी दासी होते हुए भी तू महादेवी हो सकती है। आती हुई लक्ष्मी को हाथ मत दे!" तो इसमें नारी के प्रति उसके सामंतवादी दृष्टिकोण की स्पष्ट झलक मिलती है।

## कवि और प्रकृति का आक्रोश

स्वर्णमृग दिखाकर रावण जब सीता का अपहरण करता है तो पुष्पदंत का कविहृदय सीता के चरित्र की दृढ़ता की तुलना उस सुभट से करता है जो अंतिम क्षण तक अपने परिकर को नहीं छोड़ता (72/7)। पति के वियोग से अस्तव्यस्त सीता विधिवश, रावण के हाथ से छूटकर पहाड़ी प्रदेश में स्खलित हो जाती है, उस समय वह ऐसी प्रतीत होती है, जैसे स्वर्णनिर्मित पुतली हो—

"णं वाउल्लिय कामघडिय।" (72/7)

फिर बेहोश होने पर भी उसका हाथ परिधान से नहीं हटता। जार (रावण) की चंचल दृष्टि उस पर कैसे घूम सकती है?

"परिहाणु ण तो वि ताहि ढलइ,
चल जार दिट्ठि कहिं परिघुलइ।"

फिर भी परस्त्री का लोभी वह दुष्ट वहाँ आ धमकता है। गाँव का कुत्ता कभी लज्जित होता है ?

अब प्रकृति की प्रतिक्रिया देखिए :

"गिरते हुए, अपने लाल कोपलों से वृक्ष रो रहा है कि हे रावण, तू दूसरे की स्त्री क्यों लाया ? वन अपनी शाखाएँ उठाकर कह रहा है कि हाय नारीरत्न का मरण आ पहुँचा ! भ्रमर कान के पास गुन-गुना कर कहता है, हे स्वामी, यह अनुचित है। रावण परस्त्री के सुख की इच्छा करता है यह देखकर शुक टेढ़ी नजर करके चला जाता है। जैसे वह भी रावण से उद्विग्न हो। कोयल भी विलाप करती हुई कहती है— आदरणीय रावण, तुम सीता से तभी रमण करो यदि तुम अपना अपयश मुझ जैसा काला चाहते हो। लोक-प्रिय हंसावलि कहती है—तुम्हारी कीर्ति मेरे समान सफेद है। इस स्त्री का उपभोग कर तुम उसे मैला मत करो और लंकापुरी के ऐश्वर्य को नष्ट मत करो। लाल-लाल कोपलों वाला आम्रवृक्ष ऐसा मालूम हो रहा है, मानो राजा के अन्याय की ज्वाला से आरक्त हो उठा हो—

"रावण, किं आणिय परजुवइ
तरु चुयसिण्हंसुएहिं रुवइ।
वणु णाइं करइ साहुद्धरणु
हा पत्तउं णारिरयणमरणु।
अलि कण्णासण्णउ रुणुरुणइ
पहु एउं अजुत्तु णाइं भणइ।
इच्छइ दससिरु पररमणि सुहं
कणइल्लउ बंकि वि जाइ मुहं।
णं सो वि णिवहु उव्वेइयउ।
कोइलु बिलवंतु व आइयउ।
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ
बइवेहि भडारा रमहि तइ।
हंसावलि लवइ व लोयपिय
मइं जेही तेरी कित्ति सिय।
मा मइलहि माणिवि एह तिय
मा णासहि लंका उरिहि सिय।
अंबउ लोहियपल्लवललिउ
णं णिव अण्णायसिहि जलिउ। (72/8)

सत्तापुरुष द्वारा नैतिक मूल्यों की खुली अवमानना पर कवि केवल आक्रोश व्यक्त कर सकता है, या कभी-कभी उसकी छाया प्रकृति में देखता है, जैसा कि हिन्दी की नई कविता में हो रहा है।

## सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ

ग्यारह सन्धियों का काव्य होते हुए भी पुष्पदन्त का यह रामायण काव्य (पोम चरित) भाषा और शैली की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। उसमें सूक्तियों और लोकोक्तियों की भरमार है। उदाहरण के लिए कुछेक सूक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

प्रजापति राजा कहता है—जो व्यक्ति अज्ञानी और न्याय का विध्वंश करनेवाला है, वह अपने को राज्यधर क्यों कहता है ?

× × ×

अपनी प्रशसा करना गुण का दूषण है। मिथ्यादर्शन तप का दूषण है। नीरस प्रदर्शन नट का दूषण है। व्याकरण रहित काव्य कवि का दूषण है। गुण्डों और दुष्टों को पालना धन का दूषण है। द्विविधा-मरण व्रत का दूषण है। जोर से बोलना युवती का दूषण है। चुगली और विच्छिन्न बुद्धि पंडित का दूषण है। राजा का मूर्ख और आलसी होना लक्ष्मी का दूषण है। पाप करना और खोटे मार्ग में चलना जनता का दूषण है। अकारण हँसना गुरु का दूषण है। बेटे का दुर्व्यसनी होना कुल का दूषण है। (69/7)

× × ×

"अइरहसें किज्जइ कज्जरइ
जा सा णिड्हइ ण कासु मइ।" (69/9)

—जो कार्य की गति अति शीघ्र की जानेवाली है, वह किसे दाह उत्पन्न नहीं करती ?

× × ×

"गुरु चवइ एउ किर कित्तडउं
महु तिहुयण सरिसव जेत्तडउं।" (69/19)

—मन्त्री कहता है—यह तो कितना है, मेरे लिए तो यह त्रिभुवन सरसों के बराबर है।

× × ×

"जहिं कंकु रायहंसु व गणिउ
एरंडु कप्प रुक्खु व भणिउ।
जहिं गुणवंतु वि दोसिहल्ल समु
तहिं जे विरयंति वयणविरमु।" (72/11)

—जहाँ बगुले को राजहस समझा जाता हो और एरंड को कल्पवृक्ष कहा जाता हो, जहाँ गुणों को दोषवाला कहा जाता हो वहाँ जो चुप रहते हैं, वे विद्वान हैं।

× × ×

"वारिज्जइ ढुक्की केण णियइ।" (73/19)

—आई हुई नियति को कौन टाल सकता है ?

× × ×

"हा कट्ठु-कट्ठु कणए जडिउ
माणिक्कु अमेज्झमज्झि पडिउ।" (74/11)

—खेद है कि काठ को सोने से जड़ दिया गया। माणिक्य गन्दी जगह गिर गया।

× × ×

"को मग्गइ रयंभओ एलियाण दुग्गं।" (74/12)

—कौन पापान्ध (आत्मरक्षा के लिए) गाड़रों का दुर्ग चाहेगा ?

× × ×

"को रंडकहाणियाउ सुणइ" (74/12)

—कौन रांडों की कहानियाँ सुनता है ?

"धुत्तहिं किज्जइ कालउ पंडरु ।" (69/33)

—धूर्तों द्वारा काला पीला किया जाता है।

करुणान्त काव्य

रामायण का अन्त करुण और शोकपूर्ण है। रावण के निधन पर, रनिवास इन शब्दो मे आर्तनाद कर उठता है—

"हा भत्तार हार मणरंजण,
हा भालयल-तिलय णयणंजण।
हा करफंसजणियरोमंचुय,
आलिंगणकीलाभूसियभुय।
पइं विणु जगि दसास ज जिज्जइ,
त परदुक्खसमूहु सहिज्जइ।
हा पियपम भणतु सोयायरु,
कदइ णिरवसेसु अतेउरु।" (78/22)

विभीषण का शोक भला किसके हृदय को द्रवीभूत नहीं कर देगा! वह अपनी छाती पीट-पीटकर रोता है—

"हाय मैने यह क्या भयकर काम किया! अब सरस्वती शास्त्र की रचना नही कर सकती, अब कीर्ति दसो दिशाओ मे नही घूमेगी। विजयलक्ष्मी आज विधवापन को प्राप्त हो गई। शक्ति का प्रवर्तन आज समाप्त हो गया। अब इन्द्र डरकर नही चलेगा। अब चन्द्र अपनी कांति के साथ होगा। अब सूरज आकाश मे खूब चमकेगा। आज फणीन्द्र आराम से सोएगा।" (78/23)

रामायण : कवि का प्रतिनिधि काव्य

जैसाकि कहा जा चुका है 'महापुराण' कई चरित-काव्यों का संकलन ग्रन्थ है। 'नाभेय चरिउ' पुष्पदंत का बृहद् चरित-काव्य है, उसमें उनकी प्रतिभा पूर्ण निखार पर है। परन्तु दूसरे चरित-काव्यों मे भी उनकी सृजनात्मकता और उसके तत्त्वो का समावेश है।

जब पुष्पदन्त कहते है कि 'रामायण या पोमचरित (पद्मचरित) को कहते हुए मैं अपनी बुद्धि के विस्तार मे कमी नही करूँगा और मंत्री भरत के अभ्यर्थित वचन का निर्वाह करूँगा', तो इसका अर्थ है कि रामायण के वर्णन मे वह अपनी प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रयोग करेंगे। एक बार फिर, कवि रामकथा के पूर्व कवियो का स्मरण करता है और आत्म-विनय एव दुर्जननिन्दा के साथ विद्वत्-सभा से क्षमायाचनापूर्वक 'रामकथा' प्रारम्भ करता है। वह यह भी कहता है कि जब सुकवि (कपि और कवि) द्वारा प्रकाशित मार्ग पर चलते हुए रावण भी चौक जाता है, तो राम के धम्मगुण (धर्म और धनुष के गुण) के शब्द को सुनकर, अमुख दुर्जन कहाँ पहुँच सकता है? भंगिमा से कवि बता रहा है कि वह पूर्व कवियों द्वारा प्रकाशित काव्य-मार्ग पर चलकर ही रामायण की रचना कर रहा है। वह यह भी कहता है कि "मैं तो जिनवर के चरण-कमलो का भ्रमर हूँ। मेरे द्वारा गुनगुनाया यह यद्यपि निरर्थक है, फिर भी यह सुनने में कोमल, कानो को सुख देनेवाला और मानिनी स्त्रियो और शिशुओं के मुखो को विकसित करनेवाला है।"

# विषय-सूची

**बहत्तरवीं संधि** 84-95

पुष्प विमान का वर्णन । चित्रकूट और सीता के यौवन का तुलनात्मक वर्णन । राम की प्रशंसा । स्वर्णमृग की चेष्टाएँ । राम का उसका पीछा करना । रावण का राम के रूप में छल से सीता का अपहरण । लंका के लिए प्रस्थान । सीतादेवी की प्रतिक्रिया । वन्य-प्राणियों और प्रकृति की प्रतिक्रिया । विद्याधरियों का सीतादेवी को फुसलाना । सीता का कड़ा उत्तर । सीता की प्रतिज्ञा कि लेखपत्र में प्रिय की खबर मिलने पर ही वह भोजन ग्रहण करेगी । लक्ष्मण को चक्र की प्राप्ति ।

**तिहत्तरवीं संधि** 96-125

स्वर्णमृग की खोज में राम की वापसी और सन्ध्या का आगमन । सन्ध्या का वर्णन । सीता की खोज । वन-जन्तुओं और पौधों से सीता के बारे में पूछना । राम को सीता का उत्तरीय मिलना । दशरथ द्वारा राम को सीतापहरण की सूचना । दो विद्याधरों का आकर बालि का वृतान्त कहना । सिद्धकूट जिनालय में जिनेन्द्रदेव की वन्दना । नारद का भविष्य-कथन । राम द्वारा सुग्रीव को सहायता का वचन देना । हनुमान् का दौत्य वर्णन । समुद्र का वर्णन । त्रिकूट पर्वत का वर्णन । लंका का वर्णन । सिंहासन पर आरूढ़ रावण का वर्णन । हनुमान् का भ्रमर बनकर रावण को समझाना । विद्याधरियों और वन की शोभा का वर्णन । वनश्री और सीता की कान्तिविहीन श्री की तुलना । हनुमान् का आक्रोश और प्रतिक्रिया । रावण की काम-अवस्थाओं का चित्रण । रावण का सीता के सामने डींगे मारना । रावण को मंदोदरी द्वारा समझाना । मंदोदरी को वास्तविकता का पता चलना । सीता की प्रतिक्रिया । हनुमान् की सीता से भेंट । अंगूठी और लेख का समर्पण । हनुमान् द्वारा अपना परिचय । अभिज्ञान के प्रमाण देना ।

**चहुत्तरवीं संधि** 126-141

लंका से हनुमान् की वापसी और राम से निवेदन । राम द्वारा हनुमान् की प्रशंसा । आक्रमण की तैयारी । पचांग मन्त्र का विचार । फिर से दूत भेजे जाने का निश्चय । पुनः हनुमान् को दूत बनाकर भेजा जाना । हनुमान् को राम द्वारा समझाना कि विभीषण से किस प्रकार मिलना है । हनुमान् का लंका में प्रवेश । लंका की वनिताओं पर उसके रूप की प्रतिक्रिया । विभीषण से भेंट । विभीषण द्वारा रावण से हनुमान् की भेंट कराना । रावण का हनुमान के साथ अभद्र व्यवहार । हनुमान् द्वारा सीता की वापसी पर जोर देना । रावण के गर्वोक्ति पूर्ण वचन । आवेगपूर्ण उत्तर-प्रत्युत्तर । हनुमान् की चुनौती ।

**पचहत्तरवीं संधि** 142-153

हनुमान् की वापसी और दौत्य कार्य की रपट राम के सामने प्रस्तुत करना । बालि के दूत का आगमन । राम की दुविधा । राम का बालि के पास दूत भेजना । बालि का संधि करने में इंकार कर देना । बालि का हनुमान् को फटकारना । घमासान लड़ाई । राम की जीत । किष्किंधा नगरी में प्रवेश । किष्किंधा नगरी का वर्णन । शरद् ऋतु का आगमन । राम द्वारा विद्याओं की सिद्धि ।

# महाकइ-पुप्फयंत-विरइयउ महापुराणु

## अट्ठसट्ठिमो संधि

जो तित्थंकरु वीसमउ वीसु विसयविसवेयणिवारणि ॥
जोईसरु जोइहिं णमिउ[1] जो बोहित्थु भवण्णवतारणि ॥ ध्रुवकं ॥

1

जो दिव्ववाणिगंगापवाहु जो रोस हुयासणवारिवाहु ।
जो मोहमहाघणगंधवाहु जो मोक्खणयरवहसत्थवाहु[2] ।
तणुगंधें जो सनु चंदणासु पउणइ जो तेएं चंदणासु ।
जो पणमिउ[3] रामें लक्खणेण धम्मेण अहिंसालक्खणेण ।
जणु जेण णिहिउ सग्गापवग्गि जो सरिसचित्तु रिउबंधु वग्गि ।
जे[4] मिच्छतुच्छधीरंगरत्त दप्पिट्ठ दुट्ठ तिट्ठागरत्त ।
जे घुम्मिरवच्छ[5] पीयासवेण जे बद्धा गुरुकम्मासवेण ।
जे कयलालस मासासणेण जे विरहिय परहियसासणेण[6] ।
जे णारिहि वस[7] आया रएण ते मुक्क जासु आयारएण[9] ।
सुद्धोयणि सुरगुरु कविल भीम वयणेण विणिज्जिय जेण भीम ।

---

## अड़सठवीं संधि

जो बीसवें तीर्थंकर हैं, जो विषयरूपी विष के वेग को दूर करने के लिए गरुड़ हैं, जो योगीश्वर योगियों के द्वारा प्रणम्य हैं और जो संसार रूपी समुद्र के संतरण के लिए जहाज हैं।

(1)

जो दिव्यवाणी रूपी गंगा के प्रवाह हैं, जो क्रोध रूपी अग्नि के लिए मेघ हैं, जो मोह रूपी महामेघ के लिए पवन हैं, जो मोक्ष रूपी नगर-पथ के लिए सार्थवाह हैं, जो शरीर की गन्ध से चन्दन के समान हैं, जो अपने तेज से चन्द्रमा का तिरस्कार करने वाले हैं, जो राम और लक्ष्मण के द्वारा प्रणम्य हैं, जिसने अहिंसा लक्षणवाले धर्म के द्वारा लोगों को स्वर्ग और मोक्ष में स्थापित किया है, जो शत्रुवर्ग और मित्रवर्ग में समान चित्त हैं; (ऐसे भी लोग हैं) जो मिथ्यात्व और ओछी (सांसारिक) बुद्धि के राग में अनुरक्त हैं, गर्वीले, दुष्ट और तृष्णा रूपी विष से युक्त हैं, मद्य पीने के कारण जिनकी आँखें घूम रही हैं, जो भारी कर्मों के आस्रव से बँधे हुए हैं, जो लालसा करने वाले हैं, जिसमें एक माह में आहार ग्रहण किया जाता है, ऐसे तथा दूसरों का कल्याण करने वाले जिन शासन से, जो रहित हैं, जो राग से नारियों के वचनों के अधीन हैं, वे भी उन मुनिसुव्रत तीर्थंकर के आचार के अनुष्ठान से मुक्त हुए हैं। जिन्होंने अपने भयंकर शब्दों से गौतम कपिल और भीम को जीत लिया है। ऐसे मुनिसुव्रत के समान दूसरा कोई नहीं है।

---

(1) 1. AP णविउ। 2. A °वहे सत्थ°। 3. AP पणविउ। 4. AP जो। 5. AP घुम्मिरच्छि। 6. AP add after this: जे विरहिय (P रहिय) सया वि आयारएण। 7. A वसु जाया। 8. A जे मुक्क। 9. AP add after this: तेलोइयसुआयारएण।

घत्ता—देउ मणेण जि आहरइ सुहुमइं पोग्गलाइं रसरिद्धइं ।।
अयणमेत्तु जीविउ थियउ पयडइं जायइं कालहु चिंधइं ।।2।।

3

ता तहु चरित्तु णिच्चप्फलेण[1] धणयहु भासिउ आहंडलेण ।
इह भरहि मगहरायगिहि[2] दिसु पुरि वसइ राउ णामें सुमित्तु ।
जिणपायपोमजुयरेणुलित्तु हरिवंसकेउ कासवसुगोत्तु ।
अप्पडिमसत्ति णं सिद्धमंतु किं वण्णमि सोमाएविकंतु ।
एयहं णंदणु जिणु सोक्खहेउ होही प्राणयचुउ[3] देवदेउ ।
भो धणय धणय कल्लाणमित्त एयहं दोहं मि करि पुरि विचित्त ।
ता रइय णयरि दविणाहिवेण दिप्पंतें तवणिज्जें[4] णवेण ।
पासायपंतिरहचच्चरेहिं गयणयललग्गवरगोउरेहिं[5] ।
सरिसरणंदणवणजिणघरेहिं रक्खिज्जंती णियंकिकरेहिं[6] ।

घत्ता—तहिं सँउहहु[7] सत्तमि तलि घणथणमंडलहारविलंबिणि ।।
सुहुं सोवंती सयणयलि पेच्छइ सिविणय रायणियंबिणि ।।3।।

4

मत्तसिंधुरं सियधुरंधुरं ।
हरिणराययं [1]लच्छिकाययं ।

---

घत्ता—वह देव, मन से रस से समृद्ध सूक्ष्म पुद्गलों का आहार करता । जब उसका छह माह जीवन शेष रह गया, तो उसके अंत समय के चिह्न प्रकट होने लगे । ।।2।।

(3)

तब उसके चरित का कथन निश्चपल इन्द्र ने कुबेर से किया—"इस भारत के मगध देश की राजगृह नगरी में सुमित्र नाम का राजा निवास करता है, जिनवर के चरण कमलों की धूल का प्रेमी, हरिवंश का ध्वज और कश्यप गोत्रीय । अप्रतिम शक्ति जो मानो सिद्धमंत्र हो । सोमदेवी के उस स्वामी का मैं क्या वर्णन करूं । प्राणत स्वर्ग से च्युत होकर वह देवदेव, इन दोनों का सुख का कारण जिनपुत्र होगा । हे कल्याणमित्र, धनद-धनद इन दोनों के लिए तुम पवित्र नगरी की रचना करो ।" तब कुबेर ने चमकते हुए नए स्वर्ण से नगरी की रचना की । प्रासाद पंक्तियों, रथ-चौरस्तों, आकाशतल को छूने वाले श्रेष्ठ गोपुरों, नदियों, सरोवरों, नन्दनवनों और जिन मंदिरों से अपने अनुचरों से वह नगरी रक्षित थी ।

घत्ता—उस नगर में प्रासाद के सातवें भाग पर, जिसके सघन स्तन मंडल पर हार झूल रहा ऐसी उस रानी ने शयनतल पर सुख से सोते हुए स्वप्नमाला देखी ।।3।।

(4)

मतवाला गज, श्वेत बैल, सिंह, लक्ष्मीमूर्ति, दृष्टि के लिए सुखद पुष्पमाला, चन्द्रविम्ब,

---

(3) 1. AP णिच्चफलेण । 2. A °रायगिहु । 3. AP पाणयचुउ । 4. P तवणिज्जं तवेण । 5. P °यले लग्ग° । 6. P णियकिंकरेहिं । 7. AP सउहहिं ।

(4) 1. A लच्छिकामयं ।

तिहुयणि ण कोइ दीसइ समाणु    सण्णाणु जासु आयासमाणु।
णिच्चल परिपालिय सुव्वयासु    पणवेप्पिणु तहु[10] मुणिसुव्वयासु।
घत्ता—तहु जि कहंतरु वज्जरमि जेण विमुच्चमि दुग्गइदुक्खहु ॥
अट्ठ वि कम्मइं णिट्ठविवि देहु मुएप्पिणु गच्छमि मोक्खहु ॥1॥

2

एत्थेव य कयकूरारिकंप    भरहंगदेसि पुरि अत्थि चंप।
तहिं असिजलधारइ हरियछाउ    जगु जेण कियउ[1] हरिवम्मराउ[2]।
सो एक्कहिं दिणि उज्जाणु पत्तु    दिट्ठउ अणंतवीरिउ विरत्तु।
अणगार णाणि परमत्थसवणु    वंदेप्पिणु णिसुणिवि धम्मसवणु।
सत्तंगसंगु सुइ णिहिउ रज्जु    अप्पणु पुणु कियउं परलोयकज्जु।
तत्तउं तउ सहुं बहुपत्थिवेहिं    णिग्गंथमग्गपत्थियसिवेहिं।
होइवि एयारहअंगधारि    अरहंतपुण्णपब्भारकारि।
तणुचाएं[3] मुउ हुउ प्राणइंदु[4]    हरिवम्मु सकंतिइ जित्तचंदु।
तहु आउ वीससायरइं तेत्थु    तणु भणु विहत्थि पुणु तिउणु हत्थु।
सियलेसु चित्तपडिचारवंतु    अवहीइ णियइ पंचमधरंतु।
णीससइ देउ दहमासएहिं    पुणु वीसहिं वरिससहसगएहिं[5]।

---

जिनका सम्यग्दर्शन आकाश के समान अनंत है, जिन्होंने निश्चित रूप से सुव्रतों का परिपालन किया है, ऐसे उन मुनिसुव्रत को प्रणाम कर—

घत्ता—उन्हीं के कथांतर को कहता हूँ, जिससे मैं दुर्गति के दुःख से विमुक्त हो सकूँ, आठों कर्मों का नाश कर और शरीर का त्याग कर मोक्ष पा सकूँ ॥1॥

(2)

इसी भरत क्षेत्र के अंग देश में चंपा नाम की नगरी है। उसमें क्रूर शत्रुओं को कंपन उत्पन्न करने वाला हरिवर्मा नाम का राजा था। जिसने असिरूपी जलधारा से विश्व को कान्तिहीन बना दिया था ऐसा वह एक दिन उद्यान में पहुँचा, वहाँ उसने अनंतवीर्य नामक विरक्त मुनि को देखा, जो परिग्रह से रहित, ज्ञानी तथा वास्तविक श्रमण थे। उनकी वन्दना कर और 'धर्म' का श्रवण कर पुत्र को सप्तांग राज्य देकर उसने स्वयं अपना परलोक का काम साधा दिगम्बर मार्ग से जिन्होंने कल्याण की प्रार्थना की है ऐसे बहुत-से राजाओं के साथ उसने तप किया। ग्यारह अगों को धारण करते हुए, अरहंत के पुण्य का उत्कर्ष करते हुए शरीर छोड़कर, कान्ति में चन्द्रमा को जीतनेवाला वह हरिवर्मा प्राणत इन्द्र हुआ। वहाँ उसकी आयु बीस सागर थी। उसका शरीर तीन हाथ का था। श्वेत लेश्या से युक्त वह मनःप्रवीचार वाला था। अवधिज्ञान से वह पाँचवें नरक की भूमि तक देख सकता था। दस माह में वह श्वास लेता था तथा बीस हजार वर्ष बीतने पर—

---

10. P तुहु।

(2) 1. AP कयउ। 2. P हरिवम्मु। 3. A तणु चइवि मुउ। 4. AP पाणइंदु। 5. A वाससहाएहिं; P वाससहसगएहिं।

फुल्लदामयं   दिट्ठिकामयं ।
चंदबिंबयं   उययक्तंवयं ।
चंडकिरणयं   मीणमिहुणयं ।
कुंभजुयलयं   दलियकमलयं[2] ।
कमलवासयं   सुरहिवासयं ।
अमयमाणिहिं   अमरवारिहिं ।
सीहभूसणं[3]   दिव्वमासणं ।
सिहरसुंदरं   इंदमंदिरं ।
धुयधयालयं   विसहरालयं ।
णिहियतिमिरयं[4]   रयणणियरयं ।
कविलचलसिहं   जलियहुयवहं ।

घत्ता—इय जोइवि सिविणय सइइ सुत्तविबुद्धइ भासिउं दइयहु ।।
तेण वि तं तहिं[5] अक्खियउं जं फलु होसइ पुव्वविरइयहु ।।4।।

5

तुह कुच्छिहि इच्छियगुणमहंति   होसइ सुउ[1] तिहुवणणाहु कंति ।
सुरधणधारंचिइ रायगेहि   अच्छरहिं पसाहिइ देविदेहि ।
सावणतमबीयहि सवणरिक्खि   पंडुरु करि आयउ अंतरिक्खि ।
देविइ दिट्ठउ समुहारविंदि   पइसंतु संतु रयणिहि अणिंदि ।
हरिवम्मु राउ जो पाणइंदु[2]   सइगब्भवासि थिउ[3] सो जिणिंदु ।
आयउ वंदइ सयमेव इंदु   किर कवणु गहणु तहिं सूरचंदु ।

---

उदयकाल में आरक्त सूर्य, मीनयुगल, घटयुगल, जिसमें कमल विकसित हैं और जो सुरभि से वासित है ऐसा सरोवर, अमरों के द्वारा मान्य क्षीर समुद्र, सिंहों से भूषित दिव्य आसन, शिखरों से सुन्दर इन्द्रभवन, जिसमें ध्वज प्रकम्पित हैं ऐसा नागघर, अंधकार को नष्ट करने वाला रत्नों का समह, कपिल (भूरे या बदामी) रंग की चंचल ज्वालाओं वाली प्रज्वलित आग ।

घत्ता—इन स्वप्नों को देखकर, सोते से जागकर सती ने अपने पति से कहा । उसने भी, पूर्वोपार्जित पुण्य का जो फल होगा, वह उसे बताया ।।4।।

(5)

"इच्छित गुणों से महान् हे कान्ते, तुम्हारी कोख से त्रिभुवनस्वामी पुत्र होगा । राजगृह नगर के देवधन से अंचित, तथा अप्सराओं के द्वारा देवी की देह शुद्ध होने पर श्रावण कृष्णा द्वितीया के दिन श्रावण नक्षत्र में अंतरिक्ष से सफेद गज आया, देवी ने उसे अपने अनिंद्य मुख-कमल में रात में प्रवेश करते हुए देखा । हरिवर्मा राजा जो प्राणत स्वर्ग का इन्द्र था, वह जिनेन्द्र के रूप में सती के गर्भवास में आकर स्थित हो गया । आया हुआ इन्द्र स्वयं वन्दना करता है, फिर वहाँ सूर्यचन्द्र के बारे में क्या कहना ? नष्ट कर दिया है मोहजाल जिसने ऐसे मल्लिनाथ तीर्थंकर

---

2. A धरिकमलयं । 3. A सीहभूसियं । 4. A बिहिय°; P विहय° । 5. A तहु ।

(5) 1. A जिणु । 2. AP पाणइंदु । 3. P सो थिउ ।

गइ मल्लिदेवि हयमोहजालि चउपण्णलक्खवरिसंतरालि[4] ।
उप्पण्णउ णिउ सक्केण तेत्थु तं मेरुमहागिरिसिहरु जेत्थु ।
अहिसिंचिउ पंडुसिलायलग्गि घरु[5] आणिउ णिहिउ समाउअग्गि ।
आणंदें णच्चिउ कुलिसपाणि तहु वयणविणिग्गय दिव्ववाणि ।
सुव्वउ मुणिसुव्वउ भणिवि णाहु गउ णिययणिवासहु तियसणाहु ।
घत्ता— वड्ढइ देउ लहंतु पय लक्खणवंतु जणंतु सुहं जणि ॥
सालंकारु कंतिइ सहिउ[6] कव्वविवेउ णाइ वरकइयणि ॥5॥

6

पहु वीससरासणमियसरीरु पियवयणभासि गंभीरु धीरु ।
परिणयमऊरवरकंठवण्णु दहदहदहसहससमाउ वण्णु ।
सत्तद्धवरिससहसाइं[1] जाम थिउ किं पि बालकीलाइ ताम ।
दहपंचसहासइं धरित्ति भुंजिवि जोइवि करिवरहु वित्ति ।
आहारु ण गेण्हइ णेय चारु पइ णरविंदहु वज्जरइ चारु ।
करि पुव्वतालपुरि आसि राउ कुच्छियमइ जणियकुपत्तभाउ ।
बंभणहं दितु मणिकणयदाणु मुउ काणणि हुउ गउ गलियदाणु ।
सुंयरइ सल्लइपल्लवदलाइं सुंयरइ सीयलसरिसरजलाइं ।

के बाद, चौवन लाख वर्ष हो जाने पर उनका जन्म हुआ। इन्द्र उन्हें वहाँ ले गया कि जहाँ सुमेरु-पर्वत का शिखर था। पांडुशिला के अग्रभाग पर उनका अभिषेक किया गया। उन्हें घर लाया गया, और अपनी माता के सामने रख दिया गया। इन्द्र आनन्द से खूब नाचा, उसके मुख से दिव्य-वाणी निकली, नाथ को सुव्रत मुनिसुव्रत कहकर देवेन्द्र अपने निवास स्थान के लिए चला गया।

घत्ता—लक्षणयुक्त पद (चरण) लेते हुए, जनों में सुख उत्पन्न करते हुए, अलंकारों से युक्त तथा कान्ति से सहित देव उसी प्रकार बढ़ने लगते हैं जैसे श्रेष्ठ कविजन में काव्यविवेक बढ़ने लगता है ॥5॥

(6)

स्वामी का शरीर बीस धनुष प्रमाण सीमित था। वह प्रिय वचन बोलने वाले गंभीर-धीर थे। उनकी कान्ति तरुण मयूर के कण्ठ के रंग की थी। उनकी आयु तीस हजार वर्ष की थी। जब साढ़े तीन हजार वर्ष हुए, तब तक वह बाल क्रीड़ा में स्थित रहे। इस प्रकार पन्द्रह हजार वर्षों तक धरती का भोगकर; तथा गजवर की वृत्ति देखकर कि वह आहार नहीं करता है न तृणकमल लेता है, राजाओं के स्वामी वह यह सुन्दर बात कहते हैं कि पहिले यह हाथी तालपुर में अत्यंत खोटी बुद्धि वाला और अत्यंत कुपात्रभाव वाला राजा था। यह ब्राह्मणों के लिए मणि और सोने का दान देता था। मरकर वन में यह, जिसका मदजल गल रहा है, ऐसा हाथी हुआ।

4. AP add after this : वइसाहमासि पहु कसणपक्खि, दहमइ दिणि ससि थिइ सवणरिक्खि।
5. P थरि। 6. A कंतिसहिउ।
(6) 1. AP सत्तद्धसहसवरिसाइं।

सुंयरइ करिणीकरलालियाइं गिरिगेरुयरयउद्धूलियाइं ।
सुंयरइ सिसुमयगलकीलियाइं करतालवट्टहिंदोलियाइं ।
घत्ता—एंव कहेप्पिणु मुक्कु गउ गउ सो विंझहु कहिं मि सइच्छइ ।।
अग्गइ सयणहं परियणहं णरणाहेण पबोल्लिउ पच्छइ ।।6।।

7

जहिं णरणाह वि होंति गय कालेण हय ।
तहिं किं किज्जइ सिरिधरणु जिणतवचरणु ।
किज्जइ[1] काणणि[2] पइसरिवि थिरु[3] मणु धरिवि ।
सुररिसिहिं वि सो तहिं संथविउ सक्के ण्हविउ ।
विजयहु रज्जु समप्पियउ तिणु कंपियउं[4] ।
गउ सिवियइ अवराइयइ सुविराइयइ[5] ।
ओइण्णउ[6] जिणु णीलवणि तरुवेल्लिघणि ।
वइसाहइ दसमीदियहि णिच्चंदवहि[7] ।
सवणि[8] सहासें सहुं णिवहं जगबंधवहं ।
छट्ठुववासें तवु गहिउं अमरहिं महिउ ।
भिक्खहि मुणि गउ रायगिहु विच्छिण्णछिहु[9] ।
वसहसेणरायस्स धरि थिउ पुण्णभरि ।
जं पासुययरु लद्धु जिह तं भोज्जु तिह ।

यह, सल्लकी लता के पल्लवदल की याद कर रहा है, वहाँ के शीतल नदी-सरोवर के जलों की याद कर रहा है, वह याद कर रहा है पर्वत की गेरुरज से व्याप्त हथिनी के सूड़ों का लाड़; वह याद कर रहा है शिशुगजों की क्रीड़ाएं एवं सूंड और तालवृक्ष के आंदोलन।

घत्ता—इस प्रकार कहकर, उन्होंने गज को मुक्त कर दिया। वह अपनी इच्छा से विंध्याचल में कहीं भी चला गया। बाद में राजा ने स्वजनों और परिजनों के सामने कहा ।।6।।

(7)

जहाँ राजा भी समय के चक्र में पड़कर हाथी होते हैं वहाँ श्री को धारण करने से क्या ? जिनवर का तपश्चरण करना चाहिए, वन में प्रवेश कर और अपने मन को स्थिर कर। तब वहाँ लौकान्तिक देवों ने भी उनकी संस्तुति की। इन्द्र ने अभिषेक किया। राज्य को तिनका समझा, और विजय के लिए, सौंप दिया, अत्यंत शोभित अपराजित शिविका में बैठकर, वह गए। जिन, वृक्षों और लताओं से सघन नीलवन में उतरे, और वैशाख कृष्णा दसवीं के दिन (जब कि चन्द्रमा पथ से जा चुका था) श्रावण नक्षत्र में एक हजार जगबंधु राजाओं के साथ, छठा उपवास करके उन्होंने तप ग्रहण कर लिया। देवों ने उनकी पूजा की। स्पृहा से रहित वह भिक्षा के लिए राजगृह गए। वृषभराजा के पुण्य से परिपूर्ण घर में जाकर स्थित हो गए। जैसा प्राशुकतर भोजन

(7) AP करीइ। 2. A काणणु। 3. AP मणु थिरु। 4. AP कंप्पियउ। 5. A रुइराइयइ; K omits सुविराइयइ। 6. AP उवइण्णउ। 7. A णिच्चंदयहि। 8. A सवणसहासें। 9. A विच्छिण्णछुहु।

भुंजिवि पुणु तेत्थाउ गउ कयसुहिविजउ[10]।
खरतवतावें तत्ताहो[11] सुविरत्ताहो[12]।
णव झीणइं णिम्मच्छरइं संवच्छरइं।
आयउ पुणु तं तरुगहणु वम्महमहणु।
दिक्खारिक्खि पक्खि कहिए मासें सहिए।
णवमीदिणि चंपयहु तलि थिउ धरणियलि।
पोसहजुयलें गलियमलु हूयउ सयलु।
केवलविमलु अणंतयरु सुरखोहयरु।

घत्ता—कोमलकरयलघत्तियहि[13] कुसुमहिं चित्तलंतु गयणंगणु ।।
णं चित्तवड्डु[14] पसारियउ जलि थलि महियलि माइ ण सुरयणु ।।7।।

8

सहसक्खें विरइउ समवसरणु उवविट्ठु भडारउ तिजगसरणु।
चरु अचरु असेसु वि जणहु कहइ तहिंपसु वि चारु चारित्तु वहइ।
जाया देवहु रिसिवित्तिअरुह अट्ठारह गणहर मल्लिपमुह।
दहदोअंगइं रिसि जे धरंति पंचसयइं ताहं वि वज्जरंति।
सिक्खुयहं सहासइं एक्कवीस तेत्तिय केवलि ओहीविहीस[1]।
वइकिरियहं दुसहस दोसयाइं भुवणंतपसिद्धिहि संगयाइं।

उन्हें मिला, उसे उन्होंने उसी प्रकार ग्रहण कर लिया। जिन्होंने सुधियों की विजय की है, ऐसे वह, वहाँ से भोजन करके चले गए। अत्यन्त प्रखर तप से संतप्त, और अत्यन्त विरक्त उनके ईर्ष्या से रहित नौ साल व्यतीत हो गए। फिर कामदेव का मथन करने वाले वह वृक्षों से गहन उसी वन में आए। वैशाख कृष्णा नौवीं के दिन श्रवण नक्षत्र में चंपक वृक्ष के नीचे धरणी-तल पर बैठ गए। दो प्रोषधोपवासों से नष्टमल वह सम्पूर्ण अनन्तानन्त देवों को क्षोभ करनेवाले केवलज्ञान से पवित्र हो गए।

घत्ता—कोमल हाथों से फेंके गए पुष्पों के द्वारा आकाश के प्रांगण को चित्रित करता हुआ देव समूह धरती, जल और थल में नहीं समा सका, मानो चित्रपट फैला दिया गया हो। ।।7।।

(8)

देवेन्द्र ने समवसरण की रचना की। त्रिजग की शरण आदरणीय उसमें बैठे। वह चर-अचर अशेष जन से कहते हैं, वहाँ पशु भी सुन्दर चरित्र का आचरण करता है। देव के मुनि वृत्ति वाले योग्य मल्लि प्रमुख अठारह गणधर थे। जो बारह अंगों को धारण करते हैं वे पाँच सौ कहे जाते हैं। शिक्षक इक्कीस हज़ार थे, और इतने ही केवलज्ञानी थे। अवधिज्ञान के ईश और विक्रिया-ऋद्धि को धारण करनेवाले दो हजार दो सौ थे। भुवनान्तर में प्रसिद्धि को प्राप्त, तथा अपने नय से परमतों का विध्वंस करनेवाले, वादी मुनि बारह सौ थे। सूक्ष्म सांपराय का नाश

10. A सुहविजयो। 11. तत्तयहो। 12. A सुविरत्त यह्रो। 13. AP °घल्लियहिं। 14. AP चित्तवट्टु। 15. AP णहयलि।

(8) 1. A ओहीविमीस।

णियणयविद्धंसियपरमयाहं वाइहिं बारहसय संजयाहं ।
पणदहसय पुणु मणपज्जयाहं णासियसुप्पयरिउसंपयाहं ।
पण्णाससहासइं संजईहि सावयह लक्खु हयदुम्मईहि ।
मंदिरवयणारिहिं तिण्णि लक्ख सुर तिरिय असंख णिरुद्धसंख ।
हिंडेप्पिणु[2] एव महीयलंति मासाउसेसि थिइ जीवियंति ।
फग्गुणतमदसमिहि सवणजोइ णिसि पच्छिमसंझहि मुक्ककाइ ।
रिसिसहसें सहुं संमेयकुहरि सिद्धउ थिउ जाइवि तिजगसिहरि[3] ।
घत्ता—अरसु अगंधु अवण्णमउ फाससद्दवाज्जिउ गयरूवउ ॥
मुणिसुव्वउ महुं दय करउ सुद्धु सिद्धु हुउ णाणसहावउ ॥ 8 ॥

9

णिव्वुइ सुव्वइ जो णिज्जियारि इह जायउ महिवइ चक्कधारि ।
हरिसेणु णाम तहु तणउं चरिउं णिसुणहु पवित्तु परिहरिवि दुरिउं ।
वरभारहवरिसि अणंततित्थि गंथियकुगंथबंधणबहित्थि[1] ।
णरपुरवरि णाहु णराहिरामु तउ करिवि हरिवि कलि कोहु कामु ।
सुविसालविमाणि[2] विमाणसारि संभूयउ अमरु सणक्कुमारि ।
इह खेत्ति भोयपुरि दीहबाहु इक्खाउवंसि णिउ पउमणाहु ।
तहु देवि किसोयरि सुद्धसील अइरा एरावयगमणलील ।

---

करने वाले मनःपर्ययज्ञानी पन्द्रह सौ थे। आर्यिकाएँ पचास हज़ार थीं। श्रावक एक लाख थे। अपनी दुर्मति का नाश करनेवाली तथा मन्दिर का व्रत ग्रहण करनेवाली श्राविकाएँ तीन लाख थीं। देव असंख्यात और तिर्यंच संख्यात। इस प्रकार धरतीतल पर विहार कर, जब उनके जीवन की आयु एक माह बाकी रह गई, तो फागुन कृष्णा दसवीं के दिन श्रवण योग में रात्रि की पश्चिम संध्या में सम्मेद शिखर पर, मुक्तकाय वह एक हज़ार मुनियों के साथ, सिद्ध हो गए और त्रिजग के शिखर पर स्थित हो गए।

घत्ता—अरस, अगंध, अवर्ण, स्पर्श और शब्द से रहित और रूपरहित, मुनिसुव्रत तीर्थंकर; मुझ पर दया करें कि जो शुद्ध सिद्धि और ज्ञानस्वभाव हो गए हैं। ॥8॥

(9)

मुनिसुव्रत भगवान् के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर, शत्रुओं को जीतनेवाला जो चक्रवर्ती राजा हुआ था उसका नाम हरिषेण था। अपने दुरित का नाश करने के लिए, तुम उसका पवित्र चरित्र सुनो। अनन्तनाथ के तीर्थकाल में उत्तम भारतवर्ष में, जो कुत्सित ग्रन्थों की रचना से मुक्त है, ऐसे नरपुरवर में मनुष्यों के लिए सुन्दर राजा तप कर तथा पाप, क्रोध और काम को दूर कर, विमानों में श्रेष्ठ विशाल नामक विमान में सनत्कुमार देव उत्पन्न हुआ। यहाँ भरतक्षेत्र में भोगपुर में दीर्घबाहु, इक्ष्वाकुवंशीय राजा पद्मनाभ था। उसकी, शुद्धचरित्र ऐरावत के समान

---

2. A महि डिंडेप्पिणु इम महियलंति। 3. A सिद्धसिहरि।

(9) 1. A °कुगंथिबंधण°। 2. AP °विवाणि विवाण°।

एयहं सो सुरु अंगरुहु जाउ हेमाहु समाजुयपरिमियाउ ।
हलक्खणु बीसधणुप्पमाणु कंतीइ चंदु तेएण भाणु ।
गउ तेण समउं पिउ पुहइवीरु[3] मणहरवणि णविवि अणंतवीरु ।
रिसि हूयउ[4] पहु पंकरुहणाहु पुत्तें आयण्णिवि धम्म[5] साहु ।

घत्ता—लइयइं पंचाणुव्वयइं पंच[6] वि इंदियाइं णियमंतें ।।
आवेप्पिणु पुरु[7] रज्जि थिउ पुण्णपहावें कालें[8] जंतें ।। 9 ।।

10

उप्पण्णउं पहरणु घरि रहंगु पविदंडु चंडु रिउदिण्णभंगु ।
णित्तिसु तहिं जि धवलायवत्तु सिरिहरि कागणि मणि चम्मजुत्तु ।
जणणहु केवलसिरि देहु[1] पत्त एक्कहिं खणि तणएं णिसुय वत्त ।
जाइवि जिणु वंदिवि रसियवज्ज घरु आविवि विरइय चक्कपुज्ज ।
मंदिरवइ थवइ पुरोहु अवरु सेणावइ णिज्जियवीरसमरु[2] ।
करितुरयणारिरयणाइं जाइं विज्जाहरेहिं दिण्णाइं ताइं ।
उल्लंघियाइ सायरजलाइं संसाहियाइं धरणीयलाइं ।
काराविय किंणरखयरसेव वसिकय अणेय गणबद्धदेव ।

---

गमनलीला वाली अइर नाम की देवी थी। वह देव इन दोनों का पुत्र उत्पन्न हुआ। हेमाभ दस हजार वर्ष की आयु वाला। शुभ लक्षण उसका शरीर बीस धनुषप्रमाण था। वह कान्ति में चन्द्रमा और तेज में सूर्य था। पृथ्वीवीर पिता उसके साथ मनहर उद्यान में गया और अनन्तवीर को प्रणाम कर पद्मनाभ मुनि हो गया। पुत्र ने भी साधु धर्म सुनकर;

घत्ता—पाँच अणुव्रत ग्रहण कर लिये। तथा पाँचों इन्द्रियों का नियमन करते हुए, नगर में आकर राज्य में स्थित हो गया। पुण्य के प्रभाव से समय बीतने पर ।।9।।

(10)

उसे घर में प्रहरण चक्र उत्पन्न हुआ। शत्रुओं को घात देने वाला प्रचण्ड वज्रदण्ड, तलवार, वहीं पर धवल आतपत्र, भण्डार घर में कागणि चर्म युक्त मणि, पिता के शरीर को केवलश्री प्राप्त हुई। एक ही क्षण में पुत्र ने यह बात सुनी। जाकर जिन की वन्दना कर, तथा घर आकर जिसमें वाद्य बज रहे हैं, इस प्रकार चक्र की पूजा की। गृहपति, स्थपति, पुरोहित और जिसने वीर युद्ध जीता है ऐसा सेनापति, तथा जितने गज, तुरंग और नारीरत्न हो गए जो विद्याधरों ने दिये। उसने सागर जलों को पार किया और धरणीतलों को साध लिया। किन्नरों और विद्याधरों से

---

3. AP पुहइधीरु। 4. AP जायउ। 5. A धम्मलाहु। 6. P पंचेंदियाइं। 7. P omits पुरु। 8. A जंतें कालें।

(10) 1. A देहि। 2. A °धीरसमरु।

महि हिंडिवि खंडिवि वइरिमाणु आवेप्पिणु तं पुणु णिययठाणु।
कत्तिइ णंदीसरि सरकयंतु अहिसिंचिवि अंचिवि अरुहु संतु।
उववासिउ छणवासरि पसण्णु जावच्छइ णिसि णरवइ णिसण्णु।

घत्ता—इंदणीलणीलंगएण चंदबिंबु ता गिलिउं विडप्पें॥
णहभायणयलि संणिहिउ घोट्टिउ दुद्धु व कसणें सप्पें॥ 10 ॥

11

णं ढंकिउ अलिजूहेण कमलु णं पावें मुक्किउ छइउ विमलु।
संणिहिय विहाएण व विवित्ति मयणाहि धोयकलहोयवत्ति[1]।
चिंतइ पहु[2] विहु गहगत्थु जेम कालें कउलेवउ हउं मि तेम।
लइ जामि हणमि दुक्कम्मजोणि [3]महसेणहु ढोइवि सयलखोणि।
गउ पुहइणाहु वेरग्गभूरि सिरिमंतसेलि सिरिणायसूरि।
पणवेप्पिणु लइयउ तवोविहाणु तसथावरजीवहं अभयदाणु।
तें दिण्णउं जीवदयालुएण गिरिसिहरि सुइरु लंबियभुएण।

---

सेवा कराई; अनेक गणबद्ध देवों को वश में किया। धरती पर परिभ्रमण कर बैरियों के मान का खंडन कर, कार्तिक मास को (अष्टाह्निका में) नंदीश्वर पर्व में कामदेव के शत्रु सन्त अर्हत् का अभिषेक और पूजा कर पूर्णिमा के दिन उपवास कर, राजा जब रात्रि में बैठा हुआ था—

घत्ता—इन्द्रनील के समान नीले शरीर वाले राहु ने चन्द्र बिम्ब को ऐसे निगल लिया, जैसे आकाश रूपी पात्र के तल में रखे हुए दूध को काले साँप ने पी लिया हो ॥10॥

(11)

मानो भ्रमर समूह ने कमल को ढक लिया हो, मानो पाप ने विमल पुण्य को आच्छादित कर लिया हो, मानो विधाता ने गोल-गोल धुले हुए चाँदी के पात्र में कस्तूरी को रख लिया हो। राजा सोचता है—जिस प्रकार चन्द्रमा राहु से ग्रस्त है, उसी प्रकार मैं भी काल से कवलित होऊँगा। लो मैं जाता हूँ और दुष्कर्मों की परंपरा का अन्त करता हूँ। महिसेन को समस्त भूमि देकर, वैराग्य से प्रचुर राजा चला गया। उसने सीमंत पर्वत पर श्रीनाग मुनि को प्रणाम कर तप-विधान अंगीकार कर लिया। उसने त्रसस्थावर जीवों को अभयदान दिया। जीवों के प्रति दयालु वह गिरि के शिखर पर बहुत समय तक, हाथ लम्बे कर सूर्य किरणों का भयंकर ताप सह-

---

(11) 1. A कलहोयपत्ति। 2. A इहु। 3. AP महिसेणहु।

विसहेवि[4] भीमु रविकिरणताउ विद्धंसिवि मिच्छामोहभाउ ।
तवदंसणणाणचरित्तरिद्धि आराहिवि गउ सव्वत्थसिद्धि ।

घत्ता—हरिसेणहु भरहाहिवहु अहमिंदत्तणु तं तहु सिद्धउं ।।
दिव्वसोक्खसंदोहयरु जं ण पुप्फदंतेहिं वि लद्धउं ।।11।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयणिव्वाणं[5] हरिसेण-
कहंतरं णाम अट्ठसट्ठिमो परिच्छेओ समत्तो[6] ।।68।।

---

कर मिथ्या मोहभाव का नाश कर, तप-दर्शन-ज्ञान और चरित्र ऋद्धि की आराधना कर सर्वार्थ-सिद्धि को पा गया।

घत्ता—हरिषेण और उस भरत राजा को वह अहमेन्द्रत्व सिद्ध हुआ, दिव्य सुख समूह को करने वाला जो सुख नक्षत्रों को भी प्राप्त नहीं हो सका ।।11।।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का मुनिसुव्रत-निर्वाण हरिषेणकथांतर नाम का अड़सठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ।।68।।

---

4. P विसहेवि मुणिवरु रवि°। 5. A °णिव्वाणगमणं। 6. P adds another पुष्पिका: मुणिसुव्वय-जिणदसमचक्कवट्टि हरिसेण एतच्चरियं सम्मत्तं; K gives it in the margin in second hand.

## एक्कूणहत्तरिमो संधि

मुणिसुव्वयजिणतित्थि तोमियसुररामायणु ।।
हरिहलहरगुणथोत्तु जं जायउं रामायणु ।।छ।।

(1)

णियबुद्धिपवित्थरु[1] णउ रहमि लइ तं पि किं पि एवहिं कहमि ।
णिव्वाहमि भरहब्भत्थियउं[2] परिपालमि पडिवण्णउं थियउं ।
कलिकालें सुट्ठु गलत्थियउ जणु दुज्जणु अण्णु वि दुत्थियउ ।
सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महु किर कवण[3] लीह चिरकइहिं[4] सहुं ।
कइराउ सयंभु महायरिउ सो स[5]यणसहासहिं परियरिउ ।
चउमुहहु चयारि मुहाइं जहिं सुकइत्तणु सीसउ[6] काइं तहिं ।
महु एक्कु तं पि मुहुं खंडियउं विहिणा पेसुण्णउं मंडियउं ।
मइं छंदु ण लक्खणु भावियउं अप्पउं जणि हासउ पावियउ ।

---

## उनहत्तरवो संधि

मुनिसुव्रत जिन तीर्थंकर के काल में देवांगनाओं को संतोष देनेवाला तथा नारायण और बलभद्र के गुणों के स्तोत्र से युक्त जो रामायण हुआ ।

(1)

अपनी बुद्धि के विस्तार से नहीं चूकते हुए, मैं उसे कुछ इस समय कहता हूँ । मैं भरत के द्वारा अभ्यर्थित का निर्वाह करता हूँ, और जो मैंने स्वीकार किया है उसका मैं पालन करता हूँ । मैं कलिकाल से अत्यन्त पीड़ित हूँ । लोग दुर्जन हैं, और मैं हीन स्थिति में हूँ । मेरे पास एक भी सामग्री नहीं है । मैं प्राचीन कवियों की पंक्ति में कैसे आ सकता हूँ ? एक महा आदरणीय कविराज स्वयंभू थे जो हजारों स्वजनों से घिरे हुए थे । एक चतुर्मुख थे, जिनके चार मुख थे । ऐसी स्थिति में मैं अपना सुकवित्व किस प्रकार कहूँ ? मेरा एक ही मुख है । वह भी खंडित । विधाता ने मेरे साथ दुष्टता की । न तो मैंने छंदशास्त्र का और न लक्षणशास्त्र का विचार किया है । मैंने लोगों में उपहास पाया है । यद्यपि पण्डितों के हृदय में मैं प्रवेश नहीं कर पाऊँगा फिर भी

---

1. 1. P °बुद्धिइ वित्थरु । 2. P भरहअब्भत्थियउ । 3. P कमण । 4. AP चिरु कइहिं । 5. A सुयणसहासें; P सुयणसहासेहिं । 6. P सीसइ ।

बुहहियवइ जइ वि ण पइसरमि धिट्ठत्तें तइ वि कव्वु करमि ।
महु खमउ भडारी विउससह आयण्णहु रहुवइरायकह ।

घत्ता—सुकइपयासियमग्गि मणि दहमुहु वि चमक्कइ[7] ।।
रामधम्मगुणसद्दि अमुहु[8] पिसुणु कहिं ढुक्कइ ।।1।।

2

जिणचरणकमलभसलें[1] झुणिउं मइं एउ[2] णिरत्थु वि रुणुरुणिउं ।
सुइपेसलु कण्णविइण्णसुहु वियसावियमाणिणिडिंभमुहु ।
मइं[3] लग्गइ चित्ति वियक्खणहु जसु रामहु पोरिसु लक्खणहु ।
वइदेहिसइत्तणु भूसियउं जलबिंदु व पोमपत्ति[4] थियउं ।
मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ आसयगुणेण कव्वु वि सहइ । 5
जं विरइउं मंदमंदमईहिं अम्हारिसेहिं जगि जडकईहिं ।
जं जगि पसिद्धु सीयाहरणु जं अंजणेयगुणवित्थरणु ।
जं विडसुग्गीवरायमरणु जं तारावइअब्भुद्धरणु ।
जं लवणसमुद्दसमुत्तरणु[5] जं णिसियरवंसहु खयकरणु ।

धृष्टता से काव्य की रचना करता हूँ। आदरणीय विद्वत्-सभा मुझे क्षमा करे। अब रघुपतिराज की कथा सुनिए।

घत्ता—सुकवियों के द्वारा प्रकाशित (सुकइ-सुकपि, सुकवि) मार्ग में रावण भी मन में डरता है, तथा राम के धनुष की डोर के शब्द वाले उस मार्ग में, खरदूषण आदि दुष्ट कैसे आ सकते हैं? (कवि का अभिप्राय यह है कि रामायण काव्य लेखन का मार्ग बड़े-बड़े कवियों द्वारा प्रकाशित है। उसमें राम के धर्म और धनुष का वर्णन है, अत: उसमें दुष्टों की पहुँच का प्रश्न नहीं उठता)।

(2)

जिन भगवान् के चरणकमलों के भ्रमर द्वारा कहा गया यह (काव्य) मैंने व्यर्थ गुन-गुनाया। राम का यश और लक्ष्मण का पौरुष सुनने में मधुर कानों को सुख देने वाला तथा मानिनी स्त्रियों के शिशु मुख को विकसित करने वाला स्वयं विद्वानों के चित्त को खींच लेता है। इसमें सीता देवी का भूषित सतीत्व है। जिस प्रकार कमल (पद्मपत्र) पर स्थित पानी की बूँद मोती के सौंदर्य को धारण करती है, उसी प्रकार, पद्म पत्र (राम रूपी पात्र) पर अवलंबित मेरा काव्य, अक्षय गुण से शोभित होता है, हम जैसे अत्यन्त मन्द बुद्धिवाले जड़ कवियों ने जो राम काव्य की रचना की है, जग में जो सीता का हरण प्रसिद्ध है, जो हनुमान के गुणों का विस्तार है, जो कपटी सुग्रीव का मरण है, और जो सुग्रीव (तारापति) का उद्धार है, जो लवण-समुद्र का संतरण है, और जो निशाचर वंश का क्षय करने वाला है—

7. P चक्कवइ। 8. A समुहु।
(2) 1. AP °भमरें। 2. AP एत्थु। 3. A लइ। 4. P पोमवत्ति। 5. A °समुद्दहं उत्तरणु।

घत्ता--भरहहु भत्तिभरासु[6] बहुरसभावजणेरउं ।।
तं आहासमि जुज्झु रावणरामहु[7] केरउ ।।2।।

3

जिणचरणजुयलसंणिहियमइ आउच्छइ पहु मगहाहिवइ।
णिरु संसयसल्लिउं मज्झु मणु गोत्तमगणहर मुणिणाह भणु।
किं दहमुहु सहु दहमुहहिं हुउ किर[1] जम्में गरुयउ तासु सुउ।
जो[2] सुम्मइ भीसणु अतुलबलु किं रक्खसु किं सो मणुय[3] खलु।
किं अंचिउ तेण सिरेण हरु किं वीसणयणु किं वीसकरु।
किं तहु मरणावह रामसर किं दीहर थिर सिरिरमणकर।
सुग्गीवपमुह णिसियासिधर किं वाणर कि ते णरपवर।
किं अज्जु वि देव विहीसणहु जीविउ ण जाइ जमसासणहु।
छम्मासइं णिद्द[4] णेय मुयइ किं कुंभयण्णु घोरइ सुयइ।
किं महिससहासहिं धउ लहइ लइ लोउ असच्चु सव्वु कहइ।
वम्मीयवासवयणिहिं णडिउ अण्णाणु कुम्मग्गकूवि पडिउ।

घत्ता—गोत्तम पोमचरित्तु[5] भुवणि[स]  [त]  पयासहि ।।
जिह सिद्धत्थसुएण दिट्ठउं तिह महुं भासहि ।।3।।

---

घत्ता—और जो भक्ति से भरे भरत के लिए अनेक रसों और भावों को उत्पन्न करने वाला है, ऐसे उस रावण-राम के युद्ध का मैं कथन करता हूँ।

(3)

जिन भगवान् के चरणकमलों में अपनी बुद्धि को स्थिर करता हुआ मगधराज श्रेणिक पूछता है, "मेरा मन संशय से अत्यन्त पीड़ित है। इसलिए हे मुनियों के स्वामी गौतम गणधर, मुझे बताइये कि क्या रावण दस मुखों के साथ उत्पन्न हुआ था? क्या जन्म से ही उसका पुत्र इन्द्रजीत उससे बड़ा था? जो भीषण अतुल बल वाला सुना जाता है, क्या वह राक्षस था या दुष्ट मनुष्य? क्या उसने अपने सिरों से शिव की पूजा की थी? क्या उसके बीस नेत्र व बीस हाथ थे? क्या राम के तीर उसके मरण के कारण थे या लक्ष्मी का रमण करनेवाले लक्ष्मण के लम्बे स्थिर हाथ उसका वध करने वाले थे तथा पैनी तलवार धारण करनेवाले सुग्रीव आदिजन क्या बंदर थे या कि नरश्रेष्ठ? हे देव, आज भी विभीषण का जीव यम शासन में नहीं जाता। क्या कुम्भकर्ण इतनी घोर नींद में सोता है कि छह महीने तक नींद नहीं छोड़ता? क्या वह हज़ारों भैंसों से भी तृप्ति को प्राप्त नहीं होता? लो सब लोग असत्य कहते हैं। वाल्मीकि और व्यास जैसे कवियों से प्रवंचित होकर अज्ञानी लोग कुमार्ग के कुएँ में पड़ते हैं।

घत्ता—हे गौतम, इस संसार में आप पवित्र पद्मचरित्र को प्रकाशित कीजिए। सिद्धार्थ सुत (महावीर) ने जिस प्रकार से देखा है, वैसा मुझे बताइए।

---

6. P भत्तियरासु। 7. AP रामण°।

(3) 1. P कि जम्में। 2. AP सो सुम्मइ। 3. A मणुवकुलु। 4. AP णेय णिद्द। 5. APT पउमं°।

4

ता इंदभूइ गंभीरझुणि सेणियरायहु कहइ[1] कहइ मुणि ।
इह भरहि भवावहारिणिलइ[2] फुल्लियकणयारबउलतिलइ[3] ।
मायंदगोंदगोंदलियसुइ[4] महमहियकलमकेयारजुइ[5] ।
णिप्पीलिउच्छरससलिलवहि[6] संतुट्ठपुट्ठपंथियणिवहि ।
मलरहिय मलयदेसंतरइ रयणउरि भवणरुइहयसरइ ।
तहिं वसइ पयावइ पयधरणु जें दंडें जित्तउं जमकरणु ।
जें सत्थें जित्त सरासइ वि जें बुद्धिइ[7] जित्तउ भेसइ वि ।
जें रिद्धिइ जित्तउ सुरवइ वि जें भोएं[8] जित्तउ रइवइ वि ।
तहु रायहु णयणसुहावणिय णं बाणावलि मयणहु तणिय ।
रूवेण सरिच्छी उव्वसिहि गुणवंत कंत कंति व ससिहि ।
सुउ चंदचूलु चंदु व उइउ सिसुमंति मित्तु तेण वि लइउ ।

घत्ता—सो विजयंकु पसिद्धु[9] णं ससिरवि गयणंगणि ।।
बेण्णि वि सहु खेलंति बद्धणेह घरपंगणि ।।4।।

---

(4)

तब गंभीर स्वर वाले गौतम गणधर मुनि राजा श्रेणिक से कथा कहते हैं—भव का नाश करने वालों (सर्वज्ञों) के स्थानभूत इस भरतक्षेत्र में, जिसमें कनेर, बकुल और तिलक के वृक्ष खिले हुए हैं, जहाँ आम्र वृक्ष समूह पर तोते बोल रहे हैं, जो महकते हुए धान के खेतों से युक्त हैं। जहाँ पेरे जाते हुए गन्नों के रसों के सलिलपथ (प्याउ) है, जहाँ पथिकजन संतुष्ट और पुष्ट हैं, ऐसे मलरहित मलय देश के, अपने भवनों की कान्ति से शरद की शोभा का अपहरण करने वाला रत्नपुर नगर है। उसमें प्रजापति राज ा निवास करता है, जिसने दण्ड के बल पर यमकरण को जीत लिया था, जिसने शास्त्र से सरस्वती को भी जीत लिया, जिसने बुद्धि से बृहस्पति को भी जीत लिया, जिसने ऋद्धि से इन्द्र को भी जीत लिया, जिसने भोग में कामदेव को भी जीत लिया, ऐसे उस राजा की नेत्रों को सुहावनी लगने वाली रानी थी, जो मानो कामदेव की बाण-वलि थी। रूप में वह उर्वशी के (समान) थी। वह गुणवती कान्ता, चन्द्रमा की कान्ति के समान थी। उसका चन्द्र के समान चन्द्रचूल पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे भी शिशु मन्त्री पुत्र मित्र के रूप में मिला।

घत्ता—आकाश में चन्द्रमा के समान वह विजय नाम से प्रसिद्ध था। परस्पर बद्धस्नेह वे दोनों घर के आँगन में खेलते थे।

---

(4) 1. AP सइं। 2. A भयावहारि। 3. A °कणियार°। 4. A मायंदगोच्छ°; P मायंदगोंदि°। 5. A केयारहुए। 6. A °उच्छु°। 7. A बुद्धें। 8. P रूएं। 9. P omits पसिद्धु।

5

तरुणीकडक्खोहविक्खेवमूढाइ[1] जोव्वणसिरीए सरीराहिरूढाइ।
णिण्णट्ठदप्पिट्ठणिक्किट्ठतुट्ठीइ[2] घोराण जाराण चोराण गोट्ठीइ।
णं तावसा के वि अरहंतदिक्खाइ ते बे वि ण चरंति रायस्स सिक्खाइ।
अण्णम्मि तव्वासरे[3] तम्मि णयरम्मि णिद्धणजणे दिण्णबहुदविणणियरम्मि।
गोत्तमवणिंदेण वइसवणघरिणीइ जायस्य कलहस्स णं चारुकरिणीइ।
विण्णाणवंतस्स संसारसारस्स सिरिदत्तणामस्स वणिवरकुमारस्स।
करधरियभिंगारचुयवारिधारेण णियधीय रमणीय दिण्णा कुबेरेण।
बालेण बालालयं झ त्ति गंतूण णमिऊण[4] जय देव देव त्ति वोत्तूण।
केणावि पावेण रइरहसजुत्तीइ रूवं वर वण्णियं वणियउत्तीइ।
रेहंतराईवदलदीहणेत्ताइ ती[5] संणिहा का कुबेराइदत्ताइ।
तं सुणिवि सिरु धुणिवि विद्धत्थधम्मेण[6] संचरिवि वियड तुरं कूरकम्मेण।
वणिभवणि पइसरिवि बहुसहसहाएण[7] हित्ता कुमारी धरणाहजाएण।
रोवंति वेवंति वरइत्तहत्थाउ णट्ठाउ[8] णारीउ विलुलंतवत्थाउ।

घत्ता—णिव परिताहि भणंत[9] पुरि अण्णाउ कुमारहु ॥
गय तरुसाहाहत्थ वणिवर रायदुवारहु ॥5॥

---

(5)

युवतियों के कटाक्षों-समूह के विक्षेप से मूढ़ यौवनश्री के शरीर पर अभिरूढ़ होने पर (युवक होने पर) तरुणियों के कटाक्षों के विक्षेप से विवेकशून्य, शरीर को आक्रान्त करने वाली यौवन रूपी लक्ष्मी, नष्ट दर्प से भरी निकृष्ट तुष्टि तथा भयंकर विटों और चारों ओर की गोष्ठी (संगति) के कारण वे दोनों, राजा की शिक्षाओं का आचरण नही करते थे। उसी प्रकार, जिस प्रकार कोई तपस्वी अरहत की शिक्षा का आचरण नहीं करते। एक दूसरे दिन उसी नगर में, जिसमें निर्धन लोगों को प्रचुर धन समूह दिया गया है, गौतम सेठ की वैश्रवणा गृहिणी से पुत्र उत्पन्न हुआ मानों सुन्दर हथिनी से बच्चा उत्पन्न हुआ हो। विज्ञान से युक्त संसार में श्रेष्ठ श्रीदत्त नाम के उस वणिक कुमार को कुबेर नाम के सेठ ने हाथ में धारण किये गए भिंगार के गिरते हुए पानी की धारा के साथ अपनी सुन्दर कन्या दी। किसी मूर्ख ने शीघ्र बालक चन्द्रचूल के घर जाकर जयदेव-जयदेव कहकर नमस्कार किया। तब रति के वेग से युक्त उस वणिक्पुत्री के श्रेष्ठ रूप का वर्णन किया। शोभित कमलदल के समान दीर्घ नेत्रों वाली कुबेर दत्ता के समान कोई भी स्त्री नहीं है। यह सुनकर धर्म को ध्वस्त करनेवाले उस क्रूरकर्मा चन्द्रचूल ने अपना सिर पीटा और शीघ्र ताबड़-तोड़ जाकर सेठ के घर में प्रवेश कर अनेक समर्थ सहायों के साथ उस राजा के

---

(5) 1. A कडक्खेवविक्खोह°; P °कडक्खोहविक्खेय° 2. A बुद्धीइ। 3. AP ता वासरे। 4. A णविऊण। 5. A थी संणिहा। 6. A विद्धत्थकामेण। 7. A °सहावेण। 8. P तट्ठाउ। 9. AP भणंता।

6

आउच्छिउ राएं पउरयणु विण्णवइ णवंतु तसंततणु[1]।
तुह तणुरुहु परदविणइं हरइ परिणियउं कलत्तु ण उव्वरइ।
पइसरउ[2] भडारा वियणु वणु अण्णेत्तहि जीवउ जाउ जणु।
ता राएं पुरवरतलवरहु आएसु दिण्णु असिवरकरहु।
सिरकमलु विलुंचवि णिट्ठुरहु पेसहि तणुरुहु वइवसपुरहु।
अण्णाणु णायविद्धंसयरु खलु सो[3] किं वुच्चइ रज्जधरु।
जो दुट्ठु कट्ठु णिद्धम्मयरु सो खंडमि हउं अप्पणउं करु।
हियउल्लउं दुक्खें सल्लियउं ता पउरें मंतिहिं[4] बोल्लियउं।
घत्ता—णंदणु हणहुं ण जुत्तउं जइ सो मणहु ण रुच्चइ ॥
गिरिदुग्गमि कंतारि तो[5] दूरंतरि मुच्चइ ॥6॥

7

पहु भणइ जाउ किं तेण महुं हउं णंदमि चिरु धम्मेण सहुं।
गुणदूसणु अप्पपसंसणउं तवदूसणु मिच्छादंसणउं।

---

पुत्र ने वर के हाथ से रोती और काँपती हुई उस त्रस्त कुमारी का हरण कर लिया।

घत्ता—तब अपने हाथ में वृक्ष की डालें लेकर वणिक्वर राजद्वार पर पहुँचे यह कहते हुए कि कुमार के अन्याय से नगरी की रक्षा कीजिए।

(6)

पौरजन से राजा ने पूछा। काँपते हुए शरीर से नमस्कार करते हुए एक पौरजन बोला : "तुम्हारे पुत्र दूसरों के धन का अपहरण करते हैं, यहाँ तक कि विवाहित स्त्रियाँ भी उन से नहीं बचती हैं। हे आदरणीय जन (लोग), या तो विजन वन में प्रवेश करें या अन्यत्र जाकर जीवित रहें।" तब राजा ने हाथ में तलवार धारण करने वाले नगर कोतवाल को आदेश दिया कि उस निष्ठुर का सिरकमल काटकर पुत्र को यम नगर भेज दो। जो अज्ञानी न्याय का नाश करने वाला है, वह दुष्ट है, उसे राज्यधर क्यों कहा जाता है? जो दुष्ट निंदनीय और अधर्म करने वाला है उसे मैं हाथ से नष्ट करूँगा। उसका हृदय दुःख से पीड़ित हो उठा। इस बीच नगरप्रमुख और मंत्रियों ने कहा—

घत्ता—बेटे को मारना अच्छा नहीं। भले ही वह मन को अच्छा नहीं लगे। पहाड़ों से दुर्गम दूर जंगल में उसे छोड़ दिया जाए।

(7)

राजा कहता है : वह मेरा पुत्र है, इससे मुझे क्या? मैं चिरकाल तक धर्म से आनन्दित रहूँगा। अपनी प्रशंसा करना गुण के लिए दूषण है। मिथ्यादर्शन तप का दूषण है। नीरस प्रदर्शन करना

---

(6) 1. AP तसंतमणु। 2. A परसरणु; P पइसरहु। 3. P किं सो। 4. A महिवइ। 5. A ता।

णडदूसणु णीरसपेक्खणउं[1] कइदूसणु कव्वु अलक्खणउं ।
धणदूसणु सढखलयणभरणु[2] वयदूसणु असमंजसमरणु[3] ।
रइदूसणु खरभासिणि जुवइ मुहिदूसणु पिसुणु विभिण्णमइ ।
सिरिदूसणु जडु सालसु णिवइ जणदूसणु पाउ पत्तकुगइ ।
गुरुदूसणु णिक्कारणहसणु[4] मुणिदूसणु कुसुइससमब्भसणु ।
ससिदूसणु मिगमलु मसिकसणु कुलदूसणु णंदणु दुव्वसणु ।
घत्ता—लइ जं तुम्हहं इट्ठु मइ वि[5] तं जि पडिवण्णउं ।।
जाइवि कुलवुड्ढेहिं बालहं उत्तरु दिण्णउं ।।7।।

8

किं परकलत्तु उद्दालियउं उज्जलु अप्पाणउं मइलियउं ।
किं बप्प सुदप्प कुसंगु किउ[1] परयारचोरकीलाइ थिउ ।
कुद्धउ पिउ एवहिं को धरइ तुम्हारउं जीविउ अवहरइ ।
तं णिसुणिवि सिसु चवंति गहिरु अत्थंतु[2] णिवारइ को मिहिरु ।
को रक्खइ आवंतउं मरणु जगि कासु ण ढुक्कइ जमकरणु ।
कु वि अग्गइ कु वि पच्छइ मरइ वइवमदंतंतरि पइसरइ ।
मंतीसें [3]करपल्लवधरिया सुय बेण्णि वि किंकरपरियरिया ।
तरुवरविलग्गचलदवदहणि पइसारिय बेण्णि वि गिरिगहणि ।

---

नट का दूषण है। व्याकरण से शून्य काव्य कवि का दूषण है। कुटिल और दुष्ट लोगों का पालन करना धन का दूषण है। संदेह (शल्य) के साथ मरना व्रत का दूषण है। दुष्ट बोलना नव-युवती की रति (प्रेम) का दूषण है। कुगति को प्राप्त करने वाला पाप लोगों का दूषण है। अकारण हँसना गुरु का दूषण है। खोटे शास्त्रों का अभ्यास करना मुनि का दूषण है। और काला मृग-चिह्न चन्द्रमा का दूषण है, और दुर्व्यसनी पुत्र कुल का दूषण है।

घत्ता—तो जो तुम लोगों को अच्छा लगे वही मैंने स्वीकार किया। तब कुलवृद्धों ने जाकर बालकों को उत्तर दिया।

(8)

तुमने दूसरे की स्त्री का अपहरण क्यों किया ? तुमने उज्ज्वल अपने को कलंकित किया है। घमंडी, तुमने खोटी संगति क्यों की ? दूसरों की स्त्रियों के दिलों को चुराने की क्रीड़ा में तुम क्यों लगे ? तुम्हारे पिता इस समय क्रुद्ध हैं, उन्हें कौन रोक सकता है, वह तुम्हारे जीवन का अपहरण करेंगे ? यह सुनकर कुमार गंभीर स्वर में कहता है कि डूबते हुए सूर्य को कौन बचा सकता है ? आती हुई मौत से कौन बच सकता है ? संसार में रोग किसके पास नहीं पहुँचता ? कोई आगे और कोई पीछे मरता है। इस प्रकार यम की डाढ़ के नीचे प्रवेश करता है। मंत्री अनुचरों से घिरे हुए दोनों पुत्रों का हाथ पकड़कर उन्हें बड़े-बड़े वृक्षों में लगी हुई चंचल दावाग्नि से जलते हुए गहन वन में ले गया। गणनाथ के मुखिया कामदेव का बल नष्ट करने वाले गणनाथ-

---

(7) 1. AP णीरसु। 2. A सह खलयर°। 3. AP असमंजसु। 4. A °भसणु। 5. A जि।

(8) 1. A सदप्पु। 2. A उदयंतु। 3. AP °पल्लवि धरिया।

गणणाहहु हयवम्महबलहु दक्खविय णवंत[4] महाबलहु ।
रायागमणायवियाणएण कुच्छियमइ धाडिय राणएण ।
परमेसर ए णर भव्व जइ वर एवहिं तुहुं उद्धरहि तइ ।
घत्ता—दुम्मइमलमइलेहिं कुअरिहिं[5] कहि जाएवउं ।।
भणि भवियव्वु [6]भयवंत एहिं काइं पावेवउं ।।8।।

9

मुणि भणइ एत्थु दिहि[1] करिवि तवे होहिंति सीरि हरि तइयभवे ।
णामेण रामलक्खण विजई तं णिसुणिवि जाया तरुण जई ।
गउ मंति णिहेलणु[2] पय णवइ णरणाहहु वइयरु विण्णवइ ।
वसुहाहिव तणुरुह गिरिविवरि आरण्णि णिहिय वणवासिघरि ।
कासु वि सकम्मउग्गुग्गमहो[3] तणुदुक्खलक्खविहिसंगमहो[4] ।
विसहावियदंडण[5]मुंडणइं[6] पंचिंदियदप्पविहंडणइं[7] ।
णिवणयणइं मुक्कंसुयजलइं ओसासित्ताइं व सयदलइं ।
हा हा मइं रूसिवि किं कियउं किं बालजुयलु दुक्खें हयउं ।
अइरहसें किज्जइ कज्जरइ जा सा णिद्दहइ[8] ण कासु मइ ।
मणु मंतें परियाणिवि पइहि अक्खिउ जिह पासि णिहिय जइहि ।

मुनिनाथ महाबल को नमस्कार करते हुए उसने उन्हें दिखाया और कहा कि हे परमेश्वर, राजनीति-शास्त्र के न्याय को जानने वाले राजा ने दुष्ट बुद्धि वाले इन दोनों कुमारों को निकाल दिया है। यदि ये दोनों भव्य जीव हों तो इस समय आप इनका उद्धार करें।

घत्ता—दुर्मति के मल से मैले ये कुमार कहाँ जायेंगे ? हे भगवन्, आप बताइये कि ये किस भव्यता को प्राप्त होंगे (इनका भविष्य क्या होगा) ?

(9)

मुनि कहते हैं कि ये यहाँ दीर्घ तप करके तीसरे भव में बलभद्र और नारायण होंगे। राम और लक्ष्मण के नाम से विजेता। यह सुनकर, वे दोनों युवा मुनि हो गए, मंत्री घर गया। वह राजा के चरणों में प्रणाम कर वृत्तान्त बताता है कि हे राजन्, दोनों कुमारों को पहाड़ के विवर में एक जंगल में वनवासी के घर छोड़ दिया गया है। शरीर के लाखों दुःखों और भाग्य के संगम से अपने कर्मों के उग्र उदय के कारण कोई भी व्यक्ति जिसमें दंड और मुंडन सहा गया है, ऐसे पाँचों इन्द्रियों के दर्प के विखंडनों को भोगता है। राजा की आँखें अश्रुधारा छोड़ती हुई ओस से भीगे हुए कमल दल के समान मालूम होती थीं (वह विलाप करने लगा) कि मैंने क्रुद्ध होकर यह क्या किया! क्यों मैंने अपने दोनों बच्चों को दुःख से मार डाला ! जो कार्य में अत्यंत जल्दबाजी करती है, ऐसी वह बुद्धि किसे नहीं जलाती ! राजा के मन को जानकर

4. AP णमंत । 5. AP कुमरहिं । 6. P भयवंतहिं ।

(9) 1. P विहि । 2. A णिहेलणि पइ । 3. A °उग्गग्गमहो । 4. A °दिहि° । 5. AP डंडण° । 6. P मुंडणहो । 8. AP णिड्डहइ ।

जिह दोहिं मि लइयउं तवचरणु   ता जायउं तायहु सिसुकरुणु।
कोमलतणु णीसारिवि घरहु   णंदण पट्ठविवि[9] वणंतरहु।
घत्ता—डहु बुहणिंदिरु रज्जु रज्जु जि पाउ णिरुत्तउं॥
रज्जमएण पमत्तउ[10] ण सुणइ[11] जुत्ताजुत्तउं॥9॥

10

णियगोत्तिउ[1] णियकुलि संणिहिउ   वणु जाइवि राएं तवु गहिउ।
भरहेण व अहिवंदिवि रिसहु   पणवेवि महाबलु मुणिवसहु।
गउ मोक्खहु अक्खयसोक्खमइ   थिउ णाणदेहु णिव्वाणपइ।
खग्गउरहु बहि कयधम्मकिसि   आयावणजोए बालरिसि।
थिय जइयहुं तइयहुं महि जिणिवि   महसूयणु समरगणि हणिवि।
सुप्पह पुरिसोत्तम दिट्ठं[2] पहि   ससिचूलें चिंतिउं हियरहिं।
दीसइ णरणाहहु जेरिसउं   महु होउ पहुत्तणु तेरिसउं।
मुउ[3] सणकुमारु[4] हुउ रिसि विजउ सुरु णामु सुवण्णचूलु सदउ।
कमलप्पहि विमलविमाणवरि   णिवतणउ मणिप्पहि अमरघरि।
मणिचूलु देउ जायउ पवरि   कलहंसु व विलसइ कमलसरि।

मंत्री ने उसे यह बताया कि किस प्रकार उसने मुनि के पास बालकों को रख दिया है और किस प्रकार दोनों ने तप आचरण स्वीकार कर लिया है। यह सुनकर पिता को बालकों के प्रतिकरुणा उत्पन्न हो गई। वह कहता है कि कोमल शरीर वाले पुत्रों को घर से निकालकर वन के भीतर मैंने भेजा दिया!

घत्ता—पंडितों की निन्दा करनेवाले राज्य का नाश हो। निश्चय ही राज्य एक पाप है। राजमद में पागल होकर व्यक्ति अच्छे-बुरे का विचार नहीं करता।

(10)

अपने गोत्र के व्यक्ति को कुल परम्परा में स्थापित कर राजा ने वन में जाकर तप ग्रहण कर लिया और जिस प्रकार भरत ने ऋषभ तीर्थंकर की अभिवंदना कर दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार मुनिश्रेष्ठ महाबल को प्रणाम कर उसने भी दीक्षा ग्रहण की। अक्षय सुमति वाला वह मोक्ष चला गया तथा ज्ञानशरीर वह निर्वाण पद पर स्थित हो गया। खड्गपुर के बाहर धर्म की खेती करनेवाले बाल-ऋषि आतापन योग से जब स्थित थे तब उन्होंने धरती जीतकर तथा युद्ध के प्रांगण में मधुसूदन को मारकर जानेवाले सुप्रभ और पुरुषोत्तम को रास्ते में देखा तो चन्द्रचूल अपने मन में सोचने लगा, जिस प्रकार की प्रभुता इस नरनाथ को दिखाई देती है मेरी भी वैसी प्रभुता हो। विजय मुनि मरकर सनत् कुमार स्वर्ग में स्वर्णचूल नाम का दयालु देव हुआ। कमलप्रभ नाम के विमल श्रेष्ठ विमान में तथा राजपुत्र (चन्द्रचूल) मणिप्रभ देव विमान में मणिचूल नाम का देव हुआ। वह ऐसे मालूम होता था जैसे कमल सरोवर में कलहंस शोभित हो रहा हो।

9. A पट्ठविय। 10. AP पमत्तु। 11. AP मुणइ।
(10) 1. AP णियणत्तिउ। 2. A दिट्ठि। 3. A मुए। 5. AP सणकुमारे।

घत्ता—जं अणिमाइगुणेहिं बहुविहवेण[5] णिउत्तउं ।।
तं दिवि दीहरु कालु बिहिं मि दिव्वु सुहुं भुत्तउं ।।10।।

11

सरवरमरालचक्खियभिसइ[1] इह भरहवरिसि कासीविसइ ।
जहिं सालिरमणकीलाहरइं जहिं सालिधण्णछेत्तंतरइं ।
जहिं सालिकमलछण्णइं सरइं जहिं सालिहियाइं व अक्खरइं ।
सिसुहंसपयइं मयरंदरइ गोहणइं चरंतइं पइ जि पइ ।
रोमंथंतइं[2] संतुट्ठाइं दीसंति हरियतणपुट्ठाइं ।
उच्छुरसु जंतणालीव्हसिउ दक्खारसु पिज्जइ मुहरसिउ ।
ओयणु सीयलु दहिओल्लियउं फणिवेल्लिपत्तपत्तलि थियउं ।
जहिं जिम्मइ पहिययणहिं पवहि देसियढक्करिजंपणरवहिं ।
ओहामिय अलयाउरिसिरिहि जणभरियहि वाणारसिपुरिहि[3] ।
तहिं दसरहु दसदिसिणिहियजसु णिवसइ णिउ जियरिउ थिरु सवसु ।

घत्ता—कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ ।।
जो इक्खाउहि वंसि णरवइरूढिइ[4] आयउ ।। 11 ।।

---

घत्ता—जो अणिमा गुणों के द्वारा अनेक प्रकार के वैभव से युक्त है, स्वर्ग में ऐसे लम्बे समय तक उन दोनों ने दिव्य सुख का भोग किया।

(11)

इस भारतवर्ष में काशी नाम का देश है, जो सरोवर के हंसों के द्वारा आस्वादित कमलनियों से युक्त है। जहाँ स्त्रियों और पुरुषों के रमण करने के लिए क्रीड़ा-घर हैं। जहाँ शालि धान्य के तरह-तरह के खेत हैं। जहाँ भ्रमरों से युक्त कमलों से सरोवर आच्छादित हैं। जो लिखे हुए अक्षरों के समान हैं। हँसों के छोटे-छोटे बच्चों के पैर जहाँ पराग में सने हुए हैं। जहाँ पग-पग पर गोधन चर रहे हैं। और जो संतुष्ट होकर जुगाली करते हुए हरे घास से पुष्ट शरीर वाले दिखाई देते हैं। जहाँ यंत्रनलियों से गिरा हुआ गन्ने का रस तथा मुँह को मीठा लगने वाला द्राक्षारस पिया जाता है। दही से मिला हुआ ठंडा भात नागबेली के पत्तों की पत्तल पर रखा हुआ है। जो देशी ढक्का और जंपाण वाद्यों के शब्दों के साथ प्याऊ पर पथिकजनों के द्वारा खाया जाता है। जिसने अलका नगरी की शोभा को पराजित कर दिया है। जो जनों से व्याकुल है। ऐसी वाराणसी नगरी में दशों दिशाओं में अपने यश का विस्तार करने वाला शत्रुओं का विजेता स्वाधीन, स्थिर राजा दशरथ निवास करता है।

घत्ता—वह राजा कुवलय बन्धु यानो चन्द्रमा था। और (दूसरे पक्ष में) धरती मंडल का स्वामी अर्थात् चन्द्रमा पर वह दोषाकार नहीं था और जो नरवरों से प्रसिद्ध इक्ष्वाकुकुल में उत्पन्न हुआ था।

---

5. A बहुविहतवेण ।

(11) 1. A °चालियभिसए । 2. P रोमंथंतइं पसुसंतुट्ठाइं । 3. AP वाराणसि° । 4. A °रूढि आयउ ।

12

करगेज्झ मज्झ उन्नुंगथणि तहु सुबल[1] णाम वल्लह घरिणि[2]।
सिविणंतरि पेच्छइ उग्गमिउ रवि सहसकिरणु णहयलि भमिउ।
ससि कुमुयकोसवित्थारयरु गज्जंतु जलहि जुज्झियमयरु।
सुविहाणइ कंतहु भासियउं तेण वि तहु गुज्झु पयासियउं।
तुह होसइ तणुरुहु सीरहरु हलि चरमदेहु णं तित्थयरु।
अण्णहिं दिणि सग्गहु अवयरिउ सुरु[3] कणयचूलु उयरइ[4] धरिउ।
मघरिक्खयंदि[5] णीरयदिसिहि फग्गुणि तमकालिहि तेरसिहि।
देविइ णवमासहि सुउ जणिउ तणुरामु रामु राएं भणिउ।
करिवरलोहियपव्वालियउ[6] सिविणंतरि[7] सीहु णिहालियउ।
माहहु मासहु सियपढमदिणि सविसाहि[8] जसाहिउ पहु भुवणि[9]।
मणिचूलु देउ दसरहरयइ सुउ अवरु[10] वि जायउ केक्कयइ।
जोइउ लक्खणलक्खंकियउ सो ताएं लक्खणु कोक्कियउ।

घत्ता—बेण्णि वि ते गुणवंत भुयबलतासियदिग्गय॥
णाइं सियासियपक्ख पत्थिवगरुडहु णिग्गय॥12॥

---

(12)

उसकी सुबला नाम की प्रिय गृहिणी थी। ऊँचे पयोधरों वाली जिसका मध्य भाग मुट्ठी से पकड़ा जा सकता है। एक रात वह स्वप्न में देखती है कि उगा हुआ हजारों किरणोंवाला सूर्य आकाश तल में घूम रहा है। उसने देखा कुमुदो के कोषों का विस्तार करने वाला चन्द्रमा, गरजते हुए समुद्र में लड़ता हुआ मीन युगल। दूसरे दिन सुन्दर प्रभात में उसने पति से यह बात कही। उसने भी उसका रहस्य उसे बताया कि तुम्हारा बलभद्र हलधर चरम शरीरी पुत्र होगा। वैसे ही जैसे तीर्थंकर। दूसरे दिन स्वर्ग से अवतरित हुए स्वर्णचूल देव को उस रानी ने अपने पेट में धारण किया। जब चन्द्रमा मघा नक्षत्र में स्थित था, दिशा निर्मल थी, ऐसी फागुन वदी तेरस को नौ माह पूरे होने पर देवी ने पुत्र को जन्म दिया। शरीर से सुन्दर होने के कारण राजा ने उसका नाम राम रखा। फिर कैकयी ने गजवर के रक्त से लिप्त सिंह को स्वप्न में देखा। माघ मास में विशाखा नक्षत्र से युक्त शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन राजप्रासाद में दशरथ में अनुरक्त कैकयी से मणिचूल नाम का देव दूसरे पुत्र के रूप में हुआ। पिता ने उसे लाखों लक्षणों से युक्त देखकर उसका नाम लक्ष्मण रख दिया।

घत्ता—गुणवान अपने बाहुबल से दिग्गजों को सताने वाले वे दोनों ऐसे मालूम होते थे मानो दशरथ राजा रूपी गरुड़ के काले और सफेद दो पंख निकल आये हों।

---

(12) 1. A सुकल। 2. AP रमणि। 3. AP सुउ। 4. A उयरे, P उवरें। 5. A °रिक्खे चंदे; P °रिक्खि इंदे। 6. P °पच्चालियउ। 7. P सुविणंतरि। 8. AP सविसाहु। 9. AP भवणि। 10. P जायउ अवरु वि.।

13

रेहंति बे वि बलएव हरि णं तुहिणगिरिंदंजणिसिहरि[1]।
णं गंगाजउणाजलपवह[2] णं लच्छिहि कीलारमणवह[3]।
णं पुण्ण मणोरह सज्जणहं णं वम्मवियारण दुज्जणहं।
अवरोप्परु णिरु णिम्मच्छराहं तेरहबारहसंवच्छराहं।
सहसाइं बिहिं मि णिद्देसियइं[4] परमाउसु जइवरभासियइं[5]।
पण्णारहचावइं तुंगतणु ते सत्थु सुणंति गुणंति धणु।
पुरबाहिरि उववणसंठियहु विद्धंतहु जयउक्कंठियहु।
अवलोइवि रामहु सरपसरु मउ चेय मुयंति ण वइरि सरु।
करि आउहु जं लक्खणु धरइ तहु परपहरणु जि ण संचरइ।
घत्ता—कंपइ महि-संचारें ससरसरासणहत्थहं॥
संकइ जमु[6] जमदूउ को णउ तसइ समत्थहं॥13॥

14

रिसहाहिवसंताणाइयहं सिरिभरहसयररायाइयहं।
सखापरिवज्जिय पुरिस गय अहमिंद वि जहिं कालेण मय।
तहिं अण्णहु[1] कहिं जीवियकहइ लइ अत्थमियइ[2] पत्थिवसहइ।

(13)

वे दोनों बलभद्र और नारायण इस प्रकार शोभित होते थे मानो हिमगिरि और नीलगिरि पर्वत हों, मानो गंगा और जमुना के जल प्रवाह हों, मानो लक्ष्मी की क्रीड़ा करने के पथ हों, मानो सज्जनों के पुण्य मनोरथ हों, मानो दुर्जनों के मर्म का भेदन करने वाले हों। एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या भाव से रहित जब तेरह वर्ष बीत गये तो सहसा उन्हें परम आयु वाले मुनिवरों के द्वारा कहे गये उपदेश दिये गये। पन्द्रह धनुष प्रमाण ऊँचे शरीर वाले वे दोनों शास्त्र सुनते हैं। और धनुष पर डोरी चढ़ाते हैं। नगर के बाहर उपवन में स्थित, विध्वंस करते हुए जय के लिए उत्साहित राम के तीरों के प्रसार को देखकर शत्रु अपनी मद चेतना छोड़ देता है, वह तीर नहीं छोड़ता। जब लक्ष्मण अपने हाथ में हथियार लेता है तो दुश्मन का हथियार काम नहीं करता।

घत्ता—तीर-धनुष हाथ में लेकर जब वे चलते हैं तो धरती काँप जाती है। यम शंका करने लगता है। और यमदूत भी। समर्थ लोगों से कौन त्रस्त नहीं होता!

(14)

विश्वनाथ की कुल परम्परावाले श्री भरत और सगर के गोत्र वाले राजाओं में से जहाँ असंख्य लोग चले गये, (औरों की तो क्या) अहेमेन्द्र जहाँ काल के द्वारा मारा जाता है वहाँ दूसरों के जीवन कथा से क्या? राज्यसभा के अस्त होने पर हरिषेण के स्वर्ग जाने पर हजारों

(13) 1. AP तुहिणगिरिंद णीलसिहरि। 2. A °जलपवाह; P °जलणिवहु। 3. A °रमणगह; P °रवणवहु। 4. A णिद्देसियउ। 5 A भासियउ। 6. A जम।

(14) 1. A अण्ण वि कहि; P अण्णहिं किं। 2. A अइ अत्थमिए; P लइ अत्थमिए।

सव्वत्थसिद्धि हरिसेण गइ दिणमाणें[3] वरिसहं सहसहइ[4] ।
[5]सुयसुइदिणाउ जायविजइ पुण्णइ पंचुत्तरवरिससइ ।
असुरिंदें विद्धंसियसयरि दहरहु[6] पइट्ठु[7] उज्झाणयरि ।
परियाणिवि तणयहु तणउं बलु हुउ महियलि सयलु वि खलु विबलु ।
सहुं पुत्तहिं जायधरारइहिं सुपरिट्ठिउ पहु णियसंतइहिं ।
तहिं सुहुं णिवसंतहु णरवइहि उप्पण्णउ संतोसु व जइहि ।
अण्णेक्कहि भरहु पसण्णमणु अण्णेक्कहि घरिणिहि सत्तुहणु ।
महिवइ संपुण्णमणोरहहिं चउहिं वि जणेहिं परबलमहहिं ।
सोहइ पुत्तहिं सकयायरहिं णं भूमिभाउ चउसायरहिं ।
घत्ता—मिहिलाणयरिहिं[8] ताम णामें जणउ णरेसरु ।।
पसुवहकम्में सग्गु चिंतइ जण्णहु अवसरु ।।14।।

15

महु मेरउ रक्खइ को वि जइ वसुहासुय दिज्जइ तासु तइ ।
तं णिसुणिवि मंतें जंपियउं जसु णामें तिहुयणु कंपियउं ।
सो जासु ण जाउहाणु[1] गहणु जसु लहुवभाइ भडु महमहणु ।
सो रक्खइ[2] धुवु काकुत्थु तिह खेयरहिं ण हम्मइ होमु जिह ।

वर्षों का समय बीत गया। उनके पुत्रजन्म के दिन से लेकर विजय से युक्त एक सौ पाँच वर्ष पूरे होने पर, असुरेन्द्र द्वारा राजा सगर के ध्वस्त होने पर, राजा दशरथ ने अयोध्या नगरी में प्रवेश किया। पुत्रों के बल को जानकर धरतीतल के सारे दुष्ट बलहीन हो उठे, जिनकी धरती में अनुरक्ति है ऐसे अपने पुत्रों और संतानों के साथ राजा दशरथ वहाँ अच्छी तरह रहने लगे। वहाँ सुख-पूर्वक निवास करते हुए राजा के एक और पत्नी से प्रसन्न मन भरत उसी प्रकार उत्पन्न हुआ जिस प्रकार मुनि को संतोष उत्पन्न होता है। एक और पत्नी से शत्रुघ्न पैदा हुआ। पूर्ण मनोरथ वाले, परमशत्रुसेना का नाश करने वाले, स्वजनों का आदर करनेवाले उन चारों पुत्रों से राजा दशरथ इस प्रकार शोभित होता है, जिस प्रकार भूमिभाग चार समुद्रों से शोभित होता है।

घत्ता—इसी समय मिथिला नगरी में जनक नाम का राजा था। उसने सोचा पशु यज्ञ से स्वर्ग मिलता है। यज्ञ का अवसर है।

(15)

जो कोई मेरे यज्ञ की रक्षा करेगा मैं उसे सीता दूँगा। यह सुनकर जनक के मंत्री ने कहा : सुनो, जिसके नाम से त्रिभुवन काँपता है, और जिसका रावण के द्वारा ग्रहण संभव नहीं है, योद्धा लक्ष्मण जिसका छोटा भाई है, ऐसे राम निश्चय से यज्ञ की इस प्रकार रक्षा करेंगे, जिससे विद्याधरों के द्वारा होम का नाश नहीं किया जा सकता। यह सुनकर राजा ने श्रेष्ठ दूत भेजा,

3. P दिणमाणह। 4. A सहासरुए; P °सहसि हुए। 5. AP °दिणाउ जाएवि लए। 6. AP दसरहु। 7. A सुपइट्ठउ। 8. A महिला°।
(15) 1. A णाउहाणु। 2. A रक्खइ बंधुसमेउ।

ता राएं पेसिय दूयवर    गय ते बहुपाहुडलेहकर[3]।
उज्झहि दसरहहु णिवेइयउं[4]    आलिहियउं पण्णउं वाइयउं।
जो रक्खइ अद्धर परमक्कय[5]    तहु दिज्जइ णं पच्चक्ख सुय[6]।
णामेण सीय वेल्लहलभुय    किर कहु उवमिज्जइ जणयसुय।
तं बुद्धिविसारएण भणिउं    इहरत्ति परत्ति चारु झुणिउं।
कउकरणु[7] णिहालणु रक्खणु वि    लइ रक्खउ राहउ लक्खणु वि।

घत्ता—कारावय होआयार[8] हुणिय पसु वि देवत्तणु ॥
जेण लहंति णरिंद तं करि जण्णपवत्तणु ॥15॥

16

जं जुजिवि[1] सग्गहु सयरु गउ    सहुं सयणहिं तणयहिं मुक्करउ।
तं नव[2] रक्खिज्जइ किज्जइ[3] वि    भावें वित्थारहु णिज्जइ[4] वि।
जगि धम्ममूलु वेउ जि कहिउ    सो जेहिं महापुरिसहिं गहिउ[5]।
ते हुंति देव दिव्वंगधर    लहु पेसहि कुलसरहंसवर।
रक्खेवि जण्णु सा घणथणिया    सिसु परिणउ[6] सुय जणयहु तणिया।
ता अइसयमइणा ईरियउं    पइं बप्प असच्चु वियारियउं।

जो अनेक उपहार और लेख हाथ में लेकर गये। अयोध्या में उन्होंने दशरथ से निवेदन किया और लिखे हुए पत्र को पढ़ा : "जो महान् क्रिया वाले यज्ञ की रक्षा करता है, उसे मैं प्रत्यक्षलक्ष्मी के समान कोमल भुजा वाली सीता नाम की कन्या दूंगा।" जनक की कन्या की उपमा किससे दी जा सकती है ! तब राजा से बुद्धिविशारद ने कहा—"यज्ञ करना, उसकी देखभाल करना या रक्षा करना इस लोक और परलोक में सुन्दर कहा गया है। तो लक्ष्मण और राम यज्ञ की रक्षा करें।"

घत्ता—यज्ञ कराने वाले होता जन और उसमें होमे गए पशु, जिससे देवत्व पाते हैं, हे राजन्, उस यज्ञ का प्रवर्तन कीजिए।

(16)

जिस प्रकार राजा सगर यज्ञ करके स्वजनों और पुत्रों के साथ पाप से रहित होकर स्वर्ग गया, उसी प्रकार, हे राजन्, यज्ञ की रक्षा की जानी चाहिए। उसका विस्तार करना चाहिए। विश्व में धर्म का मूल वेद को माना गया है, और उसे जिन महापुरुषों ने स्वीकार किया है, वे दिव्य शरीर धारण करने वाले देवता होते हैं, इसलिए शीघ्र ही अपने कुल रूपी सरोवर के श्रेष्ठ हंसों (राम, लक्ष्मण) को शीघ्र भेज दीजिए। यज्ञ की रक्षा करके सघन स्तनों वाली जनक की उस कन्या से बालक राम विवाह करें। तब अतिशयबुद्धि मंत्री ने कहा—"भोले-भाले तुमने यह

3. A पाहुड लेवि कर। 4. P णिवेवियउं। 5. A अद्दुर परमरूअ; P अद्धर परमकिय। 6. AP सिय। 7. P करुणु। 8. A कारावय होयारहुणिय; P कारावयहोआयारि।
(16) 1. A जुंजवि; P हुंजेवि। 2. AP णिव। 3. A कज्जइ व। 4. A णिज्जइ व। 5. A महिउ 6. P परणउ।

सुणि भारहि चारणजुयलि पुरि जिणधम्मपहाउज्झियविहुरि ।
तहिं अत्थि सुजोहणु दिण्णदिहि महएवि तासु णामें अतिहि ।
सुय सुलस सुलक्खण जहिं जि जहिं दीसइ[7] भल्लारी तहिं जि तहिं ।
तहि णिरुवमु रूउ गुणग्घविउं णिउणें विहिणा कहिं णिम्मविउं ।

घत्ता—णडवेयालियछत्तबंदिणघोसाऊरिउ ।।
ताहि सयंवरु जाउ सयरु[8] राउ हक्कारिउ ।।16।।

17

सो कोसल मेल्लिवि णीसरिउ पहपरहरि[1] मज्जणि संचरिउ ।
दप्पणि अवलोइउ सिरपलिउं[2] णवचंपयतेल्लें विच्छुलिउं ।
राएण वुत्तु किं परिणयणु एवहिं किं छिप्पइ तरुणियणु ।
थेरत्तणि परिहउ पेम्मविहि[3] विसहिज्जइ वर तवतावसिहि ।
ता तहु धाईइ किसोयरिइ पडिवयणु दिण्णु मंदोयरिइ ।
सियकेसें चंगउ दीसिहइ तुह[4] सिरिहरि संपय पइसिहइ ।
तं वयणें महिवइ पुणु चलिउ गरुडद्धउ णहयलि परिघुलिउ ।
दियहेहिं पराइउ तं णयरु ससुरग्गइ संथुउ णिवसयरु[5] ।
जाइवि धाइइ मंदोयरिइ सइं दिण्ण कण्ण तुच्छोयरिइ ।

असत्य विचार किया है। आप सुनिए कि भारतवर्ष के जिन धर्म के प्रभाव से दु:खों से रहित चारणयुगल नगर है, उसमें सुयोधन नाम का भाग्यशाली राजा था। उसकी अतिथि नाम की महादेवी थी। उसकी लक्षणवती सुलसा नाम की लड़की इतनी सुन्दर थी कि उसे जहाँ देखो वहीं भली दिखती थी। गुणों से युक्त उसके अनुपम रूप को चतुर विधाता ने बड़ी कठिनाई से बनाया होगा।

घत्ता—उसका वहाँ नटों-वैतालिकों, छत्रों-बंदीजनों के घोषों से आपूरित स्वयंवर रचा गया और उसमें राजा सगर को बुलाया गया।

(17)

वह (सगर) कौशल देश को छोड़कर चला। उसने स्नान करते समय उत्कृष्ट प्रभा को धारण करने वाले दर्पण के प्रतिबिम्ब में अपने सिर के सफेद बाल को देखा, जो चंपे के नये तेल से चमक रहा था। राजा ने कहा कि विवाह से क्या? इस अवस्था में तरुणी जन को क्या छुआ जाए! बुढ़ापे में प्रेम प्रक्रिया पराभव का कारण है, अब श्रेष्ठ तप की तपस्या को सहन करना चाहिए। तब उसकी कृशोदरी धाय मंदोदरी ने प्रत्युत्तर में कहा कि सफेद बाल से तुम अच्छे दिखोगे और तुम्हारे श्रीगृह में संपत्ति प्रवेश करेगी। उसके वचन सुनकर राजा फिर चल पड़ा, उसका गरुड़-ध्वज आकाश तल में फहराने लगा। कुछ दिनों में राजा सगर उस नगर में पहुँचा और अपने ससुर के सामने बैठ गया। क्षीण कटिवाली धाय मंदोदरी ने जाकर स्वयं कान दिए (बात सुनायी)।

7. AP अवलोइय मारइ तहिं जि तहिं। 8. AP सयर राउ।
(17) 1. A पहु पुरिवहि। 2. AP सिरि पलिउ। 3. A पेम्मणिहि। 4. AP तहु। 5. A णिउ। सयरु; P णिउ सगरु।

घत्ता—कण्णइ गुणसंदोहे हियवउं सयरि णिहित्तउं[6] ।।
मायइ विहसिवि ताम अवरु पडुत्तरु वुत्तउं ।।17।।

18

सुणि देसि सुरम्मइ सहलवणि    पोयणपुरि धणपरिपुण्णजणि ।
बाहुबलिणराहिववंसतइहि    जायउ महु बंधु कुलुण्णइहि ।
तिणपिंगु तासु पिय सुजसमइ    वीणारव णं मणसियहु रइ ।
तहि तणउ तणउ णं कुसुमसरु    तरुणीयणलाइयविरहजरु ।
महुपिंगु णामु[1] तुह मेहुणउ    सुइ अच्छइ आयउ पाहुणउ ।
अण्णेत्तहिं[2] म करहि रमणमइ[3]    तुह जोग्गु जुवाणउ सो ज्जि लइ ।
णियभाइणेज्जु वरु इच्छियउ    अण्णेक्कु असेसु दुगुंछियउ ।
सासुयइ पइत्तु समारियउं[4]    पडिवक्खागमणु णिवारियउं ।
अण्णेक्के सयरहु साहियउं    जं आहरणेहिं पसाहियउं ।
जं कण्णारयणु समहिलसिउं    तं दुल्लहु वट्टइ विहिवसिउं ।

घत्ता—अतिहीदेविहि बंधु जो तिणपिंगलु राणउ ।।
महुपिंगलु तहु पुत्तु आयउ मयणसमाणउ ।।18।।

---

घत्ता—कन्या ने गुणों के समूह राजा सगर में अपना हृदय स्थापित कर दिया। परन्तु उसकी माता ने हँसते हुए उसे (कन्या को) दूसरा ही उत्तर दिया।

(18)

सुफल वन वाले सुरम्य देश में वन से परिपूर्ण लोगों वाला पोदनपुर नगर है, उसमें बाहुबलि राजा की वंश परम्परा में कुल की उन्नति करने वाला मेरा भाई तृणपिंग है। उसकी यशोधरी नाम की पत्नी है। वीणा के समान शब्द वाली जो मानो कामदेव की रति है, युवतीजनों को विरहज्वर उत्पन्न करने वाला मधुपिंगल नाम का उसका कामदेव के समान पुत्र है। वह तुम्हारे मामा का बेटा पाहुना बनकर आया है, और यहाँ अच्छी तरह है। इसलिए तुम किसी दूसरे में रमण की बुद्धि न करो। वह तुम्हारे योग्य युवक है, उसी को तुम ग्रहण करो। अपने भाई के पुत्र को वर के रूप में पसन्द करो और बाकी सबकी उपेक्षा कर दो। इस प्रकार सास ने अपना प्रयत्न शुरू कर दिया और प्रतिपक्ष (सगर) का वहाँ आना मना कर दिया। किसी दूसरे ने जाकर राजा सगर से कहा—जो तुमने अलंकारों से प्रसाधन किया है, और जो कन्या की इच्छा की है, वह भाग्य के बल से असंभव दिखाई देती है।

घत्ता—अतिथि देवी का भाई जो तृणपिंगल नाम का राजा है, उसका कामदेव के समान मधुपिंगल नाम का पुत्र आया हुआ हैं।

---

6. AP णिहृत्तउं।
(18) 1. A णाउं तसु पेहणउ। 2. A अण्णहे तहे। 3. A रमणरइ। 4. A सवारियउ; P संवारियउ।

19

देहिंति तासु सुय जाहि तुहुं ता पहुणा जोइउं मंतिमुहुं।
गुरु चवइ एउ किर कित्तडउं[1] महुं तिहुयण[2] सरिसव जेत्तडउं।
जइ णउ परिणावमि कण्ण पइं तो मंतित्तणु किउं काइं मइं।
इय भणिवि कव्वु कइणा विहिउ वरलक्खणु दलसंचइ लिहिउ।
तं कासु वि कहिं मि ण दावियउं मंजूसहि तेण छुहावियउं।
बहुवण्णविचित्तचीरपिहिउं[3] णिवउववणमहियलि संणिहिउं।
हलियहिं हलि हत्थु जेत्थु णिहिउ जहिं छुडु भूभाउ समुल्लियउ[4]।
कउ[5] वड्ढियतणकट्ठयरहिउ जहिं पग्गहि धवलु परिग्गहिउ[6]।
वावारिय कम्मु करंति जहि णंगरि[7] मंजूस विलग्ग तहि।
आयड्ढिवि णीय णिहेलणहु दक्खालिय पहुहि सुजोहणहु।
उग्घाडिय पोत्थउं जोइयउं अण्णेक्कें भल्लउं वाइयउं।

घत्ता—दियवरवेसें ढुक्कु कइ[8] पच्छण्णु सरायइ॥
वरइत्तहु सामुद्दु भासइ कोमलवायइ॥19॥

20

काणकुंटपिंगलाहं अंधमूयपंगुलाहं।
णिद्धणाहं णिब्बलाहं [1]बुद्धिहीणवेंभलाहं।

(19)

तुम जाओ। कन्या उसे (मधुपिंगल को) दी जाएगी। तब राजा ने मंत्री का मुख देखा। तब गुरु ने कहा—यह मेरे लिए कितनी-सी बात है, मेरे लिए त्रिभुवन सरसों के समान है। यदि मैं तुम्हारा कन्या से विवाह न कराऊँ तो मैंने मंत्रीपन क्या किया? ऐसा कहकर कवि मंत्री ने एक उत्तम लक्षणों का काव्य बनाया और उसे पत्रसंपुट पर लिखा। उसे उसने कही भी किसी को नही दिखाया और मंजूषा में रख दिया। नाना रंग के विचित्र वस्त्र से ढकी हुई मंजूषा को राजा के उद्यान की धरती में गाड़ दिया। किसान द्वारा हल पर हाथ रखते ही जहाँ शीघ्र भू-भाग जुत जाता है, जहाँ धरती गड़े हुए तिनकों और कठोरता से रहित है, जहाँ बैल लगामों से ग्रहीत हैं, वहाँ किसान खेती का काम करते हैं और उनके हल में मंजूषा आ लगती है। वे उसे उठाकर अपने घर ले आये और उन्होंने अपने अच्छे योद्धा राजा को उसे दिखाया। खोलकर पोथी देखी गई और कई लोगों के द्वारा वह अच्छी तरह बाँची गई।

घत्ता—द्विजवर (ब्राह्मण) के वेश में कवि रूपी मंत्री प्रच्छन्न रूप में वहाँ पहुँचा और राग पूर्वक कोमल वाणी में वर को सामुद्रिक-शास्त्र बताने लगा।

(20)

काले, पीले, अन्धे, गूंगे, निर्धन, निर्बल, बुद्धिहीन, पागल, मान और लज्जा से रहित और

(19) 1. A कित्तलउं; P केत्तडउं। 2. A तिहुवणु सरिसउ। 3. A चीरु पिहिउ। 4. AP समुल्लिहिउ। 5A omits this foot. 6. P adds after this : वंसालग्गा रइ णिरु गहिउ। 7. A लग्गलि; P लंगलि। 8. A कइकयपच्छण्ण।

(20) 1. A °विब्भलाहं; P °विंभलाहं।

माणलज्जवज्जियाहं रोयभावणिज्जियाहं ।
कुट्ठणट्ठकाययाहं छिण्णपाणिपाययाहं ।
णीयकम्मकारयाहं इत्थिडिंभमारयाहं ॥
णिग्घिणाहं णिद्दयाहं साहुकम्मणिंदयाहं ।
वड्ढमाणदुज्जसाहं[2] दुक्कुलाहं सालसाहं[3] ।
वुड्ढकुच्छियंगयाहं[4] दीणभावणं गयाहं ।
गोत्तवित्तचत्त जा वि दिज्जए ण कण्ण सा वि ।
घत्ता—मंडवमज्झि विवाहि पिंगलु जो पइसारइ[5] ॥
सो[6] विहवत्तणु दुक्खु णियधीयहि वित्थारइ ॥20॥

21

ता सो महुपिंगलु लज्जियउ गउ चामरछत्तविवज्जियउ ।
एक्किकल्लउ[1] ल्हिक्किवि बंधवहं लग्गउ दहदुविहहं जिणतवहं ।
सेवइ हरिसेणगुरुहि पयइं णिक्खवइ अणंतइं दुक्कियइं ।
एत्तहि सो सयरु वि बालियइ वरु लइउ सयंवरमालियइ ।
अणुहुंजिवि[2] तहिं णववहुसुरउ पुणु आमेल्लेप्पिणु सासुरउं ।
उज्झाउरि जाइवि पाणपिउ सिरि सुलसइ सहुं भुजंतु थिउ ।
महुपिंगु भडारउ कहिं मि पुरि पइसइ[3] भिक्खहि चउवण्णघरि ।
जा[4] तावेक्कें विप्पें कहिउ सामुद्दु असेसु सच्चरहिउ ।

---

रोगों से पराजित, कोढ़ी, क्षीण शरीर, कटे हाथ-पैर वाले नीच कर्म करने वाले, स्त्रियों और बच्चों की हत्या करने वाले, निर्दय, घिनौने, अच्छे कामों की निन्दा करने वाले, बढ़ते हुए अपयश वाले, खोटे कुल वाले, आलसियों, बढ़ती हुई खुजली से युक्त शरीर वाले, दीन भाव को प्राप्त, उनको तथा ऐसे लोगों को तो कुल और धन से रहित कन्या भी नहीं दी जाती।

घत्ता—जो व्यक्ति मंडप के भीतर विवाह में पिंगल का प्रवेश कराएगा वह अपनी कन्या के लिए, दु:ख और वैधव्य लाएगा।

(21)

इससे बेचारा मधुपिंगल लज्जित हुआ और चामरों और छत्रों से रहित होकर चला गया। वह अकेला अपने बंधु और बांधवों से छिपकर जिनेन्द्र भगवान् द्वारा कहे गए बारह प्रकार के तप में लग गया। वह हरिषेण के चरणों की सेवा करने लगा। और इस प्रकार अनन्त दु:खों का क्षय करने लगा। यहाँ भी उस बाला ने स्वयंवरमाला के द्वारा सगर को वर रूप में ग्रहण कर लिया। वह भी वहां नववधू के साथ सुरति का भोग कर फिर ससुराल छोड़कर अयोध्या नगरी में जाकर प्राणप्रिय श्री सुलसा के साथ आनन्द करता हुआ रहने लगा। जिसमें चारों प्रकार के वर्णों के घर हैं ऐसी उस नगरी में आदरणीय मुनि मधुपिंग ने भिक्षा के लिए जैसे ही प्रवेश

---

2. A दुज्जणाहं । 3. A दुग्मुहाहं । 4. A कुच्छियारयाहं । 5. A वइसारइ । 6, P omits सो ।
(21) 1 AP एक्कल्लउ । 2. A अणुहुंजहि; P अणुभुंजहि । 3. AP पइसरइ । 4. A जा ता विप्पें एक्कें ।

रिसिसीलु एण अवलंबियउं लच्छीमुहु काइं ण चुंबियउं।
अवरेक्कें ता तहिं भासियउं पइ लक्खणु किं किर णिरसियउं।

घत्ता—मुणि[5] पोयणपुरि राउ होंतउ एहु महीसरु।।
गउ सुलसावरयालि चारणजुयलउं पुरवरु ।।21।।

22

पिउससमुय परिणइ जाम किर ता सयरमंतिकयकवडगिर।
पोत्थइ वित्थारिवि दक्खविय[1] विवरिवि बहुसद्दसमग्घविय।
सासुयससुरहं मणु हारियउं इहु पिंगदिट्ठि णीसारियउ।
अप्पुणु पुणु खलु वरइत्तु थिउ तेणेयहु [2]दुक्खणिहाणु किउ।
तं णिसुणिवि हियवइ कुद्धु जइ जिणदेसिउ तवहलु अत्थि जइ।
पाविट्ठु दुट्ठु खलु खुद्दमइ मइं पुरउ हणेव्वउ सयरु तइ।
रिसि रोसु भरंतु भरंतु मुउ असुरिंदहु वाहणु देउ हुउ।
सो सट्ठिसहसमहिसाहिवइ किं वण्णमि महिसाणीयवइ।

घत्ता—जिणवरधम्मु लहेवि खमभावें परिचत्तउ।।
खणि सम्मत्तु हणेवि सुरदुग्गइ संपत्तउ ।।22।।

---

किया, वैसे ही एक ब्राह्मण ने कहा—"सारा ज्योतिष-शास्त्र झूठा है। इसने (मधुपिंग) मुनि का आचरण स्वीकार किया है। इसने लक्ष्मी का मुख क्यों नहीं चूमा ?" तब एक और ब्राह्मण ने कहा, "तुमने लक्षण-शास्त्र की निन्दा क्यों की ?"

घत्ता—सुनो, यह पोदनपुर का राजा होता हुआ सुलसा के स्वयंवर समय में चारणयुगल नामक महानगर गया हुआ था।

(22)

पिता की बहन की बेटी का जब वह विवाह करने लगा तो सगर के मंत्री के द्वारा विरचित कपट वाणी से युक्त पोथी खोलकर और दिखाकर अनेक शब्दों से युक्त उसकी व्याख्या कर सास-ससुर का मन ठग लिया गया और पिंग दृष्टि वाले इसे निकाल दिया गया। दुष्ट राजा सगर खुद वर बन बैठा और इस प्रकार उसने इसे दुःखों का पात्र बनाया। यह सुनकर मुनि हृदय में क्षुब्ध हो उठा और बोला कि यदि जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहे गए तप का कोई फल होता हो तो यह दुष्ट पापी, खोटी बुद्धि वाला सगर मेरे सामने मारा जाए। मुनि इस प्रकार क्रोध धारण कर और याद करते हुए मर गया और असुरेन्द्र का वाहन देवता हुआ। साठ हजार महिषों का अधिपति और महिषों का सेनापति उनका क्या वर्णन करूं !

घत्ता—जिनवर का धर्म धारण कर, किन्तु क्षमाभाव से रहित वह व्यक्ति एक क्षण में सम्यक् दर्शन का हनन कर देव दुर्गति को प्राप्त हुआ। इसलिए क्रोध नहीं करना चाहिए।

---

5. A मुणि।
(22) 1. A दिक्खविय। 2. A °णिहाउ।

23

पुणु तक्खणि असुरें जाणियउं  जिह कव्वु करेप्पिणु आणियउं ।
जिह मामिहि मामहु हित्त मइ  जिह पिंगें पडिवण्णी विरइ ।
जिह गहिय तणूयरि मंदगइ  तिह एवहिं धुउ पावमि कुगइ ।
सहुं मंतिहिं साकेयाहिवइ  कहिं एवहिं वच्चइ[1] लद्धु लइ ।
इय[2] चिंतिवि तंबिरलोयणु  जायउ सो सालंकायणउ ।
मुहकुहरविणिग्गयवेयझुणि  हिंसालउ दूसियपरममुणि ।
सुलसावइजीवियसिरिहरहु  तहिं तासु महाकालासुरहु ।
जायउ सहाउ जो दुम्मयहु  आयण्णहु तहु कह[3] पव्वयहु ।
[4]उत्तंगसत्तधरणियलघरि  एत्थेव खेत्ति सावत्थिपुरि[5] ।
विस्सावसु राणउ विमलजसु  तहु सिरिमइदेविहि पुत्तु वसु ।

घत्ता— णामें खीरकलंबु दियवरु सत्थवियारउ ।।
तासु चट्टु वसु जाउ पव्वउ अवरु वि णारउ ।।23।।

24

सहुं सीसहिं सो परमायरिउ  एक्कहिं दिणि काणणि अवयरिउ ।
अब्भावयासणिट्ठवियणिसि  उवविट्ठउ दिट्ठउ तेत्थु[1] रिसि ।

(23)

तब उसी समय उस असुर ने जान लिया कि किस प्रकार काव्य रचकर लाया गया था, किस प्रकार मामा[1] और मामी की बुद्धि को ठगा गया, और किस प्रकार मधुपिंगल ने वैराग्य धारण किया, किस प्रकार मंद गति कन्या ग्रहण की गई, और किस प्रकार मैं कुगति को प्राप्त हुआ। साकेत नगर का राजा सगर इस समय मंत्रियों के साथ बचकर कहाँ जाएगा। मैं उसे अभी लेता हूँ। फिर विचार कर वह लाल आँखों वाला सालंकायण नाम का ब्राह्मण हो गया। जिसके मुख विवर से वेद-वाणी निकल रही है, जो हिंसक परम मुनि को दूषित करने वाला है, सुलसा के पति (सगर) के जीवन रूपी लक्ष्मी का हरण करने वाले उस महाकाल सुर का जो सहायक बन गया ऐसे खोटे मद वाले प्रवर्तक ब्राह्मण की कथा सुनो! इसी भरतक्षेत्र में ऊँचे सात धरणीतल वाले घरों से युक्त श्रावस्ती नगरी में विमल यश वाला विश्वावसु नाम का राजा था। उसकी श्रीमती नाम की पत्नी से वसु नाम का पुत्र था।

घत्ता—उस नगर में क्षीरकदम्ब नाम का शास्त्रों का विचार करने वाला श्रेष्ठ ब्राह्मण था, राजा वसु, पर्वतक और एक और नारद उसके चेले बन गए।

(24)

अपने शिष्यों के साथ वह महान् आचार्य क्षीरकदम्ब एक दिन जंगल में गए। बादलों से रहित आकाश के अंतराल में जिन्होंने रात्रि व्यतीत की है, ऐसे एक मुनि को उन्होंने बैठे हुए देखा।

(23) 1. A वच्छइ लद्धु जइ। 2. P तं चिंतिवि। 3. A कयकव्वयहु। 4. AP उत्तुंग°। 5. सावत्थपुरि; P सावित्थिपुरि।

(24) 1. A तेण।

1. ससुर और सास।

उज्झाएं पणविवि पुच्छियउ भवियव्वमग्गु[2] सुणियच्छियउ ।
तीहिं वि दियवरछत्तहं तणउ आहासइ मुणि पणट्ठपणउ ।
वसु पव्वय णारयधरणियलि पडिहिंति दो वि कयजण्णफलि ।
जिणणाणसुणिच्छउ[3] मणि वहइ णारउ सव्वत्थसिद्धि लहइ ।
तं णिसुणिवि गुरु उव्विग्गमणु[4] आयउ पुरु थिउ भूसिवि भवणु ।
खेल्लंतु दिएसें [5]धाडियउ अण्णहिं दिणि लट्ठिइ[6] ताडियउ ।
कंपंतदेहु सुहृदाइणिहि वसु विसइ सरणु उज्झाइणिहि ।

घत्ता—पत्थिवि रक्खिउ ताए कंत म तासहि बालउ ।।
पत्थिवपुत्तु सुसीलु कमलगब्भसोमालउ ।।24।।

25

धरणिहि वयणें वरु ओसरिउ सिसु चवइ माइ पइं गुरु धरिउ ।
महुं उप्परि एंतउ कुद्धमणु भणि[1] एव्वहिं[2] दिज्जउ वरु कवणु ।
तं णिसुणिवि इज्जइ भासियउं महुं पुत्त चित्तु संतोसियउं ।
जइयहुं मग्गहि तइयहुं जि वरु तुहु देज्जसु धवलबलूढभरु ।
व्रउ[3] लेंतें संतें पीणभुउ विस्सावसुणा कमि णिहिउ सुउ ।

---

उपाध्याय ने प्रणाम करके उनसे अच्छी तरह से निरीक्षित अपना भावी मार्ग पूछा । अपनी प्रतिज्ञा को भंग करते हुए मुनि उन द्विजवरों और क्षत्रियों का भविष्य बताने लगे—राजा वसु और पवर्तक नरक की धरती में पड़ेंगे क्योंकि दोनों ने अपने यश का फल कमा लिया है । नारद जिन ज्ञान के निश्चय को अपने मन में धारण करता है, इसलिए सर्वार्थसिद्धि प्राप्त करेगा । यह सुनकर अत्यन्त उद्विग्न मन से राजा घर आया और भवन की शोभा बढ़ाकर रहने लगा । एक दिन खेलते हुए उसे (वसु को) ब्राह्मण ने निकाल दिया । क्षीरकदम्ब ने एक और दिन उसे लाठी से पीटा । थर-थर कांपता हुआ राजा वसु शुभ करने वाली गुरु पत्नी की शरण में चला गया ।

घत्ता—उसने राजा की रक्षा की और कहा कि हे स्वामी, इस बालक को ताड़ित मत करो । राजा का यह लड़का सुशील है, और कमल के मध्य भाग की तरह कोमल है ।

(25)

अपनी पत्नी के शब्दों से पति हट गया । बालक कहता है कि हे माँ, तुमने गुरु को रोक लिया । क्रुद्ध मन मेरे ऊपर आते हुए । कहो इस समय मैं कौन-सा वर दूँ ? यह सुनकर आदरणीया माँ ने कहा—पुत्र, मेरा चित्त संतुष्ट हो गया । जिस समय मैं वर मागूँ तब उस समय मुझे देना । इस प्रकार अत्यन्त महान् और बलिष्ठ बाहु वाला राजा वसु यह व्रत लेने पर अपने पिता विश्वावसु के द्वारा कुल परम्परा में स्थापित कर लिया गया । वह अपने सहचरों और

---

2. A भवियप्पु मग्गु । 3. A °णाणि विणिच्छउ; P °णाणु विणिच्छउ । 4. A उव्विण्णमणु ।
5. AP पीडियउ । 6. A लट्टे ताडियउ ।
(25) 1. AP भणु । 2. A एमहिं । 3. AP वउ ।

सहुं सहयरकिंकरहिं रमइ अवरहिं दियहुल्लइ वणि भमइ।
पक्खिउलु णहंगणि पक्खलइ पहु पेक्खइ तं तहिं पडिलवइ[4]।
णीरूवु ण णहयलु परु धरइ पक्खलणहु कारणु संभरइ।
इय चिंतिवि तेण विमुक्कु सरु धणुगुणु[5] आयड्ढिवि पिंछधरु।
आयासफलिहमउ खंभु[6] हउ उच्छलिवि बाणु धरणियलि गउ।
परिमट्ठउ हत्थें जाणियउ उच्चाइवि भवणहु आणियउ।
तहु खंभहु उप्परि हरिगीढि[7] सइं चडियउ कंचणमयइ पीढि[8]।

घत्ता—आसणु चलइ ण किं पि जणु जणु जणवइ पयडइ॥
धम्में णियसच्चेण वसु गयणाउ ण णिवडइ॥25॥

26

अण्णेक्कहिं[1] वासरि विविहहलु णारय पव्वय गुरुगिरिगुहिलु[2]।
चंदकउ कलाउ ण जलि करइ पच्छाउहपायहिं[3] ओसरइ।
पत्तइं तित्ताइं[4] मयूरियहं सरिवारिपवाहाऊरियहं।
इय तेण कज्जु परिहच्छियउं पुणु मित्तहु वयणु णियच्छियउं।
कइ णीलकंठ सुविचित्तियउ भणु पव्वय मोरिउ केत्तियउ।
सो ण मुणइ ण भणइ पहि चरइ विहसेप्पिणु णारउ वज्जरइ।
सिहिणीउ सत्त इह एक्कु सिहि ओसरिउ[5] सरहु जो पिंछणिहि।

किंकरों के साथ क्रीड़ा करता है और दूसरे के साथ दिन में घूमता है। आकाश के आंगन में पक्षिकुल स्खलित होता है। राजा उसे देखता है। वह वहीं कहता है कि आकाश अरूप है, वह दूसरों को धारण नहीं कर सकता। वह उसके स्थिर होने का कारण सोचता है। यह विचार कर धनुष की डोरी खीचकर अपना पुंख वाला तीर छोड़ा। उससे आकाश में स्थित स्फटिक वाला खंभा आहत हो गया, और बाण भी उछलकर धरती पर गिर पड़ा। हाथ से छूकर उसने जाना और उठाकर अपने घर ले आया। सिंहों के द्वारा धारण किये गये उस खंभे पर, उसकी स्वर्णमय पीठ पर वह चढ़ गया।

घत्ता—जनपद में लोगों को यह बात विदित हो गई कि आसन अणु मात्र भी नहीं हिलता। धर्म से और अपने सत्य से राजा वसु आकाश से भी नहीं गिर सकता।

(26)

एक दूसरे दिन नाना फल वाले विशाल पहाड़ की गुफा में नारद पर्वतक गये। वसु ने कहा कि मयूर जल में अपने पंख नहीं करता। वह अपने पिछले पैरों से हट जाता है। तालाब के पानी के प्रभाव से प्रवाहित मयूरों के पंख गीले हैं। इस प्रकार उसने असली बात छिपा ली। और फिर मित्र का मुख देखा, हे पवर्तक, बताओ कि विचित्र पंखों वाले मयूर कितने हैं और मयूरियाँ कितनी हैं। वह कुछ नहीं सोचता न कहता और रास्ते पर चलता है। नारद हँसते हुए कहता है कि यहाँ एक मयूर और सात उसके मोर हैं जो पंखों के समूह वाला तालाब से हट गया है। प्रखर

4. P पडिवलइ। 5. AP धणुगुणि। 6. AP थंभु। 7. A हरिवीढि; P हरिहि गीढि। 8. वीढि।
(26) 1. A ता एक्कहि। 2. AP गय गिरिगुहिलु। 3. P पच्छामुह°। 4. A सिताइं (तिताइं?)
5. AP ओसरइ।

बहुबुद्धिगहीरें पीलुरय पयलंतपेम्मजलसित्तरय ।
पयमग्गें जाणिय हत्थिणिय अवर वि आरूढणियंबिणिय ।
पुच्छिवि पव्वउ पुरि पइसरिवि गउ तक्खणि मच्छरु[6] मणि धरिवि ।।

घत्ता—अक्खइ मायहि गेहि णिरु ताएं सताविउ ।।
हउं ण पढाविउ किं पि णारउ चारु पढाविउ ।।26।।

27

सो जाणइ अम्मि [1]असिट्ठाइ वणि मोरिंगियइं अदिट्ठाइ ।
करिकरिणिहिं पयबिंबइं कहइ ता बंभणि रोसु चित्ति वहइ ।
सहुं कंतें पयडियगरहणउं विरइउ कोणीहलकलहणउ[2] ।
पइं काइं वि पुत्तु ण सिक्खविउ परडिंभु जि सत्थमग्गि थविउ ।
तं णिसुणिवि भट्टे घोसियउ अलिकंकहं केणुववेसियउं ।
मयरंदगंधमीणाहरणु हंसहं वि खीरजलपिहुकरणु ।
सुउ तेरउ सुंदरि मंदु जडु णारउ पुणु ससहावेण पडु ।
इय पभणिवि पिट्ठें मेस कय सुय भासिय जणणें णवियपय ।
ए वच्छ लएप्पिणु तरुगहणि पइसरिवि दूरु पविमुक्कजणि[2] ।
जहिं को वि ण पेक्खइ धुवु मुणिवि तहि आवहु बिहि वि कण्णु[3] लुणिवि ।

बुद्धि से गंभीर उसने (वसु ने) पग-चिह्नों के मार्ग से जान लिया कि हाथी में रत तथा झरते हुए प्रेम-जल से धूल पोंछती हुई एक हथिनी है और उसके ऊपर एक स्त्री बैठी हुई है। तब पर्वतक उससे पूछकर नगरी में प्रवेश कर अपने मन में ईर्ष्या धारण कर चला गया।

घत्ता—वह अपनी मां से कहता है कि घर में मुझे पिता ने अधिक सताया है। मुझे कुछ भी नहीं पढ़ाया, नारद को खूब पढ़ाया।

(27)

हे माँ, वह (नारद) विना कहे, बिना देखे वन में मयूर के चिह्नों को पहचान लेता है। हाथी और हथिनियों के चिह्नों को कहता है। यह सुनकर ब्राह्मणी मन में क्रुद्ध हो गई। जिसमें निंदा प्रकट है, ऐसा छोटा-मोटा झगड़ा उसने पति के साथ किया कि तुमने मेरे बच्चों को क्यों नहीं सिखाया। दूसरे के बच्चों को तुमने शास्त्र मार्ग में स्थापित कर लिया। यह सुनकर बेचारे ब्राह्मण ने कहा : बताओ भौंरों और बगुलों को पराग-गंध और मीनों का अपहरण करना किसने सिखाया ? हंसों को दूध से पानी अलग करना किसने सिखाया ? हे सुन्दरी, तेरा पुत्र मूर्ख और जड़ है। जबकि नारद स्वभाव से पंडित है। ऐसा कहकर उसने आटे के दो मेढ़े (ढेर) बनाए और पैरों में प्रणाम करने वाले अपने पुत्र से कहा : हे बेटे, इसे ले जाकर घने जंगल में प्रवेश कर खूब दूर जहाँ एक भी आदमी न हो, जहाँ कोई भी न देख सके, इस प्रकार अपने मन में

6. AP मणि मच्छरु।

(27) 1. AP अदिट्ठाइ। 2. AP कोलाहल°। 2. AP परिमुक्कजणि। 3. AP कण्ण।

तं विसुणिवि[4] जाइवि विविणपहिं[5] पच्छण्णें थाइवि[6] रुक्खरहि ।
कर मउलिवि जोइणि का वि थुय पव्वइण उरब्भहु कण्ण लुय ।

घत्ता—इयरें पइसवि दुग्गें चिंतिउं चंददिवायर ।।
इह णियंति पसु पक्खि किंणर जक्ख णिसायर[7] ।।27।।

28

जहिं गच्छमि तहिं तहिं अत्थि परु जइ णरु णउ तो पेक्खइ अमरु ।
किह कण्ण[1] उरब्भहु कत्तरमि घरु गंपिणु तायहु वज्जरमि ।
गय बेण्णि वि पेसणु अप्पियउ णारयकिउ चारु वियप्पियउ ।
विप्पेण वुत्तु हलि हंसगइ अवलोयहि तुहु णंदणहु मइ ।
जहिं गम्मइ तहिं असुण्णु णिलउ पसुसवणहं किह विरइउ विलउ ।
सुरगुरु वि समाणु ण णारयहु लइ एहु वि जोग्गउ गुरुवयहु[2] ।
सुय[3] घरिणि वि तासु समप्पियइं वसुराएं सहुं जंपिवि पियइं ।
तवचरणु जिणागमि संचरिवि दिउ मुउ थिउ दिव्वबोंदि धरिवि ।
बहुकालें[4] बिहिं वि हेउभरिउ पारद्धु विवाउ पवित्थरउ[5] ।
णारउ अय[6] जव तिवरिस चवइ तं पव्वउ वयणु अइक्कमइ ।

निश्चित कर वहाँ इसके दोनों कान काट कर ले आओ। यह सुनकर एकान्त पथ में जाकर पेड़ों में छिपकर हाथ जोड़कर उसमें किसी योगिनी की सुधि की और मेढ़े के कान काट लिये।

घत्ता—दूसरे ने दुर्गम स्थान में प्रवेश कर मन में विचार किया कि यहाँ भी सूर्य और चन्द्रमा देखते हैं, और पशु, पक्षी, किन्नर, यक्ष, निशाचर भी।

(28)

मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ-वहाँ दूसरा आदमी है। यदि आदमी नहीं देखता है तो देवता देखता है, मैं मेढ़े के कान कहाँ काटूं ? मैं घर जाकर आचार्य से कहूँगा। वे दोनों गये और अपनी-अपनी सेवा का निवेदन किया। नारद का कहा हुआ सुन्दर माना गया। ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा : हे हंस की चाल वाली, अपने बेटे की अक्ल देखो किसी भी स्थान को जाया जाए, वह सूना नहीं है, फिर इसने मेढ़े के कान को किस प्रकार काटा। नारद के समान बृहस्पति भी नहीं है, अतः यही गुरुपद के योग्य है। उन्होंने अपना पुत्र और गृहिणी भी नारद के लिए सौंप दी और राजा वसु के साथ प्रिय बातचीत कर जैन-शास्त्रों के अनुसार तप का आचरण कर वह ब्राह्मण देव शरीर धारण कर (स्वर्ग में) स्थित हो गया। बहुत समय के बाद उन दोनों ने युक्तिपूर्वक विवाद किया जो बहुत बढ़ गया। नारद कहता है कि तीन साल के जौ को अज कहते हैं, लेकिन पर्वतक इस

4. AP जाय विणिसुणिवि । 5. AP वियणवहिं । 6. AP आइवि । 7. A किवायर ।
(28) 1. AP कण्णु । 2. A गुरुयरहु । 3. AP सुउ । 4. AP बहुकालहिं । 5. AP पवित्थरिउ । 6. A अइजव ।

अय पसु भणंतु सो वारियउ अवरेहिं बुहेहिं णीसारियउ ।
गउ मच्छरेण थरहरियतणु संपत्तउ णीलतमालवणु ।
घत्ता—तहिं दियवरवेसेण पव्वएण सो दिट्ठउ ॥
असुरसुईउ पढंतु तरुतलि सिलहि णिविट्ठउ ॥28॥

29

मणपणयपसंगुप्पायणउं[1] तें[2] तासु कयउं अहिवायणउ[3] ।
वुड्ढेण वि पडिअहिवाउ[4] किउ पुणु वुत्तु होउ[5] तुज्झु जि विणउ ।
सुय जायउ जाणिउ किं ण पइं चिरु खीरकलबे[6] अवरु मइं ।
दोहि मि सुभउमु गुरु सेवियउ सत्थत्थु असेमु वि भावियउ ।
आयउ किर जोइहुं तासु मुहुं ता पवसिउ सो सुउ दिट्ठु तुहु ।
लइ जण्णमहाविहिकारियहं सहसाइं सट्ठि पसुवहरियहं ।
सयराइराय अब्भुद्धरहि मह[7] महियलि कारावहि करहि ।
हउं कंचुइ[8] अज्जु परइ मरमि णियविज्जइ पइं जि अलंकरमि ।
दियतरुणिं ता तहु इच्छियउं तं विज्जादाणु[9] पडिच्छियउं ।
पुरदेसहं घल्लिउ मारि जरु पहु को वि गवेसइ संतियरु ।
गय बेण्णि वि तं कोसलणयरु दोहिं वि संबोहिउ णिवु[10] सयरु ।

---

वचन का प्रतिरोध करता है। अज को पशु कहते हुए वह मना किया गया। दूसरे पंडितों ने उसे निकाल बाहर किया। ईर्ष्या के वश वह चला गया और जिसमें हरा घास कंपित है, ऐसे नील तमाल वन में पहुँचा।

घत्ता—वहाँ श्रेष्ठ ब्राह्मण के वेश में पर्वतक ने उसे देखा जो पेड़ के नीचे चट्टान पर बैठा हुआ असुरों के शास्त्र को पढ़ रहा था।

(29)

उसने उसके मन में प्रेम प्रसंग को उत्पन्न करने वाला अभिवादन किया। उस वृद्ध ने भी प्रत्यभिवादन किया और कहा कि तुम्हें भी विनय प्राप्त हो। हे पुत्र, क्या तुम यज्ञ को नहीं जानते ? बहुत पहिले मैं और क्षीरकदंब दोनों ने सुभौम गुरु की सेवा की थी। समस्त शास्त्रार्थ का विचार किया था। मैं उनका मुख देखने के लिए आया था। लेकिन वह प्रवसित हो चुके हैं। हे पुत्र, तुम्हें मैंने देखा है, यज्ञ की महाविधि कराने वाली पशुबंध से संबंधित साठ हजार ऋचाएं लो और सगर आदि राजाओं का उद्धार करो, धरती पर यज्ञ करो और कराओ। मैं तो बूढ़ा आदमी हूँ, कल या परसों मर जाऊँगा। अपनी विद्या से तुम्हीं को अलंकृत करूँगा। ब्राह्मण युवक ने उसे चाहा और उसका विद्यादान स्वीकार कर लिया। नगर और देश में महामारी का ज्वर फैल गया। राजा किसी शांति करने वाले की खोज में रहता है। वे दोनों उस अयोध्या नगर जाते हैं। दोनों ने राजा सगर को संबोधित किया।

---

(29) 1. A मणे। 2. A तं तासु। 3. P अभिवायणउं। 4. A पडिपणिवाउ। 5. AP होइ। 6. A °कयंबे। 7. A महु। 8. A कंचु अज्जु। 9. P तें विज्जा°। 10. AP णिउ सगरु।

घत्ता—हुणिवि[11] तुरंग मयंग दणुएं दाविय मायइ ।।
कुंडलमउडफुरंत[12] दिट्ठ देव णहभायइ ।।29।।

30

अप्पाणउं तहिं जि[1] हुणावियउं देवत्तु णहंगणि दावियउं ।
सत्तच्चिणिहित्तइं[2] चउपयहं णिट्ठियइं सट्ठिसहसइं मयहं ।
मायारएण जणु मोहियउ संतीइ सुहेण पयासियउं ।
हारावलिरुइरंजियथणिय सुलसा वि तेण हुयवहि हुणिय ।
गोसवि णियजणणि वि अहिलसिय सउयामणिमहि[3] मइर वि रसिय ।
विप्पहं बंभणिवरंगु विहिउं महुणा लित्तउं जीहइ लिहिउं ।
बहु वंचिय धुत्तें णेव जड अवलोयवि होमिज्जंत[4] भड ।
घरु जाइवि तणु घल्लिवि सयणि पहु सोयइ हा हा मिगणयणि ।
हा सुलसि काइं मइं तुज्झु किउ किह जीवियव्वु[5] णिड्डुहिवि णिउ ।
ता[6] तहिं जि पराइउ पवरजइ पुच्छइ पणामु विरइवि णिवइ ।
किं धम्मु भडारा पसुवहणु किं सव्वजीवदयसंगहणु ।

---

घत्ता—राक्षस ने (महाकाल ने) यज्ञ में हाथी-घोड़ों को होमकर उन्हें मायाबल से आकाश में दिखा दिया। आकाश में कुंडलों और मुकुटों से स्फुरित होते हुए देव दिखाई दिये।

(30)

उसने अपने को भी यज्ञ में होम कर दिया और आकाश के प्रांगण में देवत्व के रूप में प्रदर्शन किया। आग में डाले गये साठ हजार पशु नष्ट हो गये। उस मायावी के द्वारा लोग ठगे गये। उसने शांति और शुभ के लिए उन्हें प्रकाशित किया। हारावलि की कांति से जिसके स्तन शोभित हैं, ऐसी सुलसा को भी उसने आग में होम दिया। गो यज्ञ में उसने अपनी माता की भी इच्छा की और सौत्रामिणी यज्ञ में मदिरा का पान भी किया। ब्राह्मणों के लिए ब्राह्मणियों के उत्तमांग की रचना की गई मधु से लिप्त जो जीभ के द्वारा चाटी गई। इस प्रकार उस धूर्त के द्वारा बहुत-से लोग ठगे गये। होमे जाते हुए योद्धाओं को देखकर घर जाकर अपने शरीर को बिस्तर पर डालकर राजा सगर शोक करने लगा—हे मृगनयनी, हे सुरसे, मैंने तुम्हारे लिए यह क्या किया! मैंने तुम्हारे जीवन को क्यों जला डाला! इसी बीच एक महामुनि वहाँ पहुँचे। राजा उन्हें प्रणाम कर पूछता है: हे आदरणीय, पशुओं का वध करना धर्म है? या सब जीवों के प्रति दया करना धर्म है?

---

11. A हणवि। 12. A °मउल°।
(30) 1. P तहिं तो। 2. P णिहित्तहं। 3. P सोयामणि°। 4. A होमिज्जंति। 5. A जीवियत्थु। 6. P तो।

घत्ता—तं णिसुणिवि करुणेण तेण मुणिंदें वुत्तउं ।।
होइ अहिंसइ धम्मु हिंसइ पाउ णिरुत्तउं ।।30।।

31

पहु[1] जंपइ पच्चउ दक्खवहि अप्पाणउ कि मुहिइ खवहि ।
रिसि भासइ णहयलरंगणडि तुह सत्तमि दिणि णिवडिहइ तडि ।
णिवडेसहि णरइ म[2] भंति करि कि सग्गु[3] जंति पसु[4] खंत हरि ।
तं राएं रइयणरावयहु आवेप्पिणु अक्खिउ पावयहु[5] ।
तेण वि बोल्लिउ मलपोट्टलउ कि जाणइ सवणउं विट्टलउं ।
असुरिंदें दरिसिय देवि णहि बिउणारउ लग्गउ पुणु वि महि[6] ।
सो असणिणिहाए[7] घाइयउ वालुयपहमहि संप्राइयउ[8] ।
भणु पावें को व ण मारियउ रिउणा जाइवि[9] पच्चारियउ ।
जं पिंगलु हउं पइं दूसियउ जं णियकरु कण्णइ भूसियउ ।
जं वरलक्खणु महुं कयउ छलु भुंजहि एवहिं तहु तणउं फलु ।

घत्ता—पुणु असुरें णहमग्गि मायारूवें हरिसियइं ।।
सा सुलस वि सो सयरु बिण्णि वि मंतिहिं दरिसियइं ।।31।।

---

घत्ता—यह सुनकर उस महामुनि ने करुणापूर्वक कहा कि अहिंसा से धर्म होता है। हिंसा से निश्चय ही पाप होता है।

(31)

तब राजा कहता है कि आप इस बात को प्रदर्शित करके बताइये। आप अपने को व्यर्थ ही क्यों खपाते हैं। मुनि कहते हैं कि आकाश के रंगमंच पर नृत्य करनेवाली बिजली सातवें दिन तुम्हारे ऊपर गिरेगी। तुम नरक में जाओगे इसमें भ्रांति मत करो। क्या पशुओं को खाने वाला शेर स्वर्ग में जाता है? तब राजा ने जिसने पशुओं के लिए आपत्तियों की रचना की है ऐसे प्रवर्तक से कहा। उसने कहा कि मल की पोटली वह नीच जैन मुनि क्या जानता है? असुरेन्द्र ने आकाश में देवी सुलसा को दिखाया। तब राजा दुगुने चाव से फिर यज्ञ में लग गया। वह राजा बिजली के गिरने से मारा गया। और बालुकाप्रभ नरक में पहुंचा। बताओ पाप के द्वारा कौन नहीं मारा जाता? तब शत्रु ने जाकर उससे कहा कि जिस मुझ मधुपिंगल को दूषण लगाया था कि यह पीला है। और जो कन्या के द्वारा अपना हाथ भूषित किया था और जो तुमने मेरे साथ वर के लक्षणों वाला छल किया। इस समय तुम उसका फल भोगो।

घत्ता—फिर उस असुर ने आकाश मार्ग में माया रूप से हँसते हुए उस सुलसा को, उस सगर के दोनों मंत्रियों के साथ दिखाया।

---

(31) 1. A पइ जंपइ सच्चउ। 2. A ण। 3. AP सग्गि। 4. A पसु खंति। 5. AP पव्वयहु; but T पावयहु। 6, A महिं; P महो। 7. P °णिवाएं। 8. AP संपाइयउ। 9. P जीयवि।

32

ता खद्धकंदेण सह तवसिविंदेण[1] ।
गउ णारओ सेउ तं णयरु साकेउ ।
तेणुत्तु दियसीहु पव्वय दुरासीहु ।
वणयरइं मारंतु अद्वियइं चूरंतु ।
चम्माइं छिदंतु वम्माइं भिंदंतु ।
इसिदिट्ठु सुपसत्थु जइ वेउ परमत्थु ।
तइ खग्गु किं णेय जज्जाहि कुविवेय ।
जइ पोरिसेओ वि णउ होइ भणु तो वि ।
वण्णज्झुणी गयणि किं फुरइ णरवयणि ।
अक्खरइं कहिं बिंदु कहिं अत्थु कहिं छंदु ।
कयमणपयत्तेण विणु पुरिसवत्तेण ।
कहि हेउ[2] कहिं वेउ कहिं णाणु कहिं णेउ ।
कहि गयणि अरविंदु णीरूवि कहिं सद्दु ।
वेयम्मि कहिं हिंस दिय गिलियपरमंस ।
हिंसाइ कहिं धम्मु जड मुयहि तुहुं छम्मु ।
कत्तार दायार जणस्स णेयार ।
जहि होंति होयार[3] सुरणारिभत्तार ।
तो सूणगारा वि मीणावहारा वि ।
पसुखद्धवद्धा[4] वि ।

(32)

तब जिन्होंने कंद का भोजन किया है, ऐसे तपस्वी समूह के साथ नारद उस श्वेत साकेत नगर के लिए गया। उसने खोटी चेष्टा वाले उस द्विजश्रेष्ठ पर्वतक से कहा कि वन पशुओं को मारनेवाला दरिद्रों को चूरनेवाला चर्मों को छेदते हुए वक्षस्थलों को चीरते हुए ऋषि के द्वारा देखा गया यदि सुप्रशस्त और परमार्थ है, तो हे कुविवेकी, तुम खड्ग की पूजा क्यों नहीं करते? यदि वेद पौरुषेय (पुरुष रचित) नहीं है तो बताओ वर्णों की ध्वनि आकाश और मनुष्य के मुख में क्यों स्फुरित होती है? अक्षर कहाँ, बिन्दु कहाँ, अर्थ कहां, छंद कहाँ? किया गया है मन का प्रयत्न जिसमें ऐसे मनुष्य के मुख बिना उत्पत्ति (कारण) कहाँ, और वेद कहाँ? कहाँ ज्ञान? और कहाँ ज्ञेय? कहाँ आकाश में कमल होता है? अरूप में शब्द कैसे हो सकता है? दूसरों का मांस खाने वाले हे द्विज, वेद में हिंसा कहाँ? हिंसा से धर्म कहाँ? मूर्ख, छल छोड़। (पशुओं को)काटने वाले, देने वाले और हवन करने वाले यदि मनुष्यों के नेता और देवांगनाओं के स्वामी होते हैं, तो

(32) 1. A तवसविंदेण। 2. AP देउ। 3. A अविचार; PT अवियार। 4. AP omit this foot.

अमरा ण किं होंति[5] जइ जण्णि णिवडंति[6]।
पसु सग्गु गच्छंति[7]।
दीसंति सकयत्थ तो अप्पयं तत्थ।
होमेवि[8] मंतेहि सहुं पुत्तकंतेहिं।
गम्मिज्जए सग्गु भुंजिज्जए भोग्गु।

घत्ता—जलमट्टियचम्मेण दब्भें सुद्धि कहेप्पिणु ।।
भट्टें खद्धउ मासु खगमिगकुलइं वहेप्पिणु ।।32।।

33

जइ सच्चउ विप्प पवित्तु जलु तो किं तं जायउं मुत्तु[1] मलु।
जइ गंगाण्हाणु जि[2] दुरियहरु तो इस वि लहंति वि मोक्खु[3] परु।
जइ मट्टियमंडणि तमु गलइ तो कोलु विमाणें संचरइ।
जइ हरिणाइणु धम्मुज्जलउं तो हरिणउलु जि जगि अग्गलउं।
कि बंभणु उत्तमु तुहुं कहहि तं मारिवि[4] मासगासु महहि।
जइ दब्भें पुण्णु पवित्थरइ तो किं मयउलु भवि संसरइ।
तं रत्तिदियहु दब्भ[5] जि चरइ किह[6] इदविमाण ण पइसरइ।
गोफंसणपिप्पलफंसणइं सुत्तुट्ठियाहं घयदंसणइं।
जइ पाउ हणंति हुंत पउर तो वसहकायराया वि सुर।

वध करने वाले और मीनों का अपहरण करने वाले, पशुओं को खाने और बाँधने वाले भी देव क्यों नही होते ? यदि यज्ञ में पड़ने से पशु स्वर्ग जाते हैं और कृतार्थ दिखाई देते हैं, तो पुत्र और स्त्री के साथ मंत्रों सहित अपने को उसमें होम कर स्वर्ग जाया जाए और भोग भोगा जाए ?

घत्ता—जल, माटी और चर्म तथा दूब से शुद्धि बताकर तथा पक्षी एवं मृगकुल की हत्या कर ब्राह्मण ने मांस खाया।

(33)

हे ब्राह्मण, यदि सचमुच गंगा का जल पवित्र है, तो वह जल मल-मूत्र क्यों बन जाता है ? यदि गंगा का स्नान पापों का हरण करने वाला है तो मछलियों को भी परम मोक्ष की प्राप्ति होनी चाहिए। यदि मिट्टी शरीर पर लगाने से मोक्ष होता है तो सुअर को देव विमान में चलना था। यदि मृग के चर्म से धर्म उज्ज्वल होता है, तो मृगों का समूह श्रेष्ठ होना था। तुम ब्राह्मण उस को पवित्र कहते हो, और यज्ञ में मारकर उसके मांस का कौर बनाते हो। यदि दूब से पुण्य का विस्तार होता है तो मृगों का झुंड आकाश में क्यों नहीं फिरता ? वह दिन-रात चारा चरता रहता है। इन्द्र के विमान में वह प्रवेश क्यों नहीं करता ? गाय को और पीपल को छूना और सोकर उठने पर गाय को छूना, पीपल को स्पर्श करना और घी को देखना आदि यदि पाप का नाश करते

5. AP add after this : किं दुग्गई जंति। 6. A णिवडंत। 7. A गच्छंत। 8. A होमेहिं।
(33) 1. AP मुत्तामलु। 2. A वि। 3, A सोक्खु। 4. P मरिवि। 5. AP दब्भु। 6. A किं।

कि बहुवें पुणु वि मंति भणइ  जो परु अप्पाणउं[7] समु गणइ।
णिग्गंथु णियत्थु वि परिभमउ  छुडु मोहु[8] लोहु मच्छरु समउ।
सो पावइ तं सिद्धत्तु[9] किह  रसविद्धु धाउ हेमत्तु जिह।
घत्ता—हिंसारंभु वि धम्मु वयणु असच्चु वि सुंदरु॥
जणु[10] धुत्तहिं दढमूढु किज्जइ कालउं पंडुरु॥33॥

34

जवहोमें संतियम्मु कहिउ  जं तं पइ छेलएहिं गहिउ[1]।
अय जव जि पयरिय हुंति णउ  पइं लंघिउं तायहु वयणु कउ।
गिरि घोसइ गुरुणा पिसुणियउं  तें तइयहुं[2] वसुणा णिसुणियउं।
ता णारउ पव्वउ रुद्दधय[3]  तावस सावित्थिहि झ त्ति गय।
पव्वयजणणिइ अब्भत्थियउ  वरकालु एहु पहु पत्थियउ।
जइ सुअरहि भासिउ[1] अप्पणउं  तो थवहि वयणु भाइहि तणउं।
तं अम्महि भासिउं परिगणिउं  अय जव ण होंति तेण वि भणिउं।
जं चविउ असच्चु सुदुच्चरिउ  तं सधरु धरायलु थरहरिउ।

---

हैं तो वृषभ और कागराज भी बड़े-बड़े देवता होते। बहुत कहने से क्या, मंत्री कहता है कि जो दूसरे को अपने समान समझता है, जो परिग्रह से रहित है, निर्वस्त्र है, विहार करता रहता है, और जो मोह, लोभ, ईर्ष्या को शान्त करता है, वह उसी प्रकार सिद्धि को प्राप्त होता है, जिस प्रकार रस से सिद्ध धातु स्वर्णत्व को प्राप्त करती है।

घत्ता—हिंसा का प्रारम्भ करना धर्म है, और असत्यवचन भी सुन्दर है, इस प्रकार धूर्त लोगों के द्वारा मूर्ख और भी मूर्ख बनाया जाता है, तथा काले का पीला किया जाता है।

(34)

और जो तुमने यज्ञ में होम करने से शांति कर्म कहा और जो तुमने अज शब्द को बकरों के रूप में ग्रहण किया। बोये जाने पर जो जौ उत्पन्न नहीं होते वे अज कहलाये जाते हैं। इस प्रकार तुमने अपने पिता के वचनों का उल्लंघन किया है। गुरु के द्वारा कहे गये वचन की पहाड़ भी घोषणा करता है उसे उसी प्रकार राजा वसु ने भी सुन लिया। तब अपने हाथ में रुद्राक्ष माला लिये हुए नारद और पर्वतक शीघ्र ही श्रावस्ती गये। पर्वतक की माँ ने यह प्रार्थना की कि यह वर माँगने का समय है, और राजा से प्रार्थना की कि यदि आप अपने कहे हुए की याद करते हैं तो आप अपने भाई के (पर्वतक के) वचन को स्थापित करो। माँ के द्वारा कहा गया उसने मान लिया। अज जौ नहीं होते ऐसा उसने भी कह दिया। उसने जो असत्य और दुष्ट का कथन किया,

---

7. AP अप्पाणें। 8. AP लोहु मोहु। 9. A सिद्धंतु। 10. AP जगु।
(34) 1. P कहिउ। 2. A तं। 3. A रुद्दवय। 4. A भासिउप्पणउ।

महिकंपें[5] ठाणहु विहडियउं[6] आयासहु आसणु णिवडियउं ।
णहफलिहखंभचुउ[7] चूरियउ वसु चुण्णु चुण्णु मुसुमूरियउ ।

घत्ता—णियमित्तहो मरणेण पव्वउ थिउ विच्छायउ ॥
पडियउ णरयणिवासि वसु असच्चु संजायउ ॥34॥

35

पुणु दणुएं मायाभाउ किउ वसु दाविउ सग्गविमाणि[1] थिउ ।
ता सयरमंति आणंदियउ मूढेहिं जण्णु कि णिंदियउ ।
पुणु तेण वि[2] रायसूउ रइउ दिणयरदेवे खयरें लइउं[3] ।
णिवमासहोमु विद्धंसियउ महकालवियंभिउ णासियउ ।
णारयहियउल्लउ तोसियउं अमरारें पुणरवि घोसियउं ।
मा णासहि पव्वय कहिं मि तुहुं मंतीसर माणहि अमरसुहुं ।
जिणबिंबइं चउदिसु थवहि तिह खेयरविज्जाउ ण एंति जिह ।
ता तें सिट्ठउं तेहउं करिवि गय णरयविवरि[4] बिण्णि वि मरिवि ।
महिसिंदें लोयहु भासियउं अप्पाणउं वइरु मइ साहियउं ।
देहिहि दुक्खावहु धम्मु कहि पलु खज्जइ पिज्जइ मज्जु जहिं ।

---

उससे प्रवर धरती काँप गई। भूकम्प आ गया। अपने स्थान से विघटित होकर आकाश से (राजा वसु का) आसन गिर गया। स्फटिक मणि के खम्भे चूर-चूर हो गये। राजा वसु चकनाचूर हो गया।

घत्ता—अपने मित्र की मृत्यु से पर्वतक एकदम उदासीन हो गया। राजा वसु नरक निवास में जा पड़ा और वह असत्य प्रमाणित हुआ।

35

उस दनुज ने फिर मायावी आचरण किया। जब उसने राजा को स्वर्ग विमान में स्थित दिखाया, तो सगरमंत्री आनंदित हो उठा (और बोला) कि मूर्खों ने यज्ञ की निंदा क्यों की? फिर उसने भी राजसूय यज्ञ किया जैसा कि दिनकर देव विद्याधर ने स्वीकार कर लिया था। नृप मास का होम ध्वस्त हो गया और महिषासुर का विस्तार नष्ट हो गया। नारद का हृदय संतुष्ट हो गया। दैत्य ने पुनः घोषित किया—हे पर्वतक, तुम कहीं मत जाओ। हे मंत्रीश्वर, तुम भी स्वर्ग-सुख मानो। तुम चारों ओर जिन प्रतिमाओं को इस प्रकार स्थापित करो कि जिससे विद्याधरों की विद्याएँ यहाँ न आएँ। तब उसने जैसा कहा था वैसा किया। वे दोनों मरकर नरक गये। महिषेंद्र ने लोगों से कहा कि मैंने अपने वैर का बदला ले लिया है। जहाँ शरीरधारियों को सताया जाता है, माँस खाया जाता है, मद्य पिया जाता है, वहाँ धर्म कहाँ? लेकिन तप के द्वारा

---

5. A महिकंपइ। 6 A वियडियउ। 7. A फलिहमउ खंभु धुउ चूरियउ।
(35) 1. P °विवाणि। 2. AP जि। 3. A लविउ। 4. A णरयघोरि।

तवचरणें[5] जालिवि मयणपुरि णारउ अहमिंद विमाणवरि[6] ।
अज्ज वि अच्छइ जिणगुण महइ अइसयमइ[7] दसरहासु कहइ ।

घत्ता—भरहकुमारजणेर हो हो जण्णु किं[8] किज्जइ ।।
जगमहंतु अरहंतु पुप्फदंतु पणविज्जइ ।।35।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रामलक्खणभरहसत्तुहणुप्पत्ती[9]
णाम जागणिवारणं[10] णाम एक्कूणहत्तरिमो[11]
परिच्छेओ समत्तो ।।69।।

---

कामदेव को जलाकर नारद अहमेन्द्र विमान में देव हुआ आज भी वहाँ जिन देवों का आदर करता है। इस प्रकार अतिशय मतिवाले वह मुनि राजा दशरथ से कहते हैं।

घत्ता—हे भरत कुमार को जन्म देने वाले दशरथ, यज्ञ मत करो। विश्व में महान् अरहन्त को नमस्कार किया जाये।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदंत द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न
की उत्पत्ति नाम यज्ञनिवारण नाम उनहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

5. AP तवजलणें । 6. A विमाणु धरि; P विवाणुवरि । 7. AP इय सयमइ । 8. AP ण । 9. A राम-भरहलक्खण° । 10. A जण्णणिवारणं । 11. A एकसत्तिमो; P णवसट्ठिमो ।

## सत्तरिमो संधि

आयण्णिवि मंतिसुहासियइं[1] मिच्छादंसणु णिट्ठिउं[2] ।।
दसरहहियउल्लउं मेरुथिरु जिणवरधम्मि परिट्ठिउं[3] ।।ध्रुवकं।।

1

अवरेहिं मि अरुहि णिहित्तु चित्तु   संथुउ समंति कल्लाणमित्तु ।
चमुवइणा मारियपरबलेण   एत्थंतरि उत्तु महाबलेण ।
तंबारवारु सो जण्णु जाउ   णिव जोयहि णियणंदणपयाउ[4] ।
झसमुसलगयासणिधणुहरेहि   जिप्पंति ण जिप्पंति व परेहिं ।
विण्णाणणाणणयविहयमोहु[5]   ता राएं आउच्छिउ पुरोहु ।
भणु भणु तणयहं महिरयणरिद्धि   तं गमणें होइ ण होइ सिद्धि ।
ता वुत्तु णिमित्तवियक्खणेण   जहिं जाइ रामु सहुं लक्खणेण ।
तहिं तहिं गोमिणि संमुहिय थाइ   दामोयरु मुइवि ण पउ वि जाइ ।

---

## सत्तरवीं संधि

मंत्री के सुभाषित (अच्छे वचनों) को सुनकर राजा का मिथ्या दर्शन नष्ट हो गया तथा मेरु के समान स्थिर राजा दशरथ का हृदय जिन धर्म में लग गया ।

(1)

दूसरे लोगों ने भी अरहन्त भगवान् में अपना चित्त लगाया और उन्होंने अपने मंत्री कल्याणमित्र की संस्तुति की । इसी बीच शत्रु सेना का नाश करने वाले महाबल नाम के सेनापति ने कहा—राजन्, नरक का द्वार जो यज्ञ संपन्न हुआ है, उसमें अपने पुत्र के प्रताप को देखिये । झस, मुसल, गदा, अशनि और धनुष को धारण करने वाले शत्रुओं के द्वारा के जीते जाते हैं या नहीं । विज्ञान-ज्ञान तथा नय से जिसने मोह को नष्ट कर दिया है, ऐसे पुरोहित से राजा ने पूछा कि बच्चों के वहाँ जाने से धरती रूपी रत्न की सिद्धि होगी कि नहीं । बताइये-बताइये । तब नीमित्तशास्त्र में प्रख्यात मंत्री ने कहा—राम लक्ष्मण के साथ जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ लक्ष्मी

---

(1) 1. A °सुहासियउ । 2. AP णिट्ठियउं । 3. AP परिट्ठियउं । 4. P णिवणंदण° 5. A °णयविहि-यमोहु; P °णयणिहियमोहु ।

ए अट्ठम मइं[6] णिसुणिउं पुराणि संठिय सलायपुरिसाहिठाणि ।
जगतावणु रावणु रणि हणेवि महि भुंजिहिंति[7] खग्गें जिणेवि ।
बलएव जणद्दण सुय ण भंति दससंदणु पुच्छइ विहियसंति ।

घत्ता—महुं कहहि पुरोह लद्धविजउ[8] भुवणत्तयविक्खायउ ।।
दहगीउ[9] दसासापत्तजसु केण सुपुण्णें[10] जायउ ।।1।।

2

जसु आसंकइ जमु वरुणु पवणु तहु एयहु भणु सियचिंधु कवणु ।
ता कहइ विप्पु महुरइ गिराइ सुणि धादइसंडहु पुव्विल्लभाइ ।
आरामगामसंदोहसोहि खरदंडसंडमंडियसरोहि ।
रंभंतगोउलावासरम्मि जवणालसालिजवछेत्तसोम्मि ।
गोवालबालकीलाणिवासि[2] तहिं सारसमुच्चइ णाम देसि ।
णायउरि अत्थि णरदेउ राउ वंदिवि अणंत गुरु वीयराउ ।
संतइहि थवेप्पिणु भोयदेउ जइ जायउ मेल्लिवि बंधहेउ ।
विज्जाहरु पेच्छिवि चवलवेउ णहयलि आवंतु विचित्तकेउ ।

---

स्वयं सामने आकर खड़ी होती है, वह राम को छोड़कर एक पग भी इधर-उधर नहीं जायेगी। यह मैंने आठवें पुराण में सुना है कि राम शलाकापुरुषों की परम्परा में स्थित हैं। वह संसार को सताने वाले रावण को युद्ध में मारकर तथा धरती को तलवार से जीतकर उसका भोग करेंगे। ये पुत्र साक्षात् बलदेव और जनार्दन हैं। इसमें भ्रांति मत कीजिये। तब मन में शांति धारण करते हुए दशरथ ने पूछा—

घत्ता—हे पुरोहित, मुझे यह बताइये कि दसों दिशाओं में यश प्राप्त करने वाला रावण किस पुण्य से विजयों को प्राप्त करता हुआ तीनों लोकों में विख्यात हुआ है।

(2)

यम, वरुण और पवन जिससे डरते हैं उसका ऐसा अपना कौन-सा चिह्न है? यह सुनकर ब्राह्मण मधुर वाणी में कहता है—सुनिये मैं बताता हूँ। धातकीखंड के पूर्व भाग में सारसमुच्चय नाम का देश है, जो उद्यानों और ग्रामों के समूह से शोभित है। जो कमल समूह से मंडित सरोवरों से युक्त है। जो रँभाते हुए गोकुल के समूह से सुन्दर है, और जो जवनाल (?) धान तथा जौ के क्षेत्रों से सुन्दर है, जिसमें ग्वालों के बालकों की क्रीड़ा हो रही है, उस देश की नागपुर नगरी में नरदेव नाम का राजा है। वह परमवीतराग, अनन्तमुनि की वन्दना कर तथा कुल परम्परा में अपने पुत्र भोजदेव को स्थापित कर, पाप के बंध के सब कारणों का परित्याग कर मुनि हो गया। इतने में उसने आकाश में आते हुए विचित्र पताका वाले चपलवेग नाम के विद्याधर को देखा। उसने अपने मन में यह निदान (इच्छा) बाँधा कि मुझे अगले जन्म में इस विद्याधर का सुन्दर भोग

---

6. AP णिसुणिउं मइं। 7. P भुंजिहंति। 8. A omits लद्धविजउ। 9. A दहगीव; P दसगीउ। 10. P सपुण्णें।

(2) 1. P कमणु। 2. AP °कीलणणिवासि।

बद्धउ णियाणु महु जम्मि होउ एहउ मणहरु खेयरविहोउ[3]।
सुररमणीरमणविलासमग्गि मुउ उप्पण्णउ सोहम्मसग्गि।
इह भरहवरिसि[4] वेयड्ढसेलि गयणग्गलग्गमणिमोहमेलि[5]।
दाहिणसेढिहि हयवइरिजीउ पुरि मेहसिहरि पहु सहसगीउ।

घत्ता—उव्वेयउ केण वि कारणिण अंतरंगि णिरु[6] जायउ।।
कलहणउं करिवि सहुं बंधवहि सो तिकूडगिरि आयउ।।2।।

3

लग्गइ अकंडि दुव्वयणकंडु मउलाविज्जइ सुहि तेण तुंडु।
किं किज्जइ पिसुणणिवासि वासु तहिं गम्मइ जहिं कंदरणिवासु।
तहिं गम्मइ जहिं तरुवरहलाइं[1] तहिं गम्मइ जहिं णिज्झरजलाइं।
तहि गम्मइ जहिं गुणणिरसियाइं सुव्वंति[2] ण खलयणभासियाइं।
इय चिंतिवि घत्तिवि[3] दुट्ठसंक काराविय राएं णयरि लंक।
उप्परिथियगिरिहत्थिहि[4] विहाइ चल्लियधयहत्थहि णडइ णाइं।
णं सण्णइ एहिं जि पुणु वि एम किं सग्गें मइं जोयंतु[5] देव।
सिहरें[6] णं भिंदिवि विउलमेह[7] ससि पावइ कि घरतेयरेह।

मिले। वह मरकर देवरमणियों से जिसकी विलास सामग्री भरी हुई है ऐसे सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। इस भारतवर्ष में किरणसमूह से आकाश को छूने वाला विजयार्ध पर्वत है। उसकी दक्षिण श्रेणी में मेघ शिखर नाम की नगरी में, शत्रु के जीव का हनन करने वाला सहस्रग्रीव नाम का राजा है।

घत्ता—किसी कारण से उसके मन में अत्यन्त उद्वेग हो गया, और वह अपने भाइयों से झगड़ा करके त्रिकूट गिरि में आ गया है।

(3)

चूँकि दुर्वचन रूपी तीर कुअवसर में (असमय) जा लगता है और इसलिए मित्र का मुख उससे कुम्हला गया। दुष्टों के घर में क्यों निवास किया जाए? वहाँ जाया जाए जहाँ गुफा में निवास हो, वहाँ जाया जाए जहाँ तरुवरों के फल हों, वहाँ जाया जाए जहाँ निर्झरों के जल हों, वहाँ जाय जाए जहाँ गुणों से रहित तथा गुणों का नाश करने वाले दुष्ट जनों के द्वारा कहे गये वचन सुनने को न मिले। यह विचारकर खोटी शंका को मन से निकालकर राजा ने लंका नगरी का निर्माण करवाया। ऊपर स्थित पहाड़ रूपी हाथी के समान चंचल ध्वज रूपी हाथों से वह ऐसी मालूम होती थी, जैसे नृत्य कर रही हो। अपनी चेतना के द्वारा (वह सोचती है) कि क्या मैं यहाँ फिर भी ऐसी ही हूँ। स्वर्ग में देवता लोग मुझे क्यों देखते हैं? शिखर के द्वारा बड़े-बड़े मेघों का भेदन करके सोचती है कि चन्द्रमा उसके घर की शोभा को क्या पा सकता है? अपनी पुतलियों

3. A खेयरहु होउ। 4. A °वरिस°। 5. A °मऊह°। 6. AP णिउ।
(3) 1. AP °वरफलाइं। 2. AP सुम्मति। 3. A पावियदुट्ठसंक। 4. A °हत्थिय विहाइ। 5. A जोयंति। 6. AP सिहरेहिं वि। 7. AP णीलमेह।

जोयइ पुत्तलियाणयणएहिं णं हसइ फुरंतहिं रयणएहिं ।
परिवित्थारिवि कित्तीमुहाइं दावइ पारावयरवसुहाइं[8] ।

घत्ता—जहिं चंदसाल चंदंसुहय चंदकंतिजलु मेल्लइ ।।
कामिणिपयपहउ[9] असोयतरु उववणि वियसइ फुल्लइ ।।3।।

4

सा पुरि परिपालिय तेण ताव गय वरिसहं वीससहास[1] जाव ।
सयगीउ खगाहिउ पंचवीस थिउ विद्दवंतु णाणामहीस ।
णिद्दलिवि वइरि भूभंगभीस पण्णासगीउ मुउ जिइवि वीस ।
दसपंचसहासइं वच्छराहं संठिउ पुलत्थि राइयधराहं ।
सुंदरि तहु पणइणि मेहलच्छि सा[2] पेच्छइ घरि पइसंति लच्छि ।
अंकग्गि चडिउ चंडंसुमालि सिविणंतरंति परिगलियकालि[3] ।
आहासिउ दइयहु फलपयासि णरदेव[4] देव थिउ गब्भवासि ।
संभूयउ सयणहं सुहु जणंतु णं बहुरूविणिवसियरणमंतु ।
णिवरूवें आणंदु व पयाहं आवासु व णहयरसंपयाहं ।

के नेत्रों से जैसे देखती है और मानो चमकते हुए रत्नों के द्वारा हँसती है, अपने कीर्ति रूपी मुखों का विकास कर जो समुद्र और धरती को दिखाती है।

घत्ता—जहाँ पर चन्द्रशाला (छत) चन्द्रकिरणों से आहत होकर चन्द्रकान्त मणियों का जल छोड़ती है, तथा कामिनी के चरणों से आहत अशोक वृक्ष उपवन में विकसित होकर फूल उठता है।

(4)

उस नगरी का पालन करते हुए उसे जब बीस हजार पच्चीस वर्ष बीत गये तब शतग्रीव विद्याधर अनेक राजाओं का दलन करता हुआ स्थित हुआ। उसके बाद भ्रूभंग से भयंकर शत्रु का नाश कर पंचाशत ग्रीव पन्द्रह हजार वर्ष जीवित रहकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब धरती को अलंकृत करने वाले इतने वर्षों में फिर पुलस्त्य गद्दी पर बैठा। उसकी प्रियतमा मेघलक्ष्मी थी। वह घर में हँसती हुई लक्ष्मी के समान दिखाई देती थी। उसकी गोद के अग्रभाग में स्वप्न में सूर्य चढ़ गया। समय बीतने पर उसने पति से पूछा। इस बीच फल को प्रकाशित करने वाले गर्भ में देव राजा के रूप में स्थित हो गया जो स्वजनों को सुख देता हुआ उत्पन्न हुआ। मानो अनेक सुन्दरियों के लिए वशीकरण मंत्र ही उत्पन्न हुआ हो। अपने रूप से प्रजा के लिए आनन्द के समान तथा विद्याधरों की संपदा के निवास के समान वह था।

8. A °रइसुहाइं· P °रयसुहाइं। 9. A °पयहयउ।

(4) 1. AP तीससहास। 2. AP ओहामियरूवें जाइ लच्छि (A जायलच्छि)। 3. P पडिगलिय°। 4. AP णरदेउ देउ।

घत्ता—कुलधवलु धुरंधरु दहवयणु जायउ मायहि जइयहुं ॥
मंदरगिरिदुग्गु पुरंदरिण महुं भावइ[5] किउ तइयहुं ॥4॥

5

णवतरणि व सुरकुमुयायराहं[1] पडिमल्लु व गज्जियसायराहं।
कढिणंकुसु णं दिग्गयवराहं [2]मणमत्थइ सूलु व अरिवराहं।
णं मत्तभमरु णंदणवणाहं णं कामवासु[3] तरुणीयणाहं।
पवहंतमहासरिजलगलत्थु महिमहिहरसंचालणसमत्थु।
वण्णेण गरलभसलउलकालु आयंबणयणु पडिवक्खकालु।
जायउ जुवाणु जमजोहजूरु दुद्दंसणु णं मज्झण्णसूरु।
ण [4]विसमविसकुरु विसविसित्तु णं पलयकालु हुयवहु पलित्तु।
तज्जियदासि व भउ धरइ[5] चरइ जसु असिधारइ[6] धर मरइ तरइ।
जसु सत्तसत्तसहसाइं आउ वरिसहं जो सुव्वइ वज्जकाउ।
घत्ता—जसु भइएं[7] रवि णं अत्थवइ चंदु व चदगहिल्लउ ॥
फणि पुरिसरूवु परिहरिवि हुउ दीहदेहु कीडुल्लउ ॥5॥

घत्ता—कुल में श्रेष्ठ धुरन्धर रावण जिस समय मां से उत्पन्न हुआ तो मुझे लगता है कि उस समय इन्द्र ने मंदराचल को दुर्ग बनाया।

(5)

देव कुसुमों के समूह के लिए नव सूर्य के समान, गरजते हुए समुद्रों के लिए प्रतिमल्ल के समान, श्रेष्ठ दिग्गजों के लिए कठिन अंकुश के समान, बड़े-बड़े शत्रुओं के मन और मस्तक पर शूल के समान, नंदनवनों के लिए मतवाले भ्रमर के समान, तरुणी जनों के लिए काम वास के समान वह रावण था। जिसने बड़ी-बडी नदियों के जल को छेड़ा है, जो पृथ्वी के बड़े-बड़े पहाड़ों के संचालन में श्रेष्ठ हैं, जो रंग में विष और भ्रमरसमूह के समान काला है, लाल-लाल आँखों वाला और दुश्मन के लिए काल वह रावण युवक हो गया। यम समूह को पीड़ित करने वाला वह इस प्रकार दूरदर्शनीय था मानो मध्याह्न का सूर्य हो। मानो विष से विषावल विषय विष का अ कूर हो। मानो प्रलयकाल हो या अग्नि प्रदीप्त हो उठी हो। जिसके कारण धरती डाँटी गई दासी के समान डरती हुई चलती है और जिसकी तलवार की धार में वह मरती और तिरती है, जिसकी सतत्तर हजार वर्ष आयु है, ऐसा वह वज्र शरीरवाला समझा जाता है।

घत्ता—जिसके भय के कारण रवि अस्त नहीं होता और चन्द्रमा को राहु लग गया है, और फणि भी अपने पुरुष रूप को छोड़कर एक लम्बी देह वाला खिलौना जिसके लिए बन गया है।

5. A भावहि।

(5) 1. A कुमुयावराह। 2. AP मणि मत्थय। 3. AP कामबाणु। 4. A णं सविसु विसंकुरु विसपसित्तु; PT ण समविसमंकुरु; K records a *p*: समविसमंकुर। 5. P करइ डरइ। 6. P °धारहि। 7. AP जसु रवि णं भइयए अत्थमइ।

6

खयरेण कण्ण इच्छियजएण मंदोयरि[1] तहु दिण्णी मएण ।
आरुहिवि चारु पुप्फयविमाणु सहुं कंतइ णहयलि विहरमाणु ।
रययायलि अलयावइहि धीय विज्जासाहणि संजमविणीय[2] ।
जोइवि मणिवइ[3] झाणाणुलग्ग[4] मइ रायहु मयणवसेण भग्ग ।
पारद्धु विग्घु परिगलियतुट्ठि उववाससोसकिसकायलट्ठि ।[5]
बारहसंवच्छरपीडियंगि कुद्धी कुमारि णं खयभुयंगि[6] ।
णासिउ बीयक्खरलीणु झाणु इहु खगवइ चिंधें जाउहाणु ।
महु बप्पु होउ मइं रणि हरउ[7] आयामि जम्मि महुं कज्जि मरउ[8] ।
णिक्किउ विरत्तु विवरीयचित्तु जाणिवि रोसंगिउ[9] रत्तणेत्तु ।
गउ दहमुहु खेयरि मरिवि कालि थिय मंदोयरिगब्भंतरालि ।

घत्ता—उप्पण्णी धीय सलक्खणिय कंपावियकेलासहु ॥
णं लंकाणयरिहि जलणसिह णाइ भवित्ति दसासहु ॥6॥

7

दिणि पडिउ जलिउ उक्काणिहाउ अप्पंपरि जायउ णरणिहाउ ।

(6)

जय की इच्छा करने वाले उस विद्याधर मय के द्वारा रावण को अपनी कन्या दे दी गई। सुन्दर पुष्पक विमान में चढ़कर अपनी कान्ता के साथ वह आकाश में विहार कर रहा था। विद्या की साधना के कारण संयम से विनीत और रचित चूड़ा पाशवाली अलकापुरी के राजा की कन्या मणिवती को ध्यान में लीन देखकर राजा की मति काम से भग्न हो उठी। उसने विघ्न प्रारम्भ किया। जिसकी तुष्टि नष्ट हो चुकी है, तथा उपवास के कारण जिसकी दुबली पतली देह रूपी सृष्टि सूख चुकी है ऐसी बारह वर्षों से अपने शरीर को पीड़ा पहुँचाने वाली वह विद्याधर कुमारी प्रलयकाल की नागिन के समान फुफकार उठी। बीजाक्षरों में लगा हुआ उसका ध्यान नष्ट हो गया। उसने कहा : यह विद्याधर जो चिह्न से राक्षस है, मेरा बाप होकर मुझे जंगल में हरे और इस प्रकार आगामी जन्म में मेरे कारण मृत्यु को प्राप्त हो। उसे निष्क्रिय, विरक्त, और विपरीत चित्त जानकर क्रुद्ध और लाल-लाल आँखों वाला रावण चला गया और विद्याधरी भी मरकर मंदोदरी के गर्भ में स्थित हो गई।

घत्ता—वह लक्षणवती कन्या के रूप में उत्पन्न हुई, जो मानो कैलाश पर्वत को कँपाने वाले रावण की भवितव्यता और लंका नगरी के लिए अग्नि की ज्वाला थी।

(7)

दिन में तारों का समूह जल कर गिर पड़ा। अपने आप हाहाकार शब्द होने लगा। धरती

(6) 1. मंदोवरि। 2. A °विलीय। 3. A महिवइ। 4. P झाणेणुलग्ग। 5. A °कायजट्ठि। 6. P खए भुयंगि। 7. A हरइ। 8. A मरइ। 9. P रोसें इंगिउं रत्तु णेत्तु।

महि कंपइ जंपइ को वि साहु किह चुक्कइ एवहिं पुहइणाहु ।
एयइ धीयइ संभूइयाइ खज्जेसइ णाइं[1] विसूइयाइ ।
खयकालें ढोइय मरणजुत्ति वणि णिज्जणि घिप्पइ कहिं वि पुत्ति ।
मुइसुहहराउ[2] विहुणियसिराउ आयण्णिवि णेमित्तियगिराउ ।
खगभूगोयरसिरिमाणणेण मारियउ[3] पवुत्तु दसाणणेण ।
किं गरलवारिभरियइ[4] सरीइ किं सविसकुसुममयमंजरीइ ।
बंधवयणहियवियारणीइ किं जायइ धीयइ वइरिणीइ ।
णवकमलकोसकोमलयराउ उद्दालिवि मंदोयरिकराउ ।
णिम्माणुसि काणणि घिवहि तेम पाविट्ठ दुट्ठ णउ जियउ जेम ।

घत्ता—तं णिसुणिवि[5] तें मारीयएण भणिय देवि वररूवउं ॥
तुह गब्भि भडारो[6] थीरयणु गोत्तखयंकरु हूयउं ॥7॥

8

मुइ[1] मुइ दहमुहखयकालदूय तें होंतें होसइ अवर धूय ।
वाहापवाह[2] ओहलियणयण ता तरुणि चवइ ओहुल्लवयण ।
मारीयय णवतरुफलरसड्ढि कीलतपक्खिरमणीयसद्दि ।
घल्लिज्जसु[3] कत्थइ पुत्ति तेत्थु रविकिरणु ण लग्गइ देहि जेत्थु ।

---

काँप उठी। तब कोई सज्जन व्यक्ति कहता है कि इस समय राजा किस प्रकार बच सकता है। यह उत्पन्न हुई कन्या महामारी की तरह सबको खा जायेगी, यह क्षयकाल के द्वारा मरण की युक्ति यहाँ लाई गई है, इसलिए इस पुत्री को निर्जन वन में डाल दिया जाए। कानों के सुख का हरण करने वाली तथा शिरों को प्रताड़ित करने वाली ऐसी ज्योतिषी की वाणी सुनकर विद्याधर और मनुष्यों की लक्ष्मी का भोग करने वाले रावण ने मारीच से कहा कि विषजल से भरी हुई नदी से क्या? विष से परिपूर्ण कुसुम मंजरी से क्या? बाँधवजनों के हृदय को विदीर्ण करने वाली इस दुश्मन लड़की के पैदा होने से क्या? इसलिए नव कमलकोष से भी अधिक कोमल मंदोदरी के हाथ से इसे छीनकर मनुष्यों से रहित जंगल में इस प्रकार छोड़ दो, जिससे यह पापात्मा दुष्ट जीवित न रहे।

घत्ता—यह सुनकर उस मारीच ने मंदोदरी से कहा—हे देवी, तुम्हारे गर्भ से सुन्दर रूप वाला स्त्रियों में रत्न हुआ है, परन्तु गोत्र का नाश करने वाला है।

(8)

तुम रावण क्षयकाल की दूती के समान इसे छोड़ो-छोड़ो। क्योंकि रावण के रहने पर दूसरी कन्या होगी। तब आँसुओं के प्रवाह से जिसका नेत्र मलिन है, ऐसी उस युवती ने नीचा मुख करते हुए कहा—हे मारीच, जो नव वृक्षों के फलों के रस से आई हो, जहाँ क्रीड़ा करते हुए पक्षियों का सुन्दर शब्द हो और जहाँ इसकी देह को सूर्य की किरण न लगे ऐसे वन में कहीं इस पुत्री

---

(7) 1. A ताइ वि, P तासु वि। 2. A °सुहयराउ। 3. A मारीयउ वुत्तु। 4. A गरुडवारि°। 5. A णिसुणंतें मारियएण। 6. P भउरिए धीरयणु।

(8) 1. A मुय मुय। 2. A बाहप्पवाह°। 3. A घल्लिज्जइ।

अह एयइ काइं जियंतियाइ कुरइ णियतायकयंतियाइ ।
गिरिदारणीइ किं गिरिणईइ हो हो किं एयइ दुम्मईइ ।
आलिहिउं पत्तु मच्छरकराल[4] रावणदेहुब्भव[5] एह बाल ।
वहुदुक्खजोणि बंधुहुं असीय सुविसुद्धवंस णामेण सीय ।
इय भासिवि मंजूसहि णिहित्त सहुं रयणहिं वरराईवणेत्त ।
दहगीवजीवरक्खणकएण णिय णिविसें[6] णहि मारीयएण ।
चंपयधवचंदणचूयगुज्झि[7] बहि मिहिलाणयरुज्जाणज्झि ।

घत्ता—मंजूसई सहुं छणयंदमुहि सरिसरणिज्झरसीयलि ।।
णं रहुवइसिरिलयकंदसिरि णिक्खय सुय धरणीयलि ।।8।।

9

गउ विज्जापुरिसु णहंतरेण तिक्खें महि दारिय लंगलेण ।
आरामुहछित्तधुरंधरेण मंजूस दिट्ठ पामरणरेण ।
वणवालहु अप्पिय तेण णीय[1] रायालउ[2] राएं दिट्ठ सीय ।
वाइवि वइयरु बुज्झिय विणीय णियपियहि दिण्ण पडिवण्ण धीय ।
वड्ढइ परमेसरि दिव्वदेह णं बीयायंदहु[3] तणिय रेह ।

को छोड़ना । अथवा अपने पिता का अन्त करने वाली या अपने पिता के लिए यम के समान इस कन्या के जीने से क्या ? पहाड़ को ही चीरने वाली पहाड़ी नदी से क्या ? हो-हो, इस दुर्मति कन्या से क्या ? पत्र लिखा गया कि ईर्ष्या से भयंकर यह बाला रावण की देह से उत्पन्न हुई है । बन्धु-जनों के लिए दुःख की कारण, संताप देने वाली, अच्छे वंश वाली इसका नाम सीता है । ऐसा कह कर उत्तम कमलों के नेत्रों वाली उसे रत्नों के साथ मंजूषा में रख दिया गया । और रावण के जीव की रक्षा करने वाला मारीच पल भर में उसे आकाश में ले गया । मिथिला नगरी के बाहर चंपक, धवल, चंदन, आम्र वृक्षों से गहन उद्यान के मध्य में ।

घत्ता—उसने नदी, तालाब, निर्झर से ठण्डे धरती तल पर पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली उस कन्या को मंजूषा के साथ इस प्रकार रख दिया मानो राम की लक्ष्मी रूपी लता के अंकुर की शोभा हो ।

(9)

विद्यापुरुष (मारीच ) आकाश मार्ग से चला गया । एक किसान ने अपने तीखे हल से धरती को फाड़ा । और हल के आरा के मुख से धरती को फाड़ने में निपुण किसान ने उस मंजूषा को देखा । उसने वह मंजूषा वनपाल को दी, वह उसे राज्यालय ले गया । राजा ने उसे देखा, वृत्तान्त को पढ़कर उसने अपनी पत्नी को वह विनीत कन्या दी और उसने भी उसे स्वीकार कर लिया । वह दिव्य देह वाली परमेश्वरी दिन-दूनी रात-चौगुनी इस प्रकार बढ़ने लगी मानो द्वितीया के

4. P अच्छर° । 5. P रावण° 6. A णिवसें । 7. AP धवचंदण° ।
(9) 1. A सीय । 2. AP रायालइ । 3. AP बीयाइंदहु ।

णं ललिय महाकइपयपउत्ति णं मयणभावविण्णाणजुत्ति ।
णं गुणसमग्ग सोहग्गथत्ति णं णारिरूवविरयणसमत्ति[4] ।
लायण्णवत्त[5] णं जलहिवेल सुरहिय[6] णं चंपयकुसुममाल ।
थिर सूहव णं सप्पुरिसकित्ति[7] बहुलक्खण णं वायरणवित्ति ।

घत्ता—जसवेल्लि व अट्ठमराहवहु अमरदिण्णकुसुमंजलि ।।
पुरि वड्ढिय जणयणरिंदसुय रामणरामहं[8] णाइं कलि ।।9।।

10

पयकमलह रत्तत्तणु जि होइ इयरह कह रंगु वहंति जोइ ।
गुंफहं[1] पुणु[2] गूढत्तणु जि चारु इयरह कह मारइ तिजगु मारु ।
जंघाबलेण जायउ अजेउ इयरह कह वग्गइ कामएउ ।
णालोइउ जाणुहुं[3] संधिठाणु इयरह कह सधइ कुसुमबाणु ।
ऊरूयलचिंतइ हयसरीर इयरह कह जालंधरियसार ।
कडियलु गरुयत्तणगुणणिहाणु[4] इयरह कह गरुयहं महइ माणु ।
गंभीरिम णाहिहि णवर होउ इयरह कह णिवडिउ तहिं जि लोउ ।
पत्तलउं उयरु सिंगारु करइ इयरह कह मुणिपत्तत्तु हरइ ।

---

चन्द्रमा की देह हो। मानो महाकवि के पद की सुन्दर युक्ति हो। मानो गुण की समग्रता हो। सौभाग्य की सीमा हो। मानो नारी रूप के रचने की समाप्ति हो। मानो सौन्दर्य की पिटारी हो। मानो सुगंधित चम्पक कुसुमों की माला हो। मानो स्थिर हुई सत्पुरुष की कीर्ति हो। मानो अनेक लक्षणों वाली व्याकरण की वृत्ति हो।

घत्ता—मानो आठवें बलभद्र के यश की बेल हो। मानो देवताओं द्वारा दी गई कुसुमांजलि हो। इस प्रकार जनक राजा की वह कन्या नगर में बड़ी हो गई, राम और रावण की कलह के समान।

(10)

उसके चरणकमलों में रक्तता है, नहीं तो मुनि उसे देखने में राग धारण क्यों करते हैं? उसकी एड़ियों में अत्यन्त सुन्दर गूढ़ता है, नहीं तो कामदेव तीनों लोकों को कैसे मारता है? वह जंघाबल से अजेय है, नहीं तो कामदेव इतना इतराता क्यों है? उरुतल की चिन्ता से वह क्षीण शरीर हो गई अन्यथा वह कदली की तरह (तुच्छ) क्यों है?

उसकी कमर गुरुता के गुण का खजाना है। नहीं तो बड़े लोगों का मान क्यों धारणकरती है? उसकी नाभि में केवल गभीरता है, नहीं तो उसमें लोक क्यों गिरता है? उसका पतला उदर उसकी शोभा को बढ़ाता है, नहीं तो वह मुनियों की पात्रता का हरण क्यों करती है? उस मुग्धा

---

4 A °समग्गि। 5. A लायण्णवण्ण। 6. P सुरहिय णवचंपय°। 7. P सुप्पुरिस°। 8. A णं रामहं रावण कलि; P रावणरामहं णाइं कलि।

(10) 1. A गुप्फहं; P गुप्पहं। 2. A omits पुणु। 3. A जण्णुहि; P जं तुहुं। 4 AP गरुयत्तणु।

सकयत्थउ मुट्ठिहि[5] मज्झु खीणु इयरह कह[6] दंसणि विरहि रीणु ।
वलियाहिं तीहिं सोहइ कुमारि इयरह कह तिहुयणहिययहारि ।

घत्ता—रोमावलिमग्गु मणोहरउ कण्णहि केरउ संघइ ।।
इयरह कह सिहिणसिहरिसिहरु मयरकेउ आसंघइ ।।10।।

11

देविहि थण रइरसपुण्णकुंभ इयरह पुणु[1] कामतिसाणिसुंभ ।
भुय मयणपाससंकास गणमि इयरह कह मणबंधणु जि भणमि ।
कंधरु बंधुरु[2] रेहाहि सहइ इयरह कह कंबु[3] रसंतु कहइ ।
तंबउ बिंबाहरु हरइ चक्खु इयरह[4] कह तग्गहणेण सोक्खु
दियदित्तिइ जित्तइ घत्तियाइं इयरह कह विद्धइं मोत्तियाइं ।
मुहससिजोण्हइ दिस धवल[5] थाइ इयरह कह ससि झिज्जंतु जाइ[6] ।
लोयणहिं वि दीहत्तणु जि जुत्तु इयरह कह पत्तइं जणमणंतु ।
भालयलु वि अद्धिंदु व वरिट्ठु इयरह कह तहु मयणास[7] दिट्ठु ।
कोंतलकलाउ कुडिलत्तु[8] वहइ इयरह कह माणववंदु[9] वहइ ।

---

का क्षीण मध्य भाग सफल है, नहीं तो उसके देखने से विरही दुबला क्यों हो जाता है ? उस कुमारी की त्रिवलि शोभित होती है, नहीं तो वह त्रिभुवन के लिए सुन्दर कैसे होती ?

घत्ता—उस कन्या की रोमावली का मार्ग सुन्दर और सराहयीय है, अन्यथा उसके स्तन रूपी पहाड़ की चोटी पर कामदेव किस प्रकार आश्रय ग्रहण करता ?

(11)

देवी के स्तन काम रूपी रस के पूर्ण कुंभ थे, नहीं तो वे काम रूपी तृष्णा का नाश करने वाले कैसे होते ? उसके बाहुओं को मैं कामदेव के पाश के समान मानता हूँ, नहीं तो मैं कहता हूँ कि फिर वे देव मन को बाँधने वाले कैसे हैं ? उसके कंधे सुन्दर हैं जो रेखाओं से शोभित हैं, नही तो शंख बोलता हुआ इस बात को कैसे कहता है ? उसके लाल-लाल ओंठ नेत्रों का हरण करते है, नहीं तो फिर उनको ग्रहण करने में सुख कैसे होता है ? मोती दाँतों की दीप्ति के द्वारा जीते जाकर फेंक दिये गये हैं, नहीं तो वे इस प्रकार बिद्ध कैसे होते ? मुख रूपी चन्द्रमा की ज्योत्स्ना से दिशाएँ धवल हो गई हैं, नहीं तो चन्द्रमा दिन-दिन क्षीण क्यों होता है ? उसके लोचनों की दीर्घता उपयुक्त ही है, नहीं तो वे जनों तक कैसे पहुँचते हैं ? उसका भाल भी आधे चन्द्रमा के समान श्रेष्ठ है, नहीं तो वह मद का नाश करने वाला कैसा होता, उसका केशकलाप कुटिलता को धारण करता है, नहीं तो वह मानो सिंह को कैसे मारता ?

---

5. A मुद्धहि । 6. AP कह विरहें विरहि ।

(11) 1. AP कह । 2. A कंबुरु । 3. A कंठ रसंतु । 4. A इहरहं । 5. A धवलि । 6. AP खिज्जंतु । 7. AP मयणासु । 8. A कुडिलंतु । 9. P माणवविद्दु ।

घत्ता—जहि दीसइ तहिं जि सुहावणिय सीय काइं वण्णिज्जइ ।।
रक्खेवि जण्णु जणयहु तणउ रामें धुवु परिणिज्जइ[10] ।।11।।

12

ता कुलजयलच्छिसुहावहेण पेसिय णियतणुरुह दसरहेण ।
बलणाहें समउ महाबलेण परिवारिय चउरंगें बलेण ।
गय[1] ससुरणयरु सुर[2] सणर तसिय चलवलिय मयर मयरहरल्हसिय ।
भड रह[3] करि तुरिय[4] तुरंग चलिय दसदसिवह एक्कहिं णाइं मिलिय ।
घरु आयहं[5] मामें कुसलु कयउ प्रंगणि[6] जयमंगलु[7] तूरु हयउ ।
गय कइवय दियह मणोरहेहि[8] हा पहु वेहाविउ पसुवहेहिं ।
चलपंचवण्णधयधुव्वमाणु मंडउ णिहित्तु जोयणपमाणु ।
दिज्जइ दीणहं आहारदाणु घिप्पइ कंपतहं मृगहं[9] प्राणु ।
खज्जइ मासु वि किज्जइ विहाणु महुं मिट्ठउं पिज्जइ सोमपाणु ।
इय णिव्वत्तिउ[10] कउ रित्तिएहिं भणु को ण वि खद्धउ सोत्तिएहिं ।
हिंसाइ धम्मु पावासवेण अण्णहिं वासरि जयजयरवेण ।

---

घत्ता—इस प्रकार वह जहाँ दिखाई देती है, वही सुहावनी है, उसका बर्णन किस प्रकार किया जाए। जनक के यज्ञ की रक्षा करते हुए, राम की रक्षा करते हुए, उसका परिणय किया जाएगा।

(12)

तब कुल लक्ष्मी से सुन्दर दशरथ ने अपने पुत्रों को भेज दिया। सेनापति महाबल के साथ चतुरंग सेना से घिरे हुए वे ससुर के नगर गए। मनुष्यों सहित देवता त्रस्त हो उठे। समुद्र से च्युत मगर चंचल हो उठे। योद्धा, रथ, हाथी, घोड़े चल पड़े मानो दसों दिशा-पथ एक साथ मिल गए हों। घर पर आए हुए उनका (राम, लक्ष्मण) का ससुर ने अभिवादन किया। प्रांगण में जय मगल और तूर्य बजा दिये गए। इस प्रकार कुछ दिन बीत गए। लेकिन अफसोस है कि राजा पशु वधों से प्रवंचित हुआ। उसने चंचल पचरंगे ध्वजों से आन्दोलित एक योजन प्रमाण का मंडल बनाया, दीनों को आहार दान दिया जाने लगा। काँपते हुए पशुओं के प्राण आहूत किए जाते हैं। इस प्रकार माँस खाया जाता है, और विधान किया जाता है। पुरोहितों ने इस प्रकार के यज्ञ का विधान किया है, बताइए ब्राह्मणों के द्वारा कौन नहीं ठगा गया कि वे जो हिंसा और पाप के आश्रय का धर्म बताते हैं। दूसरे दिन जय-जय शब्द के साथ।

---

10. A परणिज्जइ।

(12) 1. A गउ। 2. A सुरसेण्ण तसिय, P सुर सण्णर तसिय। 3. AP करि रह। 4. A तुरय। 5. आयउ। 6 AP पंगणि। 7. A मंगलतूरु; P मंगलतरु। 8. AP मणोहरेहिं। 9. AP मिगहं पाणु 10. A णिव्वित्तिउ।

घत्ता—धणुकोडिचडावियघणगुणहु[11] दरिसियवइरिविरामहु ॥
णियधीय सीय णवकमलमुहि जणएं दिण्णी रामहु ॥12॥

13

वइदेहि धरिय करि हलहरेण णं विज्जुल धवलें जलहरेण ।
णं तिहुयणसिरि परमप्पएण णं णायवित्ति पालियपएण ।[1]
णं चंदें वियसिय कुसुममाल[2] गोविंदें णं सिरि सारणाल ।
दुव्वारवइरिवारणभुएण सहुं सीयइ सहुं केक्कयसुएण ।
अच्छइ दासरहि सुहेण जाम पिउणा णियदूयउ पहिउ[3] ताम ।
आणिउ विणीयपुरि सीरधारि सकलत्तु सभाउ दुहावहारि ।
अहिंसिचिवि जिणपडिमउ घएहिं दहियहिं दुद्धहिं धारापएहिं[4] ।
णिव्वत्तिय जिणपुज्जा महेण सिसुणेहें तूसिवि दसरहेण ।
अवराउ सत्त कण्णाउ तासु दिण्णाउ मुसलकरपहरणासु ।
सोलह तहु महिलच्छीहरास अलिकुवलयकज्जलसामलासु ।
गंभीरधीरसाहसधणाहं रइयउ विवाहु दोह मि जणाहं ।
कोणाहयतूरइं रसमसंति[5] मिहुणाइं मिलंतइं दर हसंति ।
संमाणवसइं सयणइं णडंति पिसुणइं चिंतासायरि पडंति ।

घत्ता—शत्रुओं को अंत दिखाने वाले तथा धनुष की कोटि पर सघन शब्द के साथ डोरी चढ़ाने वाले राम को जनक ने नव कमल के मुखवाली अपनी कन्या दे दी।

(13)

राम ने सीता का पाणिग्रहण कर लिया मानो धवल मेघ ने बिजली को पकड़ लिया हो, मानो परमात्मा ने त्रिभुवन की लक्ष्मी को ग्रहण कर लिया हो, मानो प्रजा के पालन करने वाले राजा ने न्यायवृत्ति को पकड़ लिया हो, मानो चन्द्रमा ने पुष्पमाला को विकसित किया हो, मानो गोविन्द ने लक्ष्मी के कमल को पकड़ लिया हो। तब दुर्वारशत्रुओं से निवारण करने वाली भुजाओं वाले, कैकेयी के पुत्र और सीता के साथ, लक्ष्मण के साथ राजा राम जब सुख से रहते थे, तो पिता ने एक अपना दूत भेजा और दुःख का हरण करने वाले श्रीराम को पत्नी सहित अयोध्या बुलवा लिया। घी, दही, दूध की धाराओं से जिन भगवान् की प्रतिमा का अभिषेक कर महान् पुत्र स्नेह से संतुष्ट होकर राजा दशरथ ने जिनेन्द्र की पूजा की। हाथ में मूसल अस्त्र को धारण करने वाले राम को और भी सात कन्याएँ दी गईं, तथा भ्रमर नील कमल और कज्जल के समान श्यामल तथा धरती की लक्ष्मी को धारण करने वाले लक्ष्मण को सोलह कन्याएँ दी गईं। और इस प्रकार गंभीर, धीर, साहस रूपी धन वाले उन दोनों का विवाह किया गया। दंड से आहत नगाड़े बजने लगे, मिथुन जोड़े मिलने लगे, कुछ-कुछ और मुस्कराने लगे। सम्मान के वशीभूत होकर स्वजन लोग नृत्य करने लगे, दुष्ट लोग चिंता रूपी सागर में पड़ गये।

11 A दाणगुणहु; P धणुगुणहु ।
(13) 1. A पालियवएण । 2. P कुसुयमाल । 3. AP पिहिउ । 4 P धारवएहिं । 5. A समसंमति ।

घत्ता—काणीणहुं दीणहुं देसियहुं दिण्णइं दाणइं लोयहुं ॥
तहिं समइ पराइउ[6] महुसमउ णं विवाहु अवलोयहुं ॥13॥

14

सोहइ वसंतु जगि पइसरंतु अहिणवसाहारहि महमहंतु ।
महुकारि व महु धारहिं सवंतु हेमंतपहुत्तणु णिट्ठवंतु ।
णियचिंधइं दसदिसु पट्ठवंतु अंकुरफुरंतु[1] पल्लवचलंतु[2] ।
सारंतु सुवाविहि वारिचीरु दावंतु णीलसेवालतीरु[3] ।
खरकिरणपयाउ[4] वि णेलरासु अवरु वि दीहत्तणु वासरासु ।
पयडंतु असोयहु पत्तरिद्धि मोक्खयहु दुफग्गुणमोक्खसिद्धि ।
बउलहु वउ सुच्छायउं[5] करंतु वणलच्छिहि ओसासुय[6] हरंतु ।
तिलयहु दलतिलयविलासु देंतु वेल्लीकामिणियहं रसु जणंतु ।
वल्लहकामुयवम्मइं हणंतु कणयारफुल्लरयधूसरंतु[7] ।
माणिणिहिं माणगिरि जज्जरंतु हिंडिरमसलावलिगुमुगुमंतु ।
उत्तगमड्डिड[8] दियहइं गमंतु[9] ।
मंदारकुसुमरयमहमहंतु[10] रमणाहिलासविब्भमु भमंतु ।

घत्ता—कानीन, दीन, देशी लोगों को दान दिया गया। ठीक उसी समय बसंत का समय आ पहुँचा। मानो उस विवाह को देखने के लिए ही ऐसा हो रहा है।

(14)

जग में प्रवेश करता हुआ बसंत शोभित होता है, अभिनव सहकार वृक्षों से महकता हुआ कलाली की तरह मधु धाराओं से बहता हुआ, हेमन्त की प्रभुता को नष्ट करता हुआ, अपने चिह्न को दसों दिशाओं मे भेजता हुआ, नवांकुरों से चमकता हुआ, पल्लवों से हिलता हुआ, वापिकाओं के जल रूपी चीर को हटाता हुआ, उनके नीले शैवालों के तीरों को दिखाता हुआ, सूर्य के तीक्ष्ण किरण प्रताप को और दिनों के लम्बेपन को दिखाता हुआ, अशोक के पत्तों की वृद्धि करता हुआ, मोक्ष (अर्जुन) वृक्ष की दुष्ट फागुन से मुक्ति की सिद्धि को प्रगट करता हुआ, मौलश्री के शरीर को कांतिमय बनाता हुआ, वन लक्ष्मी के ओस रूपी आंसुओं को पोंछता हुआ, तिलक वृक्षों के पत्तों को तिलक की शोभा देता हुआ, लता रूपी कामिनियों में रस उत्पन्न करता हुआ, प्रियों के कामुक मर्मों को आहत करता हुआ, कनेर के फूलों की धूल को धूसरित करता हुआ, मानिनियों के मान रूपी पहाड़ों को जर्जर करता हुआ, घूमते हुए भ्रमरों की आवलि से गुनगुन करता हुआ, उत्तम वृक्ष विशेषों पर दिनों को बिताता हुआ, मंदार कुसुमों की धूल से महकता हुआ, रमण की अभिलाषा के विलास को उत्पन्न करता हुआ, वसंत आ पहुँचा।

---

6. AP पराइयउ।

(14) 1. A फुरत। 2. A °ललंतु। 3. AP °सेवालणीरु। 4. AP °पयाउ दिणेसरासु। 5. A सच्छायउ। 6. AP ओसंसुय। 7. AP कणियार°। 8. AP उत्तुगमड्डिड। 9. AP add after this: मज्जंतपक्खिकुलचुमुचुमंतु; K writes it but strikes it off. 10. AP read this line as: रमणाहिलासविब्भम भमंतु (A : रमणीहि विलासविब्भमि भमंतु), मायदकुसुमरयमहमहंतु।

घत्ता—जो मोणें चिरु संचरइ वणि सो संपइ महुसेविरु ।।
कलकोइलु[11] पुण वि पुण वि लवइ मत्तउ को ण पलाविरु ।।14।।

15

वज्जइ वीणा पिज्जइ पाणं पियमाणुसचित्तं साहीणं ।
गिज्जइ महुरं सत्तसरालं दढपेम्मं पसरइ असरालं ।
परिमलपउरं पोसियरामं बज्झइ फुल्लियमल्लियदामं ।
गंधकयंबयछडयवियारे[1] णेवरकलरवणच्चियमोरे[2] ।
सुप्पइ[3] दवणयविरइयगेहे पुप्फत्थरणे भमियदुरेहे ।
संधइ कामो कुसुमखुरप्पं[4] णासइ तावसतवमाहप्पं ।
अणुणिज्जइ रूसति पियल्ली दाविज्जइ कंदप्पसुहेल्ली ।
सरजलकेलीसित्तसरीरो जंतविमुक्कसकुंकुमणीरो ।
तिम्मइ[5] पणइणिसुहुमकडिल्लो दिट्ठावयववूढरसिल्लो[6] ।
कुवलयमालाताडणललियउ[7] फुल्लपलासदुमिहि[8] पज्जलियउ ।
इच्छामाणियकंताकंतो[9] एव वियंभइ जाम वसंतो ।

---

घत्ता—जो अभी तक वन में बहुत समय से मौन था, वह कोकिल इस समय मधु का सेवन करने लगा और बार-बार सुन्दर आलाप करने लगा । इस दुनिया में मतवाला कौन नहीं प्रलाप करता ?

(15)

वीणा बजने लगती है । मदिरापान किया जाने लगता है । प्रियजनों के चित्तों को साधा जाता है । सप्त स्वरों में मधुर गाया जाता है । अपर्याप्त दीर्घ प्रेम फैलने लगता है । परिमल से प्रचुर स्त्रियों का पोषण करने वाली खिली हुई मल्लिका की माला बांधी जाने लगती है । जिसमें सुगंधित द्रव्यों के समुच्चय का छिड़काव किया गया है, और नूपुरों के समान शब्द वाले मयूर नृत्य कर रहे हैं, जिसमें भ्रमर घूम रहे हैं ऐसे द्रवण लताओं से रहित घर में पुष्प-शय्या पर प्रेमी जनों के द्वारा सोया जाता है । रूठी हुई प्यारी को मनाया जाता है, और उसे काम पीड़ा का सुख दिखाया जाता है । जिसमें सरोवर की जलक्रीड़ा से शरीर सींचा गया है, जिसमें यन्त्रों से छोड़ा गया केशर मिश्रित पानी है, जिसमें प्रणयिनी स्त्रियों के सूक्ष्म कटिवस्त्र गीले हो [illegible], जो दिखाई देनेवाले अवयवों से बढ़े हुए वृक्षों वाला है, जो कुवलय मालाओं के मारे [illegible] क्रीड़ा से युक्त है, जो खिले हुए पलाशों के वृक्षों से जल रहा है, जिसमें पति-पत्नी [illegible] इच्छाओं को मना रहे हैं, ऐसा वसन्त बढ़ने लगता है ।

---

11. A °कोकिलु ।

(15) 1. A गंधकुडंबय° । 2. AP णेउरं° । 3. A सुप्पय° । 4. P °खुरुप्पं । 5. A णिम्मिय°; P तिम्मिय° । 6. P °वयवसुवुड्ढरसिल्लो । 7. A ललिओ । 8. A °दुमेहिं णं जलिओ; P °दुमेहिं णं जलियउ । 9. A इच्छिय°; P इच्छए ।

घत्ता—ता दसरहपयपंकय णविवि विहसिवि रामें वुच्चइ ॥
संताणकमागय तुह णयरि वाणारसि किं मुच्चइ ॥15॥

16

णासिज्जइ किं सो कासिदेसु सुणि ताय रायसत्थोवएसु ।
गुरुगय णियगय णिव दुविह बुद्धि बुद्धीइ पंचविह मतसिद्धि ।
दीसंति जाइ सच्छिद्दवेरि सा मंतसत्ति साहंति सूरि ।
विहुरे वि हु अणिहालियदिसेण उच्छाहसत्ति पुणु पोरिसेण ।
पहुसत्ति कोसदंडेहि[1] देव एयइ विणु महियलु वहइ केव ।
जाणेवा[2] अवर अलद्धलाह चत्तारि उवाय धरत्तिणाह[3] ।
वोल्लिज्जइ पहिलारउ जि सामु पियवयणु जीवजणियाहिरामु ।
बीयउ पुणु सीकिज्जंति किच्च संमाणिवि वइरिविरत्त भिच्च ।

घत्ता—ते थद्ध लुद्ध अवमाणणिहि भीरु कहंति विवक्खहु ॥
णियरायहु केरउ दुच्चरिउ वियलियपह[4] परिरक्खहु ॥16॥

17

उवदाणु वि हरि करि हेम[1] रयणु दिज्जइ जइ लब्भइ को वि सयणु ।
अवयारु देसपुरगामडहणु सो दंडु भणंति वरारिमहणु ।

---

घत्ता—तो दशरथ के चरण-कमलों को नमस्कार कर राम ने कहा—आपके द्वारा कुल परम्परा से प्राप्त नगरी क्यों छोड़ी जाती है ?

(16)

उस काशी देश को क्यों छोड़ा जाय ? हे आदरणीय, राजनीति-शास्त्र का उपदेश सुनिए। हे राजन्, बुद्धि दो प्रकार की होती है, एक गुरु की और दूसरी स्वयं की। बुद्धि से पांच प्रकार के मंत्रों की सिद्धि होती है। जिस बुद्धि से बैरी छिद्रपूर्ण दिखाई देता है, विद्वान् उसकी साधना करते हैं। संकट के समय भी किंकर्त्तव्यमूढ़ता से रहित पौरुष के द्वारा उत्साह शक्ति सिद्ध होती है। हे देव, कोष और दंड से प्रभु की शक्ति सिद्ध होती है, इसके बिना धरतीतल की रक्षा कैसे की जा सकती है ? और भी, हे पृथ्वी के स्वामी, जिनसे लाभ प्राप्त नहीं किया गया है, ऐसे चार उपायों को जानना चाहिए। पहला उपाय साम कहा जाता है, प्रिय वचनवाला जो जीवों के लिए अत्यन्त सुन्दर लगता है। दूसरे भेद उपाय को स्वीकार करना चाहिए। इसके द्वारा शत्रुओं से विरक्त लोगों का सम्मान करके उसका भेदन करना चाहिए।

घत्ता—ये लोभी और जड़ होते हैं, अपमान ही इनकी निधि है। ये डरपोक होते हैं, ये रक्षा करनेवाले अपने राजा और विपक्ष का दुश्चरित बता देते हैं।

(17)

हाथी, अश्व, स्वर्ण, रत्न का दान करना चाहिए। यदि कोई स्वजन मिल जाता है, तो अवश्य देना चाहिए। और देश, पुर, ग्राम को जलानेवाला अपकार भी करना चाहिए, उसे श्रेष्ठ

---

(16) 1. A कोसु दंडेहिं । 2 A जाणेव्वा; P जाणेव । 3. AP धरित्तिणाह । 4. A वियडिय° ।
(17) 1. AP हेमु ।

जिप्पंति हरिस मय कोह काम  रिउ माण लोह दुक्कम्मधाम।
जउ वक्खाणिउ इंदियजएण  संधि वि मित्तत्तणसंगएण।
सावहि णिरवहि इच्छंति के वि  पट्टणइं वत्थु वाहणइं लेवि[5]।
विग्गहु विरइज्जइ दोसदुट्ठु  दोसेण होइ बंधु वि अणिट्ठु।
आसणु गुरु कहइ असक्ककालि  अवरोहि विउलि रण्णंतरालि।
जाणु वि सलाहु परिवारपोसि  किज्जइ वज्जियदुंदुहिणिघोसि।
जा किर विग्गहसंधाणवित्ति  तं दोहीअरणु[2] ण का वि भंति।
जहिं ण वहइ णियकरहत्थियारु  असरणि रिउसेव वि कि ण चारु।
णरवइ अमच्चु जणठाणु दंडु  धणु दुग्गु[3] मित्तु संगामचंडु।
सत्त वि पयईउ हवंति जेण  उज्जउं णउ मुच्चइ ताय तेण।

घत्ता—तं णिसुणिवि जणसंतावहर ताएं चावविहूसिय॥
णं जलहर[1] बे वि धवल कसण सुय वाणारसि पेसिय॥17॥

18

णियतायपसायपसण्णभाव  सविणय पणमंत[1] विमुक्कगाव।
देहच्छविदूसियरवियरोह[2]  जुवरायत्तणसिरिलद्धसोह।

---

शत्रुओं का नाश करनेवाला दंड कहते हैं। हर्ष, मद, क्रोध और काम रूपी और दुष्कर्मों के आश्रय लोभ और मान रूपी अन्तरंग शत्रुओं को जीतना चाहिए। इन्द्रियों की विजय से जीत का बखान किया जाता है, और मित्रत्व की संगति के साथ संधि भी करनी चाहिए। कितने ही लोग अवधि पूर्वक या बिना अवधि के नगर वस्तु और वाहन लेकर सधि की इच्छा करते हैं। दोषों से सहित दुष्ट के साथ विग्रह करना चाहिए क्योंकि दोष के कारण बन्धु भी अनिष्ट होता है। गुरु असंभव काल में दुर्गाश्रय की बात कहते हैं, और विशाल परिवार का पोषण करनेवाले बजते हुए नगाड़ों के घोष के साथ गमन करना ही सराहनीय है, तथा जो युद्ध और संधि की सधान वृत्ति है, उसे द्वैधीकरण कहा जाता है, इसमें जरा भी भ्रान्ति नहीं और यदि अपने हाथ में हथियार नहीं रहता है, तो अशरण की उस अवस्था में शत्रु की सेवा करना क्या अच्छा नहीं है? राजा, अमात्य, जनस्थान, दंड, धन, दुर्ग और संग्राम में प्रचंड मित्र—ये सात प्रकृत्तियाँ होती हैं। हे पिता, उससे उद्यम नष्ट नहीं होता।

घत्ता—यह सुनकर लोगों के संताप को दूर करने वाले पिता दशरथ ने धनुष से शोभित दोनों पुत्रों को वाराणसी भेज दिया। मानो वे दोनों काले और सफेद मेघ हों।

(18)

अपने पिता के प्रसाद से प्रसन्न, गर्वरहित वे दोनों प्रणाम करते हैं, जिन्होंने अपने शरीर की कांति से सूर्य के किरणसमूह को दूषित कर दिया है, और जो युवराज की लक्ष्मी से शोभा

---

2. A दोहीकरणु; P दोहीअरणु। 3. A दुग्ग मित्त। 4. जलहर धवल बे वि कसण।
(18) 1 A पणवंत; P णयवंत; K records a p : णयवंत। 2. A °भूसिय°

मणिमउडसुपट्टालिंगियंग[3] णं सुरमहिहर उत्तंगसिंग[4]।
सेविज्जमाण णरखेयरेहिं विज्जिज्जमाण चलचामरेहिं।
जोइज्जमाण जणवयजणेहिं पेल्लिज्जमाण कामिणिथणेहिं।
अलिकसणपीयणिवसणणिउत्त सुंदर सुबलाकेक्कयहिं पुत्त।
दियहेहिं बंधु ते जंत जंत रमणीयपएसहिं[5] थंत थंत।
पहचोइय गय सुहजणणपत्त वाणारसि[6] बिण्णि वि वीर[7] पत्त।
धयमालातोरणमंगलेहिं दहिदोवहिं[8] सियकलसुप्पलेहिं।
णाणाणायरियहिं दीसमाण पइसंति[9] णयरि णं कामबाण।।

घत्ता—जणु बोल्लइ दसरहजेट्ठसुउ इहु ससहोयरु[10] आवइ।।
कंचीकलाव गुप्पंतु[11] पहि पुरणारीयणु[12] धावइ।।18।।

19

क वि मेल्लइ कोंतलफुल्लदामु णीससइ का वि जोयंति रामु।
काइ वि थणजुयलउं विहलु गणिउं[1] हा[2] एउ ण लक्खणणहहिं वणिउं।
क वि दावइ कंकणु का वि हारु क वि ऊरुयलु[3] क वि मुहबिंबयारु।
पयलंतउं[4] क वि परिहाणु धरइ क वि कट्ठदिट्ठि जोयंति मरइ।

को प्राप्त हैं, जिनके दिव्य शरीर मनि-मुक्ताओं की पदावली से आलिंगित हैं, जो मानो ऊँचे शिखरों वाले सुमेरू पर्वत के समान हैं, ऐसे वे मनुष्य और विद्याधरों द्वारा सेवित चंचल चामरों से हवा किये जाते हुए, जनपद लोगों के द्वारा देखे जाते हुए कामिनिजनों के द्वारा प्रेरित किए जाते हुए जो भ्रमर के समान काले और पीले कपड़े पहने हुए थे—ऐसे सुबला और कैकयी के पुत्र अत्यन्त सुन्दर थे। इस प्रकार दिन-दिन जागते हुए रमणीक प्रदेशों में विश्राम करते हुए वे पूज्य पिता के द्वारा दिये गये वाहनो वाले तथा पथ पर हाथियों को प्रेरित करते हुए वे दोनों वीर वाराणसी नगरी पहुँचे। ध्वजमालाओं, तोरणों, मंगलों, दधि और दूर्वाओं और श्वेत कलश पर रखे गए कमलों के साथ अनेक नागरिकाओं द्वारा देखे गए वे दोनों नगरी में ऐसे प्रविष्ट हुए जैसे कामबाण हों।

घत्ता—लोगों ने कहा—यह दशरथ के सबसे बड़े बेटे है, जो अपने भाई के साथ आए हैं, तब अपनी करधनियों को छोड़ती हुई, पुर की स्त्रियाँ पथ पर दौड़ने लगतीं।

(19)

कोई अपनी चोटी से फूलों की माला छोड़ देती है, कोई राम को देखती हुई निःश्वास लेने लगती है। किसी ने अपने स्तनस्थल को फलहीन समझा और कहा कि इनको लक्ष्मण के नखों ने घायल नहीं किया। कोई कंगन दिखाती है, कोई हार। कोई उरुतल दिखाती तो कोई मुखबिंबाधर कोई अपनी खिसकती हुई धोती धारण नहीं कर पाती। कोई कष्ट दृष्टि से देखती हुई मर रही

3. P सुप्पहा°। 4. AP उत्तुंग°। 5 P रवणीय°। 6. P वाराणसि। 7. P धीर। 8. A दहिदूर्वाहिं। 9. A पयसंति। 10. A एहु सहोयरु 11. A गुप्पंति पहे। 12. AP पुरे णारी°।
(19) 1. A मुणिउं। 2. A हो। 3. AP उरयलु। 4 A पयलंतु का वि।

क वि सिंचइ पेम्मजलेण भूमि क वि चिंतइ एवहिं घरु ण जामि।
जइ इच्छइ कह व धरित्तिसामि तो जियमि माइ सच्चउं भणामि।
दारें भत्तारु ण जाहुं देइ पायारु किं पि अंतरु करेइ।
मणि[5] का वि विसूरइ चंदवयण तलहत्थि[6] ण जाया मज्झु णयण।
णं तो जोयमि उब्भिवि करग्ग गच्छंतु[7] सुहय सुहसारमग्ग।
कर मउलिवि सण्णइ का वि पोमु आवेसमि जावहिं सुवइ पोमु।
क वि णेउरु पहि णिवडिउ ण वेइ क वि भिक्खाचारिहि भिक्ख देइ।
जोयंति रायसुयजुयलतोंडु अण्णेत्तहिं[8] घल्लइ कूरपिंडु।

घत्ता—क वि विहसिवि बोल्लइ चंदमुहि सीयइ काइं वउत्थउं॥
जेणेहउं लद्धउं [9]पइरयणु दरिसियकामावत्थउं॥19॥

20

अण्णेक्कइ वुत्तउं जाहि माइ लग्गेज्जसु णाहहु तणइ पाइ।
वयणें बहुणेहपवत्तणेण हरि आणहि महु दूयत्तणेण।
जइ एहु ण इच्छइ विउलरमणि तो मारइ मारु मरालगमणि।
इय पुररमणीयणजूरणेण सज्जणहं मणोरहपूरणेण।

है। कोई प्रेमजल से धरती को सिंचित करती है। कोई सोचती है कि मैं अब घर नहीं जाऊँगी, और कहती है कि हे माँ, धरती के स्वामी यह यदि किसी प्रकार मुझे चाहते हैं तभी मैं जीवित रह सकती हूँ। सच कहती हूँ, पति किसी महिला को जाने नहीं देता और परकोटे पर कोई आड़ कर देता है। कोई चन्द्रमुखी भी अपने मन में अफसोस करती है कि हथेली में मेरे नेत्र क्यों नहीं हैं, नहीं तो दो हाथ ऊँचे करके मैं देख लेती। शुभ श्रेष्ठ मार्ग में जाते हुए उन दोनों सुभगों को हाथ ऊँचे करके देख लेती हैं। कोई अपने हाथ को बन्द कर राम से संकेत करती हैं कि जब कमल मुकुलित हो जायेंगें, तब मैं आऊँगी। कोई पथ पर गिरे हुए अपने नूपुरों को नही जान पाती। कोई भिक्षा मांगने वाले को भिक्षा देती है, लेकिन उन दोनों राजपुत्रों के मुखों को देखती हुई भात का समूह दूसरी जगह डाल देती है।

घत्ता—कोई चन्द्रमुखी हँस कर कहती है कि सीतादेवी ने ऐसा कौन-सा व्रत किया है कि जिससे उन्होंने कामदेव की अवस्था को प्रकट करने वाला पति-रत्न प्राप्त किया।

(20)

एक और ने कहा—हे माँ, तुम जाओ और स्वामी के पैरों से लगो। अत्यन्त स्नेह से भरपूर वचनों के द्वारा राम को यहाँ ले आओ। यदि यह इस विशाल रमणी को नहीं चाहता तो उस हंस की चाल वाली को कामदेव मार डालेगा। इस प्रकार नगर की स्त्रियों को पीड़ा उत्पन्न करते हुए तथा सज्जनों के मनोरथों को पूरा करने वाले ये दोनों भाई, दधि, अक्षत और निर्माल्य को

5. A मणि स विसूरइ क वि चंद°; P मणि सुविसूरइ क वि चंद°। 6. AP हलि हरिव ण। 7. A गच्छंत; P गच्छंति। 8. AP अण्णहिं सा घल्लइ। 9. AP पयरयणु।

दहिअक्खयलबहुसेसाउ[1] लेवि रायालइ भाइ पइट्ठ बे वि।
पियवयणें कि वि कि वि पाहुडेण कि वि दुव्वयणेण रणुब्भडेण।
कि वि सुहिसंबंधपयासणेण कि वि वसिकय वित्तिविहूसणेण।
कि वि णेहें कि वि भुयबलिण घित्त वणवाल[2] चंड मंडलिय जित्त।

घत्ता—मयरहरहु मलु दूसणु जिणहु अमयहु विसु किं सीसइ॥
गुणवंतहं दसरहतणुरुहहं दुज्जणु को वि ण दीसइ॥20॥

21

अच्छंति बे वि ते तेत्थु जाव एत्तहि लंकहि दहवयणु ताव।
वरकणयवीढसंणिहियपाउ[1] सीहासणग्गि रायाहिराउ।
अत्थाणि णिसण्णउ सामदेहु अवइण्णु महिहि णं काममेहु।
करचालियाइं चमरइं पडंति[2] कप्पूरपउरधूलिउ घुलंति।
पाढय पढंति तहिं णड णडंति वाइत्तताल तेत्थु जि घडंति[3]।
गिज्जंति गेय सरठाणलग्ग णच्चंति असेस वि देसिमग्ग[4]।
पडिहारहिं अणिबद्धउं चवंतु णियमिज्जइ लोउ वियारवंतु।
विण्णप्पइ भण्णइ[5] जीय देव अमर वि करंति कमकमलसेव।

---

ग्रहण कर राजदरबार में प्रविष्ट हुए। कुछ को प्रिय वचनों से, कुछ को उपहारों से, कुछ को रण से, कुछ को उत्कट दुर्वचनों से, कुछ-कुछ को अच्छे संबंधों के प्रकाशन से, कुछ को वृत्तियों के भूषण से, इस प्रकार उन्होंने लोगों को वश में किया। कुछ को स्नेह से, कुछ को बाहुबल से पराजित किया। इस प्रकार उन्होंने वनपाल और प्रचंड मांडलिक राजाओं को जीत लिया।

घत्ता—समुद्र में मल, जिन भगवान् में दूषण और अमृत में विष नहीं होता। इसी प्रकार गुणवान दशरथपुत्रों को कोई भी व्यक्ति दुर्जन दिखाई नहीं दिया।

(21)

जब वे दोनों इस प्रकार वहाँ रह रहे थे। तब यहाँ लंका नगरी में, जिसने सुन्दर स्वर्ण पीठ पर अपना पैर रखा है, ऐसा राजाधिराज रावण सिंहासन के अग्रभाग पर बैठा था। श्याम शरीर सिंहासन पर बैठा हुआ वह ऐसा मालूम हो रहा था, मानो धरती पर काम मेघ उत्पन्न हुआ हो। हाथों से चलाये गए चमर उस पर गिरते थे। कर्पूर से प्रचुर धूल उस पर गिरती थी। पाठक चारण पढ़ते, नट नाचते, वाद्यों का ताल भी वहाँ रचा जा रहा था, स्वर और ताल से युक्त गीत गाये जा रहे थे, और सब लोग देशी ढर्रे से नाच रहे थे, प्रतिहारियों के द्वारा अंट-शंट बोल कर, विकार युक्त लोग नियंत्रित किए जा रहे थे। यह निवेदन और कथन किया जा रहा था—हे देव, आप जीवित रहें। देवगण भी आपके चरण-कमलों की सेवा करते हैं।

---

(20) 1 AP सिद्धत्थक्खयसेसाउ। 2. A बलवाल।

(21) 1 AP णवकणय° 2. AP चलंति। 3. A घुलंति। 4. A देसमग्ग। 5. P जणवइ।

घत्ता—दसकंधरु दुद्धरु धरियधरु[6] तेयविहूसियदिसवहु ॥
जहिं अच्छइ भरहध रत्तिवइ[7] पुप्फयंतसंकावहु ॥21॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सीयाविवाहकल्लाणं णाम
सत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो[6] ॥ 70 ॥

---

घत्ता—तेज से दिशापथों को विभूषित करनेवाला धरती को धारण करनेवाला रावण जहाँ था, वहीं सूर्य और चन्द्रमा के भय को उत्पन्न करनेवाले भारत में धरती के अधिपति राम भी थे।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का सीता-विवाह-
कल्याण नाम का सत्तरवां परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

6. A धीरयकरु। 7. AP °धरित्तिवइ।

## एकहत्तरिमो संधि

णरसिरकरखंडणु[1] कहिं तं भंडणु एम भणंतु जि संचरइ ॥
तहिं विप्पियगारउ आयउ[2] णारउ अत्थाणंतरि पइसरइ ॥ ध्रुवकं ॥ छ ॥

1

उद्धाबद्धपिंगजडमंडलु[3] पोमरायरयणमयकमंडलु ।
तारतुसारहारपंडुरतणु[1] णं ससहरु णावइ सारयघणु ।
विमलफलिहमणिवलयालंकिउ णं जमु[5] पुरिसरूवु विहिणा किउं ।
दीसइ एंतउ[6] रायहु केरउं[7] रणकायरभडभयइं जणेरउं ।
कडियलणिहियहेममयमेहलु हसणु भसणु सवसणु[8] सकलुसु खलु ।
सोत्तरीयउववीयउरुज्जलु[9] हिंडणसीलु समीहियकलयलु ।
कयदेवंगवत्थकोवीणउ जुज्झु अपेच्छमाणु णिरु झीणउ ।
दिट्ठउ रावणेण[10] पडिवत्तिइ वइसारिउ आमणि गुरुभत्तिइ ।

---

## इकहत्तरवीं संधि

वह लडाई कहाँ है कि जिसमें मनुष्यों के सिर, हाथों का खंडन होता है, इस प्रकार कहता हुआ जो विचरता रहता है, ऐसा लोगों का अप्रिय करने वाला नारद वहाँ आता है, और दरबार के भीतर प्रवेश करता है ।

(1)

जिसने अपने पीले जटा समूह को ऊपर बाँध रखा है, जिसका कमंडलु पद्मराज मणियों से बना है, जिसका शरीर स्वच्छ हिमकण के हार के समान सफेद है, मानो-चन्द्रमा हो या शारदीय मेघ । स्वच्छ स्फटिक मणि के वलय से अंकित वह, ऐसा मालूम होता है, मानो उसके पुरुष रूप की विधाता ने स्वयं रचना की है, आता हुआ वह ऐसा दिखाई देता है कि जैसे राजा के रण में कायर योद्धाओं के लिए भय उत्पन्न करने वाला हो । उसके कटितल में स्वर्णमेखला थी । जो बहुत हँसता बोलता, ईर्ष्या से युक्त और युद्ध में आमक्ति रखनेवाला था । उत्तरीय को पहने हुए उसका वक्षस्थल उज्जवल था । घूमते हुए, और युद्ध की इच्छा रखते हुए, उसकी कौपीन वस्त्रों की बनी हुई थी । जो युद्ध न होने से अत्यन्त क्षीण हो गया था । रावण ने उसे देखा और

---

(1) 1. 1 AP णरकरसिर° । 2. A बोल्लइ णारउ; P आइउ णारउ । 3. P उद्धाबद्धु पिंगु जडमंडलु । 4. P पंडर° । 5. A जसरूउ पुरिस विहिणा । 6. A एतहो; P एत्तउ । 7. P केइउ । 8. AP वसणु । 9 A° उरज्जलु । 10. A रामणेण ।

पुच्छिउ पहुणा परमणसूलउ    कहहि वत्त को महु पडिकूलउ ।
तं णिसुणिवि संगामपियारउ    आहासइ दहगीवहु णारउ ।

घत्ता—सुरगिरिसिरि णिवसइ महिहि ण विलसइ संचइ धणयहु तणउं धणु ।।
णिसि णिद्द ण पावइ सयमहु भावइ णावइ तुज्झु जि भीयमणु ।। 1 ।।

2

सिहि णं करइ तुहारउं भाणसु    डहु वइवसु वइरिहिं तुहुं वइवसु ।
णेरिउ णेरियदिस[1] ता रुंभइ    जाव ण तुज्झु पयाउ वियंभइ ।
रयणायरु जं गज्जइ तं जडु    तुहुं जि एक्कु तइलोक्कि महाभडु ।
वाउ वाइ किर तुह णीसासें    बज्झइ फणिवइ तुह फणिपासें ।
चंदु सूरु किर[2] तुह घरदीवउ    सीहु वराउ वसउ वणि सावउ ।
ससुरु सणरु खगु जगु तुह बीहइ    पर पइं जिणिवि एक्कु जसु ईहइ ।
दसरहतणउ मुसलहलपहरणु    दूरमुक्कपररमणीपरहणु ।
परबलपबलसलिलवडवामुहु    जासु भाइ रणरसवियसियमुहु ।
लक्खणु सुहडलक्खविक्खेवणु    अण्णु वि जासु पवरपीणत्थणु[3] ।
जणएं कण्णारयणु विइण्णउं    तासु[4] रूवि थिउ विहिणेउण्णउं ।

---

स्वागत किया। गुरु-भक्ति के साथ आसन पर बैठाया। राजा ने दूसरों के मन के लिए शूल के समान उससे पूछा—यह बात बताइए कि कौन मेरे प्रतिकूल है ? यह सुनकर जिसे संग्राम प्यारा है, ऐसा नारद रावण से कहता है—

घत्ता—यद्यपि इन्द्र सुमेरु पर्वत के शिखर पर रहता है, वह धरती पर शोभित नहीं होता। वह कुबेर का धन संचित करता है, फिर भी रात को उसे नींद नही आती। ऐसा मालूम होता है जैसे तुमसे भीत मन उसे अच्छा नहीं लगता।

(2)

आग तुम्हारे यहाँ मानो रसोइये का काम करती है। यम दग्ध हो जाए, तुम शत्रुओं के लिए यम हो, नैॠत्य नैॠत्य दिशा को रोकता है तब तक कि जब तक तुम्हारा प्रताप नहीं फैलता। समुद्र जो गरजता है वह मूर्ख है, क्यों कि तीनों लोकों में एक तुम्हीं महासुभट हो। तुम्हारे निश्वास से हवा चलती है। तुम्हारे नागपाश में नागराज बँध जाते हैं। सूर्य और चन्द्रमा तुम्हारे घर के दीपक हैं। सिंह बेचारा वन में निवास करता है और श्वापद भी। देवताओं और मनुष्यों सहित खग और जग तुमसे डरता है, लेकिन एक आदमी ऐसा है कि जो तुम्हें जीतने की इच्छा रखता है। दशरथ का बेटा, हाथ में मूसल का हथियार रखनेवाला, पररमणी का परिहार करनेवाला (राम) और जिसका भाई शत्रु सेना के प्रबल पानी में बडवाग्नि के समान है, और जिसका मुख वीर रस से विकसित है ऐसा लक्ष्मण लाखों योद्धाओं को क्षुब्ध करने वाला है, और भी जिसे राजा जनक ने अपनी विशाल पीन स्तनों वाली बाला प्रदान की है, जिसके रूप में विधाता का नैपुण्य स्थित है।

---

(2) 1 AP णेरियदेसि। 2. AP किह। 3. AP पीणपीवरथणु। 4. AP ताहि।

घत्ता—सा तुज्झु जि जोग्गी लयललियंगी हिप्पइ मड्डइ[5] किंकरहं ॥
सुरसरि झसमुद्दहु होइ समुद्दहु णउ जम्मि वि पंकयसरहं ॥2॥

3

विप्फुरियाणणु णं पंचाणणु तं णिसुणिवि पडिलवइ दसाणणु ।
धीर विमुक्ककेर करिकरभुय खल बलपबल[1] चवल दसरहसुय ।
रामसाम गयसाम सहोयर मारमि सुहड तुमुलि भूगोयर ।
हरमि घरिणि गुणमणिसंचयखणि अहिणवहरिणणयण मयणावणि ।
पभणइ णारयरिसि कि गावें रावण[2] विहलें वीरपलावें ।
सरह सीह को वणि सघारइ काल कयंत बे वि को मारइ ।
चंद सूर को खलइ णहंगणि हरि बल को णिहणइ समरंगणि ।
केसरिकेसछढा[3] को[4] छिप्पइ जाणइ केण णराहिव हिप्पइ[5] ।
चवइ राउ विरइयअवराहहं बालहं वाणारसिपुरिणाहहं[6] ।
सिरकमलइं खंडेसमि जइयहुं तुहुं वि तेत्थु आवेसहि तइयहुं ।

घत्ता—तेलोक्कभयंकरु[7] वइरिखयंकरु धणुगुणटंकारु जि झुणइ ॥
खेयरउरदारणि महु सरधोरणि रणि रामहु वम्मइं लुणइ ॥3॥

---

घत्ता—वह स्त्री लता के समान सुन्दरता अग वाली तुम्हारे योग्य है। अपने चातुर्य से उसे बलपूर्वक किंकरो से छीन लीजिए। क्यों कि गंगा नदी मछलियो से भरे समुद्र की होती है, वह जन्म भर तलावों की नहीं होती।

(3)

जिसका मुख चमक रहा है, ऐसे शेर के समान वह रावण यह सुनकर बोला—मैं धीर, मर्यादा से हीन हाथी के सूड के समान भुजाओं वाले दुष्ट बलवान, चंचल दशरथ के बेटे राम और श्यामल लक्ष्मण को, जो हाथी के समान श्याम हैं, ऐसे सुभटों को तुमुल-युद्ध में मारूँगा और मैं गुणों और मणियों के संचय की खान अभिनव हरिणियों के समान नेत्र वाली कामदेव की भूमि, उसका अपहरण करूँगा। नारद मुनि कहते हैं—हे रावण, गर्व से विह्वल प्रलाप से क्या ? क्यों कि वन में श्वापद और सिंह का शृंगार कौन कर सकता है ? काल और कृतान्त को कौन मार सकता है ? सूर्य और चन्द्र को आकाश के प्रांगण से कौन स्खलित कर सकता है ? युद्ध के प्रांगण में राम और लक्ष्मण को कौन छू सकता है ? हे राजन्, जानकी का कौन अपहरण कर सकता है ? तब राजा कहता है—अपराध करनेवाले वाराणसी नगरी के राजा उन दोनों बालकों के सिर-कमलों को जब मैं काटूँगा, हे मुनि तब आप वहाँ आना।

घत्ता—फिर तीनों लोकों में भयंकर शत्रुओं का नाश करनेवाला रावण धनुष की टंकार करता है। और कहता है—विद्याधरों के वक्षस्थलों को चीरने वाली मेरी बाणों की परम्परा युद्ध में राम के कवच को छिन्न-भिन्न करेगी।

---

5 AP मंडइ । 6. P सतमुद्दहु ।

(3) 1. AP रणपवल । 2. P रामण । 3. A °केसरसढ; P °केसरसढ । 4. AP कि । 5. AP घिप्पइ । 6. AP वाराणसि° । 7. A तइलोक्क° ।

4

ता परियाणवि कलहहु कारणु अवसें होसइ एत्थु महारणु ।
गउ णारउ णियमणि संतुट्ठउ वीसपाणि मंतणइ पइट्ठउ[2] ।
दुट्ठु अणिट्ठु विसिट्ठु ण[3] सिट्ठउ मंतिउ[4] मंतु सबुद्धिइ दिट्ठउ ।
तणुलायण्णवण्णजलवाहिणि हिप्पइ रहुकुलणाहहु गेहिणि ।
मारिज्जंति भाइ ते भीसण भणु मारीयय भणइ बिहीसणु ।
तं णिसुणिवि मारीएं वुत्तउं परवहुरमणु णरिंद अजुत्तउं ।
परवहुरमणु धम्मणिल्लूरणु परवहुरमणु सयणसयजूरणु ।
परवहुरमणु कित्तिविद्धंसणु परवहुरमणु विमलकुलदूसणु ।
परवहुरमणु पराहवगारउं परवहुरमणु णरयपइसारउं ।
घत्ता—परयारु सुविट्टलु दुक्खहं पोट्टलु दुग्गमु दुज्जसपरियरु ।।
बहुभवसंसारणु सिवगइवारणु पावासवविहिवासघरु ।।4।।

5

दुत्तरमोहमहण्णवि छूढउ परवहुरमणु करइ जो मूढउ ।
तुहुं घइं[1] बहुसत्थत्थवियाणउ अण्णु वि सयलहि पुहइहि राणउ ।

(4)

तब इस कलह के कारण को जानकर कि अब अवश्य ही महायुद्ध होगा, नारद अपने मन में संतुष्ट होकर चला गया और रावण भी परामर्श के लिए महल में प्रविष्ट हुआ। उसने यह दुष्ट अनिष्ट बात विद्वान् मंत्री से नहीं कही, अपनी बुद्धि से ही इस बात का विचार किया कि शरीर के सौन्दर्य और वर्ण की नदी रघुकुलनाथ की गृहणी का हरण किया जाए, उन भयंकर भाइयों को मार दिया जाए। यह मारीच से कहो। तब विभीषण कहता है। यह सुनकर मारीच बोला, हे राजन्, परवधू से रमण करना अनुचित है, परवधू का रमण धर्म का नाश करने वाला होता है, परवधू का रमण आत्मीय जनों को संताप पहुँचाने वाला होता है। परवधू का रमण कीर्ति का नाश करने वाला होता है। परवधू का रमण पवित्र कुल को दोष लगाने वाला है। परवधू का रमण दूसरों का अपकार करने वाला है, परवधू का रमण नरक में प्रवेश कराने वाला है।

घत्ता—परस्त्री अत्यन्त नीच दुःख की पोटली होती है। दुर्गम और खोटे यश की समूह है, अनेक लोकों में घुमानेवाली एवं मोक्ष गति का निवारण करनेवाली और पापाश्रय विधि का वास-घर होती है।

(5)

जो मूर्ख व्यक्ति परवधू से रमण करता है, वह नहीं तरने योग्य मोह रूपी महासमुद्र में जा गिरता है। तुम अनेक शास्त्रार्थों को जानने वाले हो, और फिर सकल धरती के राजा हो। जो

(4) 1. A परितुट्ठउ । 2. AP वइट्ठउ । 3. AP वसिट्ठउ । 4. AP मंतिए ।
(5) 1. AP सइं ।

जो पडिकूलु होइ सो हम्मइ परवहु पुणु सिविणि वि ण रम्मइ ।
भणइ दसाणणु जणसामण्णहं[2] जणएं जाणिवि दिण्णी अण्णहं ।
थीयणसारी णयणपियारी चंपयगोरी हिययवियारी[3] ।
सेलसिहरसंचालणचडहिं सा[4] अवरुंडमि जइ भुयदंडहिं ।
तो सकयत्थु महारउं जीविउ तो मइं णरभवफलु संप्राविउ[5] ।
जइ तहि तं मुहकमलु ण चुंबमि तो अप्पाणउं काइं विडंबमि ।
कम्मणिबंधणेण णिक्कज्जें[6] किं महुं महियलेण किं रज्जें ।

घत्ता—हरिणच्छिहि वत्तइ सुइसुहमेत्तइ[7] उप्पाइउ मणि कलमलउ ।।
रइकायरु कंपइ पुणु पुणु जंपइ दहमुहु विरहविसंठुलउ ।। 5 ।।

6

बुज्झिवि अंतरंगु दहगीवहु वाय विणिग्गय मुहि मारीयहु ।
कामबाणसंताणहि भग्गउ जइ तुहुं महिवइ सीयहि लग्गउ ।
तो वि मयणु मग्गें माणेवउ[1] रत्तविरत्तचित्तु जाणेवउं[2] ।
तं जाणिज्जइ विविहपयारें विडगुरुभासिएण सुयसारें ।
अंसयदेसिजाइपरइत्थहु[3] इंगियसत्तभावरसगुत्थहु[4] ।

तुम्हारे प्रतिकूल है, उसे तुम्हें मारना चाहिए। लेकिन परवधू का रमण तुम्हें स्वप्न में भी नही करना चाहिए। तब दशानन कहता है—जनक ने जान-बूझकर (मुझे छोड़कर) किसी अन्य जन-सामान्य को जानकी दे दी है। स्त्रीजन में श्रेष्ठ नेत्रों के लिए प्यारी, चंपक के समान गोरी, हृदय को चूर कर देने वाली ऐसी उसका, मैं (रावण) पर्वत शिखरों के संचालन से प्रचड अपने भुजदडों के द्वारा यदि उसका आलिंगन करता हूँ तो मनुष्य जीवन पाने का फल पा लेता हूँ। इसलिए यदि उसका मुखकमल मैं नही चूमता तो मैं अपने को बिडम्बित क्यों करता हूँ? बेकार कर्म (निष्प्रयोजन) से क्या? मेरे राज्य से क्या और धरती से क्या?

घत्ता—कानों के लिए सुख की मात्रा के समान उस मृगनयनी के वार्तामात्र से मेरे मन में हलचल मच गई है। रति में कायर रावण विरह से अस्त-व्यस्त होकर काँप उठता है, और बार-बार कहता है।

(6)

तब रावण का मन जानकर मारीच के मुँह से यह बात निकली—काम के वाणों की परम्परा से नष्ट हुए हे राजन्, यदि तुम सीता से लग गए हो तब भी तुम्हें कामदेव के मार्ग से उसे मानना चाहिए। रागी विरागी चित को जानना चाहिए। तथा काव्य-शास्त्र में कामाचार्य द्वारा कहे गए विविध प्रकार के इंगितों, सात भावों और रसों से परिपूर्ण हंसादि देसी तथा जाति भेदों वाले स्त्रीसमूह में कामिनी को जानना चाहिए। इस प्रकार जो धरती पर कामिनियों को जानता

2. A °सावण्णहं 3. AP हिययपियारी। 4. AP omit सा; A अवरुंडिवि। 5. AP संपाविउ। 6. A णिरकज्जें। 7. A सुयसुह°।

(6) 1. AP माणिव्वउ। 2 P जाणेव्वउ। 3. A °जाईपयओ; P °जाइपयइत्थउ। 4. A °रस-गुट्टपउ।

कामिणीउ जो महियलि जाणइ सो लंकाहिव रइसुहुं माणइ ।
भद्द मंद लय हंसि चउत्थी चउविह महिलाजाइ पसत्थी ।
भद्द भणमि सव्वंगसुरूविणि[5] मंद[6] थूलगुरुपेढालत्थणि[7] ।
लय दीहरतणु लय जिह पत्तल खुज्जी णारि मरालि समासल ।
रिसिविज्जाहरजक्खपिसायहं अंस होंति रमणीसंघायहं ।
तावसि उज्जुय भुंभुलभोली[8] खेयरि मइराकुसुमरसाली ।
जक्खिणि धणकणलोहपरव्वस अडण पिसल्ली भणिय सतामस ।

घत्ता—सारसि मिगि रिट्ठिणि ससि धयरट्ठिणि[9] महिसि खरी मयरि वि जुवइ ।।
सत्तें दीसंतें[10] रइसइकंतें वसुविह कहिय णिसुणि णिवइ ।। 6 ।।

7

वच्छत्थलु थणकलसहिं पेल्लइ सारसि पिययमसंगु ण मेल्लइ ।
मिगि[1] णियबंधवदाणें मण्णइ तज्जिय तसइ गेउ आयण्णइ ।
पुत्तहंडदुक्खिणि वायसरव रिंणि ठाणु मुयइ रणभइरव ।
ससि णिम्मीलियच्छि दुहभायण णिग्घिण परहरगासालोयण ।
धयरट्ठिणि सररुहसरकीलिणि महिसि कराल रोसरसवालिणि ।

है, हे लंकाराज, वह रति सुख को मानता है। भद्रा, मंदा, लता और चौथी हंसा यह चार प्रकार की महिलाजाति प्रशस्त मानी गई है। भद्रा को मैं कहता हूँ कि वह सर्वांग सुन्दर होती है, जबकि मंदा अत्यन्त मोटी और भारी चौड़े स्तनों वाली होती है। लता लंबे शरीरवाली एवं लता के समान पतली होती है। हंसा नारी कुबड़ी और थुलथुल (मांसल) होती है। ऋषियों, विद्याधरों, यक्षों और पिशाचों को जो रमणीय समूह है, वह हंसा होती है। तापसी नारी सीधी और स्वभाव से भोली होती है। विद्याधरी मदिरा और कुसुमों में आसक्त होती है। यक्षिणी धन-धान्य के लोभ के अधीन होती है, और पिशाचिनी घूमने वाली और तामस भाव से युक्त कही जाती है।

घत्ता—सारसी, मृगी, रिष्टणी, शशि, धृतराष्ट्रणी, महीषी, खरी और मयूरी युवतियां भी होती हैं। इस प्रकार कामदेव की आठ प्रकार की युवतियाँ कही गई हैं। हे राजन् उन्हें सुनिए।

(7)

इनमें सारसी प्रिय के वक्षस्थल को अपने स्तनरूपी कलशों से प्रेरित करती है और प्रियतम के संग को नहीं छोड़ती। मृगी अपने भाइयों के दान के द्वारा संतुष्ट होती है। डाँटने पर त्रस्त होती है। और गीत सुनती रहती है। रिष्टणी पुत्र रूपी भांड से दुःखी कौवे के समान स्वर वाली, रण से भयंकर अपने स्थान को छोड़ देती है। शशि अपनी आँखें बंद किए हुए दुःख की भाजन होती है। दूसरों के घर पर भोजन करने वाली होती है। धृतराष्ट्रणी कमलों के तालाबों में क्रीड़ा

5. P adds after this : णरवर मंदा णिसुणि णियबिणि 6. P जाणि थूलगुरुपोढविलासिणि । 7. AP add after this : णउ सेविज्जइ सा वि यलक्खणि । 8. AP भुंभुरभोली; T भुंभुर°। 9 AP धयरिट्ठिणि। 10. AP दीसत्तें।

(7) 1 A मृगि णियबंधव°।

खरि खेल्लंति हसइ कहकहसरु सहइ पायपहरु वि घल्लिउ करु।
मयरि मासगासिणि दढगाहिणि कयसाहस कुकम्मणिव्वाहिणि।
सुणि[2] देसीउ णिहिलदेसाहिव इह मालविणि होइ इच्छियसिव।
ससहावें लंपडि खरभासिणि वाणारसिसंभव वणवासिणि।

घत्ता—अब्बुइ[3] जा कामिणि मंथरगामिणि सा पहिलउं जि दव्वु हरइ॥
दिणमेर णिबंधिवि रईरसु संधिवि पच्छइ सरकीलणु[4] करई॥ 7॥

8

सिंधुवि पुणु पियगेयहु[2] रप्पइ प्राणु[3] वि दविणु वि दइयहु अप्पइ।
मायाबहुलु भाउ कोसलियहि लब्भइ रइगुणेण[4] सिंघलियहि।
दविडि[5] दंतणहच्छेयहु सक्कइ अंध्रिणि[6] णिब्भररयहु चमक्कइ।
ललियालावें लाडि लइज्जइ उड्डि रमणविण्णाणें भिज्जइ।
कालिंगी उवयारु पउंजइ[7] रक्खसु सुक्कउ[8] रुक्खु[9] वि रंजइ।
सोरट्ठिय आउबणतुट्ठी गुज्जरि णिच्चसयज्जहु लट्ठी।
अवरु महारट्ठी जइ सीसइ ता तहि धुत्तत्तणु पर दीसइ।

करने वाली होती है। महिषी अपने भयंकर क्रोध रस का निर्वाह करने वाली होती है। खरी खिलखिलाती है, और ठहाका मार कर हँसती है। मारे गए हाथ और पैरों के प्रहार को भी वह सहती है। मयरी मांस खाने वाली मजबूत पकड़ वाली अत्यन्त साहसी तथा कुकर्मों का निर्वाह करने वाली होती है। हे अखिल देशों के राजा, देसी स्त्री को सुनिये। मालवी स्त्री अपना मतलब चाहने वाली होती है। स्वभाव से लंपट और अत्यन्त कर्कशबोलने वाली होती है। वनारस की स्त्रियाँ क्रीड़ा को चाहने वाली होती हैं।

घत्ता—अर्बुद की जो स्त्री है, वह मंदगामिनी होती है, और सबसे पहले आदमी का धन हरण करने वाली होती है। और दिन की मर्यादा मानकर रतिसुख का संधान कर बाद में काम क्रीड़ा करती है।।

(8)

सिंधु देश की स्त्री अपने घर में प्रसन्न रहती है। और अपने प्राण और धन दोनों ही अपने पति को अर्पित कर देती है। कौशल देश की स्त्री का भाव अत्यन्त मायावी होता है। सिंहल देश की स्त्री को रति गुण से ही पाया जाता है। द्रविड़ देश की स्त्री दांतों और नखों के क्षत को सहन कर सकती है। आन्ध्र देश की स्त्री परिपूर्ण रति से चौंक उठती है। मधुर आलाप से गुजरात की स्त्री शरमा जाती है। उड़ीसा की स्त्री का भेदन रमण-विज्ञान से ही किया जा सकता है। कलिंग देश की स्त्री उपचार का प्रयोग करती है। राक्षस, पुण्यात्मा और रूखे किसी का भी रंजन करती है। सौराष्ट्र देश की स्त्री चुम्बन से संतुष्ट होती है। गुजरात की स्त्री नित्य अपने काम में निपुण

2. AP मुणि। 3 A अच्छए। 4. AP सुरयकील।

(8) 1. AP संघवि। 2. A पियणेहहु; P पियगेहहु। 3. AP पाणु 4. P घणेण। 5. AP दिविडि। 6. AP अंधणि। 7. AP पवज्जइ। 8. AP सुक्खउ। 9. P रुक्ख।

कोंकणियहिं जइ काइं वि दिज्जइ तो तं चिंतवंति सा झिज्जइ[10]।
दरिसियहरिसियवम्महलीलउ पाडलिउत्तियाउ करणालउ।
करइ किं पि चंगउं ववसायउं पारियत्तपणइणि पुरिसाइउं।
हिमवंती वि मंतबीयक्खरु जाणइ जेण[11] पडइ पायहिं वरु।
मज्जएसणारीउ कलालउ होंति राय सयदलसोमालउ।

घत्ता—देसंसयजुत्तहं जाइहि सत्तहं सयलहं पयइणिवासु किह।।
गिरिसरिहरठाणहं अमरविमाणहं मयरहरहं तेलोक्कु जिह ।।8।।

**9**

सा वि तिविह णरजम्मि णिबज्झइ[1] पित्तसिंभमारुयहिं णिरुज्झइ।
पित्तपयइ आरूसइ खणि खणि संतोसेवी धुत्तें दिणि दिणि।
गोरी बुद्धिवंत णहपिंगल मउएं किज्जइ सा रइभिंभल[2]।
उण्णयसिहिणवरंगु[3] मुणेज्जसु सीयलु तहि आलिंगणु देज्जसु।
सीयलु गंधु सेउ[4] पगुरणउं सीयलु[5] ताहि जि सुरयारुहणउं।
सिंभपयइ सामल वण्णुज्जल अहिणवकयलीकंदलकोमल।

होती है। और यदि मराठी स्त्री के बारे में कहा जाये तो उसमें केवल धूर्तता ही दिखाई देती है। कोंकण देश की स्त्री को यदि कुछ दिया जाये तो वह उसका विचार करती हुई दुबली होती जाती है। जो हर्षित होकर कामदेव की कीडा का प्रदर्शन करती है, ऐसी पाटलीपुत्र की स्त्री अपने स्तन के ऊपर स्तन रखने वाली होती है। पारियात्र देश की स्त्री पुरुष के प्रतिकूल कुछ भी अच्छा या बुरा व्यवसाय करती है। हिमवंत देश की स्त्री मंत्र के बीजाक्षरों को जानती है। इससे पति उसके पैरों पर गिरता है। हे राजन्, मध्यदेश की स्त्रियाँ कलायुक्त होती हैं, और कमल के समान कोमल होती हैं।

घत्ता—सैकड़ों देशों से युक्त सभी सातों जातियों की प्रकृति का निवास इनमें उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार पहाड़, नदी, धरती के स्थान, अमर विमानों और समुद्रों का त्रिलोक में होता है।

(9)

उस स्त्री को भी मनुष्य जन्म में तीन प्रकार से रचा गया है—पित्त, कफ और वात के द्वारा उसे अवरुद्ध किया गया है। पित्त प्रकृति वाली स्त्री क्षण-क्षण में क्रुद्ध होती है। उसे प्रतिदिन धूर्तता से संतुष्ट करना चाहिए। गौरी, बुद्धिमती, पीले नख वाली को कोमलता के साथ रति से विह्वल बनाना चाहिए। उन्नत स्तनों और श्रेष्ठ अंग वाली को समझना चाहिए और उसे धीरे-धीरे आलिंगन देना चाहिए। जो शीतलगंध, श्वेतपट और शीतल हो उसे सुरति का आरोहण देना चाहिए। कफ प्रकृतिवाली श्यामल और उजले रंग की होती है, तथा नये केले के पत्ते के

10. A भिज्जइ। 11. AP जेहिं। 12. AP मज्झदेस°। 13. AP °महि°।

(9) 1. AP विबज्झइ। 2. AP रइवेंभल। 3. AP उण्हय° 4. A सीउ। 5. AP सीयलु सीयलु सुरयाहरणउं।

दिट्ठइ दोसि णिरुत्तउ चुक्कइ पुणु जम्मि वि ण संमुहु ढुक्कइ।
सच्चें विणएं दाणें घिप्पइ इयरह पुणु तहि अंगु ण छिप्पइ।
रइजल पोंभल मउ सोणीयलु णिप्पडियंध[6] चारु तणुपरिमलु।
आयंबिरणह सोहियकमकर सुंदरि साहारणसुरयायर।
कसण फरुस मरुपयइ विलासिणि बहु अहारु लेइ बहुभासिणि।

घत्ता—करकढिणपहारहिं सद्दगहीरहिं पयडउं पडु विडु जइ रमइ॥
परिभमणपरिक्खहि[7] कालकडक्खहि ता[8] कामग्गि ताहि समइ॥9॥

10

जहि पयइइ पयइइ फुडु भिण्णी सा तोंतडिय दोहि संकिण्णी।
जिह पयइउ[1] तिह बिहि बिहि जायइं अंसयसत्तइं मइं विण्णायइं।
जाइउ[2] देसिउ तिह मइ बुद्धउ भाउ दुविहु अविसुद्धु विसुद्धउ।
पहिलारउ सवत्तिसहवासें वयपरिणामें दीहपवासें[4]।
आसंकइ चामीयरलोहे अवरेहि[5] वि कारणसंदोहें।
वहइ असुद्धभाउ णारीयणु तेण वि वेयारिज्जइ जडयणु[6]।
आलोयंतहं समुहु जोयइ मुहुं वियसावइ[7] करयलु ढोवइ।

समान कोमल होती है। दोष दिखाई देने पर वह चुप-चाप हो जाती है। फिर जन्म भर सामने नहीं आती। फिर सत्य, विनय और दान से ही वह ग्रहण की जाती है। दूसरी तरह से शरीर का स्पर्श नहीं किया जा सकता। वह रति जल से प्रचुर होती है। उसका स्वर्णिम तल कोमल होता है। और उसका शरीर रूपी सौरभ दुर्गन्धरहित होता है। उसके नख लाल होते हैं। काम करती हुई शोभित होती है, ऐसी वह सामान्य सुरति में आदर रखने वाली होती है। कृष्ण कठोर और विलासिनी होती है। वात प्रकृति वाली बहुत खाती है और बहुत बोलती है।

घत्ता— चतुर, प्रेमी उससे हाथ के कठिन प्रहारों और गंभीर शब्दों के द्वारा, रूप से उसे रमण करता है। आलिगन, चुम्बन आदि तथा कठोर कटाक्षों के द्वारा वह उसकी कामाग्नि को शांत करता है।

(10)

जहाँ प्रकृति-प्रकृति से स्त्री भिन्न होती है, दोनों से सकीर्ण वह मिश्रित होती है। जिस प्रकार की प्रकृति होती है, उसी प्रकार दो-दो प्रकार के भेद होते हैं। इस प्रकार हंस आदि और सात्विक स्त्रियों को मैंने जान लिया। देशी जाति को भी मैंने उसी प्रकार जान लिया। भाव भी दो प्रकार के होते है। विशुद्ध और अविशुद्ध। पहला भाव अपनी पत्नी के सहवास से होता है। दूसरे (अविशुद्ध भाव) को वय के परिणाम, दीर्घ प्रवास, स्वर्ण लोभ और दूसरे कारण समूह से नारीजन धारण करती हैं। इनसे भी मूर्खजन विकार को प्राप्त होते हैं। वह देखनेवालों के सामने देखता है, मुख का विकास करता है, और करतल उस पर रख देता है। हे देव, ऐसे भी नारीजन

6. APT णिप्पडियम्मु, K णिप्पडियंध but records a p : णिप्पडियम्म इति पाठे संस्काररहितः। 7. AP °भवण° । 8. A तो।

(10) 1 A पइओ। 2. P जणुउ। 3. AP सवित्ति° 4. AP °पयासें। 5. AP अवरेण। 6. AP जडमणु। 7. AP विहसावइ।

सो[8] वि देव विउसहिं पालिज्जइ बुद्धिइ संकिण्णत्तणु णिज्जइ।
मंदु तिक्खु तिक्खयरु पउत्तउ सुद्धभाउ तिहिं भेयहिं जुत्तउ।
घत्ता—भल्लारउं णिवसणु रयणविहूसणु जोव्वणु णारिहिं हरइ मणु।।
तं[9] पुणु पियदूएं णियडीहूएं मयणहुयासें डहइ[10] तणु।।10।।

11

ता तहिं दूवि का वि पेसिज्जइ ताइ भावसंभवु जाणिज्जइ।
इंगिएहिं देहुब्भवलिंगहिं कयणिण्णेहसणेहपसंगहिं।
भुक्खइ भग्गी अण्णहु लग्गी धणलंपडि कयखलसंसग्गी।
गमणकंख णिद्दालस मत्ती सुहिसोयाउर परगयचित्ती।
रुट्ठी णिट्ठुर कटुपलाविणि एही णउ सेविज्जइ भाविणि।
सीय[1] विसेसि परकुलउत्ती एक्क वि एत्थु जुत्ति णउ जुत्ती।
तो वि जाउ चंदणहि सुदेविहि मणअवहरणु करउ वइदेहिहि।
ता पेसिय सा[2] राएं तेत्तहि तं वाणारसिपुरवरु[3] जेत्तहि।
गय गयणंगणेण सा खेयरि पंडुरभवणावलि जोइवि पुरि।
जोयइ[4] चित्तकूडु णंदणवणु णं महिमहिलहि केरउं जोव्वणु।

का चतुर लोगों को पालन करना चाहिए और उसे बुद्धि से संकीर्ण भाव की ओर ले जाना चाहिए। मंद, तीक्ष्ण और तीक्ष्णतर—शुद्धभाव इन तीन भेदों से युक्त कहा गया है।

घत्ता—सुंदर निवसन, रत्नभूषण और यौवन नारी का मन हरता है। फिर उसे प्रिय के दूत के निकट होने पर कामदेव की आग जलाने लगती है।

(11)

इसलिए वहाँ पर किसी दूती को भेजना चाहिए। उसके द्वारा संकेतों, शरीर से उत्पन्न चिह्नों, किए गए स्नेह और अस्नेह के प्रसंगों के द्वारा उसके भावों की उत्पत्ति को जानना चाहिए। भूख से मग्न, किसी दूसरे से लगी हुई, धन की लालची, दुष्टों का संसर्ग करनेवाली, गमन की आंकाक्षा रखने वाली, निद्रा से आलसी, मतवाली, सुधीजनों के लिए शोकातुर, दूसरे में चित लगाने वाली, रूठी हुई, निष्ठुर और कठोर भाषण करने वाली स्त्री का सेवन नहीं करना चाहिए। सीता विशेष रूप से श्रेष्ठ कुल की पुत्री है। उसके संबंध में यह एक भी युक्तियुक्त नहीं है। तब भी हे चन्द्रनखे, तुम जाओ और सीतादेवी के मन का अपहरण करो। तब राजा ने उसे वहाँ भेजा जहाँ श्रेष्ठ वाराणसी नगरी थी। आकाश के प्रांगण से वह देवी वहाँ गई, और सफेद घरों की पंक्तियों वाली उस नगरी को देखकर वह चित्रकूट और नंदन वन को इस प्रकार देखती है, मानो धरती रूपी महिला का यौवन हो।

8. A सा वि। 9. P तें पुणु। 10. AP दहइ।

(11) 1 सीलविसेसि। 2. AP राएं सा। 3. AP वाराणसि°। 4. AP जोइय।

घत्ता—महुधारहिं सित्तउं णावइ मत्तउं मलयाणिलसंचालिउं ।
णवतरुवरसाहहिं पसरियबाहहिं णं णच्चंतु णिहालिउं ॥ 11 ॥

12

रुक्खमूलरोहियधरायलं[1] कुसुमधूलिधूसरियणहयलं ।
कीलमाणसाहामयालयं गयणलग्गतालीतमालयं[2] ।
बिल्लचिल्लवेइल्लसद्दलं हरिणदंतदरमलियकंदलं[3] ।
सच्छविच्छुलुच्छलियजलकणं अयरुदेवदारुयहि घणघणं ।
विडविणिहसणुग्गमियहुयवहं सुरहिधूमवासियदिसामुहं ।
परिघुलंतकंकेल्लिपल्लवं पवणचलियमहिलुलियमहुल्लवं ।
बालवेल्लिविलएहिं णवणवं कीरकुररकारंडकलरवं[5] ।
अलयवलयविलुलंत अलिउल विविहकीलणावासपविउलं ।
केयईर[6]उक्खुसियमाणवं रमियखयरजक्खिददाणवं ।

घत्ता—तहिं पयडियभावइ बहुरसदावइ सिसुमाणिणिमणमोहणइ ॥
जणइच्छियकोमलि वरवण्णुज्जलि णाइ कव्वि सुकइहि तणइ ॥ 12 ॥

---

घत्ता—मधु की धाराओं से सींचा गया एकदम मतवाला जो मानो मलयपवन के द्वारा संचालित हो, वह नववृक्षवरों की शाखाओं से मानो बाहें फैलाकर नाचता हुआ दिखाई दिया ।।

(12)

जहाँ भूमितल वृक्षों की जड़ों से अवरुद्ध है, आकाशतल कुसुमधूलि से धूसरित है, जो खेलते हुए वानरों का घर है, जिसमें ताड़ी और तमाल वृक्ष आकाश को छू रहे है, बिल्व चिंचा और बेल के पत्तो से जो युक्त है, अगुरू और देवदारू वृक्षों से जो आच्छादित है, जिसमें वृक्षों के संघर्ष से अग्नि उत्पन्न हो रही है, जिसमें सुरभित धूप से दिशामुख सुवासित हैं, जो अशोक वृक्ष के पत्रों से व्याप्त है, हवा के चलने के कारण जिसमें बसंत लता धरतीतल पर लुंठित है । बाल लताओं के घरों के द्वारा, जिसमें कीर, कुरइ और कारंड पक्षियों का नव कलरव हो रहा है; बालों के समूह के समान जिसमें भ्रमर मंडरा रहे है, जो विविध क्रीड़ाघरों से प्रचुर है, जिसमें मनुष्य केतकी पुष्पों की रज से लिप्त हैं, जिसमें विद्याधर, यज्ञेन्द्र और दानवेन्द्र क्रीड़ा करते हैं ।

घत्ता—सुकवि के काव्य की तरह जो भावों को प्रगट करने वाला है, अनेक रसों को प्रदर्शित करने वाला है । शिशु माननियों के मन को मोहने वाला है, जो जनों की इच्छाओं की तरह कोमल है । (जिसमें लोगों के द्वारा कोयल को चाहा जाता है), जो श्रेष्ठ रंगों से उज्ज्वल है, ऐसे उस नंदन वन में ।।

(12) 1. A सोहिय° । 2. AP वड्ढमाणहितालतालयं । 3. P °दरदरिय° । 4. AP °धूव° । 5. A °कारंडकुलरवं । 6. A °रउ उक्खुसिय° ।

**13**

उग्गयचंदणि उरगयचंदण[1] उण्णयवंदणि कयजिणवंदण[2]।
लोहियकंदइ सुहितरुकंदा[3] गुरुमाइंदइ जियमाइंदा[4]।
वड्ढियमोयइ कयरइमोया[5] फुल्लासोयइ वियलियसोया[6]।
लग्गपियाले णिच्चपियाला[7] कीलासेले धीर व सेला[8]।
खगरावाले बहुरावाला सरकमलाले गुरुकमलाला।
महुयरगीए[9] मणहरगीइ[10] छाहियसीयइ[11] ते सहुं सीयइ[12]।
बहुपुहईरुहि पुहइसमेया सिवए सिवढोइयरिउमेया।
पइरिक्कामइ[13] कामियकामा लक्खणरामइ लक्खणरामा।
णंदणवणि छुडु छुडु जि पइट्ठा लंकेसरवरवहिणिइ दिट्ठा।
सहुं अंतेउरेहिं कीलारय गहियणवल्लफुल्लमंजरिरय।

घत्ता—कयकिसलयकण्णउ कुसुमरवण्णउ णं देविउ वणवासिणिउ[14] ॥
दुमसाहंदोलणि उववणकीलणि लग्गउ रायविलासिणिउ ॥ 13॥

(13)

जिसमें चंदन वृक्ष उगे हुए है, ऐसे उस वन में राम और लक्ष्मण के हृदय में चंदन संलग्न है। जिसमें रक्त चंदन के वृक्ष उन्मत हैं, ऐसे वन में जिनेन्द्र की वंदना करते हैं। जिसमें रक्तकंद वृक्ष हैं, ऐसे वन में वे (राम और लक्ष्मण) मित्र रूपी वृक्षों के लिए मेघ के समान हैं। जिसमें प्रचुर आम वृक्ष हैं, ऐसे वन में जो चन्द्रमा और लक्ष्मी को जीतने वाले हैं। जिसमें कदली वृक्ष बढ़ रहे हैं, ऐसे वन में जो रति क्रीड़ा करने वाले हैं। जिसमें अशोक वृक्ष विकसित हैं, ऐसे जो शोक से रहित हैं, जिसमें अचार वृक्ष आकाश को छूते हैं, ऐसे उस वन में वे दोनों नित्य अपनी प्रियाओं से युक्त हैं। क्रीड़ा वन मे जो पर्वत के समान धीर हैं, पक्षियों के कलरव से युक्त वन में जो गुरु के चरणों को चाहने वाले हैं, भ्रमरों के मधुर गीत वाले वन में, मधुरग्रीवा (सीता के साथ) छाया से शीतल वन में (सीता के साथ) प्रचुर महीवृक्षों वाले वन में, पृथ्वी (लक्ष्मण की पत्नी का नाम) के साथ सुखद वन में वे पशुओं को शत्रुओं का मांस देने वाले हैं। जिसमें अमल और प्रचुर जल है ऐसे वन मे जो वांछित अर्थों को भोगने वाले है; जो सारसों से रमणीय है, ऐसे नंदन वन में राम और लक्ष्मण शीघ्र प्रविष्ट हुए। अपने हाथों में नई पुष्प मंजरी धारण करने वाले और अन्तःपुर के साथ क्रीड़ा करने वाले वे दोनों रावण की बहिन द्वारा देख लिए गए।

घत्ता—जिसने किसलयों के कर्ण फूल धारण कर रखे हैं, जो पुष्पों से ऐसी सुन्दर है मानो वनवासिनी देवी हो, वे राजवनिताएँ वृक्षों की शाखाओं को आन्दोलन वाली उपवन क्रीड़ा में रत हो गईं।।

---

(13) 1. AP °चंदणे। 2. AP °वंदणे। 3. AP °कंदए। 4. AP °मायंदए। 5. AP °मोयए। 6. P °सोया। 7. P °पियाले। 8. P वीर व सेला; T वीर वसेला वशा इला ययोस्तौ वशेलौ। 9. AP °गीयइ। 10. A °गीया। 11 AP छाही° छाहिय। 12. A सीया। 13. AP पयरिक्कीमए। 14. A उववण।

14

काइ वि जणणयणहं रुच्चंतिइ मोरें सहुं सहासु णच्चंतिइ ।
सोहइ कमलु दुवासिहिं[1] धरियउं णालंतालिपिंछविच्छुरियउं ।
णाइं कंडु रइणाहहु केरउ दावइ[2] सुरणरहियवियारउ ।
काइ वि समउं[3] वि हंसु चमक्कइ गइलीलाविलासि सो चुक्कइ ।
काहि वि छप्पउ लग्गउ करयलि जडु अप्पउं मण्णइ थिउ सयदलि ।
काहि वि णियडउं णं ओलग्गइ एणउ दीहकडक्खिउ मग्गइ ।
काइ वि उप्पलु सवणि णिहित्तउं कुम्माणउं णं णयणिहि जित्तउं ।
कुवलयकिंकिणिमालाजुत्तउं काइ वि बद्धु वेल्लिकडिसुत्तउं ।
काइ वि जाइवि मड्डइ[5] धरियउ कुसुमरएण[4] रामु पिंजरिउ ।
संझाराएं णं मयलंछणु तेण[6] य सोहइ णं सारयधणु ।
जाइहुल्लु अण्णइ तहु ढोइउं अण्णइ सरसु वयणु संजोइउ ।
जाइवंत किं जाइ भणिज्जइ जा महुयरसएहि माणिज्जइ ।
तो वि भडारी सीसें बज्झइ अप्पकज्जि जणु सयलु वि मुज्झइ ।

घत्ता—सव्वंगहिं सुरहिउ वरमरुवउ पिउ रुणुरुंटेप्पिणु धुत्तडिय[7] ॥
मोग्गरउ मुएप्पिणु अंगु धुणेप्पिणु तासुप्परि[8] महुयरि चडिय ॥14॥

(14)

लोगों के नेत्रों को प्रिय लगती हुई, मयूर के साथ एवं हंसी के साथ नाचती हुई किसी के द्वारा अपने दोनों पार्श्व भागों में धारण किया गया नाल (मृणाल के) के अंत में मधुकर रूपी पुंख से शोभित कमल ऐसा मालूम होता है, मानो सुर नर के हृदय को विदारित करने वाले कामदेव का तीर दिखाई दे रहा हो। किसी के साथ हंस चलता है, परन्तु वह उसकी गति लीला विलास में चूक जाता है। किसी की हथेली से भ्रमर आ लगा। वह मूर्ख समझता है कि मैं कमल दल पर आ बैठा हूँ। मृग किसी के निकट आकर उसकी सेवा करता है, और उसका दीर्घ कटाक्ष माँगता है। किसी के द्वारा कानों पर रखा गया कमल मुरझा गया है, मानो उसके नेत्रों के द्वारा जीत लिया गया हो। किसी ने कुवलय रूपी किंकिणी माला से युक्त लता रूपी कटिसूत्र बांध लिया। किसी ने जबर्दस्ती राम को पकड़ लिया और पुष्प पराग से उन्हें पीला कर दिया, मानो संध्या राग ने चन्द्रमा को पीला कर दिया हो या मानो उसी से शारदीय मेघ शोभित हो। किसी ने जाती पुष्प दे दिया। दूसरी ने सरस मुखश्री की ओर देखा जो (जाती पुष्पों) सैकड़ों मधुकरों के द्वारा भोगा जाता है, उसे जाति वाला (उत्तम जाति का) क्यों कहते हैं। तो भी आदरणीया वह उसे सिर से बाँधती है। अपने काम में सभी लोग मोहित होते हैं।

घत्ता—मोगर पुष्प को छोड़कर अपने शरीर को फड़फड़ा कर तथा रोकर धूर्त मधुकरी सर्वांग-सुरक्षित प्रिय मरुबक पुष्प पर चढ़ गई।

(14) 1 AP दुवासहिं। 2. P दावइ ण सुर°। 3. AP समउं हसु चम्मक्कइ। 4. को माणउ त णयणहिं। 5. P मथइ; K मत्थइ but corrects it to मड्डइ। 6. AP तेण जि। 7. A धुत्तलिया। 8. AP जासुप्परि।

## 15

का वि कुंदकुसुमइं णियदंतहिं जोयइ दप्पणि समउ फुरंतहिं।
बउलु[1] परिक्खइ णियतणुगंधें बिंबीहलु अहरहु संबंधें।
क वि फुल्लिउ साहारु णिरिक्खइ बाली हरिसाहारणु[2] कंखइ।
जंपमाणु णवकलियइ मत्तउ खरसंताउ ण मुणइ सइत्तउ।
धरिउ ताइ रूसिवि मणदूसउ अग्गिवण्णु जायउ[2] मुहि पूसउ।
का वि उच्छुकरयल सुहकारिणि णावइ[3] विसमसरासणधारिणि[4]।
का वि फुल्लमालउ संचारइ[5] सरु[6] सरपंतिउ णं दक्खालइ।
का वि पलासपसूयइं वीणइ केकयतणयहु[7] पाहुडु आणइ।
णिद्धइं रत्तइं कुडिलइं तिक्खइं णाइ वसंतमइंदहु णक्खइं।
काइ वि कोइल कसण णिरिक्खिय पुच्छिय[8] अवरइ विहसिवि अक्खिय।
सपहिं एह[9] वि बोल्लणसीली[10] जणविरहाणलधूमें काली।
एयहि सद्दु महुरु महुरउ विसु दोहिं मि हम्मइ पवसिउ माणुसु।
जइ महुं लक्खणु अज्जु रमेसइ ता हलि कलपलविउं[12] सुहुं देसइ।

घत्ता—लयमंडव माणिवि कील समाणिवि कामभोयसंपण्णरइ ॥
णं[13] करिवरु करिणिहिं सहुं णियघरिणिहिं सरि पइसंति णराहिवइ ॥15॥

---

(15)

कोई दर्पण में चमकते हुए अपने दाँतों के साथ कुंद पुष्पों को देखती है। अपनी देहगंध से मौलश्री पुष्प की ओर अधरों के संबंध से बिम्बाफल की परीक्षा करती है। कोई फूले हुए सहकार वृक्ष को देखती है, और बाली वासुदेव के साथ बाहुयुद्ध चाहती है। नवकलियों से मतवाला और बोलता हुआ निष्कपट शुक वियोग दुःख को कुछ भी नहीं मानता। मन को कुपित करनेवाले उसे उसने कसकर पकड़ लिया, इसीसे वह (शुक) मुख में (चोंच में) लाल रंग का हो गया। कोई शुभ करनेवाली, हाथ में इक्षुदंड लिये हुए ऐसी प्रतीत होती है, मानो विषम धनुष को धारण किये हुए हो। कोई पुष्पमाला का इस प्रकार संचार करती है, मानो कामदेव तीरों की पंक्तियाँ दिखा रहा हो। कोई पलाश पुष्पों को इकट्ठा करती है, और लक्ष्मण के लिए उपहार में देती है। स्निग्ध लाल कुटिल और तीखे वे ऐसे मालूम होते थे, मानो वसंत रूपी सिंह के नख हों। कोई काली कोयल को देखती है और पूछती है। दूसरी हँसकर उत्तर देती है कि लोगों के विरहानल के धुएँ से काली यह इस समय भी बोल रही है। इसका मधुर मधु में रत विष दोनों ही प्रवासियों के मानस को आहत करता है। यदि आज मुझ से लक्ष्मण रमण करता है तो कोयल का यह प्रलाप मुझे सुख देता है।

घत्ता—लतामंडप का उपभोग कर क्रीड़ा को मानकर जिसने कामभोग में अपनी रति पूर्ण कर ली है ऐसा राजा अपनी स्त्रियों के साथ सरोवर में इस प्रकार प्रवेश करता है, मानो कविवर अपनी स्त्रियों के साथ प्रवेश कर रहा हो।।

---

(15) 1 A ववलु। 2. KT record a p: अथवा हरियासायणं चुम्बनम्। 2. AP मुहि जायउ। 3. AP ण विसमसरसरा° 4. A °धोरिणि। 5. AP संचालइ। 6. AP सर। 7. A केकइतणयहु, P केइयतणयहु। 8. A अच्छिय अंबइ विहसिय अक्खिय; P अच्छिय अवरइ विहसिवि अक्खिय। 9. P एह जि। 10. AP बोलण°। 11. AP मइ। 12. A कललवियउं। 13. P omits णं।

16

सीयापंजलिपाणियसित्तहु णं दप्पणयलि पुण्णपवित्तहु ।
दीसइ रामहु उरि णीलुप्पलु सोहइ णं छणचंदहु[2] मयमलु ।
कसणें हरिणा का वि महासइ सित्ती णं मेहेण वणासइ ।
णं रोमावलिअंकुर मेल्लइ मुहकमलेण णाइं पप्फुल्लइ[3] ।
क वि घणथणफलसंपय दावइ सुंदरि वेल्लि अणंगहु णावइ ।
सिंचिय सिंचिय हसइ सलीलउं उच्छलंतकप्पूरकणालउं ।
काहि वि पियकरजलविच्छुलियहि सुत्तजालु तुट्टउं कंचुलियहि ।
अल्लउ[4] परिहणु ढलिउ[5] विहाविउ लज्जइ सलिलि अंगु ल्हिक्काविउं ।
काइ वि महुमहकंतिइ कालिउ रत्तउं सयदलु कण्हु[6] णिहालिउ ।
सहियहु दंसिवि कहिवि[7] वियप्पिउं कण्णालग्गइ काइ वि जंपिउं ।
सिचहि ललिय[8] एह पोमावइ विरहिणि जेण[9] भडारा जीवइ ।
कुंकुमपिंडउ एयहि घल्लहि एह देव वच्छयलें पेल्लहि ।

घत्ता—तं सुणिवि कुमारें माणवसारें एक्क धरिय चीरंचलइ ।।
अण्णेक्कहि जंतें दरविहसंतें मुक्कउं सलिलु थणत्थलइ ।। 16 ।।

(16)

सीता की अंजुलियों के पानी से सींचा गया नील कमल पुण्य से पवित्र राम के उर पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो दर्पणतल में मृग से लांछित पूर्ण चन्द्र शोभित हो। श्याम नारायण (लक्ष्मण) ने किसी महासती को इस प्रकार सींच दिया, मानो मेघ ने वनस्पती को सीच दिया हो, मानो वह (नाभि का) रोमावली रूपी अंकुर को छोड़ रहा हो, मानो वह मुखकमल से खिल गई हो। कोई सघन स्तन रूपी फलसंपदा को दिखाती है, जैसे कामदेव की सुन्दर लता हो। बार-बार सींचे जाने पर वह, जिसमें कपूर के कण उछल रहे है, ऐसे लीलापूर्वक हँसती है। प्रिय के हाथों से नहलाई गयी किसी की चोली का सूत्रजाल टूट जाता है, शिथिल गीला वस्त्र गिर जाता है, वह लजा जाती है, और पानी में अपना अंग छिपाती है। कोई लक्ष्मण के मुख की कांति से श्याम रक्त कमल को काला देखती है, सखियों को दिखाकर अपना विचार बताती है। कोई कानों से लगकर कहती है, हे ललिते ! इसे सींचो यह पद्मावती है। जिससे यह आदरणीया विरहिणी जीवित रह सके। इसे केशर का लेप दो। हे देव, इसे वक्षस्थल पर दबाओ।

घत्ता—यह सुनकर मानवश्रेष्ठ कुमार ने एक को वस्त्र के अंचल से पकड़ लिया तथा एक और दूसरी के स्तनों पर थोड़ा-थोड़ा मुसकाते हुए उसने जलयंत्र से जल छोड़ा।

(16) 1. AP पाणियपंजलि° । 2. A छणयंदहु; P छणइदहु । 3. AP पफुल्लइ । 4. AP पुलएं; K records a p: पुलएं 5. A ण्हसिउ; P ल्हसिउ । 6. AP किण्हु । 7. A कह व । 8. AP एह ललिय । 9. A जेम भडारा णीवइ ।

**17**

तं[1] हारावलि तिम्मिवि[2] पडियउं विहिणा किं णउ तेत्थु जि जडियउं।
कहिं लब्भइ पियसंगें आयउं काहि वि मणि उच्छल्लउं[3] जायउं।
काइ वि वल्लहहत्थ[4] गलत्थिय देहतावहय[5] ते ज्जि समत्थिय।
णहणिवडंत[6] धरिय धवलामल तोयबिंदु णावइ मुत्ताहल।
का वि णियंबिणि णाहहु णासइ वणि णिम्मज्जइ दूरहु दीसइ।
सरि परिघोलिरु सण्हउं पंडुरु[7] पाणियछल्लि व कड्ढइ अंबरु।
का वि उरत्थलि चडिय उविंदहु णावइ विज्जुल अहिणवकंदहु।
पत्तिणिपत्तइ पेच्छिवि जलकण हारु ण तुट्टउ[8] अवलोइय थण।
क वि हियउल्लइ विंभिय मंतइ अलयहं अलिहिं मि अंतरु चिंतइ।
का वि ण इच्छइ जलपक्खालणु[9] कज्जलतिलयपत्तपक्खालणु।
उड्डइ अंतरि करइंदीवरु तहु णवणालु[10] व थिउ धारासरु।
चवलरहल्लिजलोल्लियकेली एम करेप्पिणु चिरु जलकेली।

घत्ता—सरि ण्हाइवि णिग्गय णावइ दिग्गय थणयलघुलियहारमणिहिं॥
पयलियरसधारहु तलि साहारहु सहुं णिसण्णु णियपणइहिं॥17॥

---

(17)

हारावली को गीला करता हुआ वह उसके ऊपर गिरा, विधाता ने उसे क्यों नहीं जड़ दिया। इसने प्रिय का संग कैसे प्राप्त कर लिया? किसी के मन में यह उत्सुकता पैदा हुई। किसी ने कंठ में स्थित देह के ताप को दूर करने वाले प्रिय के उन्हीं हाथों का समर्थन किया। किसी ने आकाश से गिरते हुए धवल और अमल जलबिन्दुओं को इस प्रकार धारण कर लिया जैसे मोती हों। कोई नितम्बिनी अपने स्वामी से भाग जाती है, और जल में डूबकर दूर दिखाई देती है। सरोवर में हिलते हुए सूक्ष्म और सफेद वस्त्र को वह पानी की छाल की तरह निकालती है। कोई लक्ष्मण के वक्षःस्थल पर चढ़ी हुई ऐसी प्रतीत होती है, मानो अभिनव मेघ की बिजली हो। कमलिनी के पत्र पर जलकणों को देखकर वह अपने स्तन देखती है कि कहीं हार तो नहीं टूट गया। कोई अपने मन में विस्मित होकर विचार करती है और भ्रमर तथा बालों के अंतर को सोचती है। कोई काजल, तिलक और पत्र-रचना का प्रक्षालन करने वाले जलप्रक्षालन को नहीं चाहती। किसी का कर रूपी कमल पानी के भीतर है, चंचल लहरों और जल से आर्द्र है। ऐसी जलक्रीड़ा चिरकाल तक कर—

घत्ता—जल में नहाकर वे इस प्रकार निकले मानो दिग्गज हों। जिनके स्तनतलों पर हारमणि व्याप्त हैं, ऐसी प्रणयिनियों के साथ रस की धारा से प्रगलित उत्तम आम्र वृक्ष के नीचे जब वे बैठे हुए थे॥

---

(17) 1 AP णं। 2. P णिम्मिवि। 3. AP उच्छुल्लउं। 4. P °हत्थि। 5. AP °तावहर। 6. P णहणियडंत। 7. P पंडरु। 8. AP तुट्टइ। 9. A जलपक्खालणु। 10. AP °णालु थविउ। 11. P थणयलघुलिय°।

18

णावइ सीयसुरूवें[1] णिज्जिय विज्जाहरि तारुण्णें लज्जिय।
तहिं अवसरि कंचुई होएप्पिणु सा चंदणहि[2] तेत्थु आवेप्पिणु।
जोयइ[3] सीय पसाहिज्जंती कवि संकइ तिलउल्लउ देंती।
भालयलहु कलंकु परि किज्जइ एएं णं महुं हासउ दिज्जइ।
का वि ण बंधइ मोत्तियकंठिय कंबु पलोइवि णिहुणिय[5] संठिय।
का वि कवोलइ पत्त्‌ लिहेप्पिणु जूरइ किं पह पहय[6] णिहेप्पिणु।
चिंतइ खेयरि माणणिम्मुंभहं उव्वसिगोरितिलोत्तमरंभहं[7]।
रूवें सीयाए वि गुरुक्की पुरिसहं वम्महभल्लि व ढुक्की।
हा हा हय किं कयउ[8] पयावइ दुक्करु रामणु[9] जोइवि जीवइ।
जासु एह कुलहरि[10] कुलउत्ती रिद्धि विद्धि तहु तहु जि धरित्ती।
णिच्छउ होसइ[11] जित्तमहाहउ धण्णउ पुण्णवंतु जगि राहउ।
घत्ता—जरधवलियकेसइ कंपिरसीसइ मायारूवें भावियउं॥
मणहरणवियड्ढइ[12] खेयरिवुड्ढइ[13] तरुणीयणु पहसावियउ॥18॥

19

ता तहिं एक्क भणइ णवरण्णी[1] का तुहुं किं कारणु अवइण्णी।
हलि हलि कंचुइ काइं णियच्छसि भणु भणु किं लिहिया इव अच्छसि।

(18)

उस अवसर पर सीता के रूप से जैसे पराजित हो कर तथा तारुण्य से लज्जित विद्याधरी वह चन्द्रनखा वहाँ आकर सीता को प्रसाधित होते हुए देखती है। कोई तिलक देते हुए शंका करती है कि इससे (तिलक देने मे ) मुझे लज्जा आती है। कोई उसे मोतियों का कंठा नहीं बाँधती। उसके कंठ को देखकर निश्चल हो जाती है। कोई गाल पर पत्ररचना लिखकर प्रभा के द्वारा प्रभा को देखकर पीडित हो उठती है। वह विद्याधरी चन्द्रनखा विचार करती है कि मान को नष्ट करने वाली उर्वशी गौरी तिलोत्तमा रंभा आदि के रूप से सीता देवी महान् है, और यह पुरुषो के लिए, काम की मल्लिका के समान आई है। हा हा हत भाग्य प्रजापति, तुमने क्या किया ? इसको देखकर रावण को जीवित रहना कठिन है, जिसकी ऐसी कुलपुत्री कुलगृहणी है, उसी की ऋद्धि, वृद्धि और धरती है। निश्चय ही वह महायुद्ध का विजेता होगा। राघव विश्व में धन्य और पुण्यवंत हैं।

घत्ता—बुढ़ापे से जिसके केश धवल हैं, जिसका सिर काँप रहा है, जो मन चुराने में चतुर है, ऐसी उस विद्याधरी वृद्धा ने मायावी रूप बना लिया और उसने तरुणी जन को हँसाया।

(19)

उस अवसर पर वहाँ एक राजरानी कहती है कि तू कौन है, और यहाँ किसलिए आई है, हे कंचुकी तू क्या देखती ? बोल-बोल लिखित हुए के समान क्यों है ? यह सुनकर वह मायाविनी

(18) 1. सीयारूवें; P सीयासुरूवें। 2. A चंदणवि। 3. P जोइय। 4. AP कठु। 5. AP णिहुवी सठिय। 6. AP णिहिय पिहेप्पिणु। 7. A उब्भसिगोरी°; P उव्वसिमीणी। 8. AP कियउ। 9. A रावणु। 10. A कुलहर। 11. A होसइ तहि जि मइाजउ। 12. A °विसड्ढहे। 13. P खेयरवुड्ढइ।

(19) 1. A णिरवण्णी; P शिवरण्णी।

तं णिसुणिवि बोल्लइ[2] मायारी हउं मायरि वणवालहु केरी।
तुम्हिहि परभवि जं व्रउ[3] चिण्णउं जेणेहउं जायउं लायण्णउं।
लद्धा जेण णाह हलहर हरि जेण लच्छि एही सवसुंधरि।
तं मज्झु वि उवइसह वइत्तणु साहमि सवसा[4] हं वि जुवइत्तणु।
ता तं सीयइ झ त्ति दुगुंछिउं महिलत्तणु किं किज्जइ कुच्छिउं।
रयसलवासरि चंडालत्तणु णउ पावइ णियवंसपहुत्तणु।
अण्णहिं कुलि कत्थइ उप्पज्जइ वड्ढंती अण्णेण जि णिज्जइ।
सयणविओयवसेण रुयंती बहलबाहबिंदुयइं मुयंती।
मंतिकज्जि[5] णउ कासु वि भावइ जा जीवइ ता परवस[6] जीवइ।
दूहउ दुट्ठु दुगंधु दुरासउ अंधु बहिरु वाहिल्लु अभासउ।
असहणु अहणु कुडिलु जाणेव्वउं जो भत्तारु सो ज्जि माणेव्वउ।
घत्ता—जइ सइं चक्केसरु अहव सुरेसरु तो वि अण्णु णरु जणणसमु॥
चिंतेव्वउ णारिहिं कुलगुणधारिहिं णउ लंघेव्वउ गोत्तकमु॥19॥

20

विहवत्तणि पुणु सिरु मुडेव्वउं अप्पउं तवचरणें दंडेव्वउ[1]।
रक्खइ पिउ अव्वत्तसिसुत्तणि[2] रक्खइ तय[3] पइ[4] पुणु पोढत्तणि।

कहती है कि मैं वनपाल की माँ हूँ। तुम लोगों ने दूसरे जन्म में जो व्रत ग्रहण किया था, और जिसके लिए तुम लोगों को यह सौन्दर्य मिला, जिससे तुमने बलभद्र और नारायण जैसे पतियों को प्राप्त किया और जिससे इस भूमि सहित लक्ष्मी को प्राप्त किया है, उस व्रत का उपदेश तुम मुझे दो, जिससे मै इस स्वतंत्र युवतीत्व को पा सकूँ। तब सीता देवी ने उसे शीघ्र डाँटा कि कुत्सित महिलापन से क्या करना। रजस्वला के दिनों में उसे चडालत्व (धूर्तपन) प्राप्त होता है, और वह वंश की प्रभुता को नहीं पा सकती। किसी कुल में उत्पन्न होती है, और बड़ी होने पर किसी दुष्ट कुल के द्वारा ले जाई जाती है, स्वजनों के वियोग के वश से रोती हुई तथा प्रचुर वाष्प बिंदुओं को बहाती हुई। मंत्रणा के समय वह (नारी) किसी को अच्छी नहीं लगती। वह जब तक जीती हैं, तब तक परवश जीती है। चाहे वह दुर्भग दुष्ट दुर्गन्ध और दुराशयी, अंधा बहरा रोगी और गूंगा, असहनशील, निर्धन और कुटिल जाना जाए जो पति है, उसे पति ही माना जाना चाहिए।

घत्ता—यदि वह स्वयं चक्रवर्ती हो अथवा इन्द्र, तो भी कुलगुणों को धारण करने वाली स्त्रियों के द्वारा पर पुरुषों को पिता के समान माना जाना चाहिए। उन्हें अपने गोत्र का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

(20)

विधवापन में उन्हें अपना सिर मुंडवा लेना चाहिए, और स्वयं तपश्चरण से दंडित करना चाहिए। अत्यन्त बचपन में पिता रक्षा करता है, प्रौढ़ काल में स्त्री की रक्षा पति करता है,

2. P भासइ। 3. AP वउं। 4. AP रामसामि° 5. A मंतकज्जि। 6. P परवसि।
(20) 1. A डंडेवउ। 2. A अच्छंतसिसुत्तणि। 3. AP तिय। 4. AP पुणु पइ।

रक्खइ वुड्ढत्तणि तणुरुहु तिह    ण करइ किं पि वि कुलविप्पिउ जिह।
परवसहिंडण सयणाहारहु    महिल ण मुच्चइ कारागारहु।
वुड्ढिइ[5] वुड्ढयालि णिब्भग्गिउ    डज्झउ महिलत्तणु किं मग्गिउ।
किज्जइ जिणवरिंदभासिउ तउ    तं मग्गिज्जइ जहिं णउ संभउ।
रुहिररसावहु अट्ठियपंजरु    तं मग्गिज्जइ जहिं ण कलेवरु।
जहिं इंदियइं ण इच्छियकामइं    जहिं सुव्वंति ण जारहं णामइं।
तं मग्गिज्जइ मोक्खमहासुहं    तं णिसुणिवि वुड्ढहि[5] मउलिउं मुहं।
हियवउं भिण्णउं तक्खणि एयहि    भरइ[6] सीलु को खंडइ सीयहि।
जाणियतच्चहि सच्चहि संतहि    जहिं एहउ वियप्पु गुणवंतहि।
तहिं मइं धुत्तिइ[7] काइं करेव्वउं    पासहिं हिंडिवि णवर मरेव्वउं।

घत्ता—इय चिंतिवि सुंदरि णिवसें[8] णहयरि चंचलगय गयणंगणइ॥
थिय मणियरणिम्मलि कणयधरायलि लंकाहिवघरप्रंगणइ[9] ॥20॥

21

अंजणसामहु लच्छिविलासहु    णविवि ताइ विण्णविउ दसासहु।
देव दियंतदंतिदंतच्छवि[1]—    जसपसरणयर[2] जगपंकयरवि।
पइं[3] इच्छइ सा जइ सिहि सीयलु    जइ ठाणाउ चलइ धरणीयलु।

उसी प्रकार वृद्धापन में पुत्र रक्षा करता है, जिससे कि वह कुल के लिए अप्रिय कुछ भी नहीं कर सके। दूसरों के अधीन घूमने वाली महिला स्वजनों के आभार रूपी कारागार से नहीं छूट पाती। वृद्धा, तूने बुढ़ापे में भाग्यहीन महिलापन क्यों माँगा? इस महिलापन में आग लगे। जिनेन्द्र के द्वारा बताए गए तप को करना चाहिए और वह माँगना चाहिए कि जिसमें फिर जन्म न हो, वह माँगना चाहिए कि जहाँ रक्त रस को धारण करने वाला अस्थिपंजर से युक्त शरीर न हो, जहाँ इन्द्रियाँ कामनाओं की इच्छा करने वाली नहीं है, जहाँ जारों का नाम सुनाई नहीं देता—ऐसे उस मोक्ष रूपी महासुख को माँगना चाहिए। यह सुनकर वृद्धा का मुख मैला हो गया। उसका हृदय तत्काल विदीर्ण हो गया। वह सोचती है कि सीता के शील का खंडन कौन कर सकता है? जहाँ तत्त्व को जानने वाली सच्ची शांत और गुणवती सीता देवी का यह विकल्प है, वहाँ मेरे द्वारा क्या धूर्तता की जाएगी! मैं केवल बंधनों में पड़कर भ्रमण कर मर जाऊँगी।

घत्ता—यह विचार कर वह चंचल सुन्दरी विद्याधरी एक पल में आकाश के आँगन से गई और मणि किरणों से निर्मल, स्वर्ण धरातल वाले लंकानरेश के प्रांगण में जा पहुँची।

(21)

अंजन की तरह श्याम, लक्ष्मी के विलास दशानन को प्रणाम कर उसने निवेदन किया—हे दिग्गज के दाँतों की छवि के समान यश के प्रसारण करने वाले तथा विश्व रूपी पंकज के रवि हे देव, यदि आग शीतल हो जाए तो वह आपको चाह सकती है। यदि धरणी-तल अपने

5. A वुड्ढिइ। 6. A भणइ; T भरइ चिन्तयति। 7. A धुत्तें। 8. P णिविसें। 9. AP °पंगणइ।

(21) 1. A °दंतहो छवि। 2. A °पसरणजगवणपकय°; P °पसरणपर। 3. A इच्छइ पइं जइ सा; P इच्छइ पइं सा जइ।

जइ णियमेण वसंति ण सायर　　　　जइ पडंति सिसिरयर[4] दिवायर ।
जइ जिणु राएं दोसें छिज्जइ　　　　तो पइं[5] सीय खगिंद रमिज्जइ ।
तं णिसुणिवि दहवयणें वुच्चइ　　　　अवसु वि वसि किज्जइ जं रुच्चइ ।
किं विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ　　　　अलसहु सिरि दूरेण पवच्चइ ।
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु　　　　गिरिमसिणत्तणु[6] सइहि सइत्तणु ।
दूरयरत्थु सुणंतहं चंगउं　　　　पासि असेसु वि दरिसियभंगउं ।
हरमि सीय किं पउरपलावें　　　　ता सा पुणु[7] वि कहइ सब्भावें ।
दहमुह एउ अजुत्तु अकित्तणु[8]　　　　इय बोल्लंति संति मंतित्तणु ।

घत्ता—चंदणहि णिवारिवि असिवरु धारिवि सुरसमरओहिं[9] असंकियउ ॥
भरहद्धणरेसरु सुरकरिकरकरु रावणु[10] पुप्फयंति थियउ ॥21॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णारयआगमणं रावणमणखोहणं
णाम एकहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ 71 ॥

स्थान से चलित हो जाए, यदि समुद्र नियमित रूप से न रहे, यदि चन्द्रमा और सूर्य गिर पड़ें, यदि जिन भगवान् राग-द्वेष से छिन्न हो जाएं, तो हे देव, सीता देवी आपके साथ रमण कर सकती है। यह सुनकर रावण कहता है—जो अच्छा लगता है, ऐसे अवश को भी वश में किया जाता है। क्या विष के भय से नागमणि को छोड़ दिया जाता है? आलसी व्यक्ति से लक्ष्मी दूर रहती है। सुधियों का स्वजनत्व, पुरुषों की प्रभुता, पहाड़ की रम्यता और सती का सतीत्व दूरस्थ होने के कारण सुनने में अच्छा लगता है, निकट होने पर उनकी अशेष खामियाँ प्रकट हो जाती हैं। मैं सीता का अपहरण करूँगा। अत्यधिक प्रलाप से क्या? तब वह पुनः सद्भाव से उससे कहती है—"हे दशमुख, यह अयुक्त और अशोभनीय है।" ऐमी मंत्रणा देती हुई—

घत्ता—चन्द्रनखा का प्रतिकार कर, असिवर अपने हाथ में लेकर देवों के युद्धों में अशंकित, भारत का अर्ध चक्रवर्ती और ऐरावत की सूंड़ की तरह बाहुवाला रावण अपने पुष्पक में बैठ गया।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदंत द्वारा विरचित,
महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का रावण-मन-क्षोभन नाम का
इकहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

4. A ससिरयर। 5. A पय। 6. AP गिरिहि महत्तणु। 7. AP कहइ पुणु वि। 8. P अखत्तणु। 9. A °समरेहिं असं°; P समरउहे असं°। 10. P रामणु। 11. AP रामणखोहणं।

## दुसत्तरिमो संधि

सहुं मारीयएण पहु मुक्कदेसजइसंजमु ॥
पुप्फविमाणे[1] थिउ गउ सीयहरणकयउज्जमु[2] ॥ ध्रुवकं ॥

1

कामबाणोहविद्धेण मुद्धेण णो किं पि आलोइयं
ता विमाणं विमाणे णहे राइणा तेण संचोइय ।
तारयाऊरियायाससंकासबद्धुज्जलुल्लोवय
हेमघंटाविसट्टंतटंकारसंतासियासागयं ।
चारुचंदक्कभाभारि माणिक्कसंमुक्कझुंबुक्कयं[3]
वाउधुव्वंतकेऊलयालोलणाइण्णदिच्चक्कयं ।
तुंगसिंगग्गणिब्भिण्णणीलब्भसच्छंबुधारोल्लियं
वोमपोमायरे हंसवत्तम्मि[4] पोमं व[5] पप्फुल्लियं ।
दिण्णधूवं रयक्खं गवक्खंतलंबंतभिंगंचियं[6]

---

## बहत्तरवीं संधि

जिसने मुनि के एकदेश संयम (अणुव्रत) को छोड़ दिया है, तथा जिसने सीता के अपहरण का उद्यम किया है, ऐसा स्वामी रावण, पुष्पक विमान में बैठकर मारीच के साथ गया।

(1)

कामबाणों के समूह से आबद्ध उस मुर्ख ने कुछ भी नहीं देखा। उस राजा ने निःसीम आकाश में अपना विमान चला दिया। जिसमें तारकों से भरित आकाश के समान उज्ज्वल वितान बँधा हुआ है, स्वर्ण घंटाओं की प्रसरित होती हुई टंकार से जिसने दिग्गजों को संत्रस्त कर दिया है, जो सुन्दर स्वर्ण-आभा को धारण करता है, जो माणिक्यों से निर्मित गुच्छों से युक्त है, जिसने पवन से आंदोलित ध्वज रूपी लताओं के हिलने से दिग्मंडल को आच्छादित कर दिया है, जो ऊँचे शिखरों के समूह से उद्भिन्न नीले मेघों के स्वच्छ जल की धारा से आर्द्र है, जो आकाश रूपी सरोवर में कमल की तरह खिला हुआ है, जिसे धूप दी गई है, जिससे धूल नष्ट हो चुकी है, जिसके गवाच्छों के निकट भ्रमर समूह लगा हुआ है। पक्षी, सिंह, सारंग और मातंगों

---

(1) 1. P °विवाणे। 2. P सीयाहरण°। 3. AP माणिक्कणिमुक्क°। 4. A हंसवंतम्मि। 5. P च पुप्फुल्लिय। 6. AP गवक्खंतलग्गंत°।

पक्खिसेहीरसारंगमायंगउक्किण्णरूवंकियं[7] ।
बद्धसोहिल्लकप्पंघिवुद्धूयपत्तावलीतोरणं[8]
इंदणीलंसुकालं असीयंसुसीयंसुणिव्वारणं[9] ।
तेयवंतं णहुम्मिल्लकंतिल्लदिव्वत्थसोहावहं
भम्मपिंगं पलित्तं व सत्तच्चिणा रंजियासावहं ।
कित्तिवेल्लीइ फुल्लं व सेयं दसासालिणा माणियं
जायवेयं कुधीरेण वीरेण[10] वाणारसी आणियं ।

घत्ता—दिट्ठउ तेत्थु वणु अण्णेक्क वि सीयहि जोव्वणु ।।
रावणु चिंतवइ विहि समसंजोयवियक्खणु ।। 1 ।।

2

वणु दीसइ णच्चियणीलगलु सीयहि जोव्वणु मणमीणगलु[1] ।
वणु दीसइ णिम्मलभरियसरु सीयहि जोव्वणु णिरु महुरसरु ।
वणु दीसइ संचरंतकमलु सीयहि जोव्वणु वरमुहकमलु ।
वणु दीसइ ललियलयाहरउं सीयहि जोव्वणु बिंबाहरउं ।
वणु दीसइ कालालिंगियउं सीयहि जोव्वणु सालिंगियउं ।
वणु दीसइ अलयतिलयसहिउ सीयहि जोव्वणु विहलीसहिउ ।

के उत्कीर्ण रूपों से जो अंकित है, जिसमें कल्पवृक्षों से उत्पन्न पत्रावलियों का बंधा हुआ तोरण शोभित है, जो इन्द्रनील मणियों की किरणों से काला है, जो सूर्य और चन्द्रमा की किरणों का निवारण करने वाला है, जो तेज से युक्त है, जो आकाश में चमकने वाले क्रांति से युक्त प्रहरणों की शोभा को धारण करने वाला है; स्वर्ण से पीला, अग्नि के द्वारा प्रदीप्त के समान जो दिशा-पथों को रंजित करने वाला है, कीर्ति रूपी लता के फूल के समान जो दशानन रूपी भ्रमर के द्वारा मान्य है, ऐसे उस वेगशाली विमान को खोटी बुद्धि वाला वह रावण वाराणसी ले आया ।

घत्ता—उसने वहाँ वन देखा तथा एक ओर सीता का यौवन देखा। रावण, श्रम और संयोग में विचक्षण विधाता का चिंतन करता है ।

(2)

जिसमें नील मयूर नाच रहा है, वन ऐसा दिखाई देता है, सीता का यौवन मन रूपी मत्स्य के लिए लोहे के काँटे वाला है। वन निर्मल भरे हुए सरोवरों वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन मधुर स्वर वाला दिखाई देता है। वन प्रवहनशील जल वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन श्रेष्ठ मुखकमल वाला है। वन सुर लजागृहों वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन बिम्बाधरों वाला है। वन भ्रमरों से आलिंगित दिखाई देता है, सीता का यौवन लक्ष्मी से आलिंगित है। वन प्रचुर तिलक वृक्षों से युक्त दिखाई देता है, सीता का यौवन बलभद्र के लिए

7. A °सीहीर° । 8. AP °घिवुब्भूय° । 9. P omits सुसीयं° । 10. A धीरेण ।
(2) 1. A मणिणीलगलु ।

वणु दीसइ फुल्लासोयतरु सीयहि जोव्वणु परसोययरु ।
वणु दीसइ दुग्गउं कंचुइहि सीयहि जोव्वणु घरकंचुइहिं[2] ।
वणु दीसइ तरुकीलंतकइ सीयहि जोव्वणु वण्णंति कइ ।
वणु दीसइ मूलणिरुद्धरसु[3] सीयहि जोव्वणु कयमयणरसु ।
वणु दीसइ वड्ढियधवलवलि सीयहि हारावलि धवलवलि ।
हियउल्लउं कामसरहि भरिउं लंकालंकारे संभरिउ ।

घत्ता—इय एयहि तणउ णरु माणइ जो णउ[5] जोव्वणु ॥
मंदिरु परिहरिवि रिसि होइवि सो पइसउ वणु ॥ 2 ॥

3

अहो कयत्थो भुवणतरे हली महेलिया जस्स घरम्मि मेहली ।
पलोयए लोयणएहिं[1] संमुहं मुहेण मल्हंति विउंबए[2] मुहं ।
हरामि[3] एयं कवडेण संपयं करेइ मंती महिणाहसंपयं ।
उयार मारीयय होहि तं मओ खुरेहिं सिंगेहि जवेण तम्मओ ।
कुकम्मए मंतिवरो णिवेसिओ विचिंतए हा विहिणा णिवे सिओ ।
जसो ण जाओ भवणंतमेरओ कहं परत्थीरमणे[4] तमे रओ ।
भणामि किं सिंभजरे पयं पियं दुलंघमेयं पहुणा पयंपियं ।

---

सुखदायी है। वन खिले हुए अशोक वृक्ष के समान दिखाई देता है, सीता का यौवन दूसरों के लिए खेद उत्पन्न करने वाला है। वन साँपों से दुर्गम दिखाई देता है, सीता का यौवन गृहकंचुकी से युक्त है। जिसके वृक्षों पर वानर क्रीड़ा करते हैं वन ऐसा दिखाई देता है, सीता के यौवन का वर्णन कवि करते हैं। जिसने अपने मूल भाग में जल को अवरुद्ध कर रखा है, वन ऐसा दिखाई देता है, सीता का यौवन कामदेव के रस को बढ़ाने वाला है। जिसमें धव और धवली लता (चंदन लता) बढ़ रही है, वन ऐसा दिखाई देता है। सीता की हारावली गले में बंधी हुई है। रावण का मानस कामदेव के तीरों से भरा हुआ था, उसे याद आया—

घत्ता—यहाँ इसके यौवन का जिसने भोग नहीं किया, घर छोड़कर और मुनि होकर उसने वन में प्रवेश किया।

(3)

अरे, भुवन में बलभद्र ही कृतार्थ है कि जिसके घर में मैथिली (सीता) गृहिणी है। राम नेत्रों के द्वारा सामने देखने पर, उसके हर्षित मुख से मुख चूमते हैं। इस समय मैं कपट से इसका अपहरण करता हूँ। मंत्री राजा की संपदा करता है। हे उदार मारीच, तुम मृग बन जाओ। खुरों और सीगों के द्वारा वेग से उसके अनुरूप बन जाओ। इस प्रकार कुमार्ग में निर्देशित वह सोचता है—खेद है कि विधाता ने राजा को भुवनांत तक सीमित श्वेत यश नहीं दिया, स्त्री-रमण रूपी अंधकार में वह कैसे रत हुआ ? लेकिन मैं क्या कहूँ, उसने कफ-ज्वर में दूध पी लिया है, प्रभु के द्वारा कहा गया अलघ्य पदार्थ है। उस समय विषाद से विकृतअंग वह एक क्षण में

---

2. A घरु । 3. P °णिबद्धरसु । 4. A वल्लियधवल° । 5. AP ण वि ।

(3) 1. P लोयणेहि । 2. A विओवए; P विउबए । 3. AP हरेमि । 4. A रमणंतमेरउ ।

तओ विसाएण वियारियंगओ खणेण होऊण मओ तहिं गओ ।
णिसण्णिया जत्थ धरासुया सई पिए मणो जीइ[5] समप्पिओ सइं ।
कुरंगओ बालतणंकुरासओ सुयाहिरामंकियरामरासओ ।
णियच्छिओ दिट्ठिमओ रवण्णओ विचित्तपिंछोहमऊरवण्णओ ।
महीरुहाए भणियं हिया सयं इमं महं लोयणलोलणासयं[6] ।
णरिंद हे राम पुलिंदकायरं रएण[7] गंतुं धरिऊण कायरं ।
अणेयमाणिक्कमयं मयं महं कुलीण दे देहि णियच्छिमो महं ।[8]

घत्ता—णिसुणिवि प्रियवयणु[9] सो रामें दीसइ केहउ ।।
सावउ चित्तलउ चलु मणु काउरिसहं जेहउ ।।3।।

4

पविरलपएहि लंघंतु महि लहु धावइ पावइ दासरहि ।
थोवंतरि मणहरु जाइ जवि कह कह व करंगुलि छित्तु ण वि ।
पहु पाणि पसारइ किर धरइ मायामउ मउ अग्गइ सरइ ।
दूरंतरि णियतणु दक्खवइ खेलइ दरिसावइ मंदगइ ।
णवदूवाकंदकवलु[1] भरइ तरुवरकिसलयपल्लव[2] चरइ ।
कच्छंतरि सच्छसलिलु पियइ वकियगलु पच्छाउहुं[3] णियइ ।

मृग होकर वहाँ गया कि जहाँ पृथ्वीपुत्री सती सीता देवी बैठी हुई थी । उस सती ने अपने प्रिय में मन समर्पित कर रखा था । बाल तृणों को खाने वाला तथा जिसने सुनने में मधुर राम शब्द का उच्चारण किया है, ऐसा देखने में कोमल और सुन्दर वह मृग देखा गया कि विचित्र पूँछ समूह से मयूर के रंग का था । सीता ने स्वयं कहा—यह मृग मेरे नेत्रों के लिए खेलने का साधन है । हे राजन्, हे राम, शरों के द्वारा आहत और अधीर उसे (मृग को) वेग से जाकर और पकड़कर लाओ और अनेक मणियों से युक्त उस महान् मृग को, हे कुलीन दे दो, मैं उसे देखूंगी ।"

घत्ता—प्रिय के वचन सुनकर राम के लिए वह मृग इस प्रकार दिखाई दिया जैसे कापुरुष लोगों का चंचल मन हो ।

(4)

अपने प्रविरल पैरों से धरती को लाँघता हुआ वह शीघ्र दौड़ता है, राम को पाता है । वह सुन्दर थोड़ी दूर तक बेग से जाते हैं, किसी प्रकार हाथ की अंगुली से उसे छू भर नहीं पाते । स्वामी (राम) हाथ फैलाते और उसे पकड़ते हैं, वह मायामय मृग आगे बढ़ जाता है, दूरी पर अपना शरीर दिखाता है, फिर मंद गति दिखाता है, और क्रीड़ा करता है । नई दूब की जड़ों के कौर को खाता है, तरुवरों के किसलय पल्लवों को खाता है, वन के मध्य में स्वच्छ जल पीता है, टेढ़ी गर्दन और पीछे मुँह करके देखता है । जिनके फल तोतों को चोंचों के आघातों से गिर रहे

5. A जाइ । 6. A लोयणलोयणासयं । 7. A रएण तुंगं । 8. T णियत्थियामहं पश्याम्यहं, पश्यामि तेजः (उत्सवः ?) । 9. AP पियवयणु ।

(4) 1. AP °कमलु । 2. AP तरुवरपल्लवकिसलय । 3. AP पच्छामुहुं ।

सुयचंचुघायपरियलियफलि[4] खणि दीसइ चंपयचूयतलि[5]।
खणि वेल्लिणिहेलणि पइसरइ अण्णण्णपएसहिं[6] अवयरइ।
ओहच्छइ[7] अइकोड्डावणउ लइ माणमि णयणसुहावणउ।
इय चिंतिवि राहउ संचरइ पसु पुणु धरणास तासु करइ।
धरिओ वि करग्गहु णीसरइ कहिं वेसायणु कहिं णीसरइ।
णिद्दइयहु[8] किं करि चडइ णिहि कहिं कवडहरिणु कहिं बंधविहि।

घत्ता—गउ गयणुल्ललिउ मिगु णं कुवाइहत्थहु रसु ॥
थिउ दसरहतणउ समणीससंतु विंभियवसु ॥4॥

5

भयणभूमिआयासगामिणो[1] मंतिणा वि कहियं ससामिणो।
देवदेव जयलच्छिसंगमो वंचिओ[2] रहुरायपुंगमो।
ता ससक्क[3]तेल्लोक्क[4]रामणो[5] राम एव रूवेण रावणो।
कासकुसुमसंकासदेहओ चावधारि णं सरयमेहओ।
कसणवाससोहियणियंबओ हत्थणिहियमणिमयसिलिंबओ[6]।
झ त्ति जणयतणयासमीवयं आगओ कयाणंगभावयं[7]।

हैं ऐसे चंपक और आम्रवृक्ष के नीचे एक पल में दिखाई देता है, एक क्षण में लताघरों में प्रवेश कर जाता है, तथा दूसरे-दूसरे प्रदेशों में अवतरित होता है। अत्यन्त कुतूहल उत्पन्न करने वाला वह लो यह बैठा है, लो नेत्रों के लिए सुहावने लगने वाले इसे मैं मानता हूँ। यह विचार कर राम संचरण करते हैं। मृग उनमें पकड़ जाने की आशा उत्पन्न करता है। पकड़े जाने पर भी वह हाथ की पकड़ से छूट जाता है। कहाँ वेश्याजन और कहाँ दरिद्रों की रति? भाग्यहीन के हाथ क्या निधि चढ़ती है? कहाँ कपटमृग और कहाँ उसके पकड़ने की विधि?

घत्ता—आकाश में उछलता हुआ मृग चला गया, मानो कुवादी के हाथ से पारद चला गया हो। विस्मय से विस्मित राम, श्रम से श्वास लेते हुए रह गए।

(5)

मंत्री ने नक्षत्रों की भूमि, आकाश से जाने वाले अपने स्वामी से कहा—"हे देव विजय और लक्ष्मी के संगम रघुराजश्रेष्ठ को वंचित कर लिया गया है। तब इन्द्र सहित तीनों लोकों को रुलाने वाला रावण ही राम बन गया। कांस पुष्प के समान उज्ज्वल शरीर वाला धनुषधारी, जैसे शरद मेघ हो, मृग चर्म से उसका नितम्ब भाग शोभित था। जिसने अपने हाथ में मणिमय तीर धारण कर रखे थे, ऐसा वह (रावण) शीघ्र ही जनक तनया सीता देवी के पास आया। शत्रुओं के मान को नष्ट करने की शक्ति वाले उस दुश्चरित्र ने काम की अभिलाषा से

4. AP °परिगलिय° । 5. P °चूययलि । 6. P पवेसहिं । 7. P इहु अच्छइ । 8. A णिद्दइयहु कहिं करि; P णिद्दइवहु करि कहिं ।

(5) 1. A गयणभूमि°; T भयणभूमि° । 2. A वणि वइट्ठ रहुवंसपुंगमो, P वणि पइट्ठु रहुवंसपुंगमो । 3. A ससंक° । 4. P तइलोक्क° । 5. AP °रावणो । 6. A °सिलंबओ । 7. A °तावयं

वइरिमाणणिम्महणसत्तिणा भासियं कुसीलेण[8] णं तिणा ।
दूरयं[9] पि मणपवणवेययं पंचवण्णमाणिक्कतेययं ।
आणियं मए हरिणपोययं कुणसु देवि कीलाविणोययं ।
ता सईइ अवलोइओ मओ णं सुदूसहो दुक्खसंचओ ।
विप्फुरंततणुकिरणमालओ विरहसिहि व वित्थिण्णजालओ ।
विंभियाबलायाणमाणिया रयणिगमणचिंधेण भाणिया[10] ।

घत्ता—पिए जरदिवसयरु अत्थंगउ दीसइ रत्तउ ।।
जरजुण्णु वि तिजगि भणु अत्थहु को णासत्तउ ।।5।।

6

उज्झिऊण इंदियसमं सविमाणं सिवियासमं ।
सव्वत्थ वि भद्दं[1] सियं तीए तेणं दंसियं ।
बुद्धं किं पि णवं च णं ण[2] हु खलरइयं वंचणं ।
तं धरणीयलरूढिया अमुणंती आरूढिया ।
उववणवासविणिग्गयं अप्पाणं हरिवरगयं ।
दहवयणेण विलासिणा रिउकित्तीयविलासिणा ।
तीए पुरओ[3] दावियं वइयालियसद्दावियं ।
सा तुरियं लंकं णिया वम्महधणुगुणकण्णिया[4] ।

पूर्ण इस प्रकार कथन किया—मन और पवन के समान वेग वाला, पाँच प्रकार के माणिक्यों से तेजस्वी हरिण का बच्चा दूर होते हुए भी मैं ले आया हूँ। हे देवी, तुम क्रीड़ा-विनोद करो। तब सीता देवी ने उस हरिण को देखा। मानो असह्य दुःख का संचय हो। शरीर की विस्फुरित किरणमाला से युक्त यह विरह की ज्वाला की तरह विस्तीर्ण ज्वाला वाला था। राक्षस चिह्न धारण करने वाले रावण ने, विस्मित और मायापुरुष को नहीं जाननेवाली सीता से कहा :

घत्ता—हे प्रिये, बूढ़ा सूर्य भी अस्त होता हुआ रक्त दिखाई देता है। बताओ तीनों लोकों में जरा से जीर्ण होने पर भी कौन है जो अर्थ में आसक्त नहीं होता !

(6)

इन्द्रियों की थकान को दूर कर उसने शिविका के समान अपना विमान, जो सर्वत्र भद्र और श्रीसंपन्न था, सीता देवी को दिखाया। उसने समझा कि यह कोई अपूर्व विमान है, न कि कोई दुष्ट के द्वारा रचित प्रवंचना है। इस प्रकार, नहीं जानती हुई धरतीतल पर प्रसिद्ध वह उपवन वास के बाहर स्थित, अश्वों पर आरूढ़ उस विमान पर चढ़ गई। शत्रु की कीर्ति से क्रीड़ा करने वाले विलासी रावण ने उसे सामने वैतालिकों के द्वारा वर्णित लंका दिखाई। कामदेव के धनुष की डोरी की कर्णिका उस सीता को वह लंका ले गया। सारसों के जोड़े द्वारा मान्य

8. A कुसी-लेण मंतिया । 9. दूरियं । 10. A भासिया ।
(6) 1. A भद्दासियं । 2. P तहु खल° । 3. AP पुरउं । 4. P वम्महु ।

मारसजुयमाणियवणि संणिहिया णंदणवणि ।
माणवाहिरामं गओ दूरमुक्करामंगओ ।
पयडीकयसमरीरओ भूहरभेइमरीरओ ।
इर[5] भुवणयले विस्सुओ रक्खकेउ महिवइसुओ ।
घत्ता—कालउ दहवयणु णवमेहु व दुहयरु सीयइ ।।
पियविरहाउरइ दिट्ठउ कंठट्ठियजीयइ ।।6।।

7

चित्तें मउलंते मउलियउ लोयणजुयलंमुउ[1] पर्यालयउ ।
आपंडुरत्तु[2] गडत्थलइ विलसिउ विलसिइ विरहाणलइ ।
कढकढकढंति ससहरपहइं अगइं लायण्णवारिवहइं ।
का[3] दिसि केणाणिय केंव कहि को पावइ एवहि रामु जहि ।
इय चिनवंति मोहेण हय परपुरिसु णिहालिवि मुच्छ गय ।
पइवय परपइवयभगभय णं पवणें पाडिय ललिय लय ।
भत्तारविओयविसंठुलिय[4] विहिवस सिलसकडि पक्खलिय ।
णं कामभल्लि महियलि पडिय ण बाउल्लिय कचणघडिय ।
मुहिसुयरणपसरियवेयणिय[5] सा जइ वि थक्क णिच्चेयणिय ।
परिहाणु ण तो वि ताहि ढलइ चल जारदिट्ठि कहिं परिघुलइ ।

जल वाले नदन वन में वह ठहरा दी गई। तब मनुष्य शरीर की रमणीयता को प्राप्त, राम के वेष को जिसने दूर फेंक दिया है, जिसके पास भूधरों का भेदन करने वाली नदी के समान वेग है, जिसने अपना शरीर (रूप) प्रगट कर दिया है, जो राक्षस की ध्वजावाले राजपुत्र के रूप में प्रसिद्ध है—

घत्ता—काले रावण को प्रिय विरह से आतुर एवं कंठस्थित प्राणोंवाली सीता देवी ने इस प्रकार देखा जैसे नवमेघ को देखा हो।

(7)

चित्त के मुकुलित होने पर नेत्र युगल भी बन्द हो गए, आंसू प्रगलित होने लगे। गालों पर सफेदी शोभित हो उठी। विरह की ज्वाला के प्रदीप्त होने पर, चन्द्रमा-सी प्रभा वाले सौन्दर्य जल को धारण करने वाले उसके अंग कड़कड़ाने लगे। यह कौन दिशा है, किसके द्वारा यहाँ लाई गई हूँ, किस प्रकार, कहाँ ? कौन मुझे वहाँ प्राप्त कराएगा कि जहाँ राम है ? इस प्रकार विचार करती हुई वह मोह से आहत हो उठी। परपुरुष को देखकर, दूसरे के पति द्वारा व्रत भंग से भयभीत पतिव्रता वह मूर्च्छा को प्राप्त हुई, मानो पवन ने सुन्दर लता को गिरा दिया हो। अपने पति के वियोग से अस्त-व्यस्त वह भाग्य के वश से शिलासकट स्थान पर इस प्रकार स्खलित हो गई, मानो काम की मल्लिका धरती पर गिर पड़ी हो। फिर भी उसका परिधान (साड़ी) नहीं खिसका। चंचल जार की दृष्टि कहाँ ठहरती ?

5. AP इह।

(7) 1. P °जुउ अमुय। 2. A आपडुरत्थु। 3. AP का दिस। 4. A विसंठुलिया। 5. A सुहिसुअरण°, P सुहिसुमरण°।

घत्ता—दढणिवसणु सइहि सुहडहु करासि ण वियट्टइ ॥
मरणि समावडिइ परियरिविहि[6] बिहि वि ण फिट्टइ ॥7॥

८

परदारलुद्धु ढुक्कंतु खलु कि लज्जइ कहिं मि गामकमलु ।
रावण[1] कि आणिय परजुवइ तरु चुयसिण्हंसुएहि रुवइ ।
वणु णाइं करइ साहुद्धरणु हा पत्तउं णारिरयणमरणु ।
अलि कण्णासण्णउ रुणुरुणइ पहु एउं अजुत्तु णाइं भणइ ।
इच्छइ दससिरु पररमणिमुहुं कणइल्लउ वंकिवि जाइ मुहुं ।
ण[2] सो वि णिवहु उव्वेइयउ कोइलु[3] विलवंतु व आइयउ ।
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ वइदेहि भडारा रमहि तइ ।
हंसावलि लवइ व लोयपिय मइं जेही तेरी[1] कित्ति सिय ।
मा मइलहि माणिवि एह तिय मा णासहि लंकाउरिहि सिय ।
अंबउ लोहियपल्लवललिउ णं णिवअण्णायसिहिं जलिउ ।
चंदणु पुणु विसहर दक्खवइ पडिवक्खबाणमाणु[5] व थवइ ।
रामाणीरमणकम्मतुरिउ खयरिंदें[6] मणु मड्डइ[7] धरिउ ।

---

घत्ता—स्त्री के दृढ वस्त्रों को सुभट का हाथ रूपी खड्ग नहीं काट सकता, मृत्यु आ जाने पर भी विधाता उसके कटिबंध को नही तोड़ सकता।

(8)

परस्त्री का लोभी दुष्ट रावण वहाँ आ पहुँचता है। क्या गाँव के कुत्ते को कहीं भी लाज आती है? हे रावण, तू दूसरे की युवती को क्यों लाया? जैसे वृक्ष अपनी गिरती उष्ण किरणों से यह कह रहा है। वन मानो अपनी शाखाएँ उठाता है (और खेद व्यक्त करता है) कि नारी रत्न की मृत्यु आ पहुँची। कानों के समीप आकर भ्रमर गुनगुनाता है और मानो कहता है कि स्वामी, यह अयुक्त है। रावण परस्त्री के स्मरण मुख को चाहता है, (यह सोचकर) शुक मुँह टेड़ा करके चला जाता है, मानो वह भी राजा से उद्विग्न है। कोयल भी विलाप करती हुई वहाँ आई (और बोली): यदि तुम मेरे समान अपना दुर्यश ही चाहते हो तो आदरणीया वैदेही से रमण करना। हंसावली मानो कहती है कि तुम्हारी कीर्ति मेरे समान श्वेत और लोक प्रिय है, इस स्त्री का उपभोग कर तुम इसे मैला मत करो और न ही लंकापुरी की लक्ष्मी का नाश करो। अपने लाल-लाल पल्लवों से सुन्दर आम्रवृक्ष ऐसा मालूम होता है मानो वह नृप के अन्याय की अग्नि में जल गया हो। चंदन वृक्ष विषधरों को दिखाता है, और प्रतिपक्ष के मान को स्थापित करता है। जिसे रामभार्या के साथ रमण कर्म की शीघ्रता है ऐसे अपने मन को विद्याधर ने शीघ्र ही बलपूर्वक रोका।

---

6. AP परियरविहि।

(8) 1. P रामण। 2. A त सो। 3. A कोकिलु। 4. A तेही कित्ति।
5. पडिवक्खमाणमाणु व। 6. AP खयरिंदएं। 7. A मडइ।

घत्ता—परवस परमसइ जइ छिवमि करें थणु पेल्लिवि ।।
अंबरयारिणिय तो[8] जाइ विज्ज मइं मेल्लिवि ।।8।।

9

इय णिज्झाइवि पंकयकरिहिं आएसु दिण्णु विज्जाहरिहिं ।
जीवावहु भावहु कह[1] वि तिह मइं इच्छइ सुंदरि अज्जु जिह ।
ता तरलइ[2] तारइ णाइणिइ चंपयमालइ मंदाइणिइ ।
अविउलइ अंबइ अंबालियइ मयमत्तइ मल्हणसीलियइ ।
पियछंदइ णंदइ णंदिणिइ रइरुदइ[3] चंदइ चंदिणिइ ।
कप्पूरपूरपरिमलजलइं[4] पल्हत्थियाइं हिमसीयलइं ।
सीयहि अंगंगि रमंति किह सीयइं रहुवइअंगाइं जिह ।
णियपत्थिवपेसणकारिणिहि लहु विज्जिय चामरधारिणिहिं ।
दहमुहवहदाइणि कालणिह संधुक्किय णं खयजलणसिह ।
उट्ठिय परणरणिट्ठुरहियय संचितइ हा हउं किं ण मय ।

घत्ता—हा रहुवंसपहु हा लक्खण कहिं[5] पइं पेच्छमि ।।
दावहि ताव मुहुं जांवज्जु जि मरवि[6] ण गच्छमि ।।9।।

---

घत्ता—यदि मैं परम सती परवश सीता के स्तनों को हाथ से दबाकर छूता हूँ, तो आकाशगामिनी विद्या मुझे छोड़कर चली जाएगी ।

(9)

अपने मन में यह विचार कर, उसने कमल के समान हाथों वाली विद्याधरियों के लिए आदेश दिया—उसे इस प्रकार जिलाओ और मनाओ कि वह आज किसी प्रकार मुझे चाहने लगे । तब तरला, तारा, नागिनी, चंपकमाला, मंदाकिनी अविपुला, मदमत्त प्रसन्न स्वभाव वाली अंबा अंबालिका, प्रिय स्वभाव वाली नन्दा नंदिनी, रति से सुन्दर चन्दा और चाँदनी के द्वारा छोड़ा गया कपूर के पूर से सुवासित, हिम के समान ठण्डा जल सीता देवी के अंगों पर इस प्रकार क्रीड़ा करता है, जैसे राम का अंग हो । अपने राजा की आज्ञा मानने वाली चामर-धारिणी दासियों ने जब हवा की तो, रावण के वध को करने वाली वह काल के समान प्रलय की आग की ज्वाला की तरह जल उठी । परपुरुष के लिए कठोरहृदय सीता अपने मन में सोचती है—मैं मर क्यों नहीं गई ?

घत्ता—हे रघुवश के स्वामी (राम) हे लक्ष्मण, मैं तुम्हें कहाँ देखूं, मेरे मरने तक तुम अपना मुँह दिखा दो ।

---

8. P ता जाइ विज्जु ।

(9) 1. A कह व । 2. AP अवलोइय अंबं बालियए । 3. AP रुइरुंदइ । 4. AP कप्पूरपउर° । 5. A पइं कहि पेच्छमि । 6. AP मरेवि ।

10

चउपासिहिं थियउ णियच्छियउ    पुणु खयरपुरंधिउ[1] पुच्छियउ ।
भणु भणु संदेहु मज्झु हुयउ    णिवु कालउ जमु किं वा मणुउ ।
पुरि एह कवण किं जमणयरि    तावेक्क पजंपइ तहिं खयरि ।
जसु तलवरु जमु किर भणइ जणु    जसु देइ णिच्च वइसवणु धणु ।
जसु इंदु वि संगरि थरहरइ    जसु मारुउ घरकयारु[2] हरइ ।
जसु वासइ[3] वइसाणरु धुवइ    दिक्करिउलु णामें मउ मुयइ ।
जसु अग्गइ णडइ सरासइ वि    कुसुमंजलि घिवइ वणासइ वि ।
जसु पंगणि मेहहिं दिण्णु छडु    जसु को वि णत्थि पडिमल्लु भडु ।
सो एयहि लंकहि एडु पइ    रावणु णामें तिहुवणविजइ ।
भत्तारु समिच्छहि माइ तुहुं    अणुभुंजहि इच्छियकामसुहुं[5] ।

घत्ता—सामिणि राणियहं णीसेसहं होइवि अच्छहि ।।
महएवित्तणयहु[6] परमेसरि पट्टु[7] पडिच्छहि ।। 10 ।।

11

किं किज्जइ हरिणु अधीरमइ    जइ लब्भइ सीहकिसोरु[1] पइ ।
किं किज्जइ दीवउ तुच्छछवि    जइ अंधयारु णिट्ठवइ रवि ।

(10)

उसने चारों ओर स्त्रियों को बैठे हुए देखा, फिर विद्याधरियों से पूछा—बताओ-बताओ मुझे संदेह उत्पन्न हो गया है कि यह राजा काल है या यम या कि मनुष्य ? यह कोई नगरी है या यमनगरी ? तब एक विद्याधरी उससे कहती है—लोग यम को जिसका तलवर (कोतवाल) बताते हैं, कुबेर जिसे नित्य प्रति धन देता है, युद्ध में इन्द्र भी जिससे थर-थर काँपता है, पवन जिसके घर का कचरा निकालता है, अग्नि जिसके कपड़े धोती है, जिसके नाम से दिग्गज समूह मद छोड़ता है, सरस्वती जिसके आगे नाचती है और वनस्पतियाँ कुसुमांजलियाँ बरसाती हैं, मेघ जिसके आंगन में छिड़काव करता है, विश्व में जिसका प्रति योद्धा दूसरा कोई नहीं है, वह इस लंका का स्वामी है। त्रिभुवन के विजेता उसका नाम रावण है। हे आदरणीया, तुम उसे अपना पति मान लो और अभिलषित काम सुखों का भोग करो ।

घत्ता—निःशेष रानियों की स्वामिनी होकर रहो। हे परमेश्वरी, तुम महादेवी के पद को स्वीकार करो ।

(11)

अधीरमति उस हरिण से क्या करना यदि किशोर सिंह के रूप में पति मिलता है ? तुच्छ प्रकाशवाले दीपक से क्या यदि सूर्य अन्धकार को नष्ट कर देता है ? वहाँ कौए से क्या,

(10) 1. AP खयरि° । 2. A घरु कयारु । 3. AP वत्थइं । 4. A omits this foot. 5. A इच्छिउ काम । 6. A महएविहि तणउ; P महएवीए पट्टत्तणहु । 7. A पट्टु ।

(11) 1. A सीहु किसोरु ।

किं किज्जइ वाइसु[2] जइ गरुलु[3] सुपसण्णु होइ बहुबाहुबलु ।
किं किज्जइ खरु जइ दुद्धरहु पाविज्जइ कंधरु सिंधुरहु ।
किं किज्जइ पिप्पलु सल्लसलिउ जइ दोसइ सुरतरुवरु[4] फलिउ ।
किं किज्जइ राहउ[5] मुद्धि तइ रावणमहिलत्तणु होइ जइ ।
ता सीयइ उत्तरु मणि थविउ एयइ अण्णाणिइ किं लविउ ।
जहिं कंकु रायहंसु व गणिउ एरडु कप्परुक्खु व भणिउ ।
जहिं गुणवंतु वि दोसिल्लसमु तहिं जे विरयंति वयणविरमु ।
ते विउस पसंसिय विउसजणि[6] णिक्खिवइ बुद्धि को मुक्खयणि[7] ।

घत्ता—पेयहु तणउं मुहुं वियसावइ को जगि चुंबिवि ।।
इय चिंतिवि हियइ मोणव्वउ थिय[8] अवलंबिवि ।। 11 ।।

12

जयजसरामहु रामहु तणिय णिसुणेमवि वत्त सुहावणिय ।
जइहुं[2] पेसियलेहेण सहुं तइहुं[3] आहारपवित्ति महुं ।
णं तो पुणु जिणवरिंदु सरणु संपज्जउ सल्लेहणमरणु ।
एत्तहि जक्खाहिवरक्खियउं[4] पहवंतु फुरंतु णिरिक्खियउ ।
पहरणपरिपालें रक्खियउं पणविवि दहगीवहु अक्खियउं ।
आउहसालहि खयरविसरिसु[5] उप्पण्णउ चक्कु जणियहरिसु ।

जहाँ बाहुबल वाला गरुड़ प्रसन्न होता है ? उस गधे से क्या यदि दुर्धर महागज का कंधा प्राप्त होता है (बैठने के लिए) ? काँपते हुए पीपल के पत्ते से क्या जहाँ कल्पवृक्ष फला हुआ दिखाई देता हो ? हे मुग्धे, राम से क्या यदि रावण का पतीत्व प्राप्त होता है ? (यह सुनकर) सीता ने उत्तर अपने मन में रख लिया । (उसने सोचा) इस अज्ञानी ने क्या कहें ? जहाँ बगले को राज हंस समझा जाता है, एरंड को कल्पवृक्ष कहा जाता है, जहाँ दोषी व्यक्ति ही गुणवाद है, ऐसे स्थान पर जो लोग अपने शब्दों के विराम की रचना करते हैं, उन पंडितों की विद्वत्सभा में प्रशंसा की जाती है । मूर्खजनों में अपनी बुद्धि कौन बर्बाद करता है ?

घत्ता—कौन व्यक्ति विश्व में प्रेत के मुख को चूम कर उसे विकसित कर सकता है, अपने मन में यह विचार कर वह मान का सहारा लेकर स्थित हो गई ।

(12)

जय और यश से सुन्दर राम की सुहावनी वार्ता, जब मैं प्रेषित लेखपत्र द्वारा सुनूँगी—तभी मैं आहार ग्रहण करूँगी (अर्थात् भोजन ग्रहण करूँगी) नहीं तो मेरे लिए जिनवर की शरण है, मैं संलेखना मरण को प्राप्त होऊँगी । यहाँ पर, आयुधों की रक्षा करने वाले ने कुबेर के द्वारा रक्षित चमकता हुआ चक्ररत्न देखा । उसने प्रणाम कर रावण से कहा—आयुधशाला में प्रलयकाल के सूर्य के समान तथा हर्ष उत्पन्न करने वाला चक्र उत्पन्न हुआ है । इससे राजा

2. AP वायसु । 3. P गरलु । 4. AP सुरवरतरु । 5 AP रामें । 6. AP विउसयणि । 7. A मुक्खमणि । 8. A थिउ ।

(12) 1. AP जइयहुं लक्खणरामहु तणिय । 2. AP जइयहु । 3. AP तइयहु । 4. K records a p : आरक्खियउ इति पाठे आरैः क्षित प्राप्तं अराणां वा निवास. 5. AP खररवि° ।

ता णिवहु[6] हियउं रोमंचियउ तं जाइवि[7] कुसुमहिं अंचियउं ।
णिवमंतिहिं इय बोल्लिउ वयणु एंवहिं[8] कहिं चुक्कइ दहवयणु ।
संभूयउं भवणि[9] चक्करयणु आणिउं अण्णेक्कु वि मिगणयणु ।
जं तं कलत्तु रामहु तणउं अप्पिज्जउ[10] घणचक्कलथणउं ।
उप्पाउ णयरि भीयरु हवइ[11] तं णिसुणिवि णहयरिंदु लवइ ।
उप्पण्णु चक्कु सीयागमणि किं तुम्हहुं अज्ज वि भंति मणि ।

घत्ता— छिंदिवि[12] अरिसिरइं असिकंपावियदेवासुरु ।।
भरहहु हउं जि पहु सिरिपुप्फयंतभाभासुरु ।।12।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सीयाहरणं णाम
दुसत्तरिमो[13] परिच्छेओ समत्तो ।।72।।

रावण का हृदय रोमांचित हो उठा और उसने जाकर फूलों से उसकी अर्चा की। राजा के मंत्रियों ने यह शब्द कहे— हे दशवदन, तुम इस समय क्यों चूकते हो। तुम्हारे घर में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है। और एक और जो मृगनयिनी तुम ले आए हो वह राम की पत्नी है। घन गोल स्तनों वाली उसे तुम वापस कर दो। नगर में भीषण उत्पात होगा। यह सुनकर विद्याधर राजा कहता है कि सीता के आगमन से ही चक्ररत्न की प्राप्ति हुई है। क्या आप लोगों के मन में आज भी भ्रांति है ?

घत्ता—मैं शत्रु का सिर काटूँगा ? अपनी तलवार से देव और असुरों को कँपाने वाला तथा सूर्य और चन्द्रमा के समान मैं ही भरत क्षेत्र का स्वामी हूँ।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त
द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का
सीताहरण नाम का बहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

6. AP महिवइवउ। 7. A जोइवि। 8. AP सुदरु पडिवज्जइ दह°। 9. AP भवणि वि। 10 P अप्पिज्जइ। 11. AP वहइ। 12. AP छिंदमि। 13. AP बहत्तरिमो।

## तिसत्तरिमो संधि

मायारउ किं माणिक्कमउ जो रहुसीहहु णंट्ठउ ॥
महुं णावइ[1] भावइ सो हरिणु चंदहु सरणु पइट्ठउ ॥ध्रुवकं॥

1

दुवई—एत्तहि रामसामि मृगपच्छइ[2] गउ दूरतरं वणे ॥
एत्तहि णीय सीय दहवयणें एत्तहि सोउ परियणे ॥छ॥

एत्तहि दिणंति[3] अत्थइरिसाणु    संपत्तउ लहु अत्थमिउ भाणु ।
णरतिरियणयणपसरणु हरंतु    चक्कउलहं तणुतावणु करंतु ।
णं दिसइ लइउ रइरसणिहाउ    णं णिण्णट्ठउ[4] रावणपयाउ[5] ।
णं रइउ समुद्दें रयणसंगु    णं महिड गिलिउ रइरहरहंगु[6] ।
देउ वि वारुणिसंगेण पडइ    णं इय भणंतु पक्खिउलु रडइ ।

---

## तिहत्तरवी संधि

वह माणिक्यमय हरिण क्या मायावी था कि जो राम रूपी सिंह से नष्ट हो गया ? वह हरिण मुझे चन्द्रमा की शरण में गया हुआ अच्छा लगता है।

(1)

दुवई—यहाँ स्वामी राम मृग के पीछे वन में दूर तक चले गये। यहाँ सीता दशमुख के द्वारा ले जाई गई और यहाँ स्वजनों में शोक बढ़ गया।

यहाँ दिन का अन्त होने पर अस्तंगत सूर्य शीघ्र ही मनुष्यों और तिर्यंचों के नेत्र-प्रसार का हरण करता हुआ, चक्रवाल कुल के लिए शरीर संताप करता हुआ, अस्तगिरि के शिखर पर इस प्रकार पहुँच गया मानो दिशा ने (पश्चिम दिशा ने) रति-रस के निधान को ले लिया हो, मानो रावण का प्रताप नष्ट हो गया हो, मानो समुद्र ने रत्न का (सूर्य का) साथ कर लिया हो, मानो धरती ने रति के रथ चक्र को निगल लिया हो। देव (सूर्य) भी वारुणी (सुरा,

---

(1) 1. AP भावइ णावइ। 2. AP मिग°। 3. A दियंति; K दिणंति, corrects it to दियंति but has a gloss दिनस्यान्ते। 4. AP णिट्ठिउ। 5. AP रामणभुय°। 6. A रविरह°।

गच्छंतु अहोमुहु तिमिरमंथु ण दावइ णरयहु तणउ पंथु ।
रामहु कलत्तु इह हित्तु जेण जाएसइ सो मग्गेण एण ।
गउ अत्थवणहु कंदोट्टजूरु करसहसेण वि णउ धरिउ सूरु ।

घत्ता—णिवडंतु जतु हेट्ठामुहउ रवि किं एक्कु भणिज्जइ ।।
जगलच्छीमंदिरणिग्गयहिं मंदहिं को रक्खिज्जइ ।।1।।

2

दुवई—माणवभवणभरहखेत्तोवरि वियरणगमियवासरो ।।
सीयारामलक्खणाणंदु व जामत्थमिओ[1] दिणेसरो ।।छ।।

पच्छाइयमयलायासतीरु णं संझारायकोसुंभचीरु[2] ।
णहसिरि परिहइ रंडिज्जमाण दिणवइविओउ[3] अइअसहमाण ।
सिसुससि भग्गउ[4] ण वलयखंडु मउलियउं कमलु णं ताहिं तुंडु ।
विक्किण्णउ[5] पत्तु दियंतपारु तारायणु णावइ तुट्टु हारु ।
गय णिसि उययायलकरिहि चडिउ तमवइरिणरिंदहु समरि भिडिउ ।
उग्गउ उण्णइ पहरेण पत्तु परिपालियखत्तु व रायउत्तु ।
दिणयरु विहडावियपउमसीउ सोहइ णावइ दहवयणु बीउ ।

पश्चिम दिशा) के संग पड जाते है, मानो पक्षिकुल यह कह कर चिल्ला रहा है, अंधकार का नाश करने वाला (सूर्य) अधोमुख जाता हुआ नरक के पक्ष को दिखा रहा है। यहाँ जिसने राम की पत्नी का अपहरण किया है, वह भी इसी मार्ग से जाएगा । कमलों को खिलाने वाला सूर्य अस्त को प्राप्त हो गया, हजार किरणो के द्वारा भी वह नहीं पकड़ा जा सका ।

घत्ता—पतित होता हुआ और अधोमुख जाता हुआ क्या अकेला सूर्य ही है ? विश्व मे लक्ष्मी के घर से निकले हुए मद व्यक्तियों से किसकी रक्षा की जा सकती है ?

(2)

मानव जाति के घर भरतक्षेत्र के ऊपर, जो विचरण कर अपना दिन बिताता है, ऐसा सूर्य सीता, राम और लक्ष्मण के आनन्द के समान जब अस्त को प्राप्त होता है, तो आकाश की लक्ष्मी विधवा होती हुई, समस्त आकाश रूपी तीर को आच्छादित करने वाली वह सध्या मानो राग रूपी वस्त्र को पहिन लेती है । दिनपति के वियोग को नही सहन करती हुई, उसने बाल चन्द्र को इस प्रकार खंडित कर दिया मानो अपना वलयखंड ही खंडित कर दिया हो । कमल मुकुलित हो गया, मानो उसका मुख ही मुरझा गया हो । जो इधर-उधर विकीर्ण होकर दिगत पर्वत पहुँच चुका है, ऐसा तारागण मानो उसका टूटा हुआ हार है । रात्रि व्यतीत हो गई । उदयाचल रूपी महागज पर चढ़ा हुआ वह (सूर्य) अंधकार रूपी शत्रु राजा से युद्ध में भिड़ गया । जिसने क्षात्र धर्म का परिपालन किया है, ऐसे राजपुत्र के समान जो एक प्रहर (प्रहार)

(2) 1. AP जामत्थमिउ णेसरो । 2. A संझाराएं । 3. A °विओयअइ° । 4. AP ण भग्गउ । 5. APT विक्खिण्णउ पत्तदियंतरालु ।

णं सीयाविरहहुयासचंडु णं तियसाणीकरघुसिणुपिंडु ।
णं दिसकामिणिसिरि[6] रत्तु फुल्लु णं खयररायतणुरुहिरतल्लु ।

घत्ता—हयसीयउं[7] कयरणागमणु अइरत्तउ सउंहाइयउ[8] ॥
दीहरपहरीणें[9] राहविण रवि परवारु[10] व जोइयउ ॥2॥

3

दुवई—पुच्छिउ तेण तेत्थु णियपरियणु बालमरालगामिणी ॥
कहिं सा सीय भणसु भो लक्खण सइगुणरयणसामिणी[1] ॥छ॥

तं णिसुणिवि भायरु कहइ एंव जावहिं तुहुं गउ मृगमग्गि देव ।[2]
जावहिं हउं अच्छिउ सरवरंति[3] तावहिं जि ण दिट्ठी उववणंति ।
विण्णवइ एंव भिच्चयणु सव्वु कंदइ उब्भियकरु गलियगव्वु ।
एंवहिं जाणइ दीसइ जियंति जइ तो[4] तुहु पुण्णाहिउ ण भंति ।
तं णिसुणिवि मुच्छिउ पडिउ रामु जलसिंचिउ उट्ठिउ खामखामु ।
सीयलु विसु विसु व ण सति जणइ हरियंदणु सिहिकुलु अंगु छणइ ।

में उन्नति को प्राप्त हो गया। जिसने पद्म सीय कमलों की शीत (राम और सीता) को विघटित कर दिया है, ऐसा दिनकर दूसरे दशमुख के समान शोभित होता है। मानो वह सीता देवी की विरह रूपी ज्वाला से प्रचंड है, मानो इन्द्राणी के हाथों के केशर से पीत शरीर है, मानो दिशा रूपी कामिनी के सिर पर रक्तपुष्प है, मानो विद्याधर राजा के शरीर के रक्त का तालाब है।

घत्ता—लम्बे रास्ते से थके राघव ने सूर्य को रावण के समान देखा जो शीत दूर करने वाला (सीता का अपहरण करनेवाला) युद्ध के लिए आगमन करनेवाला, अत्यन्त रक्त (अनुरक्त) और सामने दौड़ता हुआ है।

(3)

दुवई—राम ने वहाँ अपने परिजनों से पूछा—हे लक्ष्मण, बताओ बाल-हंस के समान गतिवाली तथा सतीत्व गुणरूपी रत्नों की स्वामिनी वह सीता बताओ कहाँ है ?

यह सुनकर भाई ने इस प्रकार कहा—हे देव, जब तुम हरिण के मार्ग पर गए थे, और जब मैं सरोवर में था, तब वह उपवन में दिखाई नहीं दी। समस्त भृत्यजन भी निवेदन करते हैं, और दोनों हाथ उठाकर गलितगर्व रुदन करते है कि यदि इस समय जानकी जीवित दिखाई देती हैं, तो तुम पुण्यशाली हो। इसमें भ्रांति नहीं। यह सुनकर राम मूछित होकर गिर पड़े। पानी छिड़कने पर अत्यन्त दुर्बल वह उठे। शीतल जल भी विष की तरह उन्हें शांति उत्पन्न नही करता, हरिचन्दन भी अग्निकुल की तरह शरीर को जलाता। कमल भी सूर्य के साथ अपनी

6. A दिसिकामिणिकररत्तु फुल्लु। 7. AP हिय°। 8. A सविहायउ, P सउहाइउ। 9. P °पहरेण। 10. AP परिवारु वि जोइउ।

(3) 1. A सयगुण°। 2. AP गउ तुहु भिग°। 3. A सरवणंति। 4. P तइ।

णलिणु वि सूरहु सयणत्तु वहइ सयणीयलि घित्तउ देहु डहइ ।
पियविरहु[5] जलद्दइ सिहि व जलइ चमराणिलु तासु सहाउ[6] घुलइ ।

घत्ता—सरु गेयहु वइरिविमुक्कसरु कव्वु कायकव्वासउ ।।
विणु सीयइ भावइ राहवहु णाडउ णाडयपासउ ।।3।।

4

दुवई—जलि थलि गामि गामि पुरि घरि घरि गिरिकंदरणिवासए ।।
जोयह[1] कहि मि घरिणि जइ जाणह बहुदुग्गमपवेसए ।।छ।।

अवियाणिउं जगि को कहइ कासु पेसिय किंकर दससु वि दिसासु ।
सइं काणणि रहुवइ हिंडमाणु पुच्छइ वणि[2] मिगइं अयाणमाणु ।
रे हंस हंस सा हंसगमण पइं दिट्ठी कत्थइ[3] विउलरमण ।
चंगउ चिम्मवकहुं[4] सिक्खिओ सि महुं अकहंतु जि खल कि गओ सि ।
रे कुंजर तुह कुंभत्थलाइं णं मह[5] महिलाइ थणत्थलाइं ।
सारिक्खउं लइयउं एउ काइं भणु कंतइ कहि[6] दिण्णइं पयाइं ।
सारंग कहहि महु जणयधीय णयणहि उवजीविय पइं मि सीय ।
अलि घरिणिकेसणिद्धत्तचोर णिसि सररुहदलकयबंधणार ।

स्वजनता प्रकट करता है, शयनतल पर रखा गया भी वह देह को जलाता है। जल से गीले वस्त्र भी प्रियविरह की आग के समान जलाते हैं, और चवरों की हवा उनकी सहायक हो जाती है।

घत्ता—गीत का स्वर शत्रु के द्वारा छोड़े गए शर के समान मालूम होता है, और काव्य-शरीर का मांसभक्षक होता है। बिना सीता के राम को नाटक, नाटक-बंधन के समान लगता है।

(4)

दुवई— जल थल ग्राम ग्राम-पुर घर-घर और जिनमें प्रवेश दुर्गम है, ऐसे गिरि-कंदरा के निवासों में कहीं भी देखो, यदि गृहिणी वहाँ मिल जाए।

अविज्ञात को विश्व में कौन किस से कहता है ? इसलिए दसों दिशाओं में अनुचरों को भेज दिया जाए ! राम स्वयं कानन में अज्ञानी की तरह भ्रमण करते हुए पशु-पक्षियों से पूछते हैं—हे हंस, तूने उस विपुल रमण करने वाली हंसगामिनी को देखा है ? तूने सुंदर चलना सीख लिया है। हे दुष्ट, मुझसे कहे बिना तुम कहाँ चले गए थे ? रे गज, ये तुम्हारे कुंभस्थल है, मेरी पत्नी के स्तनस्थल नही है। तुमने यह समानता क्यो ग्रहण की ? बताओ कांता ने किस ओर पग दिए है ? हे मृग, तुम बताओ कि जनक की बेटी, मेरी सीता के नेत्रों से तुम उपजीवित हुए थे ? मेरी गृहिणी के केशों की स्निग्धता को चुराने वाले तथा रात्रि में कमल दल में अपना बन्धन करनेवाले हे भ्रमर, तुम मेरी

5. A विरहजलद्दइ । 6. A सहासु ।

(4) 1. A जोवहु । 2. A वणमिगइं । 3. A कत्थवि । 4. P चिमक्कहं । 5. A णं महु महिलहि घणथणथलाइ ।6. A कि ।

ण वियाणहि कंतहि तणिय वत्त रे णीलगीव घणरामवत्त[7]।
णच्चंति दिट्ठ भणु कहि मि देवि इयरह कहिं णच्चहि भाउ लेवि।
रे कीर ण लज्जहि जंपमाणु जइ दिट्ठउं पइं मुद्धहि पमाणु।

घत्ता—णिरु विरहें झीणउ दासरहि देविहि अज्जु जि मुच्चहि ॥
णीसेसजीवसंतावहर मेह दूअउ[8] तुहुं वच्चहि ॥4॥

5

दुवई—अइउक्कंठिएण धरणीसें सज्जणदिण्णजीययं ॥
ता दिट्ठं मयच्छिथणकुंकुमपिंजरु[1] उत्तरीययं ॥छ॥

दीसइ वंसग्गविलंबमाणु ण रिउ[2] गयगयणगणणिवाणु।
णं दावइ कंतहि तणिय वट्ट इह दहमुहमारीयइ[3] पयट्ट।
ण उब्भिय सीयइ सइवडाय तं लेप्पिणु किंकर झ त्ति आय।
आलिंगिउं रामें णीससेवि पुणु बाहुल्लइं णयणइं पुसेवि।
जंपिउं णिय सुंदरि खेयरेहिं मायाविएहिं रणदुद्धरेहिं[4]।
सहु लक्खणेण संदेहि छूढु जामच्छइ पहु किंकज्जमूढु।
तावायउ दूयउ दसरहासु तें घित्तु पत्तु आलिहिउ तासु।
उच्चाइवि तं सहसा सिरेण इय वाइउं देवें हलहरेण।

कांता का समाचार नहीं जानते ? हे सुन्दर स्मरणीय पूँछवाले मयूर बताओ, क्या तुमने देवी को कैसे नृत्य करते हुए देखा ? अन्यथा तुम उसका भाव ग्रहण कर कैसे नाच रहे हो ? हे शुक, तू बोलता हुआ लजाता नहीं है, क्या तू मेरी पत्नी का पता जानता है ?

घत्ता—पवित्र देवी के विरह में राम आज भी अत्यन्त क्षीण है। निःशेषजीवसंतापहर हे मेघ, तुम दूत हो तुम बताओ।

(५)

दुवई—अत्यन्त उत्कंठित धरणीश (राम) ने सज्जनों को जीवन देने वाला, मृगाक्षी (सीता) के रतनकेशर से पीला उत्तरीय देखा।

बाँस के अग्र भाग पर अवलम्बित वह ऐसा दिखाई देता है, मानो शत्रु के आकाश-प्रांगण से जाने का चिह्न हो। मानो वह कांता का मार्ग बता रहा हो कि दशमुख रावण के द्वारा वह यहाँ से ले जाई गई है। मानो सीता के सतीत्व की पताका उठी हुई हो। उसे अनुचर लेकर शीघ्र आए। राम ने निःश्वास लेकर उसका आलिंगन किया और फिर बाँहों से अपने नेत्रों को पोंछ कर कहा—मायावी और अत्यन्त दुर्धर विद्याधरों द्वारा सीता ले जाई गई है। इस प्रकार जब राम लक्ष्मण के साथ संदेह में किंकर्त्तव्यविमूढ़ थे, तभी शीघ्र दशरथ राजा का दूत आया, और उसने उनका लिखा हुआ पत्र (सामने) रख दिया। उसे सहसा उठाकर देव बलभद्र राम

7. A घणरावमत्त, P घणरामपत्त, T घणरावमत्त अतिशयेन रमणीयपिच्छ। 8. AP दूउ।

(5) 1. AP °पिंजरि। 2. A णं रिउ गयणगणि णिज्जमाणु। 3. AP °मारीयय। 4. P रणि दुद्धरेहिं।

दसरहु जिणचरणंभोयभसलु[5] उवइसइ सुयहं णियदेहकुसलु।
मइं दिट्ठउं सिविणउं हयविलासु हिय राहुं[6] रोहिणि ससहरासु।

घत्ता—एक्कल्लउ ससि णहयलि भमइ अवलोइवि अवहारिउं।।
वज्जरिउं पहाइ पुरोहियहु तेण वि मज्झु वियारिउं[7] ।।5।।

6

दुवई—जो दिट्ठउ विडप्पु सो रावणु जा णिसि पइं विलोइया।।
रोहिणि तुहिणकिरणविच्छोइय सा तुह सुयविओइया।।छ।।

परमत्थें जाणसु राय सीय अज्जु जि खयरिंदें घरहु णीय।
जा हिप्पइ सा[1] पुणरवि णिरुत्तु ता किज्जइ णियदेहहु पयत्तु।
जे[2] चक्कवट्टि पालइ सजीव भरहंतरालि छप्पण्ण दीव।
तहिं सायरि लंकादीवु अत्थि अण्णु वि तिकूडु गिरि मणिगभत्थि।
पुरि लंक राउ दहवयणु णाम णिय तेण सीय रामाहिराम।
आयण्णिवि विसरिसविसम वत्त ते बे वि भरह सत्तुहण पत्त।
हिंसततुरय गज्जंतणाय सामंत सुहड दसदिसिहिं आय।
आवेप्पिणु तणयासोक्खहेउ ससुरेण णिहालिउ रामएउ।
दुम्मणु जाइवि रिउमद्दणेण गलगज्जिउ तेत्थु जणद्दणेण।

ने सिरे से उसे पढा—"जिनवर के चरणकमलों का भ्रमर राजा दशरथ पुत्रों को अपनी देह की कुशलता का आदेश करता है। मैंने स्वप्न में देखा कि राहु द्वारा चन्द्रमा की छतविलास रोहिणी का अपहरण किया गया है।

घत्ता—अकेला चन्द्रमा आकाश में परिभ्रमण करता है, यह देखकर मैंने समझ लिया और सवेरे पुरोहित से कहा। उसने मुझे बताया—

(6)

तुमने जो राहु देखा है, वह रावण है; और जो तुमने रात्रि में चन्द्रमा से वियुक्त रोहिणी को देखा है, वह तुम्हारे पुत्र से वियुक्त सीता है।

हे राजन्, तुम इसे परमार्थ जानो कि आज ही वह विद्याधर के द्वारा घर ले जाई गई है। यदि उसे फिर से वापस लाना है तो निश्चय ही अपनी देह से प्रयत्न करना चाहिए। चक्रवर्ती जो भरतक्षेत्र में जीव सहित छप्पन द्वीपों का परिपालन करता है उसके समुद्र में लका द्वीप है। और भी त्रिकूट मणि किरण आदि द्वीप हैं। लंका नगरी में राजा रावण है, उसके द्वारा स्त्रियों में सुन्दर सीता का अपहरण किया गया है। यह असमान विषतुल्य बात सुनकर भरत और शत्रुघ्न दोनों वहाँ पहुँचे। हिनहिनाते हुए घोड़े, गरजते हुए हाथी, सामंत और सुभट दसों दिशाओं से आये। पुत्रों के सुख के कारणभूत राम देव से ससुर ने भी आकर भेंट की। उन्हें दुर्मन देखकर शत्रु का मर्दन करनेवाला लक्ष्मण एकदम गरज उठा।

5. AP जिणकमलभोयं। 6. A राहे। 7. AP वियारियउं।
(6) 1. A सो। 2. A जो। 3. उद्धयकेसरु।

घत्ता—रिउ जरकुरंगु महु आवडइ हउं हरि उद्धुयकेसरु[3] ॥
जइ दुट्ठु दिट्ठिगोयरि पडइ तो मारमि लंकेसरु ॥6॥

7

दुवई--सीयागुणविसेससंभरणचुयंसुयसित्तवसुमई ॥
उम्मोहिउ विओयविसघारिउ कह व णिवेहिं महिवई[1] ॥छ॥

पियविप्पओयकद्दमणिमण्णु[3] जांवच्छइ सेज्जायलि णिसण्णु ।
तावाय बेण्णि खग विमलदेह णं रामसासथिरकरणमेह ।
ण सीयामग्गपयासदीव बेण्णि वि पणवेप्पिणु थिय समीव ।
समाणिय हरिणा सणिसण्ण सुहिदंसणरुहरोमचभिण्ण ।
बोल्लाविय बेण्णि वि दिव्वकाय कहुं तुम्हइ कि किर एत्थु आय ।
तं णिसुणिवि भासइ जेट्ठु खयरु खगदाहिणसेढिहि अत्थि णयरु ।
णामें किक्किलु कलहंससहिय जहि विविहवास चोरारिरहिय ।
तहि महु[4] बलिदु माणियपियंगु तहु धण पियंगसुंदरि[5] पियगु ।
सामल मलोण उडुणिहणहालि तहि पढमपुत्तु णामेण वालि ।
हउं लहुयारउ सुग्गीउदेव अणवरउ करमि णियपियरसेव ।

घत्ता—ता तेत्थु मरंतें पुरि पिउणा वालि रज्जि वइसारिउ ॥
हउं जुवराणउ कउ मइ जणणि[6] दाइएण णीसारिउ ॥7॥

---

घत्ता—शत्रु मुझे बूढ़े हरिण की तरह प्रतीत होता है । मै, जिसकी अयाल ऊपर उठी हुई है, ऐसा सिंह हूँ । यदि वह लंकेश्वर मेरी निगाह में पड़ता है, तो मै उसे मार डालूँगा ।

(7)

सीता के गुण विशेष के स्मरण से गिरे हुए आँसुओं से जिन्होंने धरती को सिंचित कर दिया है, ऐसे वियोग के विष से व्याकुल महीपति राम को राजाओं ने किसी प्रकार समझाया ।

प्रिया के वियोग के कीचड़ में निमग्न राम जब अपनी सेज पर बैठे हुए थे, तब पवित्र शरीर विद्याधर ऐसे आए मानो राम रूपी धान्य को स्थिर करने के लिए मेघ हो, मानो सीता के मार्ग को प्रकाशित करने वाले दीप हों । दोनों प्रणाम करके वहां पास में बैठ गए । बैठे हुए उनका लक्ष्मण ने सम्मान किया । सुधि और दर्शन से उत्पन्न रोमांचित दिव्य शरीर वाले उन दोनों से लक्ष्मण ने पूछा—कहाँ से किसलिए आए ? यह सुनकर बड़ा विद्याधर कहता है--विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी में एक नगर है, जो नाम से किष्किन्ध कलहंसों से सहित है । जहाँ चारों ओर शत्रुओं से रहित विविध आवास घर हैं, वहाँ जिसने प्रियंगु को माना है, ऐसा मेरा राजा बलि है । उसकी पत्नी प्रियंगु सुंदरी प्रियंगु के समान सुन्दर श्यामल और नक्षत्र पंक्ति के समान नखों वाली है । उसका पहला पुत्र वालि नाम का है, और मैं छोटा सुग्रीव देव हूँ । मैंने अनवरत रूप से पिता की सेवा की है ।

घत्ता --पिता ने मरते समय बालि को राजगद्दी पर बैठा दिया, और मैं युवराज बना दिया गया । मुझे भाई ने निकाल दिया ।

(7) 1. A वसुपई । 2 P has ता before पिय° । 3. P °णिमण्णु । 4. A पहु । 5. AP पियगु-सुदरि । 6. A जणण ।

## 8

दुवई—सुणि रायाहिराय हे हलहर मणिमयसिहरमंदिरे[1] ॥
तित्थु जि रययसिहरि खगसेढिहि खणरुइकंतपुरवरे ॥छ॥
विज्जाहरु णामें अत्थि पवणु　लीलाणिहि वेयविजित्तपवणु ।
तहु अंजण मणरंजणवियार　महएवि वूढसिंगारभार ।
इहु मेरउ सहयरु गयगईहि　तहि जायउ गब्भि महासईहि ।
पंडिउ पडु भडु विज्जाणिकेउ　जगि वुच्चइ एहु जि मयरकेउ ।
एक्कहिं दिणि कोक्किवि खयरलक्ख　एएं दिण्णी विज्जापरिक्ख ।
गिरिसिहरि णिवेसिउ एक्कु पाउ　अण्णेक्कु[2] दिण्णु उद्दंडवाउ ।
दीहत्तु पसारिउ गयउ ताम　गयणंगणि ससि दिवसयरु जाम ।
पुणु रूउ धरिउ तसरेणुमेत्तु　अणुमेत्तु मिलिवि खयरेहि वुत्तु ।
पेक्खिवि महायसाहसु अभेज्जु　वालें महु दिण्णउं जउवरज्जु[3] ।
कालें जंतें तं हित्तु पुणु वि　आसंकिवि तं सहु ण किउ रणु वि ।
गय बेण्णि वि जण माणिक्कचूडु　समयजिणालउ सिद्धकूडु ।

घत्ता—तसथावरजीवहं दय करिवि धम्मि थवेप्पिणु अप्पउ ॥
तहि देहिदेहदुहणासयरु वंदिउ जिणु परमप्पउ ॥८॥

(८)

दुवई—हे राजाधिराज, हे हलधर सुनिए, वहाँ ही विजयार्ध पर्वत की विद्याधर श्रेणी के मणिमय शिखर मंदिर वाले विद्याधर विद्युत्कांत नगर में पवन नाम का विद्याधर है। अपने वेग से पवन को जीतने वाले उसकी लीलाओं की निधि और मनोरंजन के विचार से युक्त श्रृंगारभार धारण करने वाली अंजना नाम की महादेवी थी। गजगामिनी उस महासती के गर्भ से उत्पन्न यह मेरा सहचर है—चतुर पंडित और भटविद्या-निकेत। विश्व में इसे कामदेव कहा जाता है। एक दिन एक लाख विद्याधरों को बुलाकर इसने विद्याओं की परीक्षा दी। पहाड़ के शिखर पर इसने एक पैर रखा और दूसरा उद्दंड पैर आधा लम्बा फैलाया। वह वहाँ तक गया, जहाँ तक आकाश के आँगन में सूर्य और चन्द्रमा हैं। फिर उसने अपना रूप त्रसरेणु तथा अणु बराबर बनाया। विद्याधरों से मिलकर उसका अभेद्य स्वभाव और साहस देखकर बालि ने मुझे युवराज पद दे दिया। लेकिन समय बीतने पर उसने अपहरण कर लिया। आशंकित होकर हमने उसके साथ युद्ध नहीं किया। हम दोनों, जिसके शिखर माणिक्य के हैं ऐसे, सिद्धकूट समेदजिनालय गये।

*घत्ता—वहाँ त्रसस्थावर जीवों की दया कर और अपने आपको धर्म में स्थापित कर शरीरधारियों के शरीर के दुःखों का नाश करने वाले परमात्मा जिनदेव वंदना की।*

---

(8) 1. A रमणिगणदित्तमंदिरे; P रमणियसियमंदिरे। 2. P adds वि after अण्णेक्कु। 3. A जुउविरज्जु; P जुउवरज्जु।

9

दुवई—जय देविंदचंदखयरिंदफणिंदणरिंदपुज्जिया[1] ।।
जय णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठट्ठारहदोसवज्जिया[2] ।।छ।।
ण भोएसु कंखा ण णिद्दा ण भुक्खा ।
ण तण्हा ण सोओ ण राओ ण रोओ[3] ।
ण चावं ण वेरी ण ताणं[4] ण मारी ।
ण काय[5] ण चेल ण सीसं सिहालं ।
ण णिंदा ण थोत्त ण मुद्दापवित्तं[6] ।
ण हिंसाइ सग्गो ण सोंडालमग्गो[7] ।
ण गोभूमिदाणं ण[8] वेओ पमाणं ।
ण चम्मुत्तरीयं[9] ण जण्णोववीयं ।
उरे णत्थि सप्पो मणे णत्थि दप्पो ।
पसूणंतयालं करे णत्थि सूलं ।
सिरे णत्थि गंगा जडाओवियंगा[10] ।
भवाणी ण देहे रई णो सणेहे[11] ।
पुरारी ण कामी तुमं मज्झ सामी ।
जिणो मोक्खहेऊ भवंभोहिसेऊ ।
घत्ता—जय परमणिरंजण जगसरण[12] वीयराय जोईसर ।।
जलि पत्थरि पाणिइ धम्मु णउ तुहु जि धम्मु परमेसर ।।9।।

(9)

देवेन्द्र चन्द्र विद्याधरेन्द्र नागेन्द्र और नरेन्द्रों के द्वारा पूज्य, आपकी जय हो। जिन्होंने आठों दुष्टकर्मों का नाश कर दिया है, और जो अठारह दोषों से रहित है, ऐसे आपकी जय हो।

न भोगों में आकांक्षा है, न नींद है, और न भूख; न तृष्णा है, और न शोक, न राग है, और न रोग। न चाप है, और न शत्रु है, न त्राण है, और न मारी। न शरीर है, और न वस्त्र है और न जटायुक्त सिर है, न निन्दा है और न स्तुति, न पवित्र मुद्रा है। न हिंसादि से स्वर्ग है, न सुरा मार्ग है, न गौ और भूमि का दान है, न वेदों का प्रमाण है, न चर्म का उत्तरीय (मृगछाला) है और न यज्ञोपवीत है। उरपर सर्प नहीं है, मन में दर्प नहीं है, पशु-पशुओं का अन्त करने वाला शूल हाथ में नहीं है। न सिर पर गंगा है, न जटाओं में गुप्त अंग है। न देह में भवानी है और न स्नेह में रति है, और न त्रिपुर शत्रु हैं, न कामी हैं। हे देव, आप मेरे स्वामी हैं। जिनदेव ही मोक्ष के कारण है, भवरूपी समुद्र के सेतु है।

घत्ता—हे परम निरंजन जनशरण, आपकी जय हो। हे वीतराग ज्योतीश्वर, आपकी जय हो, जल, पत्थर और पानी में धर्म नहीं है। हे परमेश्वर, धर्म आप ही हैं।

(9) 1. AP °पुज्जिय। 2. AP °वज्जिय। 3. AP पाओ। 4. AP तावं। 5. A ण काय सुचेल; P ण काये सुचेलं। 6. AP ण मुद्दा ण वित्तं। 7. A ण सो जण्णमग्गो। 8. AP ण वेउप्पमाणं। 9. A वसुत्तरीयं। 10. P जडग्गोवियंगा। 11. AP सणाहे। 12. P जगसरण।

10

दुवई—दिणयरु हरइ तिमिरु सलिलु वि तिस खगवइ विसवियंभियं ॥
जिण तुह दंसणेण खणि णासइ गुरुदुरियं णिसुंभियं ॥छ॥

इय वंदिवि जिणवरु सेस लेवि खणु एक्कु जाम तहिं थक्क बे वि ।
ता तेयवंतु णं विज्जुदंडु[1] णं सुरवरसरिडिंडीरपिंडु ।
वियडजडजूडु विवरीयवाणि मणिरयणकमंडलु[2] दंडपाणि ।
खणखणियमणियगणियक्खसुत्तु[3] कोवीणकणयकडिसुत्तजुत्तु ।
ससहरु व विसाहारूढगत्तु असुरसुरसमरसंणिहियचित्तु ।
सोत्तरियफुरियउववीयवंतु ता दिट्ठउ णारउ गयणि एंतु ।
अरहंतु णवेप्पिणु सुहुं[4] णिविट्ठु अम्हहिं संभासणु करिवि दिट्ठु ।
तुहुं जाणहि णिसुयसुयंगरिद्धि पुच्छिउ पावेसहुं किह सरिद्धि ।
मुहुं वंकइ संकइ वालि कासु को देसइ कुलरज्जावयासु ।
ता दाणवमाणवरणरएण विहसेप्पिणु बोल्लिउं णारएण[5] ।

घत्ता—भो खेयरपहु भूगोयरु वि धुउ तिजगुत्तमु भावहि ॥
सेवहि रामहु पणपंकयइं जइ तो कुलसिरि पावहि ॥10॥

(10)

दिनकर अंधकार को नष्ट करता है, जल प्यास को और गरुण विष के फैलाव को। हे जिन, तुम्हारे दर्शन मात्र से भारी पाप एक क्षण में चूर-चूर हो जाते हैं।

इस प्रकार जिनवर की वन्दना कर निर्माल्य लेकर जैसे वे दोनों एक क्षण के लिए ठहरे कि इतने में तेज से युक्त मानो विद्युत दंड हो, मानो देव-गंगा का फेन समूह हो, विकट जटा-जूट वाला, विपरीत वाणी वाला, जिसका कमंडलु मणि और रत्नों का है, जो हाथ में दण्ड लिये हुए है, जो खनखनाता हुआ, मणियों का अक्षसूत्र जप रहा है, कोपीन और कनक कटिसूत्र से युक्त जो विशाखा नक्षत्र में रूढ़ चन्द्रमा के समान पादुकाओं पर आरूढ़ है, जो असुर और सुरों के युद्ध में समाहित चित्त है, जिसके उत्तरीय पर यज्ञोपवीत चमक रहा है, ऐसे नारद को आकाश में आते हुए देखा। अरहंत को प्रणाम करके वह सुख से बैठ गए। हम लोगों ने संभाषण करने के लिए उनसे भेंट की और पूछा—आप निश्रुत और श्रुतांग की ऋद्धि को जानते हैं, हम अपनी ऋद्धि कब प्राप्त करेंगे ? बालि किससे मुख टेढ़ा रखता है और आशंका करता है ? कुलराज्य का आलिंगन कौन देगा ? तब दानवों और मानवों के युद्ध में रत नारद ने हँस कर कहा—

घत्ता—हे विद्याधर स्वामी, भूगोचर (मनुष्य) भी विजय में उत्तम होते हैं। यदि तुम राम के चरणकमल चाहते हो, और सेवा करते हो, तो कुललक्ष्मी प्राप्त कर सकते हो।

(10) 1. AP विज्जदंडु। 2. AP मणिरइय°। 3. A °गलियक्ख°। 4. A सहु। 5. V विहसेविणु।

11

दुवई—अण्णु वि हरिणणयण णियपणइणि तासु दसासराइणा ।।
विरसियअमरडमरडिंडिमरवरिउबहुतासदाइणा ।।छ।।

दुक्खेण ण याणइ दियहु रत्ति  जो दावइ कंतहि तणिय वत्ति ।
सो जाणमि जिह भमरहु सुगंधु  तिह रामहु होसइ परमबंधु ।
लब्भइ मणोज्जकज्जेण[1] कज्जु  सो देसइ तुह[2] सुग्गीव रज्जु ।
तं णिसुणिवि आया एत्थु राय  जलयग्गिसिगसंणिहियपाय ।
ते णहयर पुज्जिय राहवेण  संभासिय तोसिय माहवेण ।
हणुमंतें मग्गियपेसणेण  जंपिउ णवजलहरणीसणेण ।
भो दसरहणंदण णंद णंद  मा झिज्जहि सज्जणकुमुयचंद ।
णियरामालोयणकयपयत्त  हउं आणमि सीयहि तणिय वत्त ।

घत्ता—सुग्गीवहु मुहुं पप्फुल्लियउं[3] मित्तवयणु पडिवण्णउं ।।
अहिणाणु लेहु अंगुत्थलउं रामें हणुयहु दिण्णउ ।।11।।

12

दुवई—ता णविउ पयाइं हलहेइहि णवदलणलिणणिहमुहो ।।
उल्ललिओ[1] णहेण पवणो इव चलगइ पवणतणुरुहो ।।छ।।

---

(11)

और भी विशेष रूप से बजाए गए अमरों के लिए भयानक डिंडिम के शब्द से शत्रु के लिए अत्यधिक त्रास देने वाला राजा दशानन उनकी मृगनयनी प्रणयिनी को ले गया है। वह दुःख के कारण दिन रात नहीं जानती। जो पत्नी की वार्ता को बताएगा, मैं जानता हूँ, कि भ्रमर के लिए सुगन्ध की तरह वह राम का परम बंधु होगा। मनोज्ञ काम से ही मनोज्ञ कार्य प्राप्त किया जाता है। हे सुग्रीव, वे तुम्हें राज्य दे देंगे। यह सुनकर, हे राजन्, हम लोग यहाँ आये हैं। मेघों के अग्र शिखरों पर चरण रखने वाले उन विद्याधरों का राम ने सम्मान किया। लक्ष्मण ने बात कर उन्हें संतुष्ट किया। आदेश चाहने वाले तथा नवमेघ के समान शब्द वाले हनुमान् ने कहा—हे दशरथपुत्र, तुम प्रसन्न होओ, तुम प्रसन्न होओ। हे सज्जन कुमुदचन्द्र तुम क्षीण मत होओ, अपनी स्त्री के अवलोकन का जिसमें प्रयत्न है, ऐसी सीता संबंधी वार्ता मैं ले आऊँगा।

घत्ता—सुग्रीव का मुख खिल गया। उसने मित्र का वचन स्वीकार कर लिया। राम ने पहिचान का लेख और अंगूठी हनुमान के लिए दे दी।

(12)

तब नवदल वाले कमल के समान मुख वाले हनुमान् ने राम के चरणों में प्रणाम किया। पवनगति वह पवनपुत्र आकाश मार्ग से पवन की तरह उड़ गया।

---

(11) 1. A °कज्जाण कज्जु। 2. P तुम्हहं। 3. A पफुल्लियउं; P पहुल्लियउं।
(12) 1. P has गउ before उल्ललिओ।

तओ तेण जंतेण दिट्ठो समुद्दो पधावंतकल्लोलमालारउद्दो ।
जलुम्मग्गणिम्मग्गबोहित्थवंदो अथाहंभपब्भारसंकंतचंदो ।
झसप्फोडफुट्टंतसिप्पीसमूहो[2] णहुक्खित्तमुत्ताहलो भाणुरोहो ।
दिसाढुक्कणक्कुग्गयंतं करालो चलुप्पिच्छपल्हत्थवेलाविसालो[3] ।
पवालंकुरुक्केरराहिल्लरूहो पगज्जंतमज्जंतमायंगजूहो ।
सुभीसो असोसो[4] असेसंबुवासो विडिंदु व्व पीयाहरो ढंकियासो ।
सरीसंगतुंगत्तणालीढरिक्खो[5] अलंकारओ कूलकीलंतजक्खो ।
करिंदो व्व गाढं गहीरं रसंतो अहिंदो व्व पायालमूले विसंतो ।
णरिंदो व्व धीरो[6] समज्जायवंतो रिसिंदो व्व अंतोमलं णिग्गहंतो ।
गिरिंदो व्व रेहंतमाणिक्कमोहो सुरिंदो व्व देवासिओ दिण्णसोहो ।

घत्ता—गंभीरु घोर आवत्तहरु लीलाइ जि आसंघिउ[7] ॥
संसारु व परमजिणेसरिण सायरु हणुएं लंघिउ[8] ॥12॥

13

दुवई—खेयरिचरणघुसिणमसिणारुणरयणसिलायलामलो ॥
दीसइ तहिं तिकूडु गिरि दरितरुवियसियकुसुमपरिमलो ॥छ॥

उस समय उसने जाते हुए समुद्र को देखा जो दौड़ती हुई लहरमाला से भयंकर था। जहाज समूह जल में डूब उतरा रहे थे। अथाह जल के प्रवाह से चन्द्रमा आशंकित हो रहा था। मत्स्यों के आघात से सीपी समूह फूट रहे थे। आकाश में उछलते हुए मोती किरणों को रोक रहे थे। दिशाओं में प्राप्त मगरों से निकले हुए मध्य भाग से जो भयकर था, जो ऊपर जाते और पीछे हटते हुए तटों से विशाल था, जिसका तट प्रवाल के अंकुरों के समूह से शोभित था, जिसमें गरजते हुए गज समूह डूब उतरा रहे थे। जो अत्यंत भीषण अशेष जल का घर था। जो विडेन्द्र (कामुक) की तरह, पीताधर (अधरों का पान करने वाला, धरा तक व्याप्त रहने वाला), ढंकितास (दिशा आच्छादित करनेवाला, आशा को आच्छादित करनेवाला) था। जिसने नदियों के साथ ऊंचाई के द्वारा नक्षत्रों को छू लिया था, जो अलंकृत था, जिसके तट पर यक्ष क्रीड़ाकर रहे थे, करीन्द्र के समान जो पातालमूल में प्रवेश कर रहा था, नरेद्र के समान जो धीर और मर्यादा वाला था, ऋषीन्द्र की तरह जो अन्तर्मल को नाश करने वाला था, गिरीन्द्र की तरह जिसमें माणिक्य किरणें चमक रही थीं, जो सुरेन्द्र के समान देवाश्रित और शोभायुक्त था।

घत्ता—गंभीर भयंकर आवर्तों को धारण करने वाले समुद्र को हनुमान् ने उसी प्रकार पार कर लिया, जिस प्रकार परम जिनेश्वर संसार को पार कर लेते हैं।

(13)

वहाँ विद्याधरियों के चरणों की केशर से चिकने और लाल, रत्नशिलातल की तरह स्वच्छ तथा जिसमें घाटियों के वृक्षों के विकसित कुसुमों का परिमल है ऐसा त्रिकूट पर्वत दिखाई दिया।

2. A झसुप्फाल° । 3. P चलप्पत्थ° । 4. असेसो । 5. AP °रिखो । 6. AP वीरो । 7. AP आसंघियउ ।
8. AP लंघियउ ।

लंबंतरत्तपत्तोहतंबु गुरुसिहरालिगियसूरबिंबु ।
वेलापक्खलणविसट्टकबु किणरसुंदरिसेवियणियंबु ।
णाइणिणेउरबहिरियदियंतु णच्चियजक्खिणिरसभाववंतु ।
करिमयकद्दमखुप्पंतहरिणु गुमुगुमियभमिरछच्चरणसरणु[1] ।
हिंडतकालणाहलकुडंबु[2] खेल्लंतसरहसरहससिलिबु[3] ।
णउलउलफणिउलाढत्तसमरु चमरीमयचालियचारुचमरु ।
हरिकुंजरकलहकलालवंतु[4] चुयरत्तलित्तमोत्तियफुरंतु ।
दुमणियरगलियमहुवारिथिंभु[5] सबरीपरियंदणसुत्तडिंभु ।
हयमुहकिलिकिंचियसद्दरम्मु[6] महियरदुग्गमु णहयरहं गम्मु ।
घत्ता—णावइ णिउणइ महिकामिणिइ एइ सग्गपरिछंदहु[7] ।।
गिरिणियकरु उब्भिवि णिहिय तहिं दाविय लंक सुरिंदहु ।।13।।

14

दुवई—परिहादारतोरणट्टालयधयजयलच्छिसंगमा ।।
लंकाणयरि दिट्ठ हणुमंतें[1] मणिपायारदुग्गमा ।।छ।।
दीहत्तें बारह जोयणाइं वित्थारें णव हियलोयणाइं ।
बत्तीस विसालइं गोउराइं मोत्तियमरगयघडियइं घराइं ।

---

जो लटकते हुए रक्त पत्र समूह से लाल था, जिसके गुरु शिखर पर सूर्य अवलंबित था, तटों के प्रस्खलन से जिसमें शंख टूट चुके थे, जिसके तट किन्नरियों के द्वारा सेवित थे, नागिनों के नूपुरों से जहाँ दिगंत बहरा था, जो नृत्य करती हुई यक्षिणियों के रस भाव से युक्त था, जहाँ गजों के मदजल की कीचड़ में हरिण निमग्न हो रहे थे, जो गुम-गुम करते भ्रमणशील भ्रमरों की शरण था, जिसमें कोल भीलों के कुटुम्ब घूम रहे थे, जिसमें शरभ के बच्चे हर्ष पूर्वक क्रीड़ा कर रहे थे, जिसमें नकुल कुल और नागकुल में युद्ध प्रारम्भ होने जा रहा था, जिसमें चमरी-मृगों के द्वारा सुन्दर चमर चलाए जा रहे थे, जो सिंहों और गजों के युद्ध से रक्त रंजित था, जहाँ रक्त में गिरते हुए मोती चमक रहे थे, जो वृक्षसमूह से झरते मधुजल से आर्द्र था। जिसमें भीलनियों के द्वारा आंदोलित बच्चे सो गए थे, जो अश्वों के सुरति-शब्द से सुन्दर था, जो पर्वतों से दुर्गम और विद्याधरों के लिए गम्य था।

घत्ता —मानो निपुण धरती रूपी कामिनी द्वारा गिरि रूपी अपना हाथ उठाकर उस पर स्थित लंका नगरी देवेन्द्र के लिए दिखाई जा रही हो कि स्वर्ग का प्रतिबिम्ब आ रहा है।

(14)

परिखाओं, द्वारों, तोरणों, नाट्य-गृहों और विजयलक्ष्मी का जिसमें संगम है, ऐसी मणियों के प्रकारों से दुर्गम लंका नगरी हनुमान् ने देखी। लम्बाई में जो बारह योजन थी, और विस्तार में हृदय को आकर्षित करने वाली नौ योजन। उसमें बड़े-बड़े बत्तीस गोपुर थे। मोतियों और पन्नों से विजड़ित घर थे। जहाँ कर्पूर की धूल, धूल के रूप में व्याप्त थी जहाँ कल्पवृक्ष; वृक्ष थे,

---

(13) 1. AP °भमिय° । 2. AP हिंडंतकोल° । 3. AP संछाइयतरुदलसूरबिंबु । 4. A °किलालवंतु । 5. AP °महुपाणथिभु । 6. AP हयमुहि° । 7. पडिछंदहु ।

(14) 1. AP हणवंतें ।

जहिं घुलइ रेणु कप्पूररेणु सुरतरु तरु धेणु वि कामधेणु ।
वणु णहवणु वेल्लि वि णायवेल्लि रणु रइरणु भल्लि वि मयणभल्लि ।
जरु विरहजरु[2] जि णउ अत्थि अण्णु बहुवण्णचित्तु[3] णउ चाउवण्णु ।
घरु सिरिघरु चोर[4] वि चित्तचोर बज्झंति केस रोवंति मोर ।
वउ णववउ रूवु वि णिरु सुरूवु[5] रिसि खीणदेहु वम्महु विरूवु ।
रिणु तिलरिणु बंधणु पेम्मबंधु जलु चंदकंतजलु दलु सुगंधु ।
कामिणि खगकामिणि अलिवमालु धूमु वि कालागरुधूमु कालु ।
दीव वि जलंति माणिक्कदीव जीव वि वसंति जहिं भव्वजीव ।
गुणु[6] जिणगुणु धम्मु अहिंसधम्मु फलु पुण्णफलु जि कम्मु वि सुकम्मु ।
किं वण्णमि भूमि वि भोयभूमि सामि वि दहमुहु खयरायसामि ।

घत्ता—एक्केक्कउ जो गुण संभरइ सो तहु अंतु ण पेक्खइ ।।
जगसुंदरत्तु[7] लंकहि तणउं कवणु कईसरु अक्खइ ।।14।।

15

दुवई—कलरवु रुणुरुणंतमाणिणिमुहमंडणु जणमणिट्ठओ ।।
छडयणरूवधारि ता पावणि रावणभवणि पइट्ठओ ।।छ।।

---

और कामधेनुएँ धेनुएँ थीं। जहाँ नखप्रण (प्रण और वन) वन थे। जहाँ रति युद्ध था, दूसरा युद्ध नहीं था। जहाँ काममल्लिका मल्लिका थी, दूसरी मल्लिका नहीं थी। ज्वर भी विरह ज्वर था, दूसरा ज्वर नहीं था। जहाँ अनेक रंगों का चित्त था, परन्तु चतुवर्ण्य नहीं था; जहाँ घर लक्ष्मी का घर था, और चोर भी चितचोर थे, जहाँ केश बाँधे जाते थे, और मयूर आवाज करते थे। जहाँ उम्र नई उम्र थी और रूप भी स्वरूप था। जहाँ ऋण तिलऋण था, और बंधन प्रेम-बँधा था, जहाँ जल चन्द्रकांत मणि का जल था और दलों में सुगन्ध थी। जहाँ कामिनियाँ विद्याधर कामिनियाँ थीं। भ्रमरों का कलकल शब्द था, काला गुरु काला धूम था। माणिक्य के ही माणिक्य के दीप जलते थे, जिनगुण ही गुण थे। अहिंसा धर्म ही धर्म था। जहाँ पुण्यफल ही फल था और सुकर्म ही कर्म था। क्या वर्णन करूँ, वह भूमि भोगभूमि थी और उसका स्वामी विद्याधर स्वामी रावण था।

घत्ता—जो उसके एक-एक गुण को याद करता है, वह उसके अन्त को नहीं देख पाता। लंका के विश्व सौन्दर्य का कौन कवीश्वर वर्णन कर सकता है?

(15)

जिसका शब्द सुन्दर है, जो गुनगुनाती हुई मानिनियों के मुख का मंडन है, जो जनमन के लिए इष्ट है, ऐसे भ्रमर का रूप बनाकर हनुमान् ने रावण के भवन में प्रवेश किया।

---

2. AP विरहजूरु णउ। 3. A बहुवण्णु चित्तु गउ वाउवण्णु; P बहुवण्णु चित्तु णउ वाउवण्णु। 4. AP चोरु वि चित्तचोरु। 5. A णिरूवु। 6. A गुण जिणगुण। 7. AP जगि सुंदरत्तु।

चक्केसरु वरलक्खणपसत्थु दिट्ठउ दहमुहु सीहासणत्थु ।
ण गिरिसिहरासिउ णीलमेहु पण्णारहचावपमाणदेहु ।
चामीयरवीढि णिहित्तचरणु बलवंतकालु बलहीणसरणु ।
विज्जिज्जइ चलचमरीरुहेहिं वण्णिज्जइ वरबंदिणमुहेहिं ।
गाइज्जइ सरगयभावएहिं सलहिज्जइ सुरणरसेवएहिं ।
दीसइ णवकप्पद्दुमफलेहिं माणससरवररत्तुप्पलेहिं ।
मउडग्गरयणमहियललिहेहिं पणविज्जइ सुरवइसंणिहेहिं ।
चिंतइ मारुइ उव्विण्णचित्तु[1] हा एण णिहित्तउं परकलत्तु[2] ।

घत्ता—एसज्ज एउं एवड्डु कुलु तो वि कयउं[3] सकलंकणु ॥
हयविहि सुवण्णभिंगारयहु खप्परु दिण्णउं ढंकणु ॥15॥

16

दुवई—पुणु णिवसवणपूरकत्थूरियपरिमलगहणकुसलओ ॥
दहमुह देहि सीय मा णासहि णं गुमुगुमइ भसलओ[1] ॥छ॥
सो सइं जि कामु णं कामबाणु तरुणीबिंबाहरि[2] ढुक्कमाणु ।
कोमलकरयलवारिज्जमाणु चमराणिलेण पेरिज्जमाणु
थणजुयलि णाहिमंडलि घुलंतु पिछहि कवोलपत्तइं[3] दलंतु ।

उसने उत्तम लक्षणों से युक्त चक्रेश्वर दशमुख को सिंहासन पर बैठे हुए देखा । मानो नील मेघ पर्वतशिखर पर आश्रित हो । उसका शरीर पन्द्रह धनुष प्रमाण था । स्वर्णपीठ पर अपने पैर रखे हुए था । वह बलवानों के लिए काल था और बलहीनों के लिए आश्रयदाता था । चमरी गाय के बालों से जिसे हवा की जाती है, श्रेष्ठ चारण मुखों के द्वारा जिसका वर्णन किया जाता है, सरगम भावों से जो गाया जाता है, सुर-नर सेवकों के द्वारा जिसकी प्रशंसा की जाती है, नव कल्पवृक्षों के फलों और मानसरोवर के रक्त कमलों के साथ जिसके दर्शन किए जाते हैं, जिनके मुकुटों के अग्र भाग से भूमि तल लिखित है ऐसे इन्द्र-समूह द्वारा जिसे प्रणाम किया जाता है, हनुमान् अपने मन में उद्विग्न होकर सोचता है—खेद है कि फिर भी इसने परस्त्री का अपहरण किया ।

घत्ता—यह ऐश्वर्य, इतना बड़ा कुल, फिर इसने उसे क्यों कलंकित कर दिया ? हा हंत, विधाता ने स्वर्णभिंगार को ढाँकने के लिए खप्पर दिया (या खप्पर का ढक्कन दिया) ।

(16)

फिर जो राजा के कानों में पूरित कस्तूरी के परिमल को ग्रहण करने में कुशल था, ऐसा वह भ्रमर मानो गुन-गुना रहा था कि हे रावण, तुम सीता दे दो, अपना नाश मत करो ।

वह भ्रमर(हनुमान्) स्वयं कामदेव और कामबाण था, युवतियों के बिम्बाधरों पर पहुँचता हुआ, कोमल हथेलियों के द्वारा हटाया जाता हुआ, चमरों की हवा से प्रेरित होता हुआ, स्तन युगल और नाभिमंडल में प्रवेश करता हुआ, अपने पंखो से कपोलों की पत्ररचना को दलित

(15) 1. A ओविण्ण° । 2. AP वि हित्तउं । 3. P कयं सकलंकणु ।
(16) 1. P भसलुओ । 2. A बिंबाहर° । 3. A कवोलि ।

कुडिलालयपंतिउ दरमलंतु　　　　मुहकमलवाससासहु[4] चलंतु।
थिउ दारि[5] सहइ णं इंदणीलु　　　　थिउ भालि गहियवरतिलयलीलु।
थिउ उरि पियपहरकिणंकु णाइं[6]　　　　थिउ मणि सरसरपुंखु व सुहाइ[7]।
थिउ कण्णमूलि णं मम्मणाइं　　　　बोल्लइ मणियाइं[8] घणघणाइं।
थिउ उरूयलि सद्दइ सुराहि　　　　णं किंकिणि कामिणिमेहलाहि।

घत्ता—सो महुयरु वम्महु कि भणमि णारिहिं वयणइं[9] चुंबइ ॥
जाइवि खयरिंदहु रयणमइ कुंडलकमलि विलंबइ ॥16॥

17

दुवई—बुज्झिवि णयणवयणतणुलिंगहिं सीयारइवसं गयं ॥
दहवयणं विमुक्कणीसासरुहाणलतावियंगयं ॥छ॥

गउ अलि पुरपच्छिमगोउरग्गु　　　　आरूढउ जोयइ[1] वणु समग्गु।
दिट्ठी वणसिरि सहुं खेयरीहिं　　　　सीय वि परिवारिय खेयरीहिं।
वणु देइ ससाहिहि रामविरहु　　　　सीयहि पुणु वट्टइ रामविरहु।
वणि लोहियाउ पत्तावलीउ　　　　सीयहि पुसियउ पत्तावलीउ।
वणि पमयइ फलसारं गयाइं　　　　सीयहि झीणइं[2] सारंगयाइं।

---

करता हुआ, टेढ़ी केश पंक्तियों को विदलित करता हुआ, मुख रूपी कमल की सुगंधित हवा से उड़ता हुआ द्वार पर स्थित वह इस प्रकार शोभित था, मानो इन्द्र नीलमणि शोभित हो। भाल पर स्थित होकर वह श्रेष्ठ तिलक की शोभा धारण कर रहा था। उर पर स्थित होकर वह प्रिय के प्रहार के चिह्न के समान शोभित था। मन पर स्थित वह कामदेव के तीर के पुंख के समान शोभित हो रहा था। कानों के मूल में स्थित होकर मानो वह व्यक्त घन-घन काम वचन बोल रहा था। किसी सुन्दरी के उरुतल पर स्थित होकर ऐसे शब्द कर रहा था, मानो कामिनी की करधनी की किंकिणी हो?

घत्ता—कामदेव के उस भ्रमर को क्या कहूँ? वह स्त्रियों के मुखों को चूमता है, वह विद्याधर राजा के कुण्डल रूपी कमल पर जाकर बैठता है।

(17)

नेत्र मुख और शरीर के चिह्नों से यह जानकर कि रावण सीता के प्रति प्रेम के वशीभूत है, और उसका शरीर छोड़े गए निःश्वासों से उत्पन्न आग से संतप्त है।

भ्रमर चला गया और नगर के पश्चिमी गोपुर के अग्र भाग पर स्थित होकर समग्र वन को देखता रहा। विद्याधरियों के साथ उसने वनश्री को देखा। और सीता को भी विद्याधरियों से घिरा हुआ। वन अपनी शाखाओं के द्वारा स्त्रियों को विशेष एकान्त देता है, परन्तु सीता के लिए केवल राम का विरह है। वन में लाल-लाल पत्रावलियाँ थीं, परन्तु सीता की पत्रावलि (पत्ररचना) पुछ चुकी थी। वन में प्रमद (वानर) श्रेष्ठ फल पर है, लेकिन सीता के श्रेष्ठ

4. AP °सासवासहु। 5. AP हारि। 6. A भाइ; P जाइ। 7. AP विहाइ। 8. AP मणियाइं व घण°। 9. AP वत्तइं।

(17) 1 P जोइय। 2. P झीणाइं।

वणि एत्तहि तेत्तहि वेल्लिवलय सीयहि थिय पसिढिल बाहुवलय ।
वणि खेल्लइ हरिसिज्जइ वि हंमु सीयहि वट्टइ जीवियविहंसु ।
वणि दिसमुहि सोहइ लग्गु तिलउ सीयहि णिडालु[3] णिल्लुहियतिलउ ।
वणि तरुवंदइं रूढंजणाइं सीयहि णयणइं विगयंजणाइं ।
वणि साहारु जि मारइ पियत्थि सीयहि साहारु ण को वि अत्थि ।
भडसत्ति व बलविहडणविसण्ण जहिं अच्छइ परमेसरि णिसण्ण ।
तं[4] सीसवितलु खगभमरु आउ णं वइदेहीजीवियहु आउ ।

घत्ता—पडिबिंबिउ दहहिं वि पयणहहिं आसण्णउ परिघोलइ ॥
सो छप्पउ सीयहि कमकमलु पसरियपत्तहि लोलइ ॥17॥

18

दुवई—सीयासावभाउ[1] णं भीसणु णं हुयवहु समिद्धओ ॥
असरिससुहडचक्कचूडामणि पावणि मणि विरुद्धओ ॥छ॥
सीयहि केरउ दुच्चरित्तरहिउं[2] तणुचिंधु पलोइवि रामकहिउं ।
णियहियवइ चिंतइ अंजणेउ परणारिदेहसंतावहेउ[3] ।
मरु[4] मारमि अज्जु जि रणि दसासु गलि लायमि कालकियंतपासु[5] ।
पइवय णीरय पइबद्धपणय वाणारसि पावमि जणयतणय ।

---

अंग क्षीण है। वन में यहाँ-वहाँ लतामंडल है, परन्तु सीता का बाहुवलय शिथिल है। वन में हंस से क्रीड़ा-हर्ष किया जाता है, परन्तु सीता के जीवन का विध्वंस है। वन में दिशामुख में तिलक वृक्ष लगा हुआ शोभा देता है, सीता के ललाट से तिलक पुछ गया है। वन के वृक्ष, जनों से अधिष्ठित हैं, परन्तु सीता के नेत्र अंजन से रहित है। वन में प्रियार्थी को सहकार (आमवृक्ष) ही मारता है, परन्तु सीता के लिए कोई भी आधार (सहारा) नहीं है। जहाँ परमेश्वरी सीता देवी बल के विघटन से उदास मठशक्ति की तरह बैठी हुई हैं वह विद्याधर रूपी भ्रमर (हनुमान्) वहाँ शिंशिपा वृक्ष के नीचे आया मानो वैदेही का जीवन ही आया हो।

घत्ता—बैठा हुआ वह भ्रमर दसों चरणों मे प्रतिबिंबित होकर भ्रमण करता है। वह सीता के चरणकमलों में अपने पंख फैलाये घूमता है।

(18)

असामान्य सुभटों का चक्रचूड़ामणि हनुमान् अपने मन में इस प्रकार विरुद्ध हो उठा, मानो सीता का शाप भाव हो या मानो आग समृद्ध हो उठी हो।

राम के द्वारा कहे गए, सीता के दुश्चरित्र से रहित शरीर चिह्न को देखकर, परस्त्रियों के लिए संताप का कारण हनुमान् अपने मन में विचार करता है—मैं आज युद्ध में रावण को मार डालता हूँ, और उसे काल रूपी यम के पाश में डाल देता हूँ तथा पतिव्रता निष्पाप, अपने पति में

---

3. AP णिलाडि । 4. P ते ।

(18) 1. AP °भाव । 2. A दुच्चरित्तु । 3. AP °देहु संताव° । 4. परु । 5. AP कालकयंत° ।

णं णं हउं दूयउ राहवेण पट्ठविउ मज्झु किं आहवेण।
किंकरु पहुवयणुल्लंघणेण णिंदिज्जइ हियकारि वि जणेण।
अक्खमि भत्तारहु तणिय वत्त मा मरउ महासइ चारुणेत्त।
इय चिंतिवि अवसरु मग्गमाणु जा णिहुयंगउ थिउ कुसुमबाणु।
अत्थमिउ सूरु ता उइउ चंदु णं सीयहि[6] दुहवल्लरिहि कंदु।
आपंडु गंडमंडलि घुलंतु तहु तेउ डहइ अग्गि व जलंतु।
अरुणच्छवि णं रामणहु कुद्धु णहसरि णं सियसररुहु विउद्धु।
अहवा लइ ससहरु किं ण चारु णहसिरिकरदप्पणु अमयसारु।
मिगमुद्दइ[7] मुद्दिउ कंतिपिंडु पियलेहहु केरउ णं करंडु।
मेहलियहि णं संतोसकारि खेयरणाहहु[8] णं पाणहारि।
घत्ता—जणलोयणणियरणिवासघरु सुहणिहि अमयकलालउ ॥
ससि सीय[9] वि रामणतणु डहइ णं खयसिहिसिहमेलउ ॥18॥

19

दुवई—ण[1] सहइ हसइ रसइ परु पुच्छइ माणिणिविसयसंगहं ॥
ढंकइ दोसणिवहु गुण पयडइ अहणिसु करइ संकहं ॥छ॥
सिरु धुणइ कणइ णीसासु मुयइ सयणयलि पडइ अलियउं जि सुयइ।

---

वद्धप्रणय सीता को वाराणसी ले जाता हूँ। परन्तु नहीं-नहीं। मैं दूत हूँ। क्या मुझे युद्ध के लिए भेजा गया है? भला करने वाले अनुचर की भी प्रभु की आज्ञा के उल्लंघन के कारण लोगों के द्वारा निन्दा की जाती है। इसलिए मैं स्वामी की बात कहता हूँ। जिससे सुन्दर नेत्रों वाली वह महासती मरे नहीं। यह सोचकर अवसर की प्रतीक्षा करता हुआ कामदेव हनुमान् जब तक अपना शरीर छिपाकर बैठता है तबतक सूर्यास्त हो गया और चन्द्रमा का उदय हो गया, मानो वह सीता देवी की दुःखरूपी लता का अंकुर हो। एकदम सफेद गंड मंडल पर व्याप्त होता हुआ उसका तेज सीता को अग्नि के समान जलाता है। अरुण छवि वह ऐसा लगता मानो रावण के प्रति क्रुद्ध हो, मानो आकाश रूपी नदी में श्वेत कमल खिला हुआ हो, अथवा लो चन्द्रमा सुन्दर क्यों न हो, अमृत श्रेष्ठ वह आकाशरूपी लक्ष्मी के हाथ का दर्पण है, मृगमुद्रा (हरिण लांछन) से मुद्रित मानो वह कांति का पिंड है, अथवा प्रियलेख का पिटारा है मानो मैथिली के लिए संतोषकारी है, मानो विद्याधर राजा के लिए प्राणहारी है।

घत्ता—जनों के नेत्रों के समूह का निवासगृह सुखनिधि अमृत कलाओं का घर, चन्द्रमा और सीता भी रावण के शरीर को इस प्रकार जलाती है कि मानो क्षय काल की अग्नि की ज्वालाओं का समूह हो।

(19)

उसे (रावण को) कुछ भी सहन नहीं होता। वह हँसता है, बोलता है, दूसरों से पूछता है, अपना दोष-समूह छिपाता है, गुणों को प्रकट करता है, और मानिनी स्त्रियों के विषय से संगत समीचीन क्रियाओं को करता रहता है।

अपना सिर पीटता है, क्रन्दन करता है, निःश्वास छोड़ता है, शयनतल पर गिर पड़ता है,

---

6. A सीयादुह°। 7. A मृग°। 8. AP णं खेयरणाहहु। 9. A सीउ; P सीयलु।

(19) 1. A तसइ ण हसइ सरइ परु।

परिभमइ रमइ णउ कहिं मि ठाणि पियमित्तभवणि उज्जाणि जाणि ।
ण ायण्णइ गेउ मणोज्जवज्जु ण पउंजइ किं पि वि रायकज्जु ।
णउ ण्हाइ ण परिहइ दिव्वु[2] वत्थु णउ ढोयइ विविहाहारि हत्थु ।
णउ बंधइ णियसिरि कुसुमदामु णउ मण्णइ खगकामिणिहि कामु ।
ण विलेवणु सुरहिउ अंगि[3] देइ विरहाउरु णउ अप्पउं विवेइ ।
णउ भूसइ तणु णउ महइ भोउ णउ रुच्चइ तहु एक्कु वि विणोउ ।
जहिं जाइ तहिं जि सो सीय णियइ वारिज्जइ ढुक्की केण णियइ ।
अंधारए वि संमुहउं घडिउं सीयहि मुहुं पेक्खइ दिसहिं जडिउं ।
पाणिउं वि पियइ सो तहिं ससीउ परवसु वट्टइ वीसद्धगीउ ।
करदीवदित्तु उववणहिं चलिउ पियविरहहुयासें णाइ जलिउ ।।
घत्ता—जहिं अच्छइ णियडपरिट्ठिउ[4] अंजणतणुरुहु बालउ ।।
तहिं दहमुहु रइसुहु कहिं लहइ वम्महु जहिं पडिकूलउ ।।19।।

20

दुवई—अह अणुकूलु होउ मयरद्धउ सीयहि सीलदूसण ।।
किज्जइ कहिं मि बप्प खज्जोएं किं रविकरविहूसणं ।।छ।।
थिउ सीयहि पुरउ खगिंदु केम णियमरणभवित्तिहि जीउ जेम ।
पभणइ सत्तमु दिणु जइ वि पत्तु पिइ तो वि ण किं भंवरहि चित्तु ।

और झूठ-मूठ सो जाता है, परिभ्रमण करता है, किसी एक स्थान पर रमण नहीं करता, प्रिय मित्र, भवन, उद्यान और यान में वह न गेय सुनता है, और न मनोज्ञ वाक्य और न कुछ भी राज-काज करता है। न नहाता है, न दिव्य वस्त्र पहिनता है और न विविध आहारों को अपने हाथ से लेता है। अपने सिर पर पुष्पमाला नहीं बाँधता, विद्याधर स्त्रियों के साथ काम सुख नहीं भाता। सुरभित विलेपन अपने शरीर पर नहीं देता। विरह से व्याकुल वह स्वयं को नहीं जानता। शरीर पर भूषण नहीं पहनता और न भोग को महत्त्व देता है। उसे एक भी विनोद अच्छा नहीं लगता है। वह जहाँ भी जाता है, उसे वहीं सीता देवी दिखाई देती है। आई हुई नियति का निवारण कौन कर सकता है? अन्धकार में भी वह सीता का मुख सामने गढ़ा हुआ देखता है, उसे दशों दिशाओं में जड़ा हुआ देखता है। वह पानी भी पीता है तो वह ससीय (शीत सहित, सीता सहित) होता है। इस प्रकार रावण परवश हो उठा था। हाथ के दिए से दीप्त वह उपवन में इस प्रकार चला मानो प्रिय विरह की ज्वाला में जल गया हो।

घत्ता—जहाँ पर अंजना का पुत्र बालक हनुमान् निकट बैठा हुआ है, वहाँ रावण रति सुख कैसे प्राप्त कर सकता है कि जहाँ विधाता ही उसके प्रतिकूल है।

(20)

अथवा कामदेव अनुकूल भी हो, तो क्या सीता देवी का शील-दूषण हो सकता है? हे सुभट, क्या खद्योत के द्वारा सूर्य किरणों का आभूषण किया जा सकता है?

सीता देवी के सम्मुख विद्याधरराज इस प्रकार स्थित था, जैसे अपनी मरण-भवितव्यता के सामने जीव बैठा हो। वह (रावण) कहता है: यद्यपि आज सातवाँ दिन समाप्त हो गया है,

2. A दिव्ववत्थु। 3. AP देहि। 4. A णियडि परि°।

वित्थिण्णु मयरहरु कवणु तरइ तिमिगिलतग्गिलगिलियंगु[1] मरइ।
दुग्गमु तिकूडु गिरि कवणु चडइ कक्करि सयसक्करु होवि पडइ।
पायालपरिह जणजणियसंक भूगोयरु पइसइ कवणु लंक।
जइ चिंतहि कुलु तो तुहुं जि कासु पोसिय जणएं जणवयपयासु[2]।
जइ चिंतहि परिहउ तो सलग्घु हउं उत्तमु भुवणत्तइ महग्घु।
जइ चिंतहि एवहिं रामपेम्मु तो तहु दंसणि तुह[3] अण्णु जम्मु।
जइ चिंतहि सिरि तो हउं जि राउ किं लग्गउ तुज्झु सइत्तवाउ।
हलि वीणालाविणि मणविमद्दि महएवि महारी होहि भद्दि।

घत्ता—हलि सीय महारइ खग्गजलि आहंडलु वि णिमज्जइ॥
आलिंगहि मइं मुललियभुयहिं रामें किं किर किज्जइ॥20॥

21

दुवई—करिसिररत्तलित्तमोत्तियणियरंचियकेसरालओ॥
सनउ सीहि सीय ससहरमुहि किं रम्मइ सियालओ॥छ॥

अच्छउ स रामु लक्खणु हयासु दसरहु वि महारउ ताम दासु।
किं किज्जइ चरणविहूसणत्तु जइ लब्भइ हलि चूडामणित्तु।
किंकरमहिलहि किं तणुगुणेण[1] किं पाउयाहि मणिमंडणेण।

हे प्रिये, तुम अपने चित्त का संवरण क्यों नहीं करतीं? विस्तीर्ण समुद्र का संवरण कौन कर सकता है? तिमिगल मत्स्य को खानेवाले तग्गिल मत्स्य के द्वारा गिलितशरीर वह मर जाएगा। त्रिकूट पर्वत दुर्गम है, उस पर कौन चढ़ सकता है? गिरि रूपी दाँत पर पड़कर सौ टुकड़े हो जाएगा। पाताल की खाई लोगों को शंका उत्पन्न करने वाली है, कौन भूगोचर (मनुष्य) लंका में प्रवेश कर सकता है? यदि तुम अपने कुल की चिन्ता करती हो तो तुम किस की हो? जनपद में यह बात प्रकाशित है कि जन ने तुम्हारा पोषण किया है। यदि तुम अपना पराभव सोचती हो तो मैं तीनों भुवनो में श्लाघनीय उत्तम और आदरणीय हूँ। यदि इस समय तुम राम के प्रेम के विषय में सोचती हो उसके दर्शन में तुम्हारा दूसरा जन्म हो जाएगा। यदि तुम लक्ष्मी का विचार करती हो तो मैं भी राजा हूँ। हे वीणा के समान बोलने वाली, मन का विमर्दन करनेवाली भद्रे, तुम मेरी महादेवी हो जाओ।

घत्ता—हे सीता देखो, मेरी तलवार के पानी में इन्द्र भी डूब जाता है। अपनी सुन्दर भुजाओं से मेरा आलिंगन करो, राम से क्या लेना-देना।

(21)

हाथियों के सिर के रक्त से लथ-पथ मोतियों के समूह से जिसका अयाल अंचित है, ऐसे सिंह के विद्यमान रहते हुए, हे चन्द्रमुखी, क्या मृणाल से रमण किया जाएगा?

हताश राम और लक्ष्मण तो रहे, दशरथ भी हमारा दास है। हे सीते, जब चूड़ामणित्व प्राप्त होता है तो पैरों के आभूषण से क्या प्रयोजन? और फिर दास की स्त्री के शरीर गुण से क्या,

(20) 1. A °तगिल°। 2. AP जणवए पयासु। 3. AP हलि अण्णु।
(21) 1. AP किं किर गुणेण।

महु दासि वि तुहुं महएवि होहि लच्छिहि एंतिहि कोप्परु म देहि।
उरयलु मेरउं लालउ विसत्थु मा मुसलकिणंकिउ[2] होउ हत्थु।
अणुवसहुं एहि महुं पंजलीइ मा सलिलु वहहि फणिचुंभलीइ।
महु खग्गघायलंछणहरेण खंडें रहुवइसिरखप्परेण।
मा वहउ विणेउरु चरणजुयलु करमरि कालायसलोहणियलु।
थिय सइ णियपिययमलीणचित्त उत्तरु ण देंति पहुणा पउत्त।

घत्ता—पइं सीइ अज्जु तिलु तिलु करमि भूयहं देमि दिसाबलि॥
पर पच्छइ दूसह होइ महुं विरहजलणजालावलि॥21॥

22

दुवई—ता मंदोयरीइ दिण्णुत्तरु जंपसि सुयणगरहियं॥
किं तियसिदवंदकंदावण रावण जुत्तिविरहियं॥छ॥
हा पुरिस हुंति सयल वि णिहीण घरघरिणि जइ वि उव्वसिसमाण।
कामेण तइ वि ते खयहु जंति परघरदासिहि लग्गिवि मरंति।
कहि काइहि रत्तउ रायहंसु कहिं खरि कहि सुरकरिहत्थफंसु।
कहि भूगोयरि कहि खेयरिंदु हा मयणजोग्गपरिणाणि[1] मंदु।

---

पादुकाओं के मणि विभूषणों से क्या ? मेरी दासी होते हुए भी तू मेरी महादेवी बन। आती हुई लक्ष्मी को हाथ मत दे। तुम विश्वस्त हो मेरे उर का लालन करो। तुम्हारा हाथ मूसलों के चिह्नों से अंकित न हो, तुम मेरी अंजलि में आकर निवास करो, नाग के शिरोभूषण पर पानी मत डालो। मेरी तलवार के आघात के चिह्न को धारण करने वाले खंडित राम के सिररूपी खप्पर के साथ, नूपुर से रहित हे दासी, अपने पैरों को कालायस लौह श्रृंखला से युक्त मत कर। अपने प्रियतम में लीन चिह्न वह सती चुपचाप रह गई। उत्तर न देने पर राजा (रावण) ने कहा—

घत्ता—हे सीता, आज मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और भूतों को दिशाबलि छिटकवा दूंगा। फिर बाद में मेरी विरहाग्नि-ज्वाला असह्य हो उठेगी।

(22)

तब मन्दोदरी ने उत्तर दिया, हे इन्द्र को कंपानेवाले रावण, तुम सज्जनों के द्वारा निंदनीय और युक्ति से विरहित यह क्या कहते हो—

हत, सभी पुरुष नीच होते हैं। यद्यपि उनकी घरवाली उर्वशी के समान भी हो, फिर भी वे काम के द्वारा क्षय को प्राप्त होते हैं, और दूसरे के घर की दासी के लिए मरते हैं। क्या हंस कभी कौए की स्त्री में अनुरक्त होता है ? क्या कहीं ऐरावत की सूंड़ गधी का स्पर्श करती है ? कहाँ मनुष्यनी, और कहाँ विद्याधर राजा ? तुम कामशास्त्र के परिज्ञान में मंद हो। जिसने अन्धकार समूह को ध्वस्त कर दिया है, ऐसा चन्द्रमा जैसे गंगा में दिखाई देता है, वैसा ही नगर की जलवाहिनी में भी। कामुक लोग जो भी दुश्चरित्र करते हैं, वे महिलाओं में कुछ भी अन्तर

---

2. P मुसलु किणंकिउ।

(22) 1. A °परियाणि; P °परिमाणि।

दीसइ विद्ध सियतिमिरवंदु[2]　　जिह[3] गंगहि तिह वाहलहि चंदु।
महिलंतरु णर ण मुणंति किं पि　　कामुय करंति दुच्चरित्तु जं पि।
ना णियघरु गउ लज्जिवि दसासु　　मयसुय ढुक्की जाणइहि पासु।
अवलोइय सीयाएवि ताइ　　णं जलहिवेल ससहरकलाइ।
णं विउसमईइ [4]सुकइत्तलील[5]　　णं स ज्जि ताइ सुविसुद्धसील[6]।
ओलक्खिय पयजुयलंछणेण　　जा चिरु घल्लिय णिंदिय जणेण।
मंजूसइ सहुं कत्थइ वणंति　　सरिसरसीयलसिंचियदियंति।

घत्ता—हा अघडिउं[7] घडिउं विहायएण इंदीवरदलणयणहु ।।
आणिय सा मेरी एह सुय कालरत्ति दहवयणहु ।।22।।

23

दुवई—[1]जणणसुयाहिलासणियवइखयचिंतामउलियच्छिया ।।
मेइणियलि दड त्ति णिवडिय मंदोयरि दुस्सहदुक्खमुच्छिया[2] ।।छ।।

पच्छाइय कामिणिकरयलेहिं　　सिंचिय सुयंधसीयलजलेहिं।
विज्जिय[3] पडिचमरुक्खेवएहिं　　आसासिय चंदणलेवएहिं।
कह कह व देवि सज्जीव जाय　　भणु कासु अवच्छल[4] होइ माय।
मुहकुहरहु वियलिय महुर वाय　　हा सीय पुत्ति तुहुं महुं जि जाय।
हा विलसिउ किं[5] विहिणा खलेण　　वोलीणु[6] जम्मु दुक्कियफलेण।

नहीं करते। रावण तब लज्जित हो कर अपने घर चला गया। मंदोदरी सीता देवी के पास पहुँची। उसने सीता देवी को इस तरह देखा मानो चन्द्रमा की कला ने समुद्र को देखा हो, मानो विद्वान् की मति ने सुकवित्व की लीला को देखा हो, मानो उसी ने (सुकवित्व की क्रीड़ा ने) सुविशुद्ध-शील व्यक्ति को देखा हो। दोनों पैरों के चिह्नों से उसने (मन्दोदरी ने) पहिचान लिया कि लोगों द्वारा निंदित जिसे पहिले मंजूषा के साथ नदी सरोवर से शीतल और सिंचित वन के भीतर कहीं फेंक दिया था (यह वही है)।

घत्ता—हा, विधाता ने अघटित को घटित कर दिया। उसने मेरी वह पुत्री ला दी जो नील कमल के समान नेत्र वाले रावण के लिए काल रात्रि के समान है।

(23)

पुत्री की अभिलाषा और अपने पति के विनाश की चिन्ता से जिसकी आँखें मुकुलित हैं, ऐसी मन्दोदरी असह्य दु.ख से मूर्च्छित होकर धरती तल पर शीघ्र गिर पड़ी।

बाद में कामिनियों के करतलों और सुगंधित शीतल जलों से सिंची जाने, प्रतिचमरों के उत्क्षेपों से हवा किए जाने पर और चंदन के लेपों से वह देवी किसी प्रकार से होश में आई। उसके मुखविवर से मधुर वाणी निकली—हे सीता पुत्री, तू मुझसे उत्पन्न हुई थी। हा, दुष्ट विधाता ने क्या किया! दुष्कृत के फल से तुम्हारा जन्म बीत गया। पिता का चित्त तुम पर अनु-

2. A तिमिरचंदु। 3. P omits जिह। 4. P सुकइत्तणेण। 5. P adds after this : णं जिणवरधम्मु अहिंसणेण। 6. P adds after this : णं सुरसरीइ मयरहरलील। 7. P अयडिउं।

(23) 1. A जणणि। 2. A omits दुस्सह°। 3. AP विजिय। 4. A ण वच्छल। 5. AP विहिणा किं। 6. A वोलीणजम्मि; P बोली णुजम्मि।

तुज्झुप्परि रत्तउ तायचित्तु हा दइवें विहुरंतरि णिहित्तु।
इय सोयभावणिम्मोयणाइं वाहुल्लकणोल्लइं[7] लोयणाइं।
पेच्छिवि सीयाइ सदुक्ख[8] रुण्ण मंदोयरिथणणीसरिउ थण्ण[9]।

घत्ता—आसण्णइ थिइ विहववत्तणइ एंतउ सीयइ जोइउं[10]॥
थण मेल्लिवि रामणगेहिणिहि हारु व खीरु पधाइउं[11] ॥23॥

24

दुवई—णिम्मलसीलसलिलभरवाहिणि णिच्छह[1] णिययदेहए[2]॥
जाणइ[3] तेण सीयदुद्धोहें जिणपडिम[4] व्व रेहए॥छ॥
तं कि सीयलु रहुवइअसंगि णिवडतु दुद्धु सिमिसिमइ अंगि।
खगवइकंतइ पुणरवि पवुत्तु मा इच्छहि पुत्ति पुलत्थिपुत्तु।
हउं जणणि तुहारउ[4] जणणु एहु ता सीयहि रोमंचियउ देहु।
वुत्तउं पइवयगुणदिण्णछाइ सच्चउं तुहुं मेरी माय माइ।
सच्चउं दहमुहु महु होइ बप्पु णासिवि तहु केरउ दुव्वियप्पु।
मइं पेसहि रामहु पासि ताम कुडि मेल्लिवि जाइ ण जीउ जाम।
जणणीइ पवोल्लिउ रामरामि कुरु भोयणु पुत्तिइ मज्झखामि।
आहारें अंगु अणंगधामु अंगें होंतें पुणु मिलइ रामु।

रक्त है। हा, विधाता ने तुम्हें दुःखों के भीतर डाल दिया। इस प्रकार शोकभाव के कारण जिनका आमोद (हर्ष) चला गया है, ऐसे तथा वाष्प-कणों से आर्द्र नेत्रों, तथा मन्दोदरी के स्तनों से रिसते दूध को देखकर सीता देवी फूट-फूट कर रो पड़ी।

घत्ता—वैधव्य के निकट होने पर आते हुए दूध को सीता देवी ने इस प्रकार देखा, मानो स्तन को छोड़ कर दूध हार के समान दौड़ा हो।

(24)

निर्मल शील रूपी जल के भार की वाहिनी अपने ही शरीर में निस्पृह सीता उस शीतल दुग्ध प्रवाह से जिन प्रतिमा के समान शोभित थी।

राम का संगम न होने के कारण गिरता हुआ भी वह शीतल दूध शरीर पर रिम-झिम ध्वनि कर रहा था (शरीर की उष्णता के कारण)। विद्याधर की पत्नी मंदोदरी ने पुनः कहा—हे पुत्री तुम रावण को मत चाहो, मैं तुम्हारी माँ हूँ, और यह तुम्हारा पिता है। तब सीता का शरीर पुलकित हो उठा। वह बोली—जिसने पतिव्रत गुण को आश्रय दिया है, ऐसी हे आदरणीया, क्या सचमुच तू मेरी माँ है? सचमुच दशमुख मेरा पिता होता है, तो उसके दुर्विकल्प को नष्ट कर तुम मुझे तब तक राम के पास भिजवा दो, जब तक जीव इस शरीर को छोड़ कर नहीं जाता। माता मंदोदरी बोली—हे मध्यक्षीण रामपत्नी, मेरी पुत्री, तुम भोजन करो, आहार से ही शरीर

7. AP वाहंबुकणोल्लइं। 8. A सुदुक्खरुण्णु, P सदुक्खु रुण्णु। 9. AP थण्णु। 10. P जोइयउं। 11. P पधाविउं।

(24) 1. AP णिच्छिह। 2. A णियइ। 3. AP सित्त तेण दुद्धोहें। 3. A जिणपडिबिंब। 4. A तुहारी।

इय भणिवि देवि गय णियणिवासु हियवउ हरिसिउं अंजणसुयासु ।
महिवइभिच्चहं घल्लिवि रउद्दु चेयण चप्पंति महंत णिद्द ।
समरंगणि णिज्जियअरिवरेण लहुं धरिउ वाणरायारु तेण ।
घत्ता—अविहियण्हाणहि णिरु णिरसणहि मलिणहि मइलियवत्थहि ॥
सो सीयहि रामविओइयहि[5] गंडयलासियहत्थहि ॥24॥

25

दुवई—लक्खणु पेक्खमाणु भारहियहि सणियं[1] पयइं देंतओ ॥
ढुक्कइ[2] कइवरिंदु तहि णियडइ कइगुण अणुसरंतओ ॥छ॥
पत्तलवट्टुलयरत्तवकण्णु णवकणयकंजकिंजक्कवण्णु ।
सिहिविप्फुलिंगचलपिंगलच्छु णीरोमभउहु लंबंतपुच्छु[3] ।
ससिकंतिवंततिक्खग्गदंतु[4] कयकरजुयलंजलि बुक्करंतु ।
अवलोइउ देविइ पमउ एंतु थिउ अग्गइ पयपंकय णमंतु ।
तेणंबहि[5] दाविउ[6] दइयणेहु सहु अंगुत्थलियइ घित्तु लेहु ।
परमेसरि मइं रंजियमणासु परियाणहि पुत्तु पहंजणासु ।

कामदेव का धाम बनता है। शरीर होने पर राम फिर से मिल सकते हैं। यह कहकर देवी अपने निवास स्थान पर गई। पवन-अंजना के पुत्र का हृदय प्रसन्न हो उठा। महापति (रावण) के अनुचरों को भयंकर नोद देकर और उनकी महान चेतना शक्ति को चाँपते हुए, समर-प्राँगण में शत्रुओं को जीतने वाले हनुमान् ने शीघ्र वानर का रूप धारण कर लिया।

घत्ता—जिसने स्नान नहीं किया है, जो भोजन से अत्यन्त रहित है, जो मलिन है, जिसके वस्त्र मैले है, जो राम से वियुक्त है, जिसका हाथ गंड-स्थल पर आश्रित है, ऐसी सीता—

(25)

भारती (सीता और कवि की वाणी) के लक्षणों को देखते हुए और धीरे-धीरे पथ (पद और चरण) देते हुए वह कपीन्द्र हनुमान् कई गुण (कविगुण, कपिगुण) का अनुसरण करते हुए उनके निकट पहुँचा।

जिसके कान पतले और एकदम लाल और गोल हैं, जो नव स्वर्ण कमल के पराग के समान रंग वाला है। आग के स्फुलिंग के समान जिसकी पीली आँखें हैं, जिसकी भौहें बिना रोम की हैं, और जिसकी पूँछ लम्बी है, जिसके आगे के दाँत तीखे चन्द्रमा की कांति के समान हैं, जिसने दोनों हाथों से अंजलि बाँध रखी है, जो बुक्कार कर रहा है, ऐसे बंदर को देवी ने आते हुए देखा। चरणकमलों को प्रणाम करता हुआ, वह आगे आकर स्थित हो गया। उसने सीता के लिए पति के प्रेम को बताया और अंगूठी के साथ लेख रख दिया। वह बोला—हे परमेश्वरी, तुम मुझे मन को रंजित करने वाले प्रभंजन का पुत्र, राम का दूत समझो। मेरा नाम हनुमान् है। मैं श्रेष्ठ

5. P रामविलइयहि ।

(25) 1. A सणियइं। 2. A ढुक्कउ। 3. P °पुंछु। 4. AP ससिकंतकंति। 5. A तेणं तहिं। 6 AP दाविय°।

रामहु दूयउ हणुवंतणामु[7] विज्जाहरुवरु वीसमउ कामु।
तुह विरहझीणु मायंगगामि पइ सुमरइ अणुदिणु रामसामि।

घत्ता—णउ बोल्लइ ण परिग्गहि रमइ का वि णारि णालोयइ।।
जोईसरु सासइ सिद्धि जिह तिह पइं पइ[8] णिज्झायइ।।25।।

26

दुवई—दहमुहकुइयचित्तु अवलोयइ असिझसपरुमपहरणं[1]।।
लक्खणु खणु वि माइ णउ मेल्लइ तुह कमकमलसुंयरणं[2]।।छ।।

ता सीयइ चिंतिउ णियमणेण णिल्लक्खण हउं कि लक्खणेण।
महु हयरामहु कहि मिलइ रामु कहिं वाणरु कहि भत्तारु[3] णामु।
कहिं वाणरु कहिं भिच्चत्तु पत्तु आलिहियउं कहिं आणियउं पत्तु।
परिचिंतिवि[4] महु भोयणउवाउ रिउरइउ एहु मायासहाउ।
जाणिवि[5] वइदेहिहि अंतरंगु पुणु भासइ सुइसुहयरु अणगु।
सुणि रामदूउ हउं कह ण होमि गूढइ अहिणाणवयाइं देमि।
एक्कहि दिणि पइं किउ पणयकोउ छिंकिउ[6] राहवु अणुहुत्तभोउ।
वलउल्लउ चप्पिउं[7] सहु करेण पइ णिद्धणाहणेहायरेण।

---

विद्याधर और बीसवाँ कामदेव हूँ। विरह से क्षीण और गजगामी राम स्वामी तुम्हें प्रतिदिन याद करते हैं।

घत्ता—वह न बोलते हैं, और न परिग्रह में रमते हैं, किसी स्त्री को नही देखते। जिस प्रकार योगीश्वर शाश्वत सिद्धि को देखता है, उसी प्रकार वह तुम्हारा ध्यान करते हैं।

(26)

दशमुख के प्रति जो कुपित चित्त है, ऐसा लक्ष्मण असि झस और फरसे के प्रहार को देखता है, और हे आदरणीया, वह एक क्षण के लिए भी तुम्हारे चरणकमलों के स्मरण को नही छोड़ता।

तब सीता ने अपने मन में सोचा कि मैं लक्षणहीन हूँ, लक्षण (लक्ष्मण) से क्या? हत-सौंदर्य मुझसे राम कहाँ मिलेंगे? कहाँ वानर और कहाँ स्वामी राम? कहाँ वानर? और कहाँ अनुवरत्व को प्राप्त हुआ पत्र? कहाँ पत्र लिखा गया और कहाँ लाया गया? लगता है मेरे भोजन के उपाय की चिंता कर, यह शत्रु द्वारा रचित माया स्वभाव है। तब वैदेही के मन की बात जानकर कामदेव हनुमान् कानों को मधुर लगने वाला कथन करता है—सुनो, मैं रामदूत कैसे नहीं हूँ? मैं तुम्हें गूढ़ अभिज्ञान वचन देता हूँ। एक दिन तुमने प्रणय कोप किया था। तुमने अनुभुक्त भोग राम को छिःछिः किया था। स्नेही राम ने स्नेह और आदर के साथ हाथ से कड़ा चांपा था।

---

7. A हणुमतु; P हणवतु। 8. P पइ पणइणि झायइ।

(26) 1. AP °परमु°। 2. A सुमरणं। 3. AP भत्तार। 4. P परिचिंतइ। 5. P आणिवि। 6. A जक्किउ; P छिक्किउ। 7. A चंपिउ।

घत्ता—हारावलि थणयलि संजमिय णयणइं वि सताविच्छइं ॥
पइं वियसियकुसुमइं सिरि कयइं पइजीवियणेवत्थइं[8] ॥26॥

27

दुवई—णियवइ[1] चित्ति धरिवि[2] पसरियजसु कउ मिसु णिसुउ रहुसुओ ॥
मंदिरपंजरत्थु जयजीवरवेण पसाइओ[3] सुओ ॥छ॥

अभणंतिइ[4] रहुपहु जीयभद्दु पुणु रइउ तिलउ कुंकुमरसद्दु ।
थिरु चियउ[5] सवणि कणयवत्तु जइयहुं थिउ पिउ उववणि रमंतु ।
णासाणालिहि परिमलु पियंतु दलवेल्लहलउ[6] वेल्लिउ णियंतु ।
फलघणथणाउ[7] अंकुरणहाउ फुल्लंधयलीलालयसुहाउ[8] ।
पल्लवकराउ महुरत्तियाउ णावइ वसंतरायहु तियाउ ।
तइयहु तुह मण[9] ईसाविहिण्णु[10] णाइद्धउ कंचुउ दइयदिण्णु ।
परिहिउ[11] पणामवित्थारएण फुट्टउं पुलएं गरुआरएण ।[12]
परिपालियधम्मसउच्चसच्चु ता सीयइ बुज्झिउ रामभिच्चु ।
करपल्लवेण पियलेहु गहिउ मेल्लेप्पिणु वाइउ कवडरहिउ ।
मणु पसरइ कर पसरंति णेय[13] को जाणइ दुज्जयकम्मभेय ।

---

घत्ता—तुमने हारावलि को स्तनों पर संयत किया था, नेत्रों में काजल लगाया था। तुमने खिले हुए फूल सिर में खोंसे थे जो कि प्रिय के जीवित होने के आभूषण थे।

(27)

दुवई—चित्त में प्रसरित यश वाले अपने पति को धारण कर, तुमने राम के लिए मंगल शब्द किया था कि रघुसुत नरों में विख्यात हैं। अपने घर के पिंजड़े में स्थित शुक को 'जय जीव' शब्द से प्रसाधित किया था।

रघुपति की जय हो, कल्याण हो, यह नहीं कहते हुए तुमने केशर से गीले तिलक की रचना की थी। और अपने कानों में स्थिर कर्ण फूल धारण किया था। उस समय प्रिय उपवन में रमण करता हुआ, अपनी नासिका रूपी नली से सौरभ पीता हुआ, कोमल पत्तों वाली उन लताओं को देख रहा था जो फलों के सघनस्तनों वाली थी, अंकुर ही जिनके नख थे, जो भ्रमरों की लीलाओं से शोभित थीं, पल्लव जिनके हाथ थे, मधु में अनुरक्त जो मानो वसंतराज की स्त्रियाँ थीं। तब तुम्हारा मन ईर्ष्या से फट गया था और प्रिय के द्वारा दिया गया वस्त्र तुमने नहीं पहना था। उनके प्रणाम करने पर पहना था, पर भारी पुलक के कारण वह फट गया था। तब सीता को समझ में आया कि जिसने विश्वास धर्म पवित्रता और सत्य का पालन किया है ऐसा यह राम-अनुचर है। उसने अपने करपल्लव में लेखपत्र ले लिया, और उसे खोल कर पढ़ा, मन फैलता है, परन्तु हाथ नहीं फैलते। अजेय कर्मभेद को (रहस्य को) कोई नहीं जानता, दूर रहते हुए भी हे

---

8. P पयजीविय° ।

(27) 1. A णियपइ । 2. P वरिवि । 3. AP पसाहिओ । 4. A अभणति परहु । 5. A थवियउ; P थविय । 6. हलवेल्लिहलउ; P दलवेल्लहलउ । 7. AP °घणघणाउ अंकुरहणाउ । 8. AP फुल्लधयणीलालयसुहाउ । 9. AP मणु । 10. P ईसाविहिल्ल । 11. A परहिउ । 12. P वित्थारएण । 13. A एण ।

दूरत्थ वि गाढउ देवि खेमु णियकुसलवत्त हउं कहमि रामु ।
मणवासिणि दहरहरायसुण्हि[14] लइ सव्वु चारु सरयंदजोण्हि[15] ।

घत्ता—धीरी होज्जसु हलि जणयनुए भडरणरंगि भिडेप्पिणु ॥
ढोएवी तुहुं महुं बंधविण दससिरसीमु खुडेप्पिणु ॥27॥

28

दुवई—अणुदिणु लच्छिणाहु पइ सुमरइ[1] तसियकुरंगलोयण ॥
झायवि तिजगसामि णिवसिज्जसु काइवय दियह परयणे[2] ॥

तूसेप्पिणु[3] सीयइ अद्दुईउ ता कउ अगुलियहि अगुलीउ ।
कइ पुच्छिउ लंघियविउलखयलु तेण वि अक्खिउ वित्तंतु सयलु ।
विण्णविय देवि लइ भत्तु पाणु विणु तेण ण थक्कइ मणुयपाणु[4] ।[5]
तं तासु वयणु पडिवण्णु ताइ गउ पावणि सूरुग्गमि पहाइ ।
सीयासुंदरिहि खगोयरीइ उवयरिउ चारु मंदोयरीइ ।
अइरावयलीलागामिणीहि मज्जणउं भरिउ खगकामिणीहि ।
पल्हत्थियाइं तत्तइ जलाइ कि तावियाइ जइ णिम्मलाइ ।
णियकुलु वि डहइ णिग्घिणु हुयासु[6] कह खमइ विवक्खहि जणियतासु ।
तिलमुक्कें तेल्लें मुक्क केस विणु तिलसंबंधे गुहि वि वेस[7] ।

देवी, मेरा प्रगाढ आलिंगन है। मैं राम अपनी कुशलवार्ता कहता हूँ। मन में बसने वाली हे दशरथ राज की वधू, शरद की चाँदनी में सब सुन्दर होगा ?

घत्ता—हे जनकसुते, तुम्हें धैर्य धारण करना होगा. योद्धाओं के युद्धरंग में भिड़कर, रावण का सिर काटकर, मेरे भाई के द्वारा लाई जाओगी।

(28)

हे त्रसित हरिण के समान नेत्र वाली, लक्ष्मण तुम्हें दिन-रात याद करता है, त्रिजगस्वामी का ध्यान कर कुछ दिन तुम शत्रुजनों में निवास करो।

तब सीता ने सतुष्ट होकर, उस अद्वितीय अंगूठी को अपनी अंगुली मे पहिन लिया और विशाल आकाशतल को पार करने वाले वानर से पूछा। उसने भी समस्त वृतान्त कह सुनाया। उसने निवेदन किया—हे देवी, भोजन जल ग्रहण करो, उसके बिना मनुष्य के प्राण नही ठहरते। उसने उसका वचन स्वीकार कर लिया। सवेरे सूर्योदय होने पर हनुमान् चला गया। विद्याधरी मंदोदरी ने सीता सुन्दरी का सुन्दर उपकार किया। एरावत की चाल से चलने वाली विद्याधर सुन्दरियों ने स्नान कराया। गर्म जल निकाला गया। यदि वह निर्मल है तो जल को गर्म क्यों किया गया ? निर्दय अग्नि अपने कुल को भी जला देती है, तो फिर वह त्रास उत्पन्न करने वाले विपक्ष को कैसे क्षमा कर सकता है ? तिल मुक्त तेल से उसने बाल खोले। बिना स्नेह संबंध के

14. A °सुण्ह । 15. A °जुण्ह ।

(28) 1. A सुअरइ । 2 A परवणे, P परियणे । 3. P रूसेप्पिणु । 4. AP मणुअपाणु । 5. AP add after this : आहारे अगु अणगधामु, अगें होंते पुणु मिलइ रामु । 6. A हयासु । 7. AP सेस ।

किं पुणु धम्मिल्लय कुडिलभाव    हरिणीलणील हयभमरगाव ।
घत्ता—सण्हइं चोक्खइं ससहरसियइं राहवजससंकासइं ।।
दीहरइं[8] सुविउलइं सुहयरइं देविहि दिण्णइं वासइं ।।28।।

29

दुवई—थिय परिहिवि[1] मयच्छि ण पसाहणु गेण्हइ पियविओइया ।।
ताव रसोइ सव्व तहिं आणिय[2] मंदोयरि पराइया ।।छ।।
वंदिवि[3] जिणि मणि समसुहपयट्टि    आसीण भडारी रयणपट्टि ।
कलहोयथालकच्चोलपत्त[4]    ण धरणिवीढि णक्खत्त पत्त ।
उण्हुण्हउं दिण्णउ पढमपेउ    णं दाविउ दहमुहि[5] विरहवेउ ।
ण तिक्खु मिट्ठु मलदोसणासु    ण भासिउ परमजिणेसरासु ।
पुणु दिण्णइं णाणासालणाइं    ण दहमुहरइआसालणाइं ।
आणेप्पिणु घल्लिउ दीहु कूरु    णं दहमुहि[5] सीयाभाव कूरु ।
ढोइयउ समुव्वइ रसवहाइं    णं दहमुहि[5] सीयारइवहाइं ।
उवणिय घियधार महासुयंध    दहमुहि[5] सीयादिट्ठि व सुअंध ।
णिण्णेहत्तु णिरु मंदु तक्कु    णं दहमुहि[5] सीयामणवियक्कु ।

---

मुनिजन से भी द्वेष हो जाता है, फिर कुटिल स्वभाव वाली चोटी के बारे में क्या कहना ? हरि और नील के समान नीली वह, भ्रमर के गर्व को नष्ट करने वाली थी।

घत्ता—सूक्ष्म, उत्तम चन्द्रमा की तरह श्वेत, राम के यश की तरह लम्बे, विपुल और शुभतर वस्त्र सीता देवी के लिए दिए गए।

(29)

वह मृगनयनी वस्त्र पहिनकर बैठ गई। प्रिय से वियुक्त होने के कारण देह प्रसाधन ग्रहण नहीं करती। इतने में वहाँ सब प्रकार की रसोई ला दी गई। मंदोदरी भी वहाँ पहुँची।

अपने सम और शुभ प्रवृत्ति वाले मन में जिनदेव की वंदना कर आदरणीया सीता रत्नपट्ट पर आसीन हो गई। स्वर्ण के थाल और कटोरी पात्र ऐसे लग रहे थे, मानो धरती पर नक्षत्र प्राप्त हुए हैं। पहले गर्म-गर्म पेय दिया गया, मानो रावण के लिए विरह वेग दिखाया गया हो, जो मानो तीखा, मीठा और मल दोष का नाश करने वाला था। मानो जिनेश्वर का कथन था। फिर उन्हें तरह-तरह के शालन दिए गए, जो मानो रावण के लिए रति की आशा दिखाने वाले थे। लाकर खूब भात दिया गया मानों रावण के मुख में दुष्ट सीता का भाव हो। रसदार सुन्दर दाल दी गई, मानो रावण के मुख में सीता की रति का प्रवाह हो। अत्यन्त सुगंधित घी की धारा लाई गई, जो मानो दशमुख में सीता की अत्यन्त सुगन्धित रसदृष्टि हो। स्नेह (चिकनाई) से रहित, अत्यन्त कोमल तक्र (मट्ठा) दिया गया मानों दशमुख में सीता का विमुक्त मन हो।

8. A दीहयरइं।

(29) 1. A परिहुवि। 2. AP पराणिया। 3. AP वंदिवि जिण मणि। 4. AP चित्त। 5. A दहमुह°। 6. A घइढगव्वु।

उवणिउ माहिसु दहि थड्ढु[6] गव्वु णं दहमुहि सीयामाणगव्वु ।
उवणिउ बहुविहु बोराइपाणु[7] णं दहमुहरमणहु कोसपाणु ।
अइसरसइं भक्खइं चक्खियाइं णं दहमुहि सर सइं भक्खियाइं ।
कइकव्वु व कयमत्तापवाणु[8] भोयणु भुत्तउं खीरावसाणु ।
अच्चवियउं[9] पुणु मुद्धहि विहाइ पाणिउं दिण्णउं दहमुहहु णाइ ।

घत्ता—पूयफलेण सचुण्णएण पत्तगुणेण समग्गउ ।।
तंबोलराउ रामु व सइहि छज्जइ अहरविलग्गउ ।।29।।

30

दुवई—इय भुंजेवि भोज्जु भूमीसुय सीलगुणंबुवाहिणी ।।
थिय णंदणवणंति सीसवतलि[1] सीरहरस्स गेहिणी ।।छ।।

एत्तहि हणुमंतु[2] वि पत्तु तित्थु अच्छइ दुग्गतरि रामु जेत्थु ।
हा सीय सीय सकलुणु कणंतु[3] णियकरयलेण उरु सिरु हणंतु ।
बोल्लाविउ मारुइ तें कयत्थु मउडग्गचडावियउहयहत्थु[4] ।
भणु किं दिट्ठउं सिसुहरिणणेत्तु किं णउ कुमार मेरउं कलत्तु ।
किं मुच्छिउ णिवडइ जीवचत्तु किं महुं विरहें पचत्तु पत्तु ।

भैंस का गाढ़ा दही लाया गया, मानो दशमुख में सीता का मान गर्व हो। अनेक प्रकार का बेरादि का पानी लाया गया, जो मानो दशमुख के रमण के कुसुम्भ रंग का पान था। इस प्रकार अत्यधिक सरस खाद्य पदार्थों को उसने चखा मानो दशमुख में कामानुबद्ध वचन स्वयं खा लिए गए हों। कवि के काव्य के समान जिसमें मात्रा का प्रमाण किया गया था। फिर मुग्धा के लिए आचमन हेतु दिया गया पानी ऐसा शोभा देता था, मानो दशमुख के लिए पानी दिया गया हो।

घत्ता—चूने से सहित पत्र (पात्र, पान) के गुण और सुपाड़ी से समग्र अधरों पर लगा हुआ ताम्बूल राग उस सती के लिए राम के समान शोभित होता था।

(30)

शील जल की नदी पृथ्वी-सुता श्रीराम की पत्नी सीता इस प्रकार भोजन कर नंदन वन में शिशपा वृक्ष के नीचे बैठ गई।

इधर हनुमान् भी वहाँ पहुँचा जहाँ दुर्ग के भीतर राम थे। हा सीते हा सीते कहकर करुण रुदन करते हुए तथा अपने हाथ से उर और सिर पीटते हुए उन्होंने, जिसने अपने दोनों हाथ मुकुट के अग्र भाग पर चढ़ा रखे हैं ऐसे कृतार्थ हनुमान् से पूछा—हे कुमार बताओ तुमने शिशुमृगनयनी मेरी स्त्री को देखा या नहीं? मेरे विरह में मूच्छित पड़ी है, या कि त्यक्त जीवन वह मृत्यु को प्राप्त हो गई है? यह सुनकर हनुमान् ने कहा—हे देव मैंने जानकी को जीवित देखा है। कलिकृतांत रावण को सीता देवी से सकाम वचन कहते हुए देखा है। प्रिय कहती हुई तथा देवी के मन की

7. P कोराइपाणु । 8. A कइमत्तावपाणु; P कयमत्तापमाणु । 9. AP अचवियउं ।
(30) 1. P सीसवयलि । 2. A हणवंतु । 3. A रुयंतु । 4. A उभयहत्थु ।

तं णिसुणिवि हणुएं उत्तु एव　　दिट्ठी जाणइ जीवंति देव ।
दिट्ठउ रावणु णं कलिकयंतु　　सीयहि सकामबयणाइं देंतु ।
दिट्ठी मंदोयरि पिउ चवति　　देविहि हियउल्लउं संथवंति ।
अवरु वि दिट्ठउं आरामहंतु　　उप्पण्णउ चक्कु पहाफुरंतु[5] ।

घत्ता—सिरिमंतु सरूवु[6] वि दहवयणु सीयहि मणु णासंघइ ।।
भरहुप्परिगामिय तेयणिहि पुप्फयंत[7] को लंघइ ।।30।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सुग्गीवहणुवंतकुमारागमणं[8]
सीयादंसणं णाम तिसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ।।73।।

---

संस्तुति करती हुई मंदोदरी देवी को देखा है। और भी मैंने देखा है—आराओं की महान् प्रभा से चमकता उत्पन्न हुआ चक्र।

घत्ता—श्रीसम्पन्न एवं रूपवान् होकर भी रावण सीता के मन का आश्रय नहीं पा सका। भारत के ऊपर जाने वाले तेजनिधि सूर्य चन्द्र का उल्लंघन कौन कर सकता है ?

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदंत द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का सुग्रीव-
हनुमान्-कुमारागमन-सीतादर्शन नाम तेहत्तरवां
परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

5. AP महाफुरंतु। 6. AP सुरूवु। 7. P पुप्फयंतु। 8. A हणवंतकुमारगमणं णाम तिहत्तरिमो।

# चउहत्तरिमो संधि

परह ण देइ मणु अवसें मउलइ सकलंकहो ।।
फुल्लइ पउमिणिय करफंसें कहि मि मियंकहो[1] ।।ध्रुवकं ।।

1

हेला- सीयादेवि देव दीहुण्ह णीससंती ।।
सुमरइ तुह पयाइं भत्तारभत्तिवंती ।।छ।।

सिरि व उविंदहु सरि व समुद्दहु[2] ।
मेत्ति[3] व णेहहु मोरि व मेहहु[4] ।
भमरि व पोमहु संति व सामहु ।
करिणि व पीलुहि करहि[5] व पीलुहि ।
विउसि व छेयहु हरिणि व गेयहु ।
णववणकतहु[6] जंव वसंतहु ।
सुमरइ कोइल धीरत्ते इल ।
जिणगुण[7] जाणइ तिह तुह जाणइ ।

## चहत्तरवीं संधि

(कमलिनी सीता) दूसरे के लिए मन नहीं देती। वह सकलंक (चन्द्रमा और रावण) से अवश्य ही मुकुलित होती है। क्या चन्द्रमा के करस्पर्श से कमलिनी कभी भी खिल सकती है।

(1)

हे देव, लम्बे और उष्ण उच्छ्वास लेती हुई तथा पति के प्रति भक्ति से ओत-प्रोत सीता देवी तुम्हारे चरणों को याद करती हैं, जिस प्रकार लक्ष्मी उपेन्द्र को, जिस प्रकार नदी समुद्र को, जिस प्रकार मैत्री स्नेह को, मयूर मेघ को, भ्रमरी कमल को, जिस प्रकार शान्ति साम को, जिस प्रकार हथिनी हाथी को, जिस प्रकार ऊँटनी पीलू वृक्ष को, जिस प्रकार विदुषी चतुर व्यक्ति को, हरिणी गेय को तथा कोयल नवीन वन से मनोहर वसन्त को याद करती है, धैर्य से जिस प्रकार इला और जिन गुण को जानती है, उसी प्रकार जानकी तुम्हें जानती है।

(1) 1. A मयंकहो। 2. P adds after this : महि व णरिंदहु, सइ व सुरिंदहु। 3. A मित्तिय। 4. A मोरहु। 5. AP हिरि व सुसीलहिं। 6. AP णववहुकंतहु। 7. AP read *a* as *b* and *b* as *a*।

तुह सा राणी खंतिसमाणी ।
भव्वहं रुच्चइ खणु वि ण मुच्चइ ।
लक्खणचिंतइ बहुजसवंतइ[8] ।
वरकइवित्ति[9] व धम्मपवित्ति व ।
समसंपत्ति व साहसथत्ति व ।
कुलहरजुत्ति व जिणवरभत्ति व[10] ।
णिरु परलोइणि तुह सुहदाइणि ।
सा आणिज्जइ रिउ मारिज्जइ ।

घत्ता—विरहहुयासहउ पियवत्तइ सुइवहढुक्कइ ।।
वियसिउ रामदुमु णं सित्तउ अमियझलक्कइ[11] ।।1।।

2

हेला—गाढालिंगिऊण रामेण पवणपुत्तो ।।
सीयासंगमो व्व हरिसेणेव[1] वुत्तो ।।छ।।

तुह समु किं भण्णइ अवरु णरु अंजणिसुय[2] सुहिविहुरहरु ।
तुह महु मणकमलहु दिवसयरु विरहावइणिवडणधरणतरु[3] ।
जलु थलु णहयलु तुह गम्मु जहिं वण्णेव्वउ कज्जु समत्तु तहिं ।
तहिं अवसरि रूसिवि अतुलबलु सिरिणाहें जोइउ भुयजुवलु ।

---

तुम्हारी वह रानी आर्यिका के समान है, वह भव्यों को अच्छी लगती है, एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ी जाती, जो अत्यधिक जय (जनादि प्रत्यय, यश) वाली, लक्खन की चिन्ता (व्याकरण की चिन्ता, लक्ष्मण की चिंता) के द्वारा श्रेष्ठ कवि की वृत्ति के समान है। जो धर्म की पवित्रता के समान, समता रूपी सम्पत्ति के समान, साहस की स्थिरता के समान, कुलगृह की युक्ति के समान, जिनवर की भक्ति के समान है, जो पर को आलोचना करने वाली है, और तुम्हें सुख देने वाली है, ऐसी उसे लाया जाए और शत्रु को मारा जाए।

घत्ता– रामरूपी जो वृक्ष विरह की आग में जल चुका था, कर्ण-पथ पर प्राप्त प्रिया की वार्ता से वह इस प्रकार विकसित हो गया मानो अमृत की धारा से सिंचित हो।

(2)

पवनपुत्र का प्रगाढ आलिंगन लेकर राम ने मानो हर्ष के द्वारा ही अपना सीता-संगम व्यक्त कर दिया।

हे अंजनापुत्र, दूसरा तुम्हारे समान क्यों कहा जाता है! तुम सुधीजनों का संकट दूर करने वाले हो। तुम मेरे मन रूपी कमल के लिए दिवाकर हो, विरह की आपत्ति में पड़ने वाले को बचाने के लिए आधार वृक्ष हो। जहाँ जल स्थल और आकाश तुम्हारे लिए गम्य है वहाँ मैं कहता हूँ कि सारा काम समाप्त है। उस अवसर क्रोध करते हुए लक्ष्मण ने अपना अतुल-बल

---

8. A °जसवतिइ । 9. AP °कइ° । 10. AP add after this : सज्जणमेत्ति व । 11. AP अमय° ।

(2) 1. AP हरिसेण एम वुत्तो । 2. AP अंजणसुय । 3. A °धरणि° ।

बलएवहु पायपोमु णवइ कोवारुणच्छु लक्खणु[4] चवइ ।
मइं रवियरदारियतिमिरबलि हणवंतु[5] णेइ जइ गयणयलि ।
जइ सायरु सलिलु दुग्गु कमइ जइ लंकाणयरिणियडि थवइ ।
तो कुंडलमंडियगंडयलु तोडेप्पिणु दहमुहसिरकमलु ।
तुह गेहिणि देमि समेइणिय णच्चावमि विड्डर[6] डाइणिय ।

घत्ता—दे आएसु महुं सर[7] करउ गमणु साहेज्जउं ।।
कताहरणरुहु फेडमि अज्जु जि वयणिज्जउं ।।2।।

3

हेला—ता सीराउहेण उवसामिओ अणंतो ।।
णं केसरिकिसोरओ रोसविप्फुरंतो ।।छ।।

भडयणु णिहिलु वि ओसारियउ पंचंगु मंतु अवयारियउ ।
सउवाउ[1] अवाउ सहाउ धणु मंतिउ महुं किं[2]वइरिहि बलु कवणु ।
आरंभ कम्मफलसिद्धि किह किह दइवु हवइ भणु मुणिउं जिह ।
तं णिसुणिवि मंगलेण कहिउ णिव णिसुणि मंतु विगईरहिउ ।
दुग्गासिउ बलवंतु वि विजइ खगराउ तिखंडधराहिवइ ।
जइ सीय देह रणि णब्भिडइ तो भल्लउं महु मणि आवडइ ।

---

बाहुबल देखा। वह राम के चरणकमलों में प्रणाम करता है, और क्रोध से लाल आँखों वाला लक्ष्मण कहता है—यदि हनुमान्, जिसने सूर्य की किरणों से अंधकार की शक्ति विदारित की है, ऐसे आकाश में मुझे ले जाए, समुद्र जल और दुर्ग का उलंघन करवा सके, यदि लका नगरी के निकट स्थापित कर सके तो मैं कुंडलों से मंडित गडतल वाले दशमुख के सिरकमल को तोड़ कर भूमि सहित सीता देवी को लाकर दे दूँ। तथा भयानक डाइनी नचाऊँ।

घत्ता—आप आदेश दें! कामदेव हनुमान् गमन में सहायता करे तो मैं कान्ताहरण के कलंक को आज ही नैस्तनाबूद कर दूँ।

(3)

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को इस प्रकार शान्त किया कि मानो क्रोध से स्फुरित सिंह-किशोर हो।

समस्त योद्धा समूह को हटा दिया गया और पंचाग मंत्र का विचार किया गया। उपाय सहित उपाय सहाय और धन में मेरा क्या मंत्र है? शत्रुओं की सेना कितनी है? आरंभ और कर्मफल सिद्धि किस प्रकार होती है, दैव किस प्रकार होता है? मुझे बताओ, जिस प्रकार तुमने विचार किया है। यह सुनकर मंगल ने कहा—हे राजन्, अन्यथा नहीं होने वाला मंत्र सुनिए। विद्याधर राजा, तीन खंड धरती का स्वामी है। दुर्गाश्रित बलवान और विजयी है। यदि वह सीता दे देता है और युद्ध में नहीं लड़ता तो यह बात मेरे मन के लिए अच्छी लगती है। इसका उपहास करते

---

4. A माहउ; P माहड्ड। 5. P हणुवंतु। 6. T डावर भयानक संग्रामो वा; विड्डर इति पाठेऽप्ययमेवार्थः। 7. AP सरु। 8. AP कंताहरणु रुहो।

(3) 1. A सउवायउ चाउ सहाउ बलु। 2. AP महुं वइरिहिं कवणु बलु।

तं[3] विहसिवि सुग्गीवें भणिउं पइं रावणजीविउं किं गणिउं।
हणुवंतु सहाउ हउं वि पबलु हरि पुण्णवंतु चालइ अचलु।
विज्जउ पहरणइं वि चिंतियइं होहिंति मंतविहिमंतियइं[4]।
हलहर तुहुं राणउ देव जहिं पडिवक्खु पसंसिउ काइं तहिं।
धुउ[5] लक्खणहत्थें रिउ मरइ णिद्दइवहु दुग्गु काइं करइ।
भो मंगल मा किं पि वि भणहि तहु चक्कु कालचक्कु व गणहि।

घत्ता—तेण जि तासु[6] सिरु छिंदेव्वउं रणि गोविंदें।।
दिणयरि उग्गमिइ किं पयडिज्जइ चंदें ।।3।।

4

हेला—उत्तं रामसामिणा जइ[1] अहं महंतो ।।
लच्छीहरपसाहिओ पउरपुण्णवंतो ।।छ।।

णियदूउ तो वि तहु पट्ठवमि उप्पिच्छु समत्थु व णिट्ठवमि।
णिय सो[2] किं देइ ण देइ वहु पेक्खहुं किं बोल्लइ पुहइपहु।
भणु कवणु वओहरविहिकुसलु जिणवरचरणारविंदभसलु।
सुग्गीउ कहइ रिउछिंदणहु जेट्ठहु दससंदणणंदणहु।
गुणवंत अत्थि णर[3] धरणियर ते जंति ण खे ण होंति खयर।
सुकुलीणु अदीणु दीणसरणु अग्गि व सीहु व दूसहफुरणु।

---

हुए सुग्रीव ने कहा—तुमने रावण के जीवन को क्या समझा ? हनुमान् सहायक हैं और मैं भी प्रबल हूँ। लक्ष्मण पुण्यवान हैं, वह अचल को चलित कर देते हैं। मंत्र विधि से आराधित, चिंतित प्रहरण और विद्याएँ भी प्राप्त हो जाएँगी। हे हलधर, जहाँ आप राजा हैं वहाँ इसने प्रतिपक्ष की प्रशंसा क्यों की। निश्चय ही लक्ष्मण के हाथ से शत्रु मरेगा। दैवहीन व्यक्ति का दुर्ग क्या करेगा ? हे मंगल, तुम कुछ भी मत कहो, उसके चक्र को तुम कालचक्र समझो।

घत्ता—युद्ध में लक्ष्मण के द्वारा, उसी से उसके सिर का छेदन किया जाएगा ? दिनकर के उदय होने पर चन्द्रमा के द्वारा क्या प्रगट किया जाएगा ?

(4)

तब स्वामी राम बोले—यद्यपि हम महान् हैं, लक्ष्मी गृह से प्रसाधित हैं और प्रचुर पुण्य से युक्त हैं,

तो भी उसके पास मैं अपना दूत भेजता हूँ। फिर सैन्यसहित समर्थन उसे मारता हूँ। ले जाई गई वधू को वह देता है, या नहीं ? हम देखें राजा क्या कहता है ? बताओ दूतविधि में कौन कुशल है ? जिनवर के चरण-कमलों का भ्रमर सुग्रीव शत्रु का नाश करने वाले जेठ दशरथ-पुत्र राम से कहता है—हे राजन्, धरणीचर (मनुष्य) गुणवान हैं, परन्तु वे आकाश में नहीं चल सकते क्यों कि वे विद्याधर नहीं है। सुकुलीन अदीन और दोनों के लिए शरण तथा अग्नि और

---

3. AP ता। 4. P मंत तिहि। 5. A ध्रुवु। 6. P तासु जि सिरु।

(4) 1. AP जइ वि अहं। 2. AP किं सो। 3. A णरवरणियर।

एक्किकल्लउ[4] भल्लउ सेल्लवहि[5] रणि सरजालंचियसदिसवहि ।
सूहउ सूरूउ गंभीरु थिरु पडिवण्णसूरु तेयंसि णिरु ।
णिट्ठुरहं वि उप्पाइयपणउ हियमियमहुरक्खरजंपणउ ।
किं वण्णमि सहयरु अप्पणउ दूयत्तजोग्गु अंजणतणउ ।
ता रामें संचियणेहरसु पुरिसुण्णउ पोरिसकणयकसु ।
सुग्गीउ बंधु बुद्धिइ गहिउ विज्जाहररायत्तणि णिहिउ[5] ।
घत्ता—बंधिवि पट्टु सिरि हणुवंतु कियउ सेणावइ ॥
जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो ज्जि धवलु णिहयावइ ॥4॥

5

हेला—दिण्णा राहवेण हणुयस्स खयरगया[1] ॥
[2]रविगयविजयकुमुयपवणवेयया[3] सहाया ॥छ॥
गरुयारइ मंतिकज्जि थविउ बलहद्दें[4] मारुइ सिक्खविउ ।
जाएज्जसु भवणु[5] विहीसणहु परिपालियखत्तियसासणहु ।
बोल्लेज्जसु मिट्ठउ कि पि तिह अप्पावइ सीयाएवि जिह ।
जइ सामें देइ ण दहवयणु तो पुणु भणु दंडु[6] चंडवयणु ।
अम्हहुं[7] विवरोक्खइ आवडिय ललियंग चित्तवित्तिहि चडिय ।
अण्णाणें रइरहसेण णिय भण्णइ अप्पिज्जउ रामपिय ।

सिंह के समान जो असह्य कांतिवाला है, तथा भालों से युक्त सरजाल से जिसमें दिशाओं सहित पथ आच्छादित है ऐसे रण में जो अकेला ही भला है ; जो गंभीर, सुभग, सुन्दर और स्थिर तथा स्वीकार की गई वस्तु में शूरवीर, अत्यन्त तेजस्वी, अत्यन्त निष्ठुर, लोगों में प्रणय उत्पन्न करने वाला, हित मित मधुर वाणी बोलने वाला है, ऐसे अपने सहचर का क्या वर्णन करूं ? हनुमान् दूतत्व के योग्य है। जिसमें स्नेह रस संचित है, जो पुरुषों में उन्नत है, जो पौरुष रूपी स्वर्ण को कसने वाला है, ऐसे सुग्रीव बंधु को राम ने बुद्धि से ग्रहण कर लिया, और विद्याधर राजा के पद पर उसे स्थापित कर दिया।

घत्ता—सिर पर पट्ट बाँध हनुमान् को सेनापति बना दिया। आपत्तियों को नष्ट करने वाले और श्रेष्ठ उसी को फिर से दूतकार्य में जोत दिया।

(5)

राम ने रविगति, विजय, कुमुद तथा पवनवेग आदि विद्याधर हनुमान् के साथ कर दिए। राम ने हनुमान को महान् मंत्री कार्य में स्थापित किया और उसे सीख दी—तुम क्षत्रिय शासन का परिपालन करने वाले विभीषण के घर जाना और उससे मीठा-मीठा कुछ इस प्रकार बोलना कि जिससे वह सीता देवी सौप दे। यदि रावण साम से सीता देवी को नहीं सौंपता, तो दंड प्रचंड वचन कहना कि हमारे परोक्ष में तुम आए और चित्तवृत्ति पर चढ़ी हुई सुन्दरी को रति के हर्ष से अन्याय पूर्वक ले गए। तुमसे कहा जाता कि राम की प्रिया अर्पित कर दो। लक्ष्मण

4. AP एक्कल्लउ। 5. AP विहिउ।

(5) 1. AP खयरराया। 2. AP रविगइ°। 3. P कुमुयवलवेयया। 4. AP बलभद्दें। 5. A भुवणु। 6 AP चंडदंडवयणु। 7. A अम्हइं।

गोविंदमुक्कगुणमग्गणहिं दारियसरीरु सहुं[9] ससयणहिं।
सोणियजलसित्तछत्तसहिउ[10] मा होहि कयंतणयरपहिउ ॥

घत्ता—बोल्लिउ लक्खणिण सुय[11] सीय वसुंधरि ढोयवि ॥
जइ दहमुहु जियइ तो जीवउ किंकरु होइवि ॥5॥

6

हेला—अहवा जइ ण देइ तो जाइ[1] किं जियंतो ॥
मइं कुद्धे ण हणुय णउ हणइ कं कयंतो ॥छ॥

तेलोक्कचक्कजूरावणहु इय जाइवि साहहि रावणहु।
जइ तिण्णि वि एयउ देह णउ तो तासु महु वि किर संधि कउ।
जइ जुज्झइ तो कालाणलहु जइ णासइ तो पुणु काणणहु।
पेसमि दहगीउ ण दूय जइ रहुवइपयजुवलु ण णवमि तइ।
तो हलि[2] हरि जयकारिवि चलिउ तणुभूसणमणियरसंवलिउ।
तारावलिहारावलिउरहि उत्तुंगहि तुंगपयोहरहि।
पविमलपसण्णदिसवयणियहि चंदक्कमणोहरणयणियहि।
आहंडलधणुउप्परियणहि रंजियविज्जाहरगणमणहि।
णहलच्छिहि उवरि देंतु पयइं पडिसुहडहं[3] संजणंतु भयइं।

के द्वारा डोरी से छोड़े गए तीरों के द्वारा विदारित शरीर के रक्त रूपी जल से सिक्त छत्र से सहित तुम अपने जनों के साथ यम नगर के अतिथि मत बनो।

घत्ता—लक्ष्मण ने कहा—सीता और धरती को लेकर यदि रावण जीवित रहता है, तो वह अनुचर होकर ही जीवित रह सकता है।

(6)

अथवा यदि वह सीता देवी को नही देता तो क्या जीवित रह सकेगा ? मेरे क्रुद्ध होने पर हनुमान् किस कृतान्त को नही मारता ?

त्रिलोक चक्र को सताने वाले रावण से तुम इस प्रकार कहना। यदि वह वे तीनों चीजें (सीता, श्री और भूमि) नहीं देता, तो उससे मेरी क्या संधि ! यदि वह लड़ता है, तो मैं उसे कालानल में, और यदि भागता है तो फिर कानन में नहीं भेज दूँ तो हे दूत, मैं श्रीराम के चरणयुगल को नमस्कार नहीं करूँगा। तब वह लक्ष्मण-राम की जय बोलकर चल पड़ा, शरीर के आभूषणों की मणि-किरणों से घिरा हुआ। जिसके उर पर तारावलियों की हारावलि है, जो ऊँची और विशाल पयोधर वाली है, अत्यन्त विमल और प्रसन्न दिशारूपी मुख वाली है, चन्द्रमा और सूर्य के मनोहर नेत्रों वाली है, जिसका इन्द्रधनुष का स्तरीय वस्त्र है, और जो विद्याधर समूह के मन को रंजित करने वाली है, ऐसी आकाश रूपी लक्ष्मी के ऊपर पैर रखता हुआ शत्रु योद्धाओं को भय उत्पन्न करता हुआ।

8. A ललियंगि। 9. A सुहु सज्जणेहिं। 10. P omits छत्त। 11. A सिय; P सीय।
(6) 1. P किं जाइ। 2. AP हरि हलि। 3. AP °सुहडहुं णं जणंतु।

घत्ता—संखपंतिदसणु वडवाणलजालाकेसरु ।।
वेलापुंछचलु मणिगणणहु सीहु व भासुरु ।।6।।

7

हेला—गंभीरो सरमेरउ[1] गोढमयरमुद्दो[2] ।।
मारुइणा तुरंतेणं लंघिओ समुद्दो ।।छ।।
भुवणंतरालि विक्खायएण दीहें जलणिहिसरजायएण ।
तिसिहरगिरिणालें[3] उद्धरिउ पायारकण्णियापरियरिउ[4] ।
छुहधवलट्टालविउलदलु लच्छीमंजीररावमुहलु ।
देउलहंसावलिपरियरिउ[5] कणयालयकेसरपिंजरिउ[6] ।
कामिणिमुहरसमयरंदरसु जसपरिमलपूरियगयणदिसु ।
रावणरवियरवियसावियउ देवाहं वि भल्लउं भावियउं ।
वित्थरियकोसु[7] सुभुयंगपिउ कह णिउणें विहिणा णिम्मविउ ।
णहिं जंतु जंतु मारुइभसलु संपत्तउ तं लंकाकमलु ।।

घत्ता—जोयवि कुसुमसरु णारीयणु असेसु वि खुद्धउ ।।
कपइ णीससइ हसइ व बहुणेहणिबद्धउ ।।7।।

---

घत्ता—शंख-पंक्ति ही जिसके दाँत हैं, वडवानल की ज्वाला जिसकी अयाल है, जो बेला-रूपी पूँछ से चंचल है, जिसके मणिगण रूपी नख हैं, ऐसा जो सिंह की तरह भास्वर है।

(7)

जो गंभीर और जल की मर्यादा वाला है, जिसने मकर मुद्रा स्थापित कर रखी है, ऐसे समुद्र का हनुमान् ने शीघ्र उल्लंघन किया।

भुवनांतराल में विख्यात, लम्बे समुद्र के जल से उत्पन्न त्रिकूट पर्वत रूपी नाल के द्वारा जो उद्धत है, प्राकार रूपी कर्णिका से घिरा हुआ है, चूने की सफेद अट्टालिकाओं के विपुल दल वाला है, लक्ष्मी के नूपुरों के शब्दों से मुखर है, देवकुल रूपी हंसावली से घिरा हुआ है, स्वर्णालय रूपी केशर से पिंजरित है, कामिनियों के मुख रस रूपी मकरंद के रस से सहित है, यश रूपी परिमल से जिसने गगन और दिशाओं को भर दिया है, जो रावण रूपी रवि की किरणों से विकसित है, जो देवों के लिए भला और रुचिकर है, जिसका कोश विस्तृत है, जो भुजंगों (चिह्नों) के लिए प्रिय है, किस निपुण विधाता ने उसकी रचना की है, ऐसे उस लंका रूपी कमल में, आकाश मार्ग से जाता-जाता हनुमान् रूपी भ्रमर जा पहुँचा।

घत्ता—उस कामदेव को देखकर समस्त नारीजन क्षुब्ध हो उठा, अत्यधिक स्नेह से निबद्ध वह काँपने लगता है, नि.श्वास लेता है और हँसता है।

---

(7) 1. AP समेरुउ; K सरमेरउ but records a *p* : अथवा समेरउ समर्यादः; T सरमेरउ जलमर्यादः, अथवा समेरउ समर्याद, 2. AP गाढमयरसद्दो । 3. A णिसियर° । 4 A पायालें । 5. AP °हंसावलिपंडुरउ; K पंडुरिउ इत्यपि पाठः 6. A कणयायलकेसरि° । 7. A वित्थारिय° ।

8

हेला—कंदप्पं सुरूविणं णिएवि चित्तचोरं ॥
का[1] वि देइ सकंकणं चारुहारदोरं[2] ॥छ॥

क वि जोयइ दिट्ठिय मउलियइ　　गुरुयणि[3] सलज्जदरमउलियइ ।
क वि चलिय कडक्खहिं विवलियइ[4]　　क वि वियसियाइ क वि विलुलियइ ।
काहि वि गय तुट्टिवि मेहलिय　　क वि मुच्छिय धरणीयलि घुलिय ।
काहि वि रइजलझलक्क झलिय[5]　　क वि उरयलु पहणइ[6] झिंदुलिय ।
काइ वि थणजुयलउं पायडिउं　　काहि वि परिहाणु झत्ति पडिउं ।
क वि भणइ एहु[7] हलि दूउ जहिं　　केहउ सो होही रामु तहिं ।
सइ सीय भडारी वज्जमिय　　ण सइत्तणवित्ति अइक्कमिय ।
हलि एहु वि पेच्छिवि पुरिसवरु　　जइ कह व महारउं एइ घरु ।
पायग्गें जइ थणग्गु छिवइ　　तंबोलु वि जइ उप्परि घिवइ ।
तो हउं सकयत्थी[8] जगि जुवइ　　क वि पेम्मपरव्वस मूढमइ ।
अप्पाणु परु वि ण सच्चवइ[9]　　हा मुइय[10] मुइय जणवउ चवइ ।

घत्ता—कामु हरंतु मणु पुरवरणारीसंघायहु ॥
उलइयउच्छुधणु गउ भवणु विहीसणरायहु ॥8॥

(8)

चितचोर सुन्दर कामदेव को देखकर, कोई अपना कंगन और सुन्दर हारदोर देती है।

कोई मुकुलित दृष्टि से देखती है, और गुरुजनों में लज्जा से थोड़ा मुकुलित करती है, कोई चंचल कटाक्षों से वक्र होती है, कोई विकसित करती है, कोई चंचल करती है; किसी की कटिमेखला टूट गई। कोई मूर्छित होकर धरती पर गिर गई। किसी की रतिजल की धारा बह निकली। कोई कामविह्वल हो अपने उर तल को पीटती है। किसी ने अपने स्तनयुगल को प्रकट कर दिया। किसी का परिधान शीघ्र गिर पड़ा। कोई कहती है, "हे सखी, जहाँ ऐसा दूत है, वहाँ राम कैसे होंगे ? सती सीता देवी वज्र की बनी है, उनकी सतीत्व वृत्ति अतिक्रांत नहीं हो सकी। हे सखी, यह पुरुषवर देखने के लिए यदि किसी प्रकार मेरे घर आता है, और पैर के अग्र भाग से मेरे स्तन के अग्रभाग को छूता है, और यदि पान भी मेरे ऊपर फेंकता है, तो मैं विश्व में कृतार्थ युवती हूँगी।" कोई मूढ़मति प्रेम के वशीभूत हो जाती है। वह अपने पराए को नहीं जानती। जनपद चिल्लाता है, "वह मरी मरी"।

घत्ता—इस प्रकार पुरवर के नारी समूह के मन का हरण करता हुआ मुड़े हुए ईख के धनुष वाला कामदेव विभीषण राजा के घर जा पहुँचा।

(8) 1. AP का वि हु देइ। 2. P चोरुहार°। 3. A गुरुयण°। 4. P विवालियइ। 5. AP गलिय। 6. A पहरइ। 7. हलि एहु। 8. AP सकियत्थी। 9. A सभरइ। 10. AP मुयइ मुयइ।

9

हेला—णियकुलकुमुयससहरो मुणियरायणाओ ।।
आओ तेण मण्णिओ अंजणंगजाओ ।।छ।।

रयणुज्जलु आसणु घल्लियउं मणहारि समंजसु बोल्लियउं ।
पाहुणयवित्ति णिस्सेस[1] कय पुच्छिउ कहिं अच्छिय कहिं वि गय ।
किं किज्जइ किं किउ आगमणु तं णिसुणिवि पभणइ रइरमणु ।
गुणवंतु भत्तिभाउब्भवउ[2] णयवंतु संतु महुरुल्लवउ ।
पइं जेहउ माणुसु जासु घरि किं सो लग्गइ परघरिणिकरि ।
लइ एत्थु विहीसण दोसु ण वि कालिंदिसलिलणिहदेहछवि ।
पत्थहि पउलत्थि[3] देउ तरुणि पायालि म णिवडउ णिक्करुणि ।

घत्ता—गिरि गिरियसरिसु गोप्पउ[4] जासु रयणायरु ।।
तें सहुं कवणु रणु किं करइ[5] गव्वु तुह भायरु ।।9।।

10

हेला—दिट्ठादिट्ठकट्ठ पट्ठवउ रामणारी ।।
णहयरणाहमउडि मा पडउ पलयमारी ।।छ।।

(9)

अपने कुल रूपी कुमुद के चन्द्र, राजन्याय को जाननेवाले, अंजना के शरीर से उत्पन्न, आए हुए हनुमान् का उसने आदर किया।

उसे रत्नों से उज्ज्वल आसन दिया तथा सुन्दर और उचित बात की। समस्त आतिथ्य वृत्ति पूरी की। उसने पूछा—कहाँ थे और कहाँ गए थे, क्या किया जाए, किसलिए आपने आगमन किया? यह सुनकर कामदेव बोला—तुम जैसा गुणवान् भक्तिभाव से उत्पन्न न्यायवान् शांत मधुरभाषी मनुष्य जिसके घर में है? वह दूसरे की स्त्री के हाथ से क्यों लगता है? लो विभीषण, यहाँ दोष भी नहीं है, तुम प्रार्थना करो कि यमुना नदी के जल के समान देहछविवाला रावण युवती को दे दे (सीता वापस कर दे) और वह व्यर्थ ही पाताल लोक में न जाए।

घत्ता—पहाड़ जिसे गेंद के समान है, समुद्र जिसे गोपद के समान है, उसके साथ कैसा युद्ध? तुम्हारा भाई क्यों व्यर्थ अहंकार करता है?

(10)

जिसने अदृष्ट कष्ट झेल लिये हैं, ऐसी राम की नारी को वापस कर दो। विद्याधर राजा के मुकुट के अग्रभाग पर प्रलयमारी न पड़े।

(9) 1. AP णीसेस । 2 A भाउत्तमउ । 3. A पहुलच्छि देव । 4. P गोप्पउ व जासु । 5. A करइ तुहारउ भायरु ।

अज्ज वि णारूसइ दासरहि　　अज्ज वि ण खुहइ लक्खणउवहि ।
चउरासीलक्खधरायरहं　　कोडिउ पण्णास भयंकरहं ।
आहुट्ठ ताउ गयणेयरहं　　बलवंतहं बहुपहरणकरहं ।
अज्ज वि खुब्भंति ण नृवबलइं[1]　　दुल्लंघइं पडिबलघंघलइं ।
अज्ज वि अप्पावहि सीय तुहुं　　मा पइसउ बंधउ जमहु मुहुं ।
मा डज्झउ लंक सतोरणिय　　मा णिवडउ उयरवियारणिय ।
सरधोरणि गोविंदहु तणिय　　दुद्धरधणुगुणरवझणझणिय ।
मा रिट्ठु रिट्ठलोहिउं रसउ　　मा कालकियंतु[2] मासु गसउ ।
रायाणुएण ता भासियउं　　पइं चारु चारु उवएसियउं ।
मज्झत्थु महत्थु सच्चवयणु　　पइं मेल्लिवि को सुपुरिसरयणु ।
पइं मेल्लिवि को वि बुहाहिवइ　　को जाणइ एही कज्जगइ ।

घत्ता—इय संसिवि सुयणु पोरिसकंपवियसुरिंदहु ।।
गंपि विहीसणेण दाविउ हणवंतु[3] खगिंदहु ।।10।।

11

हेला—णविऊणं दसासणं तरुणिहिययहारी ।।
आसीणो वरासणे कुसुमबाणधारी ।।

---

राम आज भी कुपित न हों, आज भी लक्ष्मण रूपी समुद्र क्षुब्ध न हो, पचास करोड़ चौरासी लाख भयंकर मनुष्यों की तथा साढ़े तीन करोड़ विद्याधरों की बलवान् एवं अनेक आयुध हाथ में लिये शत्रुसैन्य के लिए विघ्न स्वरूप और दुर्लंध्य शत्रुसैन्य आज भी क्षुब्ध न हो। आज भी तुम सीता अर्पित कर दो। हे बन्धु, तुम यम के मुख में प्रवेश मत करो। तोरणों सहित अपनी लंका मत जलाओ। उदार विचारणीय दुर्धर धनुष की डोरी के शब्दों से झन-झन झरती लक्ष्मण के तीरों की पंक्ति उसके ऊपर न पड़े। कौआ रावण के मांस के लिए न चिल्लाए, काल कृतान्त मांस न खाए। इस पर राजा का छोटा भाई (विभीषण) बोला—तुमने अत्यन्त सुन्दर उपदेश दिया। तुम्हें छोड़कर महार्थवाला और सत्यवादी मध्यस्थ और कौन सुपुरुषरत्न हो सकता है? तुम्हें छोड़कर और कौन बुधाधिपति हो सकता है? इस कार्य गति को भला और कौन जान सकता है?

घत्ता—इस प्रकार सज्जन की प्रशंसा कर विभीषण ने हनुमान् को अपने पौरुष से सुरेन्द्र को कंपित करने वाले विद्याधर राजा रावण से जाकर मिलवाया।

(11)

दशानन को प्रणाम कर तरुणियों के हृदय का अपहरण करने वाला कामदेव हनुमान् श्रेष्ठ आसन पर जाकर बैठ गया।

---

(10) 1. P णिवबलइं। 2. P कालकयंतु। 3. AP हणुवंतु।

पभणइ पहु जडकोड्डावणिय[1] किं विहिय सेव रामहु लणिय ।
हा कट्ठु कट्ठु कणएं जडिउ माणिक्कु अमेज्झमज्झि पडिउ ।
कहिं तुहुं कहिं सो तुह सामि हुउ भणु को ण विहाणवसेण चुउ ।
अह एण वियारें काइं महुं आओ सि काइं कहि कज्जु[2] लहु ।
तं णिसुणिवि पावणि पडिलवइ विणओणयसिरु[3] पुणु पुणु भणइ ।
भो पुप्फविमाणपुप्फभमर भो सुरसुंदरिघल्लियचमर ।
भो[4] मंदरसुंदरकयभवण[5] भो महिहरकंपावणपवण ।
भो देव दसास दसासगय- जसधवलियजग[6] रयणियरधय ।
लक्खणदामोयरणमियकमु अट्ठमु हलहरु रणरसविसमु ।
जसु णामें संकइ विसमु जउं किर कवणु गहणु तहु देव हउं ।
तें तुज्झ पासि[7] हउं संपहिउ इय साहइ सो विणएं सहिउ ।

घत्ता—आणिय सीय जइ तो णत्थि दोसु पुणु दिज्जइ ।।
हरिविक्कमहरिणा सहु तुरियं संधि रइज्जइ ।।11।।

12

हेला—आरूढो गयाहिवे मोरु कुल्लमग्ग ।।
को मग्गइ रयंधओ एलयाण[1] दुग्गं ।।छ।।

---

जग को कुतुहल उत्पन्न करने वाला राजा पूछता है-—तुमने मूर्खों के लिए कुतुहल उत्पन्न करनेवाली राम की सेवा क्यों की ? खेद की बात है कि स्वर्ण से जड़ित माणिक्य अपवित्र वस्तु में जा मिला। कहाँ तुम और कहाँ वह तुम्हारा स्वामी हुआ ! बताओ विधान के वश से कौन नहीं चूक जाता अथवा मुझे इस विचार से क्या करना। तुम किस काम से आए हुए थे, शीघ्र बताओ ? यह सुनकर हनुमान् कहता है। विनय से नतसिर बार-बार कहता है—हे पुष्पक विमान रूपी पुष्प के भ्रमर, हे सुर-स्त्रियों द्वारा संचालितचमर, हे सुमेरु पर्वत को अपना घर बनाने वाले, हे महीवर को कंपाने वाले पवन, हे देव दशानन, दसों दिशाओं में प्रसारित यश से विजय को धवलित करने वाले हे निशाचरश्रेष्ठ ! लक्ष्मण जैसे नारायण के द्वारा जिनके चरण नमित हैं, और युद्ध रस में विषम हैं, ऐसे वह आठवें हलधर हैं, जिनके नाम से विषम यम काँप उठता है। हे देव तुम्हारे द्वारा उसका ग्रहण कैसे ? उन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, वह (राम) विनय के साथ यह कहते हैं—

घत्ता—यदि तुम सीता ले आए हो, तो इसमें दोष नहीं है, उसे दुबारा दे दिया जाए। सिंह के समान पराक्रम वाले हरि (लक्ष्मण) के साथ शीघ्र संधि कर ली जाए।

(12)

हाथी पर चढ़कर मयूर कौन माँगता है, कौन पापान्ध गाड़रों के दुर्ग को चाहता है ? (गाडरों की पद्धति से अपनी रक्षा चाहता है ?)

---

[11) 1. AP °कोडावणिय। 2. A कज्ज। 3. A विणएं णयसिरु। 4. A सुंदरमंदर°। 5. P °भमण। 6. AP जगधवलियजस। 7. AP पासु।

(12) 1. A$^{T}$ एडयाण।

सायरु किं मज्जायहि सरइ महिवइ किं अण्णणारि हरइ।
जइ दीवउ अंधारउ करइ तो किं पाहाणखंडु फुरइ।
जइ तुहुं जि कुकम्मइं आयरहि मणु कुवहि वहंतउं णउ धरहि।
तो कासु पासि जणु लहइ जउ जहिं रक्खणु तहिं उप्पण्णु भउ।
अण्णु वि णाणाविहदुक्खभरु परहरु इहरत्तपरत्तहरु।
तं णिसुणिवि लंकेसरु भणइ को रंडकहाणियाउ सुणइ।
महु किंकरु ताव पढमु जणउ पुणरवि दसरहु दसरहतणउ।
तहु दिण्णी हउं किं[2] किर खममि घरलंजिय सीय किं[3] ण रममि।

घत्ता—पुव्व पउत्त महु पच्छइ रहुणाहहु दिण्णी ॥
सो छिद्दिवि मृगेण[4] मइं आणिय णयणरवण्णी ॥12॥

13

हेला—मइं चित्तेण छित्तिया कह अणुहवइ रामो ॥
हो हो मयरकेउणा[1] एत्थु[2] णत्थि सामो ॥छ॥
जं चंगउं तं[3] तं अवठवइ किंकरु सुद्धत्तणु दक्खवइ।
मणिकारणि मुहि कवलउ अहि वि जइ मग्गइ तो मग्गउ महि वि।
सयडंगु वि मग्गइ एउ खलु सो संपहि वट्टइ वूढछलु॥

क्या समुद्र अपनी मर्यादा से विचलित होता है ? क्या राजा दूसरे की स्त्री का अपहरण करता है ? यदि दीपक अँधेरा करता है, तो क्या पत्थर का टुकड़ा प्रकाश करेगा ? यदि तुम कुकर्मों का आदर करते हो, और कुपथ में जाते हुए अपने मन को नहीं रोकते तो मनुष्य किसके लिए जय प्राप्त करेगा ? जहाँ रक्षा की आशा है, वहाँ भय उत्पन्न हो गया है। और फिर परस्त्री नानाप्रकार के दुःखों से भरी हुई इस लोक और परलोक का अपहरण करनेवाली होती है। यह सुनकर रावण कहता है—तुम्हारी रंडा-कहानी कौन सुने ? सब से पहले तो जनक मेरा अनुचर है, फिर दशरथ और दशरथ का पुत्र। उसे उसने कन्या दे दी। मैं कैसे क्षमा कर सकता हूँ। मैं गृहदासी सीता के साथ रमण न करूँ ?

घत्ता—वह पहिले मेरे लिए कही गई थी। बाद में राम के लिए दे दी गई। अतः मृग के द्वारा छलकर उस मृगनयनी को मैं ले आया।

(13)

जिसे मेरे चित्त ने छू लिया है, राम उससे रमण कैसे कर सकता है ? हे कामदेव (हनुमान्), यहाँ साम की आवश्यकता नहीं।

जो-जो अच्छा होता है अनुचर उस-उसको राजा के लिए सुरक्षित रखकर अपनी शुद्धि को दिखाता है। मणि के कारण साँप को मुख में काटा जाता है। यदि वह माँगता है, तो धरती मांग ले। परन्तु यह दुष्ट तो चक्र भी मांगता है। वह इस समय छल करना चाहता है, वह मुझ से

2. AP किर किं। 3. AP ण किं। 4 P मिगेण।

(13) 1. AP मयरकेउणो। 2. A इत्थ णत्थि; P इत्थ अत्थि। 3. A तं तं अल्लवइ; P तं जि अवट्ठवइ।

पुरि मग्गउ लग्गउ मज्झु रणि    किं[4] अच्छइ तहिं हिंडंतु वणि ।
तं णिसुणिवि सुट्ठु[5] दुगुंछियउं    दूएण राउ णिब्भंछियउ ।
णउ[6] हसिउं देव पइं मण्णियउं    केसवजंपिउं णायण्णियउं ।
सुय[7] सीय वसुंधरि देइ जइ    परमत्थें इच्छइ संधि तइ ।
सो लिहियउं तुह रूवु वि पुसइ[8]    णियभायहु उवरोहें सहइ ।
हरि केंव वि[9] अम्हइं उवसमहुं    लंकाउरि णेय अइक्कमहुं ।

घत्ता—मुइ मुइ एह तुय[10] सुहिणेहें[11] कहइ कइद्धउ ॥
रावण वहइ पइं रणरंगि जणद्दणु कुद्धउ ॥13॥

14

हेला—ताव णिकुंभ कुंभ खरदूसणा विरुद्धा ॥
हणुहणुसद्ददारुणा[1] मारणावलुद्धा ॥छ॥
कोवारुणणयण भणंति भड    गोवाल बाल दढमूह जड ।
मयरद्धय धुवु लज्जइ रहिउ    किं झंखहि णं जरेण गहिउ ।
खज्जोएं किं रवि ढंकियउ    किं सायरु गरलें[2] पंकियउ ।
किं भमरें गरुडु झडप्पियउ    किं दहमुहु अण्णें चंपियउ[3] ।
जेणेहउं बोल्लहि मुक्ख तुहुं    फोडिज्जइ तेरउ दुट्ठ मुहुं ।

---

युद्ध कर ले और नगरी माँग ले। वह वन में व्यर्थ क्यों घूम रहा है? यह सुनकर उसे अत्यन्त घृणा हुई। उसने राजा की भर्त्सना की कि मैंने तुम से हँसी नहीं की, जैसा कि तुमने मान लिया है। तुमने अभी लक्ष्मण का कहना नहीं सुना—यदि वह वास्तव में संधि चाहता है तो श्री, सीता और धरती दे वह तुम्हारे लिखित रूप को भी मिटा देता लेकिन अपने भाई के अनुरोध पर लक्ष्मण को हम लोगों ने किसी प्रकार शान्त कर रखा है और लंका नगरी पर आक्रमण नहीं किया।

घत्ता—'तुम इस स्त्री को छोड़ दो, छोड़ दो', हनुमान् कहता है—'हे रावण क्रुद्ध लक्ष्मण तुम्हें युद्ध में मार डालेगा'।

(14)

इतने में निकुंभ कुंभ और खरदूषण विरुद्ध हो गए। मारने के लोभी वे मारो-मारो शब्द से कठोर हो रहे थे।

क्रोध से लाल-लाल आँखों वाले भट कहते हैं—हे गोपालबाल, वज्रमूढ़ और जड़ कामदेव (हनुमान्), निश्चित रूप से तुम लज्जा से रहित हो, बुढ़ापे से ग्रस्त तुम क्या कहते हो? क्या खद्योत सूर्य को ढाँक सका है? क्या समुद्र विष से पंकिल हुआ है? क्या भ्रमर गरुड़ को झपट सका है? क्या रावण दूसरे के द्वारा चांपा जा सकता है? तुम मूर्ख हो। जिसने यह कहा है—हे दुष्ट, तेरा

---

4. AP कहिं अच्छइ। 5. P सुद्धदुगुं°। 6. A जणहसिउ। 7. AP सिय। 8. AP लुहइ। 9. A वियभइं। 10. AP तिय। 11. सुहिणिहे।

(14) 1. हणहणसद्दें। 2. AP गरुलें। 3. AP चप्पियउं।

तुहु एक्कु सहाउ बीय पिसुणु सुग्गीउ वालिपावियवसणु ।
ते लक्खण राम दसाणणहु जइ कमि पडंति पंचाणणहु ।
तो हरिणा इव चुक्कंति कहिं वाएण जंति गिरिवर वि जहिं ।
तहिं पत्तलु दलु पइं किं थविउं जइ पयजुयलउं देवहु णविउं ।
तो रामहु तुम्हहं तं सरणु णं तो आयउं एवहिं मरणु ।

घत्ता—हणुएं बोल्लिउं रणु घरि बोल्लंतहं चंगउं ॥
भडकलयलकलहि पइसंतहिं कंपइ अंगउं ॥4॥

15

हेला—धणुजुत्ता भडा वि गज्जंति जेम मेहा ॥
तेम ण ते भिडंति वरिसंति सवणदेहा ॥छ॥

चिरु रिक्खपंतिसंणिहणहहि रत्तउ हयगीउ सयंपहहि ।
सरु ससरि तिविट्ठें समरि हउ मुउ सत्तमणरयहु णवर गउ ।
जिह सो तिह तुहुं वि अणंगवसु लक्खणसरकड्ढियरुहिररसु ।
दहवयण मरेसहि आहयणि रइ किं ण करहि मेरइ वयणि ।
सीहा इव कुडिलचडुलणहर[1] ता उट्ठिय खग हलमुसलकर ।
गज्जंतु एंतु तिणसमु गणिउ मारुइणा सुहडसत्थु भणिउ ।

---

मुख फोड़ दिया जाना चाहिए। तुम्हारा एक ही सहायक है, और उधर बालि से दुःख पाने वाला सुग्रीव चुगलखोर है। वे राम और लक्ष्मण यदि दशानन की चपेट में पड़ते हैं, तो सिंह से मृगों की तरह किस प्रकार बच सकते हैं ? जहाँ हवा से बड़े-बड़े पेड़ गिर जाते हैं वहाँ पत्तों और दलों को क्या स्थापित किया गया ? यदि तुमने देव के चरण-कमलों को नमन किया है, तो राम ही तुम्हारे लिए शरण है, नहीं तो तुम लोगों का इस समय मरण आ गया।

घत्ता—हनुमान् ने कहा कि घर में युद्ध की बात करते हुए अच्छा लगता है। योद्धाओं की कल-कल में प्रवेश करने वालों का शरीर काँप जाता है।

(15)

धनुषों से युक्त सुभट भी मेघों की तरह गरजते हैं लेकिन वे उस प्रकार सव्रण देह (व्रण सहित शरीर, सजल शरीर) नहीं भिड़ते, सजल मेघ की तरह बरसते हैं। बहुत प्राचीन समय में नक्षत्र पंक्ति के समान नखों वाली स्वयंप्रभा में अनुरक्त अश्वग्रीव कोलाहल से युक्त युद्ध में त्रिपृष्ठ के द्वारा मारा गया था और मरकर सीधे सातवें नरक में गया था। जिस प्रकार वह, उसी प्रकार काम के वशीभूत होकर लक्ष्मण के तीरों से जिसका रक्त रूपी रस खींचा गया है, ऐसे तुम दशवदन युद्ध में मरोगे। तुम मेरे वचन में प्रेम क्यों नहीं करते ? तब कुटिल और चंचल नखों वाले सिंहों के समान, हल और मूसल हाथ में लेकर विद्याधर उठे। गरजकर आते हुए उन्हें, उसने तिनके के बराबर समझा। हनुमान् ने सुभट-समूह से कहा—पास आते हुए

---

(15) 1. °चवल°; P °चटुल°।

ढुक्कहं सयलहं सीसइं खुडमि तडिदंडु व पहुउप्परि पडमि।
ता भासिउ मग्गपयासणेण अंतरि पइसेवि विहीसणेण।
हम्मइ ण दूउ जंपउ विरसु जाणेसहुं पोरिसु कणयकसु।
असिसंकडि धणुगुणरवमुहलि रिउहक्कारणमारणतुमुलि।

घत्ता—राएं भासियउं मा मेरउ विहि विहरेज्जसु[2] ॥
राहवलक्खणहं संदेसउ एम कहेज्जसु ॥15॥

16

हेला—सरणं सुरवरस्स[1] पइसरइ जइ वि कामं ॥
तो वि अहं हणामि[2] सहुं किंकरेहिं रामं ॥ छ॥

धुवु पावमि भुक्खिउ कालकलि[3] तिलमेत्तइं खंडइं देमि[4] बलि।
लक्खणहु सुलक्खणु अवहरमि बंदिग्गहि पुहइदेवि[5] धरमि।
णयरिउ मंदिरणिज्जियससिउ गेण्हिवि कोसलवाणारसिउ[6]।
भडरुहिरमहासमुद्दि तरमि सुग्गीवहु गीवभंगु करमि।
खलणीलहु णीलउं सिरु लुणमि कुमुयहु कुमुयप्पएसु वणमि।
दसरहदसप्राणइं[7] णिट्ठवमि जणयहु जिउ जमपुरि पट्ठवमि
कुंदहु कुंदाहइं अट्ठियइं जाणेज्जसु एवहिं णिट्ठियइं।

---

तुम सबके मैं सिर काट लूँगा और विद्युद् दंड की तरह स्वामी के ऊपर गिरूँगा। तब भीतर प्रवेश करते हुए मार्ग का प्रकाशन करने वाले विभीषण ने कहा—बुरा बोलने वाला भी दूत मारा नहीं जाता, पौरुष को स्वर्ण की तरह दल कर जाना जाएगा। तलवारों से व्याप्त धनुष और डोरियों के शब्द से मुखर शत्रुओं की हुंकार और प्रहारों से सकुल (युद्ध में)।

घत्ता—राजा ने कहा कि मेरे कर्त्तव्य को गोपनीय मत रखो। राम और लक्ष्मण से मेरा सन्देश इस प्रकार कहना—

(16)

यदि कामदेव (हनुमान्) देवेन्द्र की भी शरण में चला जाए तो भी मैं अनुचरों के साथ राम का वध करूँगा। मैं निश्चित रूप से भूखे काल रूपी यम को प्राप्त करूँगा। और तिल के बराबर टुकड़े कर उसे बलि दूँगा। लक्ष्मण की सुलक्षणा का अपहरण करूँगा और पृथ्वीदेवी को बंदीघर में रखूँगा। अपने भवनों से चन्द्रमा को जीतने वाली अयोध्या और वाराणसी नगरियों को ग्रहण कर, योद्धाओं के रक्त के महासमुद्र में तिरा दूँगा। सुग्रीव की ग्रीवा भंग करूँगा। दुष्ट नील के नीले सिर काटूँगा। कुमुद को नाभि प्रदेश में आघात पहुँचाऊँगा। दशरथ के दसों प्राणों को नष्ट कर दूँगा। और जनक के प्राणों को यमपुर भेज दूगा। कुंद की कुंद से आहत हड्डियों को तुम इस समय नष्ट हुआ जानो। मैं नल की जांघों रूपी मलिका से बसा निकालूँगा। और

---

2. AP वि रहेज्जसु।

(16) 1. AP सुरवइस्स। 2. P हणेमि। 3. P कालु कलि। 4. AP देवि। 5. A छुहिवि बे वि। 6. AP वाराणसिउ। 7. A °पाण विणिट्ठवमि; P °पाण वि णिट्ठवमि।

कड्ढमि जंघाणलवस णलहु छोइवि[8] छुहियहु ढंढरउलहु।
हणुमंत[9] तुज्झु हणु गिद्ध जिह भक्खंति हणमि संगामि तिह।
जज्जाहि मित्त[10] मोक्कल्लिउ ता पावणि णहयलि चल्लियउ।
ता चिंत पइट्ठ विहीसणहु को चुक्कइ कम्महु[11] भीसणहु।
परमेसरु अद्धधरत्तिवइ मारेव्वउ लक्खणेण णिवइ।
तहु दुम्मणु मुहुं अवलोइयउं अप्पउं पहुणा पोमाइयउं।

घत्ता—सभरह एंतु खल महु ते कुमुणियदप्पहु[12] ।।
पुप्फयंत गयणे किं[13] संमुहुं थंति विडप्पहु ।।16।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे हणुमंतदूयगमणं[14]
णाम चउहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ।।74।।

---

भूखे भूत-कुल को दूँगा। हे हनुमान् तुम आक्रमण करो, मैं तुम्हें संग्राम में इस प्रकार मारूँगा, कि जिससे गिद्ध खा सकें। हे मित्र जाओ-जाओ, मैंने छोड़ दिया। हनुमान् आकाश-मार्ग में उड़कर चला गया। तब विभीषण को चिन्ता उत्पन्न हुई कि भीषण कर्म से कोई नहीं बच सकता। परमेश्वर अर्धचक्रवर्ती हैं, राजा लक्ष्मण के द्वारा मारा जाएगा। रावण ने विभीषण का उदास मुख देखा, और स्वयं की खूब प्रशंसा की।

घत्ता—भरत के साथ आते हुए वे दुष्ट क्या मेरे सम्मुख उसी प्रकार ठहर सकते हैं, जिस प्रकार आकाश में धरती पर ज्ञातदर्प राहु के सामने चन्द्रमा।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदंत द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का हनुमान्-दूत-
गमन नाम का चहुंत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ।।74।।

---

8. AP णेय वि। 9. A हणवंत। 10. P मित्त तुहुं मोक्कलिउ। 11. A कम्मविहीसणहु। 12. AP कुमुणिव कंदप्पहो; T कंदप्पहो कामस्य। 13. A कइ संमुह थंति; P किं सम्मु थंति। 14. AP दूयकज्जं।

## पंचहत्तरिमो संधि

पवणंजयसुयहु समागमणि णं हरि हरिहि समावडिउ ।।
रहुवइआएसें कुइयमणु लक्खणु वालिहि अब्भिडिउ ।।ध्रुवकं।।

1

हणुएण णवेप्पिणु भणिउ रामु भो यिसुणि भडारा हित्तरामु ।
दहवयणु ण इच्छइ संधि देव पर गज्जइ जिह बीहंति देव ।
सामहु णामें जो वेउ सामु सो णायण्णइ वण्णेण सामु ।
तं णिसुणिवि रोमंचिउ उविंदु गलगज्जइ हसियमुहारविंदु ।
रणि मारमि दससिरु कुंभयण्णु वणि[1] लोहिउ दावमि कुंभयण्णु ।
असिधारइ दारमि कुंभिकुंभु दलवट्टमि झत्ति णिकुंभु कुंभु ।
जीवावहाहं[2] खरदूसणाहं दारमि[3] उरु रहुवइदूसणाहं ।
पहरंति केम हत्थप्पहत्थ[4] मइं मुक्कसरावलिछिण्णहत्थ ।
मारीयउ मारिहि देमि गासु मउ णिम्मउ रणि कासु वि खगासु ।

## पचहत्तरवीं संधि

पवनंजयपुत्र के आगमन पर, राम के आदेश से कुपितमन लक्ष्मण बालि से इस प्रकार भिड़ गया मानो सिंह सिंह पर टूट पड़ा हो ।

(1)

हनुमान् ने प्रणाम कर राम से कहा—हे आदरणीय देव, सुनिए, सीता का अपहरण करनेवाला रावण संधि नहीं चाहता, केवल इस प्रकार गरजता है कि देवता डर जाते हैं । वर्ण से श्याम वह साम नाम के वेद को नहीं सुनता । यह सुनकर लक्ष्मण रोमांचित हो उठे । जिसका मुखरूपी कमल हँसता हुआ है ऐसा वह गरज उठता है—मैं युद्ध में रावण और कुंभकर्ण को मारूँगा । कुंभकर्ण को घावों से लाल दिखाऊँगा । तलवार की धार से हाथी के गंडस्थल को फाड़ दूँगा । शीघ्र निकुंभ और कुंभ (कुंभकर्ण के पुत्र) को चूर-चूर कर दूँगा ।जीवों का अपहरण करनेवाले, राम के लिए दूषण, खरदूषण के उर को फाड़ दूँगा । मेरे द्वारा मुक्त वाणावली से छिन्नहस्त हस्त और प्रहस्त किस प्रकार आक्रमण करेंगे । मारीच को महामारी का कौर बना-

(1) 1. A वणलोहिउ । 2. AP जीवावहारु । 3. A दावमि कयरहु; T उरु महान्वक्षस्थलं वा । 4. AP हत्थावहत्थ ।

विद्धंसमि[5] इंदइइंदजालु अरिपुरु पलित्तु लग्गाग्गिजालु।
पेच्छेसहुं कइवयवासरेहिं परबलु पच्छाइउ महु सरेहिं।

घत्ता—मइं कुद्धें राहव सो जियइ जो तुहु पयपंकय णवइ ॥
तुहु देव पयावपसरतसिउ[7] रवि वि णिरंतरु णउ[8] तवइ ॥1॥

2

तहिं अवसरि आयउ वालिदूउ वइसारिउ कज्जालाव हूउ[1]।
तें वुत्तु[2] देव अविलंघधाम[3] सीयासइवल्लह णिसुणि राम।
[4]खेयरचूडामणिघडियपाउ[5] अट्ठंगु णवइ तुह वालिराउ।
अण्णु वि विण्णवइ पहुल्लवत्तु जइ इच्छहि मेरउं किंकरत्तु।
तो णिद्धाडहि सुग्गीव हणुय रणभरु सहंति किं वालतणुय।
णिवडंतु कूवि तिणधारि[6] पडइ णग्गोहविलंबिरु[7] ऊद्धु चडइ।
गरुएं सहुं जायइ विग्गहेण विहडिज्जइ हीणपरिग्गहेण[8]।
तुह विरहखीण गुणवंत संत मारेप्पिणु रामणु हरमि कंत।
दासरहि पजंपइ लंक जाव महुं समउ खगाहिउ एउ ताव।

कर छोड़ूँगा ? युद्ध में किसी भी विद्याधर के मद को निर्मद कर दूँगा ? इन्द्रजीत के इन्द्रजाल को ध्वस्त कर दूँगा। जिसमें अग्निज्वाला लगी हुई है, ऐसे शत्रु पुर को जला दूँगा। देखूँगा कि मेरे तीर कितने दिनों में शत्रु सेना को आच्छादित करते हैं।

घत्ता—मेरे क्रुद्ध होने पर, हे राम, वही जीवित रहता है, जो तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम करता है। हे देव, तुम्हारे प्रताप के प्रसार से त्रस्त सूर्य भी निरन्तर नहीं तपता।

(2)

उसी अवसर पर बालि का दूत आया। उसे बैठाया और कार्य सबंधी बातचीत हुई। उसने कहा—जिनका तेज अतिलंघनीय है, ऐसे सीता सती के स्वामी हे राम सुनिए। जिसका चरण विद्याधरों के चूड़ामणियों पर आरोपित है, ऐसा बालि राजा तुम्हें आठों अंगों से प्रणाम करता है, और प्रफुल्लमुख वह निवेदन करता है कि यदि तुम मुझे अनुचर बनाना चाहते हो तो सुग्रीव और हनुमान् को निकाल दो। वे छोटे-छोटे तिनके क्या युद्ध भार उठा सकेंगे ? कुए में गिरता हुआ तिनके को पकड़कर उसी में गिरता है। वट वृक्ष के तने का अवलम्बन लेने वाला ऊपर चढ़ता है। शक्तिशाली से विग्रह होने पर शनि का साथ लेने से (व्यक्ति) विघटन को प्राप्त होता है। तुम विरह से क्षीण गुणवान् और संत हो। मैं रावण को मार कर कान्ता को ले आऊँगा। इस पर राम उस दूत से कहते हैं—जब तक लंका है (मैं लंका में हूँ) तब तक यह विद्याधर राजा

5. A विद्धंसिवि। 6. A इंदइं इंदजालु; P इंदहो इंदजालु। 7. A पयावइसरतसिउ। 8. AP णवि।
(2) 1. AP भूउ। 2. A तो वुत्तु। 3. A अविलंबधाम। 4. A °चूलामणि°। 5. AP °घिट्ठपाउ। 6. A तणुवारि; P तणधारि। 7. P णग्गोहि। 8. A हीण°।

मयगिल्लगल्लु[9] मित्तत्तहेउ करिवर[10] महामेहक्खु देउ ।
पच्छइ[11] जं इच्छइ तं जि करमि अहुणा तहु सुक्किउ काइं सरमि ।

घत्ता—लइ[12] इच्छउं केर महुंतणिय कुंजरु ढोइवि गिरिसरिसु ॥
इय भासिवि राएं पेसियउ सहुं तहु दूएं णियपुरिसु ॥2॥

3

किलिकिलिपुरु पत्तउ दिट्ठु वालि तेयाहिउ णं चंडंसुमालि ।
मंतें पवुत्तु भो सच्छचित्त करि ढोइवि करि पहुसमउं जत्त ।
तूसंति राय सुद्धें मणेण ता भणइ वालि संथुउ अणेण ।
जेणाहववखंधइ[2] भग्गएण कायरणरमग्गविलग्गएण ।
महुं भीएं कउ[3] किक्किधि वासु हा रामें पोसिउ पक्खु तासु ।
कंडुयणि होइ पंडुरिय[4] रेह मणगूढहु[5] केरिय वित्ति एह ।
जुज्झेसइ सीरि सिलिम्मुहेहिं अणउत्तु[6] वि जाणिज्जइ बुहेहि ।
मग्गणउ धम्मु गुणु मुइवि जाइ सुग्गीवहु हणुयहु उवरि थाइ ।
इय चिंतिवि बोल्लिउ रायमंति भण्णइ ण देइ सो तुज्झु दंति ।
देसइ खयराहिउ असिपहारु तोडेसइ पइं सुग्गीवहारु ।

मेरे साथ है। मित्रता के लिए वह मद से गीले गंडवाला महामेघ नाम का गज दे। बाद में जो वह इच्छा करेगा वह मैं करूँगा। इस समय मैं उसके उपकार की क्या याद करूँ।

घत्ता—लो गिरि के समान हाथी को लाकर मेरी आज्ञा को चाहो, यह कह कर राजा राम ने उस दूत के साथ अपना आदमी भेजा।

(3)

वह किल-किल नगर पहुँचा। उसने बालि से भेंट की। तेज से अधिक वह मानो सूर्य हो। मत्री बोला—हे स्वच्छ चित्त तुम हाथी देकर राजा (राम) के साथ यात्रा करो, शुद्ध मन से राजा संतुष्ट होंगे। तब उसके द्वारा संस्तुत बालि बोला—संग्राम की धुरी से भागे हुए कायर मनुष्यों के मार्ग का अनुसरण करने वाले जिसने मुझसे डर कर किष्किधा में निवास किया, राम ने उसके पक्ष का समर्थन किया। खुजली में सफेद रेखा होती है। जो मन से गूढ़ होते हैं, उनकी यही वृत्ति होती है। बलभद्र तीरों से लड़ेंगे। जो अनुक्त है, वह भी पंडितों के द्वारा जाना जाएगा। मग्गणउ (याचक और तीर) धम्म (धर्म और धनुष) गुण (गुण और डोरी) को छोड़कर जाएगा तथा सुग्रीव और हनुमान् के ऊपर स्थिर होगा। इस प्रकार के कथन को सुनकर राजमंत्री कहता है कि वह तुम्हें गजवर नहीं देगा, विद्याधर राजा असि प्रहार करेगा, वह तुम्हारे सुग्रीव हार को (सुग्रीव को धारण करने वाले अच्छी ग्रीवा धारण करने वाले)।

9. A °गिल्लागिल्लमित्तत्त°। 10. AP करिवरु वि महा°। 11. P पेच्छइ। 12. A लइ इंछउ; P सइं इच्छउ।

(3) 1. P °पुरि। 2. A खंधें। 3. A किउ। 4. P पंडुरिव। 5. A मणगूढहं केरी; P मणमूढहं केरी। 6. A अणुउत्ति।

घत्ता—ता झ त्ति वओहरु णीसरिउ आविवि[7] कण्णविवरक्खरउ ॥
आहासइ बलणारायणहं रिउदुव्वयणपरंपरउ ॥3॥

4

ता चिंताविउ मणि रामएउ　　एक्कु[1] जि सिहि अण्णु वि वायवेउ ।
एक्कु जि रवि अण्णु जि गिंभयालु　　एक्कु जि तमु अण्णु जि मेहजालु ।
एक्कु जि हरि अण्णु जि पक्खरालु　　एक्कु जि जमु अण्णु जि पुण्णकालु ।
एक्कु जि विसि[2] अण्णु जि सविसदिट्ठि　　एक्कु जि सणि अण्णु जि तहिं मि विट्ठि ।
एक्कु जि दहमुहु दुद्धरु विरुद्धु　　अण्णेक्कु तहिं जि बलिपुत्तु कुद्धु ।
मित्तयणु खीणु बलवंत सत्तु　　पाणिट्ठु सुट्ठु हित्तउ कलत्तु ।
विरइज्जइ एवहिं कवणु मंतु　　णउ कुसलकारि एक्कु वि जियंतु ।
ता विहसिवि बोल्लइ वासुएउ　　किं दीव जिणंति दिणेसतेउ ।
केसरिकिसोरु किं मृग[3] छिवंति　　ते जगि जियंति जे पइं णवंति ।
असमंजसु सज्जणपाणहारि　　परमेसर पच्छा कोवकारि ।
सुहडत्ताणंदियसुरवरालि[4]　　अच्छउ रावणु ता हणमि वालि ।

घत्ता—मइं कुइइ[5] रणंगणि ओत्थरिए भीरु महागिरिकंदरहु ॥
मा चिंतहि राहव किं पि तुहुं सूर जंति जममंदिरहु ॥4॥

---

घत्ता—तब शीघ्र ही दूत निकला और आकर उसने कानों को विपरीत लगने वाले अक्षरों से युक्त शत्रु की दुर्जन शब्द-परंपरा राम और लक्ष्मण से कही ।

(4)

तब रामदेव ने अपने मन में विचार किया कि एक तो आग है, और फिर वायु का वेग; एक तो रवि और फिर ग्रीष्मकाल। एक तो अंधकार और फिर मेघजाल; एक तो अश्व और दूसरा कवच पहिने हुए; एक तो यम है और दूसरे पूर्ण आयु; फिर एक तो सांप और विष सहित दृष्टि; एक तो शनि और दूसरे वह आंधी वर्षा है। एक तो दुर्धर रावण विरुद्ध है, और दूसरे बलिपुत्र (बालि) क्रुद्ध है। मित्रजन दुर्बल है, शत्रु बलवान् है। प्राणों के लिए इष्ट कलत्र का अपहरण कर लिया गया है। इस समय कौन-सा मंत्र करना चाहिए? जीतने वाला और कुशल करने वाला एक भी नहीं है। तब लक्ष्मण हँसते हुए बोले—दीपक क्या दिनकर के तेज को जीत सकते हैं? सिंह के बच्चे को क्या मृग छू सकते हैं? वे ही जग में जी सकते हैं कि जो तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं। सज्जनों के प्राणों का अपहरण करने वाला और बाद में पश्चात्ताप करने वाला वह अनुचित है। हे परमेश्वर रावण तो रहे, पहिले मैं अपने सुभटत्व से सुरवर श्रेणी को आनंदित करने वाले बालि को ही मारूँगा।

घत्ता—युद्ध के प्रांगण में क्रुद्ध होकर मेरे उछलने पर, डरपोक गिरिवर की गुफाओं में और देव यम के घर में जाते हैं। हे राम, आप कुछ भी चिंता मत करिए।

---

7. P आयण्णिवि कण्णविरक्खरउ; T सुइविवर° श्रोत्रानिष्ट ।

(4) 1. P एक्क वि । 2. A विसु । 3. AP मिग । 4. A सुरवमालि । 5. A कुद्धइ; P कुइएण ।

5

ता पहुणा पेसिउ तक्खणेण सुग्गीउ चलिउ सहुं लक्खणेण ।
साहणु पहि[1] उप्पहि णहि ण माइ गयघड मयवस मल्हंति जाइ ।
हरि खुरखयरयहयभाणुदित्ति रह[2] चक्कधारदारियधरित्ति ।
चूरियभुयंग चलविवलियंग[3] भयकंपिय दिसमायंग तुंग ।
थिउ सिबिरु धरेप्पिणु दुग्गमग्गु उव्वेइउ[4] ससासारंगवग्गु ।
आसोसियाइं सरिसरजलाइं णिल्लूरियाइं णवदुमदलाइं ।
सिरणलिणारोहियणियकरेण अक्खिउ वालिहि केण वि चरेण ।
दुद्धरदीहरसुंडालसोंडु[5] रामें तुम्हुप्परि पहिउ दंडु ।
पडिबलु गयणयलविलग्गतालि आवासिउ खइरवणंतरालि ।

घत्ता—सुग्गीवें सेविउ सीरधरु लद्धउ सहयरु चक्कवइ ।।
तं णिसुणिवि रूसिवि सण्णहिवि[6] णिग्गउ वालि खगाहिवइ ।।5।।

6

गंभीरतूरकोलाहलाइं सुग्गीववालिखेयरबलाइं ।
अब्भिट्टइं[1] कयरणकलयलाइं सरपसरपिहियपिहुणहयलाइं ।
वणवियलियपिच्छिललोहियाइं[2] पयघुलियंतावलिरोहियाइं ।

---

(5)

तब प्रभु राम ने तत्काल आदेश दिया। सुग्रीव लक्ष्मण के साथ चला। सेना पथ उत्पथ और आकाश में नहीं समा सकी। मद के वशीभूत होकर गजघटा प्रसन्नता पूर्वक जा रही थी। खुरों से आहत धूल से जिन्होंने सूर्य की दीप्ति को आच्छादित कर दिया है ऐसे अश्व थे। चक्र की धारा से धरती को फाड़ देने वाले रथ थे। विकल अंग वाले सांप चूर-चूर हो गए। ऊँचे दिग्गज भय से काँप उठे। दुर्गमार्ग को ग्रहण कर शिविर ठहर गया। शश और हरिण समूह उद्विग्न हो उठा। नदियों और सरोवरों का जल सूख गया। नव द्रुम के पत्ते नोच दिए गए। सिर-कमल पर अपने हाथों को आरोपित (लगाते) करते हुए किसी एक चर ने बालि से कहा—राम ने दुर्धर और दीर्घ गजों से प्रचंड सैन्य तुम्हारे ऊपर भेजा है। जिसमें आकाश के अग्र भाग में ताड़वृक्ष लगे हुए हैं, ऐसे खदिर वन के भीतर शत्रुसैन्य ठहरा हुआ है।

घत्ता—सुग्रीव ने राम की सेवा अंगीकार कर ली है और चक्रवर्ती लक्ष्मण को सहचर के रूप में प्राप्त कर लिया है—यह सुनकर क्रुद्ध विद्याधर राजा बालि तैयार होकर निकला।

(6)

गंभीर तूर्यों का कोलाहल होने लगा। सुग्रीव और बालि विद्याधरों के सैन्य भिड़ गए। युद्ध का कोलाहल होने लगा। तीरों के प्रसार से दोनों ने विशाल आकाशतल आच्छादित कर दिया। दोनों सैन्य घावों से रिसते गाढ़े खून से लाल हो गए। दोनों पैरों में व्याप्त आँतों से

---

(5) 1. P उप्पहि पहि। 2. AP णं णहि विलग्ग साहणसुकित्ति। 3. AP चलवलियअंग। 4. P उव्वेयउ। 5. AP दीहरदुद्धर°। 6. AP सण्णिहिवि।

(6) 1. A आभिट्टइं। 2. A° विहलिय°।

मोडियरहाइं[3] फाडियधयाइं   आसियणहाइं तासियगहाइं।
लुयदढगुडाइं हयगयघडाइं   ताडियभडाइं[4] पाडियभडाइं।
खयपेक्खिराइं[5] गयपक्खराइं   चुयहरिवराइं कंपियधराइं।
तुट्ठच्छराइं बहुमच्छराइं   मरणिच्छिराइं खणमुच्छिराइं।
वंचियपराइं पहरणपराइं   मयणिब्भराइं हयभयभराइं[6]।
ता तहिं रणंति पीणियकयंति   सामंतकंति वेयालवंति।
कंतीइ चंदु रिद्धीइ इंदु   किलिकिलिपुरिंदु धाइउ खगिंदु।
तें भणिउं भाइ रे रे अराइ   विज्जाहराइं मेल्लिवि सजाइ।
पहुमाणदड्ढ[7] खल दुव्वियड्ढ[8]   वज्जियगुणड्ढ[9] सुग्गीव संढ[10]

घत्ता—मेल्लेप्पिणु[11] सेव महुंतणिय बंधुणिबंधइ[12] तिलरिणइं ।।
पइसरिवि सरणु भूगोयरहं जीवेसहि भणु कइ दिणइं ।।6।।

7

मा पावहि आहवि पाणणासु   जज्जाहि पाव किक्किंधवासु।
तं वयणु सुणिवि सुग्गीउ चवइ   पइं फेडिवि जइ मइ णाहिं थवइ।
तो लक्खणु भूगोयरु णिरुत्तु   अह णं तो पइं णिप्फलु पउत्तु[1]।

अवरुद्ध हो उठे। रथ मुड़ने लगे, ध्वज फटने लगे। दोनों आकाश में व्याप्त हो गए और ग्रहों को पीड़ित करने लगे। छिन्न हो गए हैं दृढ़ लगाम जिनके ऐसे घोड़ों और हाथियों की घटाओं वाले दोनों दल त्रस्त हो उठे। योद्धा गिरने लगे। दर्शक नाश को प्राप्त होने लगे। कवच गिरने लगे। श्रेष्ठ अश्व च्युत होने लगे। दोनों सैन्य धरती कंपाने लगे, अप्सराओं को संतुष्ट करने लगे। दोनों मत्सर से भरे हुए थे। दोनों मरण की इच्छा कर रहे थे, दोनों क्षण-क्षण में मूर्च्छा को प्राप्त हो रहे थे, दोनों शत्रु को प्रवंचित करने वाले थे, दोनों प्रहरणों में तत्पर थे। दोनों मद से परिपूर्ण थे। जिसने कृतांत को प्रसन्न किया है, जो सामंतों से कांत और वैतालों से युक्त है, ऐसे उस युद्ध के बीच, कांति से युक्त चन्द्रमा और ऋद्धि से युक्त इन्द्र के समान किलकिलपुर का राजा विद्याधरेन्द्र बालि दौड़ा। उसने भाई से कहा—रे शत्रु, विद्याधरों और अपनी जाति को छोड़कर, स्वामी के मान से दग्ध दुष्ट दुर्विदग्ध गुण-ऋद्धि से शून्य हे सुग्रीव,

घत्ता—मेरी सेवा, बंधु के संबंध और स्नेह के ऋण को छोड़कर, तथा मनुष्यों की सेवा में प्रवेश कर बता तू कितने दिन जीवित रहेगा?

(7)

युद्ध में अपने प्राणों का नाश मत कर। हे पाप, किष्किंधा नगरी चला जा। यह वचन सुनकर सुग्रीव कहता है—यदि तुम्हें नष्ट कर, मुझे स्थापित नहीं करता तो लक्ष्मण निश्चित रूप से भूगोचर है, नहीं तो तुमने निष्फल कथन किया। फिर वे दोनों विद्याबल से एक

3. AP फाडियधयाइं मोडियरहाइं। 4. AP तासिय°। 5. A °पेक्खराइं। 6. A हियभय°। 7. A °दड्ढु। 8. A दुव्वियड्ढु। 9. A गुणड्ढु। 10. A संढु। 11. मेल्लिवि सेवा। 12. AP बंधुणिबद्धइं।
(7) 1. A णिरुत्तु।

ते बे वि लग्ग विज्जाबलेण पुणु हुयवहेण पुणु पुणु जलेण ।
पुणु तरुवरेण पुणु मारुएण[2] पुणु फणिणा पुणु विणयासुएण ।
जुज्झिय बेण्णि[3] वि पुणु भणइ जेट्ठु मइं कुद्धइ रक्खइ कवणु इट्ठु ।
ता भासइ तहिं राहवकणिट्ठु तुहुं ण मुणहि सिट्ठु अणिट्ठु विट्ठु ।
हउं विट्ठु देउ दसरहकुमारु हउं विट्ठु सदुट्ठट्ठियकुठारु ।
णउ[4] दिण्ण हत्थि रे देहि घाय तुह एव्वहिं कुद्धा रामपाय ।

घत्ता—जइ जिणवरु सुमरिवि संतमणु चरहि सुदुद्धरु तवचरणु ॥
तो चुक्कइ महु रणि वइरि तुहुं जइ पइसहि रामहु सरणु ॥7॥

8

ता हसिउ पवलेण[1] बलिरायपुत्तेण संगामपारंभपब्भारजुत्तेण ।
भूयरणरिंदस्स किं तस्स किर थामु तुहुं गणिउ जगि केण अण्णेक्कु सो रामु ।
जइं अत्थि सामत्थु ता मेरुगिरितुंगु मइं जिणिवि रणरंगि अवहरहि मायंगु ।
अक्खिवसि[2] किं मुक्ख पक्खिदवरपक्ख किं कुणसि मइं कुइइ सुग्गीवि परिरक्ख[3]
रत्तोवलित्तेहिं दरिसियपहारेहिं गुणधम्ममुक्केहिं वम्मावहारेहिं ।
मारणकइच्छेहिं दुज्जणसमाणेहिं ता बे वि उत्थरिय विप्फुरियबाणेहिं ।
कोडीसरत्तेणं[4] णिव्वूढगावाइं छिण्णाइं चावाइं जमभउहभावाइं ।

---

दूसरे से भिड़ गए। फिर आग से, फिर जल से, फिर तरुवर से, फिर पवन से, फिर नाग से, फिर गरुड़ से दोनों लड़े। फिर बड़ा भाई बोला—मेरे क्रुद्ध होने पर तुझे कौन इष्ट बचा सकता है? तब राम का अनुज लक्ष्मण कहता है—तू नहीं जानता कि लक्ष्मी का इष्ट और तुम्हारे लिए अनिष्ट विष्णु (नारायण) है। मैं विष्णु देव दशरथ-कुमार हूँ। मैं विष्णु (गरुड़) हूँ, दुष्टों के लिए अस्थि-कुठार हूँ। तूने हाथी नहीं दिया। इस समय राम के चरण तुझ पर क्रुद्ध हैं।

घत्ता—यदि तू जिनवर का स्मरण कर शांत मन हो अत्यन्त दुर्धर तप का आचरण करता है और राम की शरण जाता है, तभी तू शत्रुयुद्ध में मुझसे बच सकता है।

(8)

इस पर संग्राम के प्रारंभ का प्रभार उठाने में संलग्न बलि राजा का पुत्र बालि हँस पड़ा। उस भूचर (मनुष्य) राजा की क्या शक्ति? तुम्हें और एक उस राम को जग में कौन गिनता है? यदि तुझ में सामर्थ्य है तो युद्ध में मुझे जीतकर, सुमेरु पर्वत के समान ऊँचे महागज का अपहरण कर ले। हे मूर्ख, तू विद्याधर पक्ष पर आक्षेप क्यों करता है? सुग्रीव के प्रति मेरे कुपित होने पर तू उसकी रक्षा क्यों करता है? तब वे दोनों मान से अनुरंजित, प्रहार को प्रकाशित करने वाले, गुण धर्म से रहित, मर्म का छेदन करनेवाले, मारने की इच्छा रखने वाले, विस्फुरित बाणों से युद्ध के लिए उछल पड़े। लक्ष्मण ने यम के समान भाव वाले और गर्व का निर्वाह करने

---

2. AP मारुवेण। 3. AP दोण्णि। 4. AP णो दिण्णु।

(8) 1. वालेण। 2. A अक्खवसि। 3. A परपक्खु; P परक्खु। 4. A कोडीसरत्तेहिं।

अण्णाइं गहियाइं अण्णाइं मुक्काइं चिंधाइं रुद्दद्धयंदेहिं[5] लुक्काइं[6]।
धावंत वेवंत सरभिण्ण हिलिहिलिय अंतावलीखलिय महिवीढि रुलुघुलिय[7]।
गयघायकडयडिय रह पडियजोत्तार भड भीम थिय बे वि संगामकत्तार[8]।
अब्भिट्ट ते वालि लक्खण महावीर थिरहत्थ सुसमत्थ सुरगिरिवराधीर[9]।
तडिदंडसरलेहिं तरलेहिं खग्गेहिं संचरणपइसरणणीसरणमग्गेहिं[10]।
खणखणखणंतेहिं उग्गयफुलिंगेहिं जिगिजिगियधारापरज्जियपयंगेहिं[11]।

घत्ता—रणसरवरि हयमुहफेणजलि सोणियधाराणालचलु ॥
असिचंचुइ[12] लक्खणलक्खणिण तोडिउ वालिहि सिरकमलु ॥8॥

9

फोडिवि रणि वइरिहि सिरकरोडि किलिकिलिपुरेण[1] सहुं गामकोडि।
दिण्णी सुग्गीवखगाहिवासु एवड्डु फुरणु भणु भुवणि कासु।
मेल्लेप्पिणु[2] लक्खणु लच्छिधामु[3] सुपसण्णु महाजसु जासु रामु।
गहियइं णियकुलचिंधइं वराइं[4] सीहासणछत्तइं चामराइं।
पुरवरि घरि मंडलि णिहिय भिच्च बहुबुद्धिवंत णिब्भिच्च सच्च।

वाले धनुषों को छिन्न-भिन्न कर दिया। दूसरे धनुष छोड़ दिए गए। पताकाएँ रौद्र अर्धचन्द्र वाणों से लुप्त हो गईं। तीरों से छिन्न-भिन्न होकर वे दौड़ते काँपते हुए मूर्च्छित हो गए। आतें खिसक गईं और महीपीठ पर व्याप्त हो गईं। गदाओं के आघात से कड़कड़ाते हुए रथ और सारथि गिरने लगे। भयंकर युद्ध करने वाले दोनों योद्धा स्थित थे। स्थिर हाथ, समर्थ, ऐरावत के समान धीर, बालि और लक्ष्मण दोनों महावीर भिड़ गए। विद्युद्-दंड की तरह सरल और तरल, संचरण प्रविशन और निःसरण के मार्गों से युक्त, खन-खन-खन करती हुई, चिनगारियाँ उड़ाती हुई, जिग-जिग चमकती हुई धारा से सूर्य को पराजित करती हुई तलवारों से वे दोनों भिड़ गए।

घत्ता—जिसमें घोड़ों के मुखों का फेन रूपी जल है, ऐसे युद्ध रूपी सरोवर में रक्तधारा रूपी कमलदंड से चंचल, बालि के सिर रूपी कमल को लक्ष्मण रूपी सारस ने तलवार रूपी चोंच से तोड़ दिया।

(9)

युद्ध में शत्रुओं के सिर के कपाल तोड़कर उस (लक्ष्मण) ने किलकिलिपुर नगर के साथ करोड़ों गाँव विद्याधर राजा सुग्रीव को दिए। बताओ इतना बड़ा शौर्य लक्ष्मण को छोड़कर किसका है कि जिसके ऊपर लक्ष्मीधाम, महायशस्वी राम प्रसन्न हैं? सुग्रीव ने अपने कुल के श्रेष्ठ चिह्न सिंहासन छत्र और चमर ग्रहण कर लिए। नगर और घर में अत्यन्त बुद्धिमान, सच्चे और विश्वसनीय अनुचरों को स्थापित कर दिया। महामेघ गज पर आरूढ़ होकर राजाओं

5. AP रुंदद्धयंदेहिं। 6. A मुक्काइं। 7. AP हुय घुलिय। 8. AP °कंतार। 9. A °धराधीर। 10. A संवरण°। 11. A पराजिय°। 12 AP असिधाराचंचुइ लक्खणेण।
(9) 1. P किलिगिलि°। 2. A मन्नेप्पिणु। 3. P लच्छिवासु। 4. A वडाइं।

आरुहिवि महाघणवारणिंदु[5] सहुं सुग्गीवेण णरिंदचंदु ।
संपत्तु जणद्दणु पुण वि तेत्थु णिवसइ वणंति बलहद्दु जेत्थु ।
तहु पायपणइ सीसें करेवि लक्खणु सुग्गीव चवंति बे वि ।

घत्ता—महिरूढउ वारियसूरकरु कामिणिवेल्लिविलासधरु ॥
तुहुं देव पयावहुयासणिण हेलइ दड्ढउ वालितरु ॥9॥

10

ता पिसुणमरणसंतोसिएण मेल्लिवि तं उववणु ववसिएण ।
जित्ताहवेण सहुं माहवेण सुग्गीवें हणुवें राहवेण ।
किक्किधपुरहु दिण्णउं पयाणु संघट्टउं[1] पहि[2] जाणेण जाणु ।
महिणहयराहं रिउरोहिणीउ चलियउ चउदह अक्खोहिणीउ ।
मंडलिय मिलिय वियलियसगव्व[3] दिस पत्तहिं छत्तहिं छइय सव्व ।
णहु दीसइ णउ छायउं धएहिं हरिचरणपहयधूलीरएहिं ।
करताडिय गज्जइ गमणभेरि भडहियवइ वड्ढइ वइरिखेरि ।
उण्णिद्दिय रामणगिलणमारि गोविंद कडक्खइ लच्छिणारि ।
करिमयचिक्खिल्लद्दहि[4] णिमग्णु संदणसंदाणिउ[5] वहइ सेण्णु ।

में श्रेष्ठ लक्ष्मण सुग्रीव के साथ वहाँ पहुँचे जहाँ वन के भीतर राम थे । सिर से उनके पैरों में प्रणाम कर लक्ष्मण और सुग्रीव दोनों ने कहा—

घत्ता—धरती पर प्रसिद्ध, सूरकर (सूर्य किरण,शूरवीरों के हाथ) का प्रतिकार करनेवाला, स्त्रियों रूपी लताओं का विलास धारण करने वाला बालि रूपी वृक्ष, हे देव, तुम्हारे प्रताप रूपी आग से खेल-खेल में जल गया ।

(10)

तब दुष्ट के मरण से संतुष्ट और उद्यमी राम ने उस उपवन को छोड़ दिया । युद्धों को जीतने वाले माधव, सुग्रीव और हनुमान् के साथ राम ने किष्किंधा नगर के लिए प्रयाण किया । रास्ते में यान से यान टकरा गए । मनुष्यों और विद्याधरों की शत्रु को रोंधने वाली चौदह अक्षौहिणी सेनाएँ चलीं । अपना गर्व छोड़कर वे मिल गए । पत्रों और छत्रों से सभी दिशाएँ आच्छादित हो गईं । ध्वजों और घोड़ों के पैरों से आहत धूलिरज से आच्छादित आकाश दिखाई नहीं देता । हाथों से आहत रणभेरियाँ बज उठीं । योद्धा के हृदय में शत्रु का क्रोध बढ़ने लगा । रावण को निगलने वाली मारि जाग उठी । लक्ष्मी रूपी नारी लक्ष्मण पर कटाक्ष फेंकने लगी । हाथियों के मद के कीचड़ में निमग्न रथ को रथ से बाँधकर सैन्य खीचने लगा ।

5. P महाघणुयारणिंदु ।

(10) 1. AP संघट्टिउ । 2. A पहु । 3. AP °सुगव्व । 4. AP °दहि । 5. A संदणि संदाणिए; P संदणसंदाणिए ।

घत्ता—हरिणीलें कुंदें परियरिउ खगसारंगविराइयउ ॥
किक्किंधसिहरि णियवंसधरु रामें रामु व जोइयउ ॥10॥

11

पइसंतहिं हलहरकेसवेहिं[1]   अवरेहिं मि बहुभूगोयरेहिं ।
जहिं णिवसइ सो सुग्गीउ खयरु   अवलोइउ तं किक्किंधणयरु ।
तोरणदुवारि सुपसत्थियाउ   दहिअक्खयमंगलहत्थियाउ ।
णरचित्तसारधणसामिणीउ[2]   बोल्लंति परोप्परु कामिणीउ ।
हलि[3] धवलउ कालउ कवणु रामु   बिहिं रूवहिं किं[4] थिउ देउ कामु ।
किं एहु[5] जि एहु ण एहु एहु   दीसइ वण्णंतरभिण्णदेहु ।
वररूवालुद्धइं जुंजियाइं   अच्चंतपलोयणरंजियाइं ।
जणवयणयणइं कसणइं सियाइं   णं हरिबलतणुछायंकियाइं ।
घरु आया कहिं लब्भंति इट्ठ   णियमंदिरु पडिवत्तीइ दिट्ठ ।
सिरपणमणण्हाणविलेवणेहिं   देवंगहिं णिवसणभूसणेहिं ।
अविचिंतियसाहसकित्तितण्ह   भावें संमाणिय रामकण्ह ।
सुग्गीवें बेण्णि वि सामिसाल   खलबलगलथल्लणबाहुडाल[6] ।
तहिं दियह जंति किर कइ वि जांव   संपत्तउ वासारत्तु तांव ।

---

घत्ता—किष्किंधा पहाड़ को राम ने (अपने) समान देखा जो हरि नील (लक्ष्मण और नील, इन्द्रनील मणि) और कुंद (कुंद, पुष्प विशेष) से घिरे हुए खग, सारंग (विद्याधर और धनुष, पक्षी और हरिण) से शोभित तथा नियवंश (कुटुम्ब, बासों) को धारण करने वाला था।

(11)

प्रवेश करते हुए बलभद्र और नारायण तथा दूसरे-दूसरे अनेक मनुष्यों ने, उस किष्किंधा नगर को देखा जहाँ विद्याधर सुग्रीव निवास करता था। तोरण वाले दरवाजों पर, अत्यन्त प्रशस्त, जिनके हाथों में दही अक्षत और मंगल द्रव्य हैं, ऐसी मनुष्यों के चित्त रूपी श्रेष्ठ धन की स्वामिनी स्त्रियाँ आपस में बातचीत करने लगीं। हे सखी, राम कौन हैं, गोरे या काले ? क्या कामदेव ही दो रूपों में स्थित हो गया है ? क्या यही हैं ? यह नहीं यह हैं। अलग-अलग वर्ण से भिन्न शरीर दिखाई देते हैं। सुन्दर रूप के लोभी और भूखे, अत्यन्त देखने से रंजित, लोगों के मुख काले और सफेद हो गए। सच है कि राम और लक्ष्मण के शरीर की कांति से साथ अंकित हो घर आये हुए इष्ट जन कहाँ मिलते हैं ? इसलिए उन्होंने गौरव के साथ उन्हें देखा। सिरों के प्रणामों, स्नानों और विलेपनों, दिव्य वसनों और आभूषणों से सुग्रीव द्वारा अचिंतनीय साहस और कीर्ति के प्यासे, दुष्ट सेना की गर्दनिया देने वाले हाथों रूपी डालों वाले दोनों स्वामी-श्रेष्ठों का सम्मान किया गया। जब तक वहाँ उनके कुछ दिन बीतते हैं, तब तक वर्षा ऋतु आ गई।

---

(11) 1. केसवहलहरेहिं। 2. A °घणसामिणीउ। 3. A हरि। 4. A थिउ किंव देउ। 5. A एहु। 6. °गल्लत्थण°।

घत्ता—घणगयवरि तडिकच्छंकियइ चडिउ धरेप्पिणु इंदधणु ।।
वरिसंतु सरहिं पाउसणिवइ णं गिंभें सहुं करइ रणु ।।11।।

12

कायउलइं तरुघरि संठियाइं     हंसइं सरमुयणुक्कंठियाइं[1] ।
सरवर संजाया तुच्छणलिण     दिसभाय[2] वि णवकसणब्भमलिण ।
णच्चंति मोर मज्जंति कंक     पंथिय वहंति मणि गमणसंक ।
चल चायय तण्हाहय लवंति     पउरंदरीउ जललउ पियंति ।
पवसियपियाउ दुहसल्लियाउ     महमहियउ जाइउ फुल्लियाउ ।
दिसपसरियकेयइकुसुमरेणु[3]     चिक्खिल्लें[4] तोसिय किडि करेणु ।
वरिसंतें देवें भरिउ देसु     जलु थलु संजायउं णिव्विसेसु ।
एक्कहिं मिलियाइं दिसाणणाइं     पप्फुल्लकयंबइं[5] काणणाइं ।
अवलोइवि रामु विसायगत्थु     थिउ णियकओलि संणिहियहत्थु ।
घत्ता—घणु गज्जउ विज्जु वि विप्फुरउ णडउ सिहंडि वि मूढमइ ।।
विणु सीयइ पावसु[6] राहवहु भणु किं हियवइ करइ रइ ।।12।।

13

पुणु सरउ पवण्णु सचंदहासु     वाणासणकयरिद्धीपयासु ।
विमलासउ कुवलयभेयकारि     बहुबंधुजीवदोसावहारि[1] ।

---

घत्ता—बिजली रूपी कच्छा (वरत्र, रस्सी) से अंकित मेघरूपी गज पर आरूढ़ इन्द्रधनुष लेकर पावस रूपी राजा मानों तीरों से बरसता हुआ ग्रीष्म के साथ युद्ध कर रहा है।

(12)

काककुल वृक्ष रूपी घरों में बैठ गए। हंस सरोवरों को छोड़ने के लिए उत्सुक हो उठे। सरोवर कमलों से हीन हो गए। दिशाएँ भी काले बादलों से मलिन हो गईं। मयूर नाचते हैं, बगुले डुबकियाँ लगाते हैं। प्यास से व्याकुल चंचल चातक चिल्लाने लगे और मेघों का पानी पीने लगे। प्रेषित-पतिकाएँ दुःख से पीड़ित हो उठीं। जुही की लताएँ महकने लगीं। केतकी कुसुम पराग दिशाओं में प्रसरित होने लगा। गज और सुअर कीचड़ से प्रसन्न हो उठे। मेघराज के बरसने पर देश (जल से) भर गया। जल और स्थल निर्विशेष हो गए। दिशाओं के मुख एकाकार हो गए। काननों में कदम्ब के पुष्प खिल गए। विषादग्रस्त राम उसे देखकर अपने गाल पर हाथ रखकर बैठ गए।

घत्ता—मेघ गरजा, बिजली चमकी और मूढ़मति मोर नाच उठा। बताओ वह पावस राम के हृदय में सीता के बिना कैसे प्रेम उत्पन्न कर सकता है?

(13)

फिर चन्द्रमा की कांति के साथ शरद् ऋतु रावण के समान आ गई जो मानो रावण के समान, वाणासन (वृक्ष विशेष, धनुष) की ऋद्धि को प्रकाशित करनेवाली, विमल आशयवाली, कुवलय (कमल, पृथ्वीमंडल का) भेदन करनेवाली, अनेक बंधु जीवों के दोषों का अपहरण करने

---

(12) 1. A सरसुअणु° । 2. A दिसभीय वि णं कसण° । 3. AP दिसि पसरिउ । 4. A चिक्खल्लें । 5. AP °कलंबइं । 6. P पाउसु ।

(13) 1 PA °जीवबंधु° ।

परिसंताबियपोमंतरंगु　　णं रावणु दावियदुक्खसंगु ।
णउ रुच्चइ रामहु वट्टमाणु　　पियविरहिउ किच्छें धरइ प्राणु[2] ।
ता सुग्गीवें वुत्तउ पहाणु　　केसव णिज्झायहि मंतझाणु ।
मेलावहि सीयारामकामु　　ता जाइवि सीयारामधामु ।
वसुसयसंखा वर[3] दुण्णिरिक्ख　　चउदिसहिं णिउंजिवि देहरक्ख ।
वरवीर कोंतकरवालहत्थ　　उच्चारिवि थुइमंगल पसत्थ ।
कयरयणकिरणपरिहववित्सुज्ज[4]　　सिवघोसमहामुणिपडिमपुज्ज ।
पडिविज्जावारणि पुज्जणिज्ज　　कण्हें साहिय पण्णत्ति विज्ज ।
संमेयमहीहरि सिद्धखेत्ति　　सुग्गीवें हणुवेण वि पवित्ति ।
गुरुयणविहीइ आराहियाउ　　णाणाविहविज्जउ[5] साहियाउ ।

घत्ता—अण्णेक्कहिं अण्णहिं गिरिसिहरि[6] भरहि भरेण पसिद्धियउ ॥
पणवंतिउ आयउ देवयउ पुप्फयंतरुइरिद्धियउ ॥13॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वालिणिहणणं[7]
रामलक्खणविज्जासाहणं णाम पंचहत्तरिमो
परिच्छेओ समत्तो ॥75॥

वाली, पद्म (कमल, राम) के अंतरंग को संतापदायक और दुःख का साथ दिखाने वाली थी। वर्तमान शरद्‌ऋतु राम के लिए अच्छी नहीं लगती। प्रिया से विरहित वह बड़ी कठिनाई से प्राण धारण करते हैं। तब सुग्रीव ने प्रधान (राम) से कहा—हे राम, मंत्र का ध्यान करिए। वह सीता और राम की कामना को मिलवा देगा। तब पृथ्वी में आराम स्थान पर जाकर, आठ सौ दुर्दर्शनीय देह वाले, भाले और तलवार लिये हुए श्रेष्ठ वीर रक्षकों को चारों दिशाओं में नियुक्त कर, प्रशस्त स्तुति मंगल का उच्चारण कर, जिसने रत्नकिरणों से सूर्य का पराभव किया है ऐसे शिवघोष महामुनि की प्रतिमा की पूजा की तथा प्रतिविद्या का निवारण करने वाली पूजनीय प्रज्ञप्ति विद्या को लक्ष्मण ने सिद्ध कर लिया। पवित्र सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर पर सुग्रीव और हनुमान् ने भी गुरुजनों की विधि से आराधित नाना प्रकार की विद्याएँ सिद्ध कीं।

घत्ता—भरतक्षेत्र के अद्वितीय गिरिशिखर पर दूसरों ने स्मरण (आराधना) से विद्याएँ सिद्ध कीं। सूर्य और चन्द्रमा की कांति से समृद्ध देवियाँ प्रणाम करती हुई आईं।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में, महाकवि पुष्पदंत द्वारा
विरचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का बालि-निधन
एवं राम-लक्ष्मण-विद्या-साधन नाम का पचहत्तरवाँ
परिच्छेद समाप्त हुआ।

2. AP पाणु। 3. AP धर। 4. AP परिहवियसुज्ज। 5. AP विज्जा। 6. A गिरिवरहे। 7. P वालिणिहणं।

## छहत्तरिमो संधि

राहवलक्खणहिं जयजयघोसेण जयाणउं ॥
उप्परि दहमुहहु आरूसिवि दिण्णु पयाणउं ॥ध्रुवकं॥

1

मलयमंजरी[1]—उट्ठिओ रउद्दो विविहतूरसद्दो भग्गवइरिधीरो[2] ॥
चलियसाहणाण[3] तुरयवाहणाणं कलयलो गहीरो ॥छ॥

संचल्लंति[4] रामि महि कंपइ — धरभरणमिउ ण फणिवइ जंपइ।
गयपयकुडिय[5] कुहिणि मयपंकें — दुग्गम भावइ कयजणसंकें।
रहरहंगगइदारियविसहर — महिहर दलिय मलिय मय वणयर।
पवणवसेण वलिय[6] विलुलियधय — हयमुहफेणसलिलपसमियरय।
वरभडथडचुण्णीकयमहिरुह — सेण्णाउण्ण सगयणासामुह।
सोसिय सरि सर णिसुढिय जलयर — असिविप्फुरणगसिय ससिदिणयर।

## छिहत्तरवीं संधि

राम और लक्ष्मण ने जय-जय घोष के साथ दशमुख पर क्रुद्ध होकर जयशील प्रस्थान किया।

(1)

जिसने शत्रु का धैर्य नष्ट कर दिया है, ऐसा विविध तूर्यों का शब्द तथा चलती हुई सेनाओं और अश्व-वाहनों का गंभीर कल-कल हुआ।

राम के चलने पर सेना काँप उठती है। धरा के भार से नमित नागपति कुछ नहीं बोलता। हाथी के पैरों से क्षुब्ध मार्ग लोगों को शंका उत्पन्न करने वाली मद-पंक से दुर्गम प्रतीत होता है। रथों के चक्रों की गति से विषधर कुचले गए। पहाड़ चूर हो गए। मृग और वनचर मर्दित हो गए। हवा के कारण ध्वज मुड़ गए और फट गए। घोड़ों के मुख के फेन रूपी जल से धूल शांत हो गई। श्रेष्ठ योद्धाओं की घटाओं से महीरुह (वृक्ष) चूर्ण-चूर्ण हो गए। आकाश सहित दिशाओं के मुख सेना से अपरित हो गए। नदियों और सरोवरों का पानी सूख गया। जल-

(1) 1. AP मलयमजरी णाम। 2. AP °वइरिवीरो। 3 P has कयपसाहणाणं before चलिय; K gives कयपसाहणाणं in margin and in second hand। 4. A संचल्लंतरामें। 4. AP °खुडिय°; K gives खुडिता वा as p। 6. AP चलिय।

रसिय भएण णाइं रयणायर थिय देविंद विसंठुल कायर।
देसु विलंघिवि रणरहसुब्भडु खंधावारु धरिवि जलणिहितडु।
आवासिउ संचारिमभवणहिं कंताकंतहिं रइरसरमणहिं।
असियसियारुणपीयलहरियहिं सोहइ बहुदूसहिं वित्थरियहिं।
घत्ता—सिमिरु[7] सुहावणउं परतरुणीसोहाखंडणु[8]॥
मेइणिकामिणिहि णं पंचवण्णु[9] तणुमंडणु[10] ॥1॥

2

मलयमंजरी—रयणकंतिकंतं मयरकेउवंतं विजयलच्छिवासं॥
सायरस्स णीरं णं विमुक्कमेरं रोहिउं[1] दसासं॥छ॥
गज्जिउ परबलु दुद्धरु दिट्ठउं चारएहिं दहवयणहु सिट्ठउं।
हणुमंतेण तरुणिकमणीएं सहुं णियभायरेण सुग्गीवें।
रामु रामरमणीउ[2] रमाहरु खग्गपसाहियसयलवसुंधरु।
अच्छइ सायरतीरि णिसण्णउ अज्जु कल्लि ढुक्कइ आसण्णउ।
सज्जणु अहिणवजलहरणीसणु तं णिसुणिवि विण्णवइ विहीसणु।
विणविवंसु[3] वरखयरपहुत्तणु भुवणभायणिम्मलजसकित्तणु[4]।
फार लच्छि देव वि घरि[5] किंकर कवणु गहणु तुह किर पायड णर।

चर नष्ट हो गए। तलवारों के विस्फुरण से चन्द्रमा और दिनकर ग्रस्त हो गए। समुद्र मानों भय से चिल्ला रहा था। देवेन्द्र ठगा हुआ और कायर रह गया। युद्ध के उत्साह से उद्‌भट उसने देश का उल्लंघन कर समुद्र के तट पर पड़ाव डाला। चलते हुए घरों में उन्हें ठहराया गया, कांताओं से सुन्दर, रतिरस से रमण, काले सफेद अरुण पीले और हरे अनेक विस्तृत तम्बुओं से वह शोभित था।

घत्ता—शत्रु-स्त्रियों के सौभाग्य का खंडन करनेवाला वह सुहावना शिविर ऐसा प्रतीत होता था मानो धरती रूपी कामिनी का पचरंगा शरीरमंडन हो।

(2)

रत्नों की कांति से सुन्दर, मकरध्वजों से युक्त, विजय रूपी लक्ष्मी के निवास, सागर का जल ऐसा ज्ञात होता है मानों मर्यादाहीन रावण को अवरुद्ध कर दिया गया हो।

शत्रु-सैन्य गरजा, वह कठोर दिखाई दिया, दूतों ने जाकर रावण से कहा—स्त्रियों के लिए सुन्दर लक्ष्मी को धारण करने वाले तथा अपने खड्‌ग से समस्त वसुंधरा को सिद्ध करने वाले राम हनुमान्, अपने छोटे भाई और सुग्रीव के साथ समुद्र के किनारे ठहरे हुए हैं। आज या कल में वह निकट आ जाएँगे। यह सुनकर अभिनव मेघ के समान स्वर वाला सज्जन विभीषण निवेदन करता है—एक तो विनमि वंश, श्रेष्ठ विद्याधर, संपूर्ण पृथिवी पर निर्मल कीर्ति, प्रचुर लक्ष्मी, घर में देव अनुचर, फिर वे प्राकृत नर तुम्हारा क्या ग्रहण करा रहे हैं? आते या न आते हुए उनका

7. AP सिविरु. 8. AP खंडणउं। 9. A पंचजण्णु। 10. AP मंडणउं।

(2) 1. A रोहिओ। 2. A रमणीयरमाहरु। 3. AP विणमिवसुंधर। 4. A भवणभाविणिम्मल°; P भुवणभाइ णिम्मलु। 5. A वर किंकर।

एंतु ण एंतु[6] होंतु बलदप्पिय संगरि तुह कहवालखंडप्पिय।
णिहिल जंति तिमिरु व दिवसयरहु पइं होंतें कहिं दिहि रिउणियरहु।
एक्कु जि दोसु[7] णवर परमेसर जं पइं वाहिय परणारिहि कर।

घत्ता—पूरइ तित्ति ण वि रइ पसरइ वंछइ संगहु ॥
परवहुरत्तमणु परि वडइ दिणेंहिं णियंगहु ॥2॥

3

मलयमंजरी—मयणवणियचित्तो परपुरंधिरत्तो मरइ साणुअंधो ॥
पडइ णरयरंधे[1] सत्तमे तमंधे बद्धकम्मबंधो ॥छ॥

विसहरसुरणरविरइयसेवहु धीरहु वसुसंखाबलएवहु।
हरिवाहिणिविज्जारहवाहहु भीमगयाहलमुसलसणाहहु।
वज्जावत्तसरासणहत्थहु दिज्जउ[3] घरिणि[4] देव काकुत्थहु।
चक्कपसूइ ण चगउं दावइ लक्खणु वासुएउ महुं भावइ।
अण्णहु[5] किंकिंधेसु ण रप्पइ अण्णहु किं रणि वालि समप्पइ।
अण्णहु मारुइ किं घरु आवइ किं पण्णत्तिविज्ज परिधावइ[6]।
अण्णहु पंचयण्णु किं वज्जइ अण्णु एव किं लच्छिइ छज्जइ।
अण्णें धरणिधेणु किह बज्झइ गारुडविज्ज ण अण्णहु सिज्झइ।

बल खंडित हो जाएगा। युद्ध में तुम्हारी तलवार से वे आहत होंगे। वे तुम से उसी प्रकार चले जाएँगे जिस प्रकार सूर्य से अंधकार हट जाता है। हे परमेश्वर, परन्तु केवल एक दोष है कि तुमने परस्त्री का हाथ जो पकड़ा।

घत्ता—तृप्ति पूरी नहीं होती और रति प्रसारित होती है, वांच्छा संग्रह करती है। इस प्रकार परस्त्री का रमण अपने ही शरीर के अंगों पर पड़ता है।

(3)

काम में आसक्त चित्त और परस्त्री में रक्त, पुत्र-कलत्रादि से सहित जिसने कर्म बांधा है ऐसा मनुष्य तमांध नामक सातवें नरक में जाता है। विषधर-सुर और मनुष्यों के द्वारा जिनकी सेवा की जाती है, ऐसे धीर आठवें बलदेव लक्ष्मण-सेना और विद्याधर, सेना का संचालन करने वाले भयंकर गदा, हल और मूसलों से सनाथ, जिनके हाथ में वज्रावर्त धनुष है ऐसे राम को, हे देव, उनकी गृहिणी दे दीजिए। चक्र की प्रभूति (उत्पत्ति) मुझे अच्छी नहीं लगती। लक्ष्मण और वासुदेव मुझे अच्छे लगते हैं। किष्किंधा का राजा किसी दूसरे से अनुराग नहीं करता। क्या युद्ध में बालि किसी दूसरे के लिए समर्पण करता? हनुमान् क्या किसी दूसरे के घर आता है और क्या प्रज्ञप्ति विद्या दौड़ती है? किसी दूसरे से पांचजन्य बजता है? लक्ष्मी से क्या कोई दूसरा शोभित होता है? किसी दूसरे के द्वारा धरती रूपी धेनु क्या बाँधी जाती है? गारुड़ विद्या किसी दूसरे के लिए सिद्ध नही हो सकती। परवधू इह लोक और परलोक में पराभव करने वाली होती

6. यंतु। 7. AP णवर दोसु।

(3) 1. A णरइरंधे। 2. A °विज्जाहर°। 3. A दिज्जइ। 4. AP देव घरिणि। 5. A अण्णु वि। 6. A परिहावइ।

परवहु इह पर परिहवगारी    अण्णु वि जाणइ धूय[7] तुहारी ।
केवलिभासिउ देव ण चुक्कइ    देहि बलहु जा णियइ ण ढुक्कइ ।
घत्ता—जंपइ दहवयणु भो[8] जाहि जाहि जइ भीयउ ।।
पूरइ आहयणि भडु कुंभयण्णु महु बीयउ ।।3।।

4

मलयमंजरी—रे विहीसणुत्तं किं तए अजुत्तं मुयसु महिणिवासं[1] ।।
हीणदीणवेसो चरणघुलियकेसो जाहि रामपासं ।।छ।।

हउं किं[2] पुणु परिवाडि[3] ण जाणमि    जा[4] ण समिच्छइ सा णउ माणमि ।
एण मिसेण दंतपहविमलइं    खुडमि रामलक्खणसिरकमलइं ।
तणुसीयइ[5] दंतहं[6] मलु फिट्टइ    विणु सीयइ महु किं ण पयट्टइ[7] ।
ता पणवंतु थंतु हेट्ठामुहु    कसणाणणु णं गब्भिणिउरुहु ।
छेउ णिहालिउ बंधुसणेहहु[8]    णिग्गउ बंधवु गउ णियगेहहु ।
मंतिमईहिं मंतु अवलोइउ    भायरेण मणु णिच्छइ ढोइउ ।
एउं[9] रहंगु खगिंदणिसुंभउं    जायउं[10] णाइ कुलीरहु डिंभउं ।
हा रावणु जियंतु णउ पेक्खमि    परहु जंति णियकुलसिरि रक्खमि ।
बलवंतइ विवक्खि असहायहं    तप्पएसु[11] भल्लारउ रायहं ।
इय चिंतंतु णिसिहि णीसरियउ    दिट्ठु समुद्दु तेण जलभरियउ ।

---

है । और फिर जानकी तुम्हारी कन्या है । हे देव, केवलज्ञानी का कहा हुआ कभी चूकता नहीं । जब तक तुम्हारी नियति नहीं पहुँचती, तब तक आप बलभद्र के लिए सीता देवी सौंप दें ।

घत्ता—तब रावण कहता है—अरे तुम डर गए हो तो जाओ-जाओ, युद्ध में मेरा दूसरा योद्धा कुम्भकर्ण काम में आएगा ।

(4)

रे विभीषण ,तूने अनुचित बात क्यों कही ? तू इस धरती का निवास छोड़ दे । हीन-दीन वेश में पैरों तक अपने केश फैलाए हुए तू राम के पास जा ।

मैं क्या फिर परिपाटी नहीं जानता ? जो स्त्री मुझे नहीं चाहती, उसे मैं नहीं मानता । इस बहाने दाँतों की प्रभा से विमल राम और लक्ष्मण के सिर-कमलों को काट लूँगा । तृण की सीक से दाँतों का मल नष्ट हो जाएगा । बिना सीता के मेरा क्या नहीं होगा । तब प्रणाम करता हुआ विभीषण अपना मुख नीचा करके रह गया । गर्भिणी के उरोजों की तरह उसका मुख काला हो गया । उसने भाई के प्रेम का अन्त पा लिया । भाई निकलकर अपने घर चला गया । मंत्रियों की बुद्धि से उसने मंत्र का अवलोकन किया कि भाई ने निश्चित रूप से अपना मन दे दिया है । हा रावण, मैं तुम्हें जीवित नहीं देखूँगा । फिर भी दूसरे के यहाँ जाती हुई अपनी कुललक्ष्मी की रक्षा करूँगा । विपक्ष के बलवान होने पर असहाय राजाओं का उसमें प्रवेश कर लेना अच्छा है । यह विचार करते हुए वह रात्रि में निकला, और उसने जल से भरा हुआ समुद्र देखा ।

---

7. P धीय । 8. A हो जाहि ।

(4) 1. A महु णिवासं । 2. AP पुणु किं । 3. A पडिवाडि । 4. A जो । 5. A तणे सीयए । 6. AP दसणहं । 7 A पइट्ठइं । 8. A बंधसणेहहु । 9 A एहु । 10 A जोयउ । 11. P तप्पवेसु ।

घत्ता—झिज्झइ चंदु जइ तो सायरजलु[12] ओहट्टइ ॥
पडिवण्णउं गुरुहुं आवइकालि ण फिट्टइ ॥4॥

5

मलयमंजरी—जइ वि णिच्चवंको देहए ससंको तो वि एस चंदो ॥
सायरस्स इट्ठो माणसे पइट्ठो कंतियाइ रुंदो ॥छ॥

हउं पुणु खलु चुक्कउ मज्जायहि बंधुवइरि किं जायउ मायहि ।
इय जूरंतु जाम णहि वच्चइ ता रामहु विसारि संसुच्चइ ।
देव विहीसणु दंसणु मग्गइ तुह चरणारविंदु ओलग्गइ ।
पेक्खु पेक्खु णहि आयउ वट्टइ जिह पडिवण्णु णेहु णोहट्टइ ।
तिह हरि[1] करि तुहुं बेण्णि वि पत्थिय तेण दसासवित्ति अवहत्थिय ।
ता रामें सुग्गीवहु पेसणु दिण्णउं आणहु तुरिउ विहीसणु ।
गय ते तहिं[2] सो वि सुपरिक्खिउ णिरु णिब्भिच्चु भिच्चु ओलक्खिउ ।
आणेप्पिणु दाविउ हलधारिहि पणविउ दाणविंदकुलवइरिहि ।
तें संमाणिउ रावणभायरु किउ संभासणु सहरिसु सायरु ।

घत्ता—चित्तु चित्ति मिलिउं जगि परु वि बंधु हियगारउ ॥
बंधु जि परु हवइ जो णिच्चु जि वड्ढियवइरउ ॥5॥

---

घत्ता—यदि चन्द्रमा क्षीण होता है, तो समुद्र का जल कम होता है। बड़े लोगों की स्वीकृति (शरण) आपत्तिकाल में नष्ट नहीं होती।

(5)

यद्यपि यह हमेशा वक्र रहता है, इसके शरीर में शशांक है फिर भी यह चन्द्र है, सागर का इष्ट, मानस में प्रविष्ट और कांति से सुन्दर।

परन्तु मैं दुष्ट हूँ। मर्यादा से चूका हुआ, एक ही माँ से पैदा हुआ मैं भाई का शत्रु कैसे हुआ? इस प्रकार पीड़ित होता हुआ जब वह आकाश में जा रहा था कि इतने में दूत राम के लिए सूचना देता है—हे देव, विभीषण आपके दर्शन चाहता है, वह आपके चरणों से आ लगा है। देखिए-देखिए वह आकाश में आया हुआ है। जिस प्रकार स्वीकार किया प्रेम कम नहीं होता, उसी प्रकार लक्ष्मण और आप दोनों को उसकी प्रार्थना स्वीकार हो। उसने रावण की वृत्ति का तिरस्कार किया है। तब राम ने सुग्रीव के लिए आदेश दिया कि विभीषण को शीघ्र ले आओ। वे लोग वहाँ गए और उन्होंने उसकी खूब परीक्षा ली और उसे अत्यंत निर्भीक व्यक्ति पाया। लाकर, उन्होंने राम से उसकी भेंट करवाई। उसने दानवेन्द्र कुल के शत्रु को प्रणाम किया। उन्होंने (राम ने) भी शत्रु के भाई का स्वागत किया तथा हर्ष और स्नेह के साथ उससे बातचीत की।

घत्ता—चित्त से चित्त मिल गया। दुनिया में हित करने वाला पराया भी अपना बंधु हो जाता है, और नित्य शत्रुता बढ़ाने वाला भाई भी दुश्मन हो जाता है।

---

12 A सायरु जलु। 13. P adds वि after कालि।

(5) 1. AP करि हरि। 2. AP तहिं जि सो।

6

मलयमंजरी—पुरिससोक्खगाही अहियदेहवाही[1] तिव्वदुक्खवल्लि[2] ॥
कुणइ कह[3] वि आयं सुण्णरण्णजायं ओसहं सुहेल्लि[4] ॥छ॥

रावणरज्जदाणु वित्थिण्णउं रामें तासु[5] तिवायइ दिण्णउं।
गय कइवय वासर तहिं जइयहुं हणुएं वुत्तु हलाउहु तइयहुं।
दे आएसु[6] देव णउ थक्कमि एवहिं लंकहि संमुहु ढुक्कमि।
भीमें वाणररूवें वड्ढमि डहमि घरइं भडभंडणु[7] कड्ढमि।
भंजमि वणइं लवलिदललंबइं[8] फलणवियंगइं पल्लवतंबइं।
ता दसरहसुएण परबलहर अरिकरिदंतघट्टदीहरकर[9]।
कामरूवधर णावइ सुरवर तासु सहाय दिण्ण विज्जाहर।
वाणरविज्जइ वाणर होइवि सयल वि गय लंकाउरि जोइवि।
गयणविलग्गदेह गिरिपहरण बुक्करंत वग्गिय मग्गियरण।
पुछवलयवलइयतरुवरसिल चरणचारचालियधरणीयल।
छिब्बरणास[10] दीहदंताणण पिंगलणयण छोहभीसावण।
धाइय पत्त दसासहु पट्टणु मारुइणा जोइउ णंदणवणु।

(6)

पुरुष के सुख को उखाड़ देनेवाली अधिक देहव्याधि तीव्र दुःख रूपी लता को बढ़ाती है, मैं शून्य वन में उत्पन्न इस सुखद औषधी को बताता हूँ।

रावण राजा का घमंड विस्तृत है। राम ने तीन बार उसे वचन दिया है। जब (वहाँ रहते हुए) कई दिन बीत गए तब हनुमान् ने राम से कहा—हे देव, आदेश दीजिए, मैं नहीं ठहर सकता। इस समय मैं लंका के सम्मुख जाऊँगा। भयंकर वानर रूप में अपने को बढ़ाऊँगा, घरों को जलाऊँगा। योद्धा रूपी वर्तनों को निकालूंगा। लवली लता से अवलंबित फलों से झुकी हुई शाखाओं वाले पल्लवों से लाल-लाल वनों को नष्ट करूँगा। उस अवसर पर राम ने शत्रुबल का अपहरण करने वाले, शत्रु-गजों के दाँतों से अपने लम्बे दाँत घिसने वाले, यथेच्छ रूप धारण करने वाले, जैसे देव हों ऐसे विद्याधर उसकी सहायता के लिए दिए। सभी विद्याधर वानर-विद्या से वानर होकर, लंका को लक्ष्य बनाकर गए। उनके शरीर आकाश से लगे हुए थे। गिरि प्रहरण करते, बुक्कार करते हुए, क्रुद्ध और युद्ध करते हुए, अपनी पूँछों से तरुवर और चट्टानों को मोड़ते हुए, पैरों के संचार से धरती को प्रकंपित करते हुए, चिपटो नाक और लम्बे दाँतों वाले, पीले नेत्रों वाले और क्रोध से एकदम भयंकर वे दौड़े और रावण-नगर पहुँच गए। हनुमान् ने नंदनवन को देखा।

(6) 1. A °देववाही। 2. A दुक्खमल्ली; P दुक्खवेल्लि। 3. AP कहिं वि। 4. A सुहेल्ली। 9. AP तासु वि वायइ। 6. P देहाएसु। 7. P भडम्रंडणु। 8. A बिल्लदललंबइं; P लवलिदलवंतइं। 9. P °करिकंत°। 10 AP छिब्बिर°।

घत्ता—हरिकररुहवणिउं आलग्गसुरहिणवचंदणु ॥
वणु महु आवडइ णं लच्छिहि केरउं जोव्वणु ॥6॥

7

मलयमंजरी—रूढबालकंदं देवदारुमंदं सूरकिरणवारं ॥
दिण्णकुसुमवासं दिव्वमिहुणवासं जणियमयणसारं ॥छ॥
इंदसरासणेण घणउलमिव णीलतमालणिद्धयं ।
वणमंजणसुएण लंगूलें चउहिं वि दिसहिं रुद्धयं ॥1॥
सुरकरिसोंडचंडभुयदंडबलेण[1] चलेण पेल्लियं ।
मोडियमहिरुहोहसंघट्टणचुयचंदणरसोल्लियं ॥2॥
[2]करमरकडहकुडयकडयडरवउड्डावियविहंगयं[3] ।
भग्गणवल्लफुल्लपल्लवदलगयगुमुगुमियभिंगयं ॥3॥
[4]णिविडवडालिवंदणुम्मूलणविहडावियरसायलं[5] ।
णिग्गयसविसफरुसफुक्कारभयंकरसमणिफणिउलं ॥4॥
चूरियचारचूयचवचिंचिणिसमिलवलीलवंगयं[6] ।
[7]पायाहयपलोट्टचंपयचयदलवट्टियकुरंगयं[8] ॥5॥
दलियलयाणिवासणिण्णासियसुरवरखयररइसुहं ।

घत्ता—(वह कहता है) मुझे यह नंदन वन लक्ष्मी के यौवन के समान दिखाई देता है कि जो विष्णु के नाखूनों से व्रणित है (जो हाथी के नखों से व्रणित है) और जिसमें सुरभित चंदन (चंदनवृक्ष) लगा हुआ है।

(7)

जो छोटी-छोटी जड़ों से अवरुद्ध था, देवदारु वृक्षों से पूर्ण, सूर्य की किरणों का निवारक, कुसुमों से आवासित, दिव्य मिथुनों का निवास और काम के श्रेष्ठतत्त्वों से अधिष्ठित था; नील तमाल वृक्षों से कांतियुक्त वह ऐसा लगता था मानो इन्द्रधनुष से युक्त मेघ समूह हो। उस वन को अंजनी के पुत्र ने अपनी पूंछ से चारों ओर से अवरुद्ध कर लिया। ऐरावत हाथी की सूंड के समान भुजदंड के चंचल बल से उसे प्रेरित किया। मोड़े गए वृक्षों के समूह के संघर्ष से उत्पन्न च्युत चंदन रस से जो आर्द्र हो उठा; जहाँ करमर कटभ और कुटज वृक्षों पर होने वाले कटकट शब्द से पक्षी उड़ा दिए गए हैं, छिन्न नव पुष्प और लताओं के दलों पर भ्रमर गुनगुना रहे हैं, जिसमें सघन वट वृक्षावलि एवं रक्त चंदन वृक्षों के उन्मूलन से पृथ्वीतल विघटित हो गया है, जिसमें निकलती हुई अपने विष की कठोर फूत्कार से मणि सहित नागकुल भयंकर हो उठा है, जिसमें अचार, आम्र, चव, चिंचिणी और शाल्मलिफली और लवंग लताएँ चूरित हो चुकी हैं, पैरों के प्रहार से धरती पर गिरे हुए चम्पक वृक्षों के समूह से हरिण समूह पिच गया है, दलित लतानिवासों में जहाँ सुरों और विद्याधरों का रति सुख नष्ट

(7) 1. AP °छंडसुंडभुय°। 2. A करमरकुडयकडय, P करमरंकुहडकुडयकडय°। 3. AP °कडयडसरउड्डा°। 4. A णिवडियडालि°; P णिवडवडालि°। 5. Ap °रसालयं। 6. AP °चविंचिचिणि°। 7. AP °चंपयरयदल°। 8. P वड्डिय°।

सुकढिणकरतलप्पमुसुमूरियकीलागिरिगुहामुहं[9] ॥6॥
पविमलमणिसिलायलुच्छलणदिग्गयजक्खकंतयं ।
सरवावीणिबद्धविद्धंसियकीलासलिलजंतयं ॥7॥
हयवित्थिण्णसाहिसाहाचुयबहुमहुबिंदुतंबयं[10] ।
पडियकवित्थभग्गकिंणरकरवीणालग्गतुंबयं ॥8॥
दूरुद्धरियविडविमूलुज्झियविवरणिलीणसावयं ।
पडिरवतसियरसियवियसियाणणवाणरविरइयावयं[11] ॥9॥
खंडियतुंगमड्डसिहरुड्डियहंसविमुक्कसद्दयं[12] ।
णिवडियणालिएरसालामलफलमालाविमद्दयं ॥10॥
घल्लियसुक्करुक्खसंघट्टसमुग्गयजलणजालयं ।
दड्ढपियंगुपिंगउच्छलियफुलिंगपलित्ततमालतालयं[13] ॥11॥
मुक्कतिसूलसेल्लसरधोरणिसव्वलभिंडिमालयं[14] ।
धाइयभिउडिभंगभीसावणभिडिउज्जाणवालयं ॥12॥
घत्ता—विज्जाणिम्मियहिं अइभीमहिं मायारक्खहिं[15] ॥
पावणि वेढियउ रावणणंदणवणरक्खहिं ॥7॥

8

मलयमंजरी—संगरम्मि कुद्धा पमयएहिं[1] रुद्धा वूढवीरमाणा ॥
मारिया अणेया जित्तहरिणवेया रक्खसा पलाणा ॥छ॥

---

हो चुका है, जहाँ अत्यन्त कठोर प्रहारों से क्रीड़ागिरि के गुहामुखों को चूर-चूर कर दिया गया है, जो विशाल मणिमय चट्टानों पर उछलते दिग्गजों और यक्षों से सुन्दर है, जिसमें सरोवर और वापियों में लगे हुए क्रीड़ा सलिल यंत्र ध्वस्त हो चुके हैं, जो आहत बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाओं से च्युत प्रचुर मधु बिंदुओं से ताम्र है, जहाँ गिरते हुए कपित्थों (कैंथ) से भग्न किन्नरों के कर में वीणा की तुम्बी लगी हुई है, जहाँ दूर तक उखड़े हुए वृक्षों की जड़ों से नीचे गिरे हुए विवरों में पक्षी-शावक लीन हैं, जहाँ प्रतिशब्द से त्रस्त और चिल्लाते हुए विकसित-मुख वानर चक्कर काट रहे हैं, जो खंडित ऊँची और मर्दित शिखर से उड़ते हुए हंसों के द्वारा मुक्त शब्दों से युक्त है, जो गिरे हुए नारियलों की शाखाफल-मालाओं से विमर्दित है, जहाँ दग्ध प्रियंगु लता के उछलते हुए पीले स्फुलिंगों से तमाल और ताल वृक्ष प्रदीप्त हैं; जो छोड़े गए त्रिशूल सेल, तीरपंक्ति, सव्वल और गोफनी से युक्त है, जिसमें दौड़कर भृकुटि भंग से भयावह उद्यानपालों से भिडंत हो गई है।

घत्ता—विद्यानिर्मित अत्यन्त भयंकर मायावी राक्षसों और रावण के नन्दन वन के रक्षकों द्वारा हनुमान् घेर लिया गया।

(8)

युद्ध में क्रुद्ध, वानरों द्वारा अवरुद्ध, वीरता का दर्प करनेवाले, हरिण का वेग जीतने

---

9. A °खरतलप्प° । 10. P omits बहु । 11. AP रसियतसिय । 12. A सिहरुड्डिय° । 13. AP omit तमाल । 14. A °भिंडमालयं । 15. AP अइभीयहिं ।

(8) 1. A एम एहिं रुद्धा ।

अवर वि आया मायाणिसियर लउडिमुसुंडिकुंतकंपणकर।
कुडिल बद्धमच्छर इच्छियकलि जलियजलणजालाकेसावलि।
गुंजापुंजरत्तणेत्तुब्भड[2] दाढाचंडतुंड पललंपड।
दीहदीहजीहादललालिर[3] परबलघोलिर हूलिर सूलिर।
ताहं रणंगणि दावियरुंडहिं लग्गा वलिमुह गिरिसिलखंडहिं।
सरपुंखहिं भमरेहिं[4] व मंडिय जिह वणि तरु तिह ते रणि खंडिय।
जिह वेल्लिउ तिह अंतइं छिण्णइं जिह पत्तइं तिह पत्तइं[5] भिण्णइं।
जिह ताडहलइं तिह रिउसीसइं पाडियाइं धरणीयलि भीसइं।
जिह उज्जाणहु णट्ठइं चक्कइं तिह रिउरहवरि[6] भग्गइं चक्कइं।
जिह सर तिह विद्धंसिय रिउसर लंकाणयरि पइट्ठा वाणर।
घरि घरि चडिय जलंतहिं पुंछहिं णीसारियउ जलणु पिंगच्छहिं।
दड्ढइं णायरभवणसहासइं जालाहार व धाहाभीसइं।
घत्ता—लग्गउ वइरिपुरि हुयवहु हणुवंतें घित्तउ॥
राहवकोवसिहि णं दुण्णयतणेण पलित्तउ॥8॥

वाले अनेक राक्षस मारे गए और अनेक भाग खड़े हुए। दूसरे मायावी निशाचर लकुटि-मुसुंडी-कोंत से काँपते हुए हाथवाले, कुटिल मत्सर से भरे हुए, लड़ाई की इच्छा रखनेवाले, जिनकी केशावली आग की ज्वालावली से जल रही थी, जो गुंजाफल के समान लाल-लाल नेत्रों से उद्भट थे, दाँतों से प्रचंड मुखवाले, मांस के लंपट, लम्बी-लम्बी लपलपाती हुई जीभवाले, शत्रु सेना में चक्कर देने वाले, शूल वाले और हूलने वाले थे। तब युद्ध के प्रांगण में उनके धड़ों को गिराने वाले पहाड़ के शिलाखंडों से सहित वे वानर भिड़ गए। भ्रमरों के समान तीरपुंखों से वे शोभित हो उठे। जिस प्रकार वन में वृक्ष खंडित हो जाते हैं उसी प्रकार वे युद्ध में खंडित हो गए। जिस प्रकार लताएँ, उसी प्रकार उनकी आंतें छिन्न-भिन्न हो गईं। जिस प्रकार पत्ते उसी प्रकार उनके वाहन नष्ट हो गए। जिस प्रकार ताड़ वृक्ष के फल, उसी प्रकार शत्रु के भयंकर सिर धरती पर गिरने लगे। जिस प्रकार उद्यान से पशु-पक्षी भाग जाते हैं, उसी प्रकार शत्रुओं के श्रेष्ठ रथों के चक्र टूट गए। जिस प्रकार सरोवर उसी प्रकार शत्रु नष्ट हो गए। वानर लंका नगरी में घुस गए। अपनी जलती हुई पूंछों से वे घर-घर पर चढ़ गए। पीली आँखों वाले उन्होंने आग निकाली और चिल्लाहट से भरे हजारों नागर-भवनों को भस्म कर दिया, ज्वाल-माला की तरह।

घत्ता—हनुमान् के द्वारा प्रक्षिप्त आग शत्रुनगरी में जा लगी मानो राघव की क्रोध रूपी आग अन्यायरूपी तृण से जल उठी हो।

2. AP °णेत्तरत्तुब्भड। 3. AP जीहदीह°। 4. भमरिहिं ण; P भमरहिं ण। 5. AP पव्वइं K पत्तइं and gloss वाहनानि। 6. A रिउ रहे रहे; P रिउ रहवरे।

9

मलयमंजरी—छइयकेउसोहो णयणचारुरोहो[1] जणियलोयवसणो ।।
चडइ गयणि धूमो रावणस्स भीमो दुज्जसो व्व कसणो ।।छ।।

धूमंतरि जालोलिउ जलियउ णं णवमेहमज्झि विज्जुलियउ ।
पुणु वि ताउ सोहंति पईहउ णं चामीयरतरुवरसाहउ ।
संदाणियसीमंतिणिदेहउ सिहिणा पसरियाउ णं बाहउ ।
घरसिरकलसु वलंतें[2] छित्तउ सरिउणिवासु व पउलिवि घित्तउ ।
सहयरु छंदगामि णउ मुणियउ धउ परिघोलमाणु किं हुणियउ ।
उग्गु ण सज्जणपक्खु विहावइ उड्ढगामि किह[3] परु संतावइ ।
गमणें जासु होइ काली गइ तहु किर किं[4] लब्भइ सुद्धी मइ ।
वरमंदिरजडियइं माणिक्कइं डहइ[5] अछेयपहापइरिक्कइं[6] ।
तेयवंतु[7] परतेउ ण इच्छइ सइं जि पहुत्तणु विहवहु वंछइ ।
डज्झंतहिं चंदणकप्पूरहिं पउरसुरहिपरिमलवित्थारहिं ।
रयभमरइं[8] उक्कोइयमयणइं वासियाइं सयलइं दिसवयणइं ।
जिणवरवेसणिसेहकयत्थइं[9] दड्ढइं मउदेवंगइं वत्थइं ।

(9)

रावण के भयंकर अपयश की तरह काला धुआँ आकाश में चढ़ता है। छादितकेतुशोभ (ध्वज की शोभा को आच्छादित करने वाला, ग्रह विशेष को तिरस्कृत करने वाला), धुएँ के भीतर ज्वालावली इस प्रकार जल उठी मानो नवमेघ के भीतर बिजली चमक उठी हो। फिर वह लम्बी ज्वाला इस प्रकार शोभित होती थी मानो स्वर्ण-वृक्ष की शाखा हो। स्त्रियों के शरीर को पकड़ने वाली आग ऐसी मालूम होती थी, मानो उसने अपनी बाँह फैला दी हो। जलती हुई उससे गृहकलश गिर पड़ा मानो उसने अपने शत्रु (जल) के निवास रूप (घड़े) को जला कर फेंक दिया हो। उसने स्वच्छंदगामी अपने मित्र (वायु) को भी कुछ नहीं समझा। क्या (वायु से) आंदोलित ध्वज को इसलिए होम दिया? उग्र सज्जन पक्ष भी अच्छा नहीं लगता। उर्ध्वगामी होते हुए भी वह, दूसरों को क्यों सताती है? जिसके चलने में गति काली हो जाती है, उससे शुभ गति किस प्रकार पाई जा सकती है? वह निरन्तर प्रभा से परिपूर्ण श्रेष्ठ प्रासादों में बिजड़ित माणिक्यों को भस्म करने लगी। जो तेजवाला होता है वह दूसरे के तेज को नहीं चाहता। वैभव की प्रभुता वह स्वयं चाहता है। प्रचुर सुरभि परिमल विस्तारवाले, जलते हुए चंदन-कपूर से युक्त, भ्रमरों से व्याप्त काम-कुतूहल उत्पन्न करनेवाले समस्त दिशा-मुख सुवासित हो उठे। जिनवर के वेष (दिगम्बरत्व) का निषेध करने वाले मृदु कोमल वस्त्र जल गए।

(9) 1. P चारुणेहो। 2. चंडतें, P बलबंतें, bnt K वलंतें ज्वलता। 3. A किं परु। 4 AP कहिं। 5. A परबलु पेक्खिवि णावइ थक्कइं। 6. P °परियक्कइं। 7. P तेयमंतु। 8. A रइभमणइं। 9. A जिणवरभवणणिसेह°; P जिणवरवेसणिवेस°। 10. P सरियइ।

घत्ता—घरदुवारु जलइ वरपोमरायविप्फुरियउं ॥
जालापल्लवेहिं णं दीसइ तोरणु भरियउं[10] ॥9॥

10

मलयमंजरी—दहमुहस्स कम्मं मुक्कणायधम्मं जाणिउं व कुद्धो ॥
उक्कबाणजालं मुयइ णं विसालं सिहिं सिहासमिद्धो ॥छ॥

होमदव्वरासिउ संपत्तउ तिलजवघयकप्पासहिं तित्तउ[1]।
हुरुहुरंतु णं संति पघोसइ दिज्जउ[2] रामहु सीय महासइ।
होउ[3] संधि जीवउ महिमाणणु भुंजउ लच्छि अविग्घ[4] दसाणणु।
एत्तहि अग्गिजाल पवियंभइ एत्तहि वाणरविंदु णिसुंभइ।
माय ण पुत्तहंडु संमग्गइ[5] जणु हल्लोहलिहुउ कहिं णिग्गइ।
भवणारोहणु करिवि अभग्गउ णं वइसाणरु जोयहुं लग्गउ।
केत्तिय लंकाउरि मइं दड्ढी णं विडेण कामिणि दुवियड्ढी।
बाहिरपुरवरु एम डहेप्पिणु कित्तिमणिसियरणियरु वहेप्पिणु।
चलिउ[6] पडीवउ पावणि तेत्तहि णिवसइ ससिबिरु[7] राहउ जेत्तहि।

घत्ता—उत्तम पद्मराग मणि से विस्फुरित गृहद्वार जल गया। ज्वाला रूपी पल्लवों से वह ऐसा प्रतीत होता था मानो तोरण बँधा हुआ हो।

(10)

क्रुद्ध अग्नि ने रावण के धर्म और न्याय से मुक्त कर्म को जान लिया। शिखाओं से समृद्ध वह मानो विशाल उत्कट बाणज्वाला छोड़ रही थी।

तिल जौ घृत और कपास से परिपूर्ण होम द्रव्य-राशि प्राप्त हो गई जो मानो हुहुर-हुहुर कर शांति घोषित करती है कि महासती सीता राम को दी जाए और संधि हो जाए। मही को मानने वाला वह दशानन जीवित रहे और अविघ्न भाव से धरती का उपभोग करे। यहाँ अग्निजाल बढ़ रहा था। यहाँ वानर समूह नाच कर रहा था। माँ अपने पुत्र रूपी वर्तन का आलिंगन नहीं करती। लोग हड़बड़ा कर कहीं भी चले जा रहे थे। भवनों का आरोहण कर अभग्न आग मानो यह देखने लगी कि मैंने कितनी लंका नगरी जलाई है। मानो विट ने व्यभिचारिणी कामिनी को देखा हो। बाहर पुरवर को इस प्रकार जलाकर तथा कृत्रिम (मायावी) निशाचर समूह को नष्ट कर हनुमान् वापस चला जहाँ पर शिविर सहित राम ठहरे हुए थे।

(10) 1. A सित्तउ। 2. दिज्जहो। 3. A होइ। 4. A अविग्घु। 5. AP सामग्गइ। 6. A वलिउ। 7. A ससिवस; P ससिवह।

घत्ता—भरहें लक्खणेण सहुं सीरपाणि अवलोइउ ।।
तेणंजणहि सुउ सियपुप्फयंतु पोमाइउ ।।10।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णंदणवणमोडणं लंकाडाहं[8]
णाम छहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ।।76।।

---

घत्ता—भरत ने लक्ष्मण के साथ राम को देखा। उन्होंने सूर्य और चन्द्रमा के समान अंजना-पुत्र (हनुमान्) की प्रशंसा की।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य में नंदन-वन मोड़ने
और लंकादाह नाम का छिहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

8. P omits लंकाडाहं।

## सत्तहत्तरिमो संधि

वणु भंजिवि[1] पुरवरु णिड्डहिवि हणुइ[2] णियत्तइ जयसिरिकामें ॥
अज्ज वि किं णावइ खयरवइ पुच्छिउ एम विहीसणु रामें ॥ध्रुवकं॥

1

हेला—सो तेलोक्ककंटओ[3] सहइ किं पराणं ॥
धणुगुणरववियंभियं विलसियं सराणं ॥छ॥

ता भणइ विहीसणु भयणिरीहु जइ गिरिवरकंदरि वसइ सीहु ।
तो करि कुरंग किं तहिं[4] चरंति कायर तहु गंधेण जि मरंति ।
महिवइ[5] लंकहि जइ होंतु देव जीवंत एंति तो भिच्च केंव ।
तं जाणिउं[6] तुहुं वालिहि कयंतु रइवइसुग्गीवसहायवंतु ।
जसु भाइ अणंतु अणंतधामु सो विज्जइ विणु कहिं जिणमि रामु ।
इय चिंतिवि होइवि सुइसरीरु इंदइ णियरक्ख[7] करेवि धीरु ।
आइच्चपायमहिहरि दसासु थिरु विरएप्पिणु अट्ठोववासु ।
अच्छइ विज्जासाहणपयत्तु[8] णेरंतरु झाणारूढचित्तु ।

## सतहत्तरवीं संधि

वन को भग्न कर, पुरवर को जलाकर हनुमान् के निवृत्त होने पर, विजयश्री की कामना रखने वाले राम ने विभीषण से इस प्रकार पूछा कि विद्याधर आज भी क्यों नहीं आया ?

(1)

त्रिलोक के लिए कंटक स्वरूप वह दूसरों (शत्रुओं) के तीरों सहित धनुष-प्रत्यचा के शब्द से विकसित चेष्टा को क्या सहन कर सकता है ? तब विभीषण कहता है कि यदि भय से निरीह सिंह गिरिवर की गुफा में निवास करता है तो क्या हाथी और हरिण वहाँ विचरण कर सकते है ? वे कायर तो उसकी गंध से ही मर जाते हैं। हे देव, यदि राजा लंका में है तो अनुचर जीवित कैसे लौट सकते हैं ? उसने जान लिया कि तुम बालि के लिए यम हो, तथा हनुमान् और सुग्रीव तुम्हारे सहायक हैं। जिनका भाई लक्ष्मण अनंतधाम है ऐसे उस राम को मैं विद्या के बिना कैसे जीत सकता हूँ। यह विचार कर तथा पवित्र शरीर होकर, वीर इन्द्रजीत को रक्षक बनाकर रावण आदित्यपाद पर्वत पर आठ उपवास कर विद्याओं की सिद्धि में प्रयत्नशील तथा

(1) 1. P भुजिवि । 2. हणुवणियत्तइ । 3. तिल्लोक्क°; P तइलोक्क° । 4. A तहि किम चरंति । 5. AP जइ महिवइ लंकहि होंतु । 6. P तो जाणिउ । 7. AP णियरक्खणु करिवि । 8. P °साहणि ।

तं णिसुणिवि आढत्ताहवेण विज्जाहर पेसिय राहवेण ।
धाइय ते दुद्धर विग्घकारि हलमुसलसवालतिसूलधारि[9] ।

घत्ता—णहि जाइवि दिणयरचरणगिरि मायावाणरेहिं कयरावहिं ।।
वेढिउ विंझु व जलहरहिं गज्जणसीलहिं दरिसियचावहि ।।1।।

2

हेला—घोरणीलवण्णया छण्णगयणभाया ।।
आहूया घणाघणा सुक्कधीरणाया[1] ।।छ।।

वाओलिधूलिबहलंधयारु[2] गडगडिय[3] पडिय पाहाणफारु ।
णिवडिय तडि फोडिय गिरिखयालु वरिसाविउ तक्खणि मेहजालु[4] ।
जलु[5] थलु महियलु जलभरिउ सयलु पइ ढोइउ आयसवलयणियलु ।
दरिसिउ मंदोयरिकेसगाहु भडु कुंभयण्णु फणिबद्धबाहु ।
बधवसिरकमलइं तोडियाइं वच्छयलइं विउलइं फाडियाइं ।
कुद्धउ दसासु झाणाउ ढलिउ कहिं चंदहासु पभणंतु चलिउ ।
इंदइणा कहिउं खगेसरासु परमेसर खगमायाविलासु ।
णीसेसु वियंभिउ एहु ताव तुहुं णियणियमपब्भट्ठु जाव ।

ध्यान में निरन्तर आरूढ़चित्त होकर स्थित है। यह सुनकर युद्ध को प्रारंभ करने वाले राघव ने विद्याधर भेजे। विघ्न करने वाले एवं मूसल, तलवार और त्रिशूल धारण किए हुए दुर्धर विद्याधर दौड़े गये।

घत्ता—आकाश में जाकर कोलाहल करते हुए मायावी वानरों ने आदित्यपाद गिरि को उसी प्रकार घेर लिया जिस प्रकार इन्द्रधनुष का प्रदर्शन करते हुए गर्जनशील मेघों के द्वारा विंध्याचल घेर लिया जाता है।

(2)

भयंकर और नीले रंगवाले आकाश भाग को आच्छादित करने वाले, धीर शब्द करते हुए वे घनीभूत मेघ हो गए।

चक्रवात की धूल से जिसमें बहल अंधकार है, ऐसे पत्थरों (ओलों) से प्रचुर मेघ गड़गड़ा कर बरसने लगे। बिजली गिरी और विघटित हो गई। मेघ ने तत्क्षण मेघजाल की वर्षा की। जल थल महीथल समस्त जल से भर गए। मंदोदरी के पैरों में लोहे की शृंखला डाल दी। फिर दिखाया मंदोदरी के बालों का पकड़ा जाना और कुम्भकर्ण के हाथों को साँपों से बाँधा जाना। भाईयों के तोड़े गए सिरकमल और फाड़े गए विशाल वक्षस्थल। (यह देखकर) दशानन क्रुद्ध हो उठा। ध्यान से टल गया। चन्द्रहास कहाँ है? यह कहता हुआ चला। इन्द्रजीत ने विद्याधर राजा से कहा—हे परमेश्वर, यह विद्याधरों की माया का विलास है। यह समस्त फैलाव (माया का) तब तक के लिए है जब तक तुम अपने नियम से भ्रष्ट नहीं होते। तब राजा ने

9. A सबाणतिसूल°।

(2) 1. AP °धीर°। 2. P वाउधूलियबहल°। 3. गयघडिय°। 4. P मोहजालु। 5. A जलथलणहयल जलभरिय।

ता राएं विज्जादेवयाउ णिज्झाइयाउ णिहियावयाउ[6]।
आयाउ[7] ताउ पजलियराउ पेसणु महंति पणमियसिराउ।

घत्ता—भणु दसकंधर धरणिधर हरहुं जीउ अरिवरहु सणामहुं ॥
अम्हइं बलवंतहं हरिबलहं तसहुं[8] णवर रणि लक्खणरामहुं ॥2॥

3

हेला—ता भणियं महेसिणा जाह जाह तुम्हे ॥
णियभुयजुयसहायया संगरम्मि अम्हे ॥छ॥

सक्कहुं सीरिहि लच्छीहरासु किं वसणि दीणु भण्णइ परासु।
एत्तहि इंदइ अब्भिडिउ ताहं मायावियाहं साहामयाहं।
आवट्टइ लोट्टइ जायमण्णु संघट्टइ फुट्टइ वइरिसेण्णु।
दरमलइ थोट्टदुग्घोट्टथट्टु[1] सूडइ[2] विसट्टु पडिभडमरट्टु।
परिखलइ[3] वलइ हणु भणइ हणइ उल्ललिवि मिलइ रिउसिरइं लुणइ।
रुंभइ थंभइ तरवारिधार णिहणइ[4] विहुणइ पवरासवार।
सीसक्कइ फोडइ तडयडत्ति मुसुमूरइ छत्तइं कसमसंति।
असिवरइं खलंतइं खणखणंति[5] कडियलकिंकिणिउ[6] झुणुझुणंति।
पइसरइ तरइ कीलालवारि पडिवक्खहु पाडइ पलयमारि[7]।

(रावण) ने आपत्तियों का नाश करनेवाली विद्याओं का ध्यान किया। अंजलियाँ बाँधे हुए वे विद्याएँ आईं, और सिर से प्रणाम करती हुई आज्ञा की प्रशंसा करने लगीं (माँगने लगीं)।

घत्ता—हम लोग केवल प्रसिद्ध लक्ष्मण और राम की सेनाओं से युद्ध में डरते हैं। हे राजन्, बताओ किस महाशत्रु के जीव का अपहरण करूँ?

(3)

तब दशानन ने कहा, तुम लोग जाओ-जाओ। अपनी दोनों भुजाएँ हैं, जिनकी सहायता से संग्राम में मैं ऐसा हूँ। क्या संकट में लक्ष्मी को धारण करने वाले लक्ष्मण और राम से दीन वचन कहे जाएँ? यहाँ इन्द्रजीत उन मायावी वानरों से चिढ़ गया। क्रुद्ध वह शत्रुसेना को घुमाता है, चूर-चूर करता है, उससे भिड़ता है और नष्ट कर देता है, समर्थ और दुर्धर छटा को कुचल देता है। विशिष्ट शत्रुसेना के गर्व का नाश कर देता है। परिस्खलित होता, मुड़ता, मारो-मारो कहकर मारता, उछलकर मिल जाता और शत्रुओं के सिर काट डालता। तलवार की धार को रोक देता और स्तंभित कर देता। प्रबल घुड़सवारों को नष्ट कर चूर-चूर कर देता। तड़-तड़ कर शिरस्त्राणों को तोड़ देता। कसमसाते छत्रों को चूर-चूर कर देता। गिरती हुई तलवारें खनखनाने लगती हैं, कटितलों की किंकिणियाँ रुनझुन करने लगती हैं। वह रक्त के जल में प्रवेश करता और तिर जाता। शत्रु-पक्ष पर प्रलय मारि मचा देता। अपने गर्व का निर्वाह

6. A वणदेवयाउ। 7. P आइयउ। 8. P तसहु धरणे सहुं लक्खण°।

(3) 1. A °दुग्घट्ट°। 2. AP साडइ। 3. AP पडिखलइ। 4. P णिहुणइ। 5, AP खलखलंति। 6. AP किंकिणियउ रुणुरुणंति। 7. A पडयमारि।

इंदइ णिरत्थु कयवूढगव्वु आयासयलि गय पमय[8] सव्व ।

घत्ता—विहुरि वि धीरु अविसण्णमणु[9] ण चलइ किं पि सुहडहंकारहु ।।
लंकेसरु लंकहि गंपि थिउ खंधु समोड्डिवि[10] गुरुरणभारहु ।।3।।

4

हेला—कयरिउविग्घविब्भमा कमियगगणभाया[1] ।।
आया राममंदिरं विविहखयरराया ।।छ।।

ता इच्छियणियणाहसिवेणं हणुमंतें सुग्गीवणिवेणं ।
गिरिसंमेयसिहरसिद्धाओ[2] अणिमाइहि रिद्धिहि रिद्धाओ ।
विज्जाओ परसाहणियाओ केसरिखगवइवाहिणियाओ ।
दिण्णाओ दुल्लंघबलाणं वीराणं[3] गोविंदबलाणं ।
पण्णत्तीए रइयं जाणं रयणमयं मणहारि विमाणं ।
कूडकोडिसंघट्टियचंदं दिव्वं[4] कइवयजोयणरुंदं ।
भित्तिणिरूवियचित्ति[5] सुरूवं[6] बद्धसिणिद्धचिंधचंदोवं ।
रणझणंतमणिकिंकिणिजालं[7] हेममयं तोरणसोहालं ।
णाणाविहदुवाररमणीयं पारंभियसुरसुंदरिगीयं ।
आयण्णियणरखयरासीसो अक्खयदहिदोवंचियसीसो ।

करने वाला इन्द्रजीत निरस्त्र हो उठा। सारे वानर आकाश-तल में चले गए।

घत्ता—संकट में भी धीर, अविषण्णमन वह अपने सुभट होने के अहंकार से जरा भी विचलित नहीं होता। लंकेश्वर लंका में जाकर स्थित हो गया, अपने कंधों पर भारी रण-भार को उठाने के लिए।

(4)

जिन्होंने शत्रुओं में विघ्न का विभ्रम उत्पन्न किया है और आकाश भाग का उल्लंघन किया है ऐसे विविध विद्याधर राजा राम के घर आए।

अपने स्वामी का कल्याण चाहने वाले हनुमान् और सुग्रीव राजा ने, समेदशिखर पर्वत पर सिद्ध की गई अणिमादि ऋद्धियों से संपन्न एवं दूसरों को सिद्ध करनेवाली सिंहवाहिनी गरुड़वाहिनी आदि विद्याएँ अलंघनीय बलवाले वीर लक्ष्मण और राम को दे दीं। प्रज्ञप्ति विद्या द्वारा यान और रत्नमय सुन्दर विमान रचा गया जिसकी शिखरपंक्ति चन्द्रमा से संघर्षित थी। वह दिव्य और कितने ही योजन विशाल था। जो दिवालों पर बनाए गए चित्रों से सुन्दर था, जिसमें स्निग्ध ध्वज चंदोवा बँधा हुआ था, मणियों की किंकिणियों का सुन्दर जाल जिसमें रुनझुन-रुनझुन कर रहा था, जो स्वर्णमय तोरणों से सुन्दर था, नाना प्रकार के द्वारों से जो शोभनशील था, जिसमें सुन्दर देवगीत प्रारंभ किए गए थे, ऐसे उस विमान में मनुष्यों और विद्याधरों के आशीर्वादों को सुननेवाले तथा अक्षत दही दूध से अंचित सिर वाले राम,

8. A पवय। 9. ण विसण्णमणु। 10. AP समोडिवि।

(4) 1. AP गयण° 2. AP °सिहरि सिद्धाओ। 3. AP धीराणं। 4. A दिव्वा कइ° 5. A भित्तणिरूविय। 6. AP चित्तसरूवं। 7. AP रुणुरुणंत°।

तत्थारूढो देवो रामो     हरि[8] हरिसिल्लो अंजणसामो ।
दरिसियहयमुसलंकुसपासं     भूगोयरसेण्णं णीसेसं ।
चलियं गयणे खयराणीयं     सामिकज्जि परिछेइयजीयं ।
णाणाहरणविहूसियदेहं     गयवरदंतवियारियमेहं ।

घत्ता—संदाणिय णहि[9] ससिदिवसयर पेल्लापेल्लि[10] जाय[11] खगरायहं ॥
धयछत्तचलंतहं चामरहं हरिकरिरहवरभडसंघायहं ॥4॥

5

हेला—णवणिंत्तिससंणिहे णहयले चलंतं ॥
मयगलमयजले[1] बलं दीसए वहंतं ॥छ॥

करिछाहिहिं जलकरिवर विलग्ग     जलणर णरवरपडिबिंबभग्ग ।
धावंति मयर पलगिलणकाम[2]     झस सुंसुमार गंभीरथाम ।
सीमंतिणिपडिरूवइं णियंति     जलदेवयाउ सीसइं धुणंति ।
उज्जलमोत्तियभायणधरेहिं     पवणुद्धयचलवीईकरेहिं ।
गज्जइ समुद्दु वाहरइ णाइ     मरुकंपियंगु भयवसु व थाइ ।
सायरु लंघिवि परिहरिवि संक     वेढिय विज्जाहरणिवहिं लंक ।
किउ कलयलु रणपडहइं[3] हयाइं     भीरुहुं[4] चित्तइं विहडिवि गयाइं ।

लक्ष्मण तथा प्रसन्न हनुमान् आरूढ़ हो गए। जिसमें घोड़ों, मूसलों, अंकुशों और पासों का प्रदर्शन किया गया है ऐसा मनुष्यों का निःशेष सैन्य चला। आकाश में स्वामी राम के लिए प्राणों की बाजी लगाने वाली, नाना अस्त्रों से अलंकृत शरीर वाली और गजवरों के दाँतों से मेघों को विदीर्ण करने वाली विद्याधरों की सेना चली।

घत्ता—आकाश, सूर्य, चन्द्रमा स्थित रह गए। विद्याधर राजाओं के चलते ही ध्वजों, छत्रों, चामरों, घोड़ों, हाथियों, रथवरों और योद्धाओं से संघात से रेलपेल मच गई।

(5)

नव कृपाण की तरह कांतिवाले आकाश में चलता हुआ तथा मदगज के मदजल में बहता हुआ सैन्य दिखाई दे रहा था।

गजों के प्रतिबिम्बों से जलगज लग गए। जलमानुष नरवरों के प्रतिबिम्ब से भग्न हो गए। मांस खाने की इच्छा से मगर दौड़ रहे थे। मत्स्य और शिशुमार गंभीर शक्तिवाले थे। स्त्रियों के प्रतिबिम्बों को देखकर जलदेवियाँ अपना सिर धुनने लगतीं। उज्ज्वल मोती रूपी पात्रों को धारण करने वाले तथा हवा से कंपित चंचल लहरों रूपी हाथों से समुद्र गरज रहा था, मानो उसे निमंत्रण दे रहा हो। हवा से प्रकंपित शरीर वह ऐसा लगता जैसे भयभीत हो। शंका छोड़कर, समुद्र को पार कर, विद्याधर राजाओं ने लंकानगर को घेर लिया। उन्होंने कोलाहल किया और युद्ध के नगाड़े बजवा दिए। कायरों के चित्त भग्न हो गए। सातों पाताल थर्रा उठे। उन्मार्ग

8. P omits हरि । 9. A °णहससि° । 10. AP पेल्लावेल्लि । 11. P जाइ ।
(5) 1. मयरायले जले; P मयरायलजले । 2. A °पलिय° ।

सत्त वि पायालइं थरहरंति उम्मग्गलग्ग सायर तरंति ।
विसहर भयरसवस विसु मुयंति कुंचियकर दिसकरि कुक्करंति[5] ।
दित्तइं णक्खत्तइं ढलढलंति झुल्लंतइं णहि एक्कहिं मिलंति ।

घत्ता—वाइत्तयसद्दसमुच्छलेण संखोहणु जायउ तेल्लोक्कहु ।।
किं जाणहुं णहि तडि तडयडिय पडिउ बिंबु समियंकहु अक्कहु ।।5

6

हेला—ता भुवणुत्तुरडिणिवडणे[1] किं हुओ णिघोसो ।।
आहासइ दसाणणो गाढजायरोसो ।।छ।।

भायर किं सुम्मइ घोरु णाउ किं उड्डइ धूलीरयणिहाउ ।
दीसइ महिमंडलु महिहरेहिं[2] णहयलु संछण्णउं णहयरेहिं ।
ता विहसिवि पभणइ कुंभयण्णु अववरिउं देव पडिवक्खसेण्णु ।
हा हरि आढत्तउ जंबुएहिं वइवसु जीवहिं जीवियचुएहिं ।
सेरिहु मयमत्ततुरंगमेहिं[3] पक्खिवइ खलियउ उरजंगमेहिं ।
किं तुज्झु वि उप्परि एंति[4] सत्तु किं तुहुं वि समिच्छहि परकलत्तु ।
लइ ढुक्कउ[5] दीसइ विहिविहाणु भिडु एवहिं पीडिवि रणि किवाणु ।
तं णिसुणिवि भणिउं दसाणणेण जीवंतें मइं पंचाणणेण ।

में लगे हुए वे उसमें बहने लगे। सांप भय के कारण विष उगल रहे थे। अपनी सूंड टेढ़ी कर दिग्गज चिंघाड़ रहे थे। चमकते नक्षत्र आकाश से गिर रहे थे। आंदोलित वे आकाश में एक हो रहे थे।

घत्ता—वाद्यों के शब्दों के उठने से तीनों लोकों में संक्षोभ फैल गया। क्या जाने आकाश में बिजली तड़तड़ा कर गिरी अथवा चन्द्र सहित सूर्य का बिम्ब गिर पड़ा !

(6)

जिसे अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ है, ऐसा रावण पूछता है—क्या एक दूसरे पर स्थित भुवनों के गिरने का यह निर्घोष हुआ है ?

हे भाइयो, यह घोर नाद क्यों सुना जाता है ? धूल का यह समूह क्यों उड़ रहा है ? महीमंडल महीधरों से और आकाशतल नभचरों से क्यों आच्छन्न है ? तब कुंभकर्ण हँसकर कहता है—हे देव, शत्रु की सेना आ पहुँची है। खेद है कि हरिणों ने सिंह को आक्रांत किया है और यम को जीवन से च्युत जीवों ने। मदमत्त अश्वों द्वारा महिष घेर लिया गया है। सांपों ने गरुड़ को स्खलित कर दिया है। क्या तुम्हारे ऊपर भी शत्रु आ सकता है ? क्या तुम भी परस्त्री की इच्छा करते हो ? लो विधि का विधान पूरा होता दिखाई दे रहा है ! लो अब युद्ध में कृपाण को पीड़ित कर भिड़ो ! यह सुनकर रावण ने कहा—मुझ सिंह के जीते जी शत्रु रूपी मृग मिलकर क्या कर लेंगे ?

3. AP रणतूरई। 4. P भीरहुं। 5. A बुक्करंति; P कुक्कुवंति।

(6) 1. A °त्तकडिणिवडणे; P °तुरुडिणिवडणे। 2. A महियलेहिं; P महियरेहिं। 3. A मयमत्तु। 4. हुंति। 5. डुक्कइ।

अरिहरिण मिलेप्पिणु किं करंति असिणहरझडप्पिय[6] धुउ मरंति ।
धव[7] पावउ भुक्खिय पलयमारि पहणाविय लहुं संणाहभेरि ।

घत्ता—विरसंतइं णरकरयलहयइं तूरइं णाइ कहंति दसासहु ।।
राहवहु सीय णउ दिण्ण पइं कि उक्कंठिउ वइवसवासहु ।।6।।

7

हेला—कंचणकवयसोहिओ णवतमालवण्णो ।।
संझारायराइओ णं घणो रवण्णो ।।छ।।

संणज्झमाणु रिउतासणेण भडु सोहइ दिव्वसरासणेण ।
असिविज्जुइ विमलइ विप्फुरंतु जीवियरु जीवणु जणहु दिंतु ।
भडु को वि णिहालइ वाणपत्तु लइ एयहु एवहिं रिउ जि पत्तु ।
भडु को वि पलोवइ तोणजुम्मु णं रणसिरिऊरुजुयलु[1] रम्मु ।
भडु को वि मुयइ संणाहभारु किं कासु वि रुच्चइ लोहसारु[2] ।
कासु वि पइसरइ ण पुलइयंगि सो फुट्टइ पिसुणु व सुयणसंगि ।
किं धणुणा कयवहुसंकएण चरणेण वि आहववंकएण ।
भडु को वि भणइ हउं कोंतवाहु कोंतें वाहमि[3] रिउरुहिरवाहु[4] ।
मायंगकुंभु णिहिकुंभु[5] जेव हउं फोडमि अज्जु गयाइ तेव ।

वैरी तलवार रूपी नख के झपट्टे में पड़कर वह निश्चित रूप से नाश को प्राप्त हो जाएगा। भूखी महामारी तृप्ति को प्राप्त होगी। उसने शीघ्र प्रस्थान की रणभेरी बजवा दी।

घत्ता—मनुष्यों के हाथों से आहत और बजते हुए तूर्य मानो रावण से कह रहे हैं कि तुमने राम की सीता नहीं दी, तुम यम के निवास के लिए उत्कंठित क्यों हो ?

(7)

स्वर्णकवच से शोभित नव-तमाल वृक्ष के समान वर्णवाला रावण ऐसा लगता था मानो संध्याराग से शोभित सुन्दर वन हो। शत्रु को त्रास देनेवाले दिव्य धनुष से तैयार होता हुआ वह सुभट शोभित हो रहा था। विमल तलवार रूपी बिजली से चमकता हुआ तथा मेघ की तरह जीवन (प्राणवृत्ति और जल) देता हुआ कोई योद्धा बाणपुंख देखता है कि लो इससे अभी शत्रु प्राप्त हुआ। कोई सुभट तरकस युग्म को इस प्रकार देखता है मानो रणलक्ष्मी का सुन्दर उरुयुगल हो। कोई योद्धा कवचभार को छोड़ देता है। क्या किसी को भी लोहभार अच्छा लगता है ? किसी के पुलकित शरीर में वह (कवच) प्रवेश नहीं करता, सुजन का संग होने पर वह दुष्ट की तरह नष्ट हो जाता है। बहु (बहुत, वधू) की आशंका करने वाले धनुष से क्या ? युद्ध में वक्र चलने वाले चरण से क्या ? कोई सुभट कहता है कि मैं कोंत धारण करता हूँ, कोंत से मैं शत्रु के रुधिर को प्रवाहित करूँगा। निधियों के घड़ों की तरह मैं आज गदा से गजकुंभों को फोड़ूँगा। कोई सुभट

6. Ad °पहयर° । 7. A धुउ; P धउ; K धव and gloss तृप्तिम् ।
(7) 1. P °उरुजुयरम्मु । 2. AP लोहभारु । 3. A धाहमि । 4. A °धाहु । 5. A कुंभणिहि ।

भडु को वि भणइ महिपत्तियाइं[6] दंतखालमि थूलइं मोत्तियाइं ।
अवरु वि करिरयणहं देमि हत्थु णियणिवरिणमोक्खावणसमत्थु ।

घत्ता—दहवयणहु णिच्च विरत्तियहि को वि भणइ हियवउं संतावमि ।।
अणरसियहि सीयहि लग्गिय तणु राहवरत्तकुसुंभइ रावमि ।।7।।

8

हेला—आरूढा महासवारवाहिया तुरंगा ।।
कंचणसारिसज्जिया[1] चोइया मयंगा ।।छ।।

पवणपहयविलंबियधयवडं[2] विविहजाणजंपाणसंकडं ।
सयडचक्कचिक्कारपडिरवं बद्धरोसभडभिउडिभइरवं ।
विप्फुरंतकरवालधारयं हणु भणंत ढुक्कासवारयं ।
पणवतुणवझल्लरिमहासरं[3] चित्तछत्तछण्णंबरंतरं ।
चलियधूलिमइलियदिसामुहं पलयकालकालग्गिसंणिहं ।
इंदचंदणाइंदतासणं[4] णं कयंतरायस्स सासणं[5]
णिग्गयं बलं बहलकलयलं रहियणहयलं पिहियमहियलं ।
दुमुदुमंतरणहसमद्दलं[6] जाययं च पडिसुहडगोंदलं ।

---

कहता है—धरती पर पड़े हुए स्थूल मोतियों को मैं आज दिखाऊँगा और फिर मैं अपने राजा के ऋण को छुड़ाने में समर्थ गजरत्नों को दूँगा ।

घत्ता—कोई कहता है—नित्य विरक्त (विशेष रूप से रक्त) रावण के हृदय को मैं सताऊँगा और अरसिक (अरक्त) सीता के शरीर को राघव के लाल कुसुंभ रंग से रंजित करूँगा ।

(8)

महान् अश्वारोहियों द्वारा संचालित अश्व चल पड़े (आरूढ़ हो गए) । स्वर्ण की काठी से सज्जित हाथी प्रेरित कर दिये गए । जिसमें हवा से आहत ध्वजपट अवलंबित है, जो विविध यानों और जंपानों से व्याप्त है, जिसमें गाड़ियों के चकों के चिक्कार का प्रतिशब्द हो रहा है, जो बद्धरोष योद्धाओं की भ्रकुटियों से भयंकर है, जिसमें तलवारों की धाराएँ विस्फुरित हैं, मारो-मारो कहते हुए अश्वारोही पहुँच रहे हैं, जिसमें प्रणव तुणव व झल्लरी का महाशब्द हो रहा है, जिसमें चित्र-विचित्र छत्रों से आकाश आच्छादित है, जिसमें उड़ती हुई धूल से दिशामुख मैले हैं, जो प्रलयकाल की कालाग्नि के समान है, जो इन्द्र, चन्द्र और नागेन्द्र के लिए त्रास दायक है मानो यमराज का शासन हो, जिसमें अत्यन्त कोलाहल हो रहा है, जिसने आकाशतल को आच्छादित कर लिया है और पृथ्वी को ढक लिया है, जिसमें युद्ध के मृदंग डम-डम बज रहे हैं, जिसमें प्रतिभटों की तुमुल हर्षध्वनि हो रही है । तलवारों के आघात से जहाँ सिर छिन्न हो चुके

---

6. P महिपत्तियाइं ।

(8) 1. P °सारसज्जियए । 2. AP °पहयपविलंबिय° । 3. A पवणसत्तय° । 4. AP °दणुइंदतासणं । 5. P सासणं । 6. A °मंदलं ।

खग्गघायविच्छिण्णसीसयं हुंकरंतभूभंगभीसयं[7]
कोंतकोडिसंघट्टपेल्लियं वणगलंतकीलालरेल्लियं।
विचलियंतगुप्पंतचरणयं[8] हयगयासणीदिण्णकरणयं[9]।

घत्ता—पणवियराहवरामणपयइं सीयाकारणि अमरिसपुण्णइं ॥
अब्भिट्टइं गिरितरुवरकरइं मायावाणरणिसियरसेण्णइं ॥8॥

9

हेला—झसमुग्गरमुसंढिहिं[1] णिहयरवरंग ॥
जायं दंडसंजुयं दूरमुक्कभंगं ॥छ॥

रहिएहिं[2] रहिय तुरएहिं तुरय रणि रुद्ध एंत[3] दुरएहिं दुरय।
पायालहिं वरपायाल खलिय कमसंचालेण[4] धरित्ति दलिय।
हरिखुरखणित्तखउ[5] णं मरंतु उट्ठिउ धूलीरउ पय धरंतु।
आयासचडिउ[6] णं पुहइप्राणु[7] संताविर[8] तें पिहिउ भाणु।
चवलेण सुद्धवंसहु कएण णिवडंतु णिवारिउ णं धएण।
दीसइ पंडुरु[9] कविलंगु केव छत्तारविंदि मयरंदु जेव।

---

हैं, जो हुंकार करते हुए भूभ्रंगों से भयंकर है, जो कोंत परम्परा के संघट से प्रेरित है, जिसमें घावों से रिसते रक्त की धाराएँ हैं, जहाँ गिरी हुई आँतों में पैर उलझ रहे हैं, तथा अश्व और गजों के आसनों पर शस्त्र रखे हुए हैं ऐसा सैन्य निकल पड़ा।

घत्ता—जिन्होंने राघव और रावण के चरणों में प्रणाम किया है, जो अमर्ष से भरी हुई थीं, गिरि तथा तरूवर जिनके हाथों में हैं, ऐसी मायावी वानरों और राक्षसों की सेनाएँ सीता के कारण युद्ध में भिड़ गईं।

(9)

झस, मुद्गर और मुसंढि शस्त्रों के द्वारा जिसमें श्रेष्ठ मनुष्यों के अंग आहत हुए हैं तथा जो विघटन से मुक्त है, ऐसा दंडयुक्त युद्ध हुआ।

रथिकों (सारथियों) से रथिक, तुरगों से तुरंग और गजों से गज आते हुए अवरुद्ध कर लिए गए। पैदल सैनिकों के द्वारा पैदल सैनिक स्खलित (पराजित) कर दिए गए। पैरों के संचालन से धरती दलित हो गई। घोड़ों के खुरों रूपी खनित्रों द्वारा खोदा गया धूल समूह पैरों से लगता हुआ उठा मानो आकाश में जाते हुए पृथ्वी के प्राण हों। संतापकारी होने से उस धूल ने सूर्य को ढक लिया। शुद्ध वंश के कारण, चंचल ध्वज ने (अपने ऊपर) जमती हुई धूल का निवारण किया। सफेद और कपिल अंगवाली वह ऐसी लगती है जैसे छत्रों रूपी अरविन्दों का

---

7. P भीमयं। 8. AP विवलियंत°। 9. P गयसिणी°।

(9) 1. A झसमुसलमुसुंढिहि णिहिय°। 2. A रहएहिं। 3. AP यंत। 4. AP °संचारेण। 5. A णं खउ मरंतु। 6. AP आयासि चडिउ। 7. AP °पाणु। 8. A संताउ करंतु विणिहिउ भाणु; P संताव करंतें पिहिउ भाणु। 9. P पंडुर।

खुप्पइ[10] मयथिप्पिरि करिकवोलि[11] भणु को ण[12] विलग्गइ दाणसीलि ।
महुयरु पडिवक्खीहुयउ तासु किं पिच्छें फेडइ चियदिसासु ।
जंपाणि गवक्खहिं पइसरंतु पररमणिथणत्थलि मंद[13] थंतु ।
रउ[14] भावइ महु[15] णं बीउ जारु तें छाइउ दहमुहवहुवियारु[16] ।
असिसलिलि णिलीणु ण[17] पंकु होइ चमराणिलेण उल्ललिवि जाइ ।
मउडग्गि पडंतु जि कुंडलासु धावइ मेहु व रविमंडलासु ।
मइलइ मंडलियहं उरपएसु ढंकइ सियहारावलिविलासु ।

घत्ता—रयमेलउ मइलिवि भुवणयलु कलिकालेण समाणउ ।।
करिगिरिवणणिज्जरवियलियहि[18] सोणियजलवाहिणियहि लीणउ ।।9।।

10

हेला—जा कोट्टं पलोट्टियं कवडवाणणेरेहिं ।।
ता रविकित्ति णिग्गओ सहुं[1] सकिंकरेहिं ।।छ।।

तओ तेण भूमीससेणाहिवेणं पिसक्कासणुम्मुक्कजीयारवेणं ।
रहत्थेण सामत्थधत्थाहिएणं[2] तमोह व्व सारंगबिबंकिएणं[3] ।
विहिज्जंतकंधच्छिरं[4] छिण्णमुंडं रसालुद्धभेरुंडखज्जंतरुंडं[5] ।

मकरंद हो। वह मद से गीले हाथी के गंडस्थल पर जम जाती है। बताओ दानशील व्यक्ति से कौन नहीं लगता ? भ्रमर उस धूल का प्रतिपक्षी (शत्रु) हो गया। क्या वह अपने पंख से दिशामुख में व्याप्त उसे हटाता है ? जंपानों और गवाक्षों से प्रवेश करता, शत्रुओं की रमणियों के स्तनतलों पर धीरे स्थित होता हुआ रज (धूल) मुझे ऐसा लगता है मानो दूसरा जार हो। उसने रावण की पत्नी के विकार को आच्छादित कर लिया। तलवार रूपी जल में लीन वह पंक नहीं होता। चमर की हवा से शिथिल होकर वह चला जाता है। मुकुटों के अग्रभाग पर पड़ता हुआ रज, कुंडलों पर इस प्रकार जाता है जैसे सूर्यमंडल पर मेघ जा रहा हो (उसे आच्छादित करने के लिए)। मंडलीक राजाओं के उरप्रदेशों को मैला करता है, उनकी श्वेत हारावलि के विलास को आच्छादित करता है।

घत्ता—इस प्रकार रज समूह, कलिकाल के समान भुवनतल को मैला कर, हाथी रूपी पर्वत के वन-निर्झरों (व्रण रूपी झरनों, वन के झरनों) से विगलित रक्त रूपी जल की नदी में लीन हो गया।

(10)

जब मायावी वानरों ने दुर्ग को ध्वस्त कर दिया तो (रावण का) सेनापति अर्ककीर्ति अपने अनुचरों के साथ निकला। तब रथ पर स्थित उसने, जिसमें भूपतियों के सेनाधिपति हैं, जिसमें धनुषों की प्रत्यंचा का शब्द किया जा रहा है, जिसमें कंधे और सिर छिन्न हो रहे हैं, मुंड कट चुके हैं, रस के लोभी भेरुण्ड पक्षी धड़ खा रहे हैं, जो झूलती हुई आंतों से झरते हुए रक्त से आरक्त

10. P भा खुप्पइ । 11. P करिकमेलि । 12. A को वि ण लग्गइ । 13. A मंदु । 14. A णउ भावइ । 15. P णं महु । 16. A दहमुहमुहवियारु । 17. AP णउ । 18. °गिरिवरणिज्झर° ।

(10) 1. AP सहु । 2. A धम्माहिएणं । 3. सारंगचिधंकएणं । 4. A °रुण्णच्छिरं । 5. A तुंडं ।

लल्लंतवेढंतथिप्पंतरत्तं सदप्पं खुरप्पोहछिज्जंतछत्तं ।
भिडंतं पडंतं रुसारत्तणेत्तं समुब्भूयपासेयधाराहि सित्तं ।
गइंदुग्गदंतग्गभिज्जंतगत्तं दिसासु विसंतं वसातुप्पलित्तं ।
गयाघट्टणुट्ठग्गिजालापलित्तं[7] थिरत्तेण साहारियासारमित्तं ।
समप्पंतइच्छं सरुब्भिण्णवच्छं महाघायमुच्छाविणिम्मीलियच्छं ।
विरुज्झंतजुज्झंतपाइक्कचंडं सकोदंडकंडं कयं खंडखंडं ।
वराहिंदमाणेहिं बाणेहिं रुद्धं[8] रणे रामएवस्य सेण्णं णिरुद्धं[9]

घत्ता—तहुपरबलु किमिणु[10] व ओसरिउ मग्गणवदु घुलतउ पेक्खइ ।।
आवरणु करइ तणु संवरइ णवउ कलत्तु व अप्पउं रक्खइ ।।10।।

11

हेला—ता विज्जाहराहिवो पउरकोवपुण्णो[1] ।।
संणद्धो महाभडो अवि य कुंभयण्णो ।।छ।।

पहु कुंभु णिकुंभु अमेयसत्ति इंदइ इंदाउहु इंदकित्ति ।
इंदीवरलोयणु इंदवम्मु[2] इयदेहु सूरु दुम्मुहु अगम्मु[3] ।
महवंतु[4] महामहु बुहमुहक्खु बलकेउ महाबलु धूमचक्खु ।

हैं, जो दर्प सहित है, जिसमें खुरपों के समूह से छत्र उखाड़ दिए गए हैं, जो लड़ती और पड़ती हैं, जिसके नेत्र रक्त से लाल हैं, जो निकली हुई प्रस्वेदधारा से सिंचित है, जिसमें शरीर गजेन्द्रों के निकले हुए दाँतों के अग्रभाग से भेद दिए गए हैं। दिशाओं में प्रवेश करती हुई, जो चर्बी रूपी घी से लिप्त है, जो गदाओं के संघर्ष से उत्पन्न आग से प्रदीप्त है, जिसने अपनी स्थिरता से श्रेष्ठ मित्रों को धैर्य बँधाया है, जो समर्पण की इच्छा कर रही है, जिसके वक्ष तीरों से घायल हैं, महान् आघातों की मूर्च्छा से जिनकी आँखें बंद हो गई हैं। जो विरद और संघर्षरत पैदल सैनिकों से प्रचंड है, ऐसी सेना को धनुष और बाण सहित उसी प्रकार छिन्न-भिन्न कर दिया, जिस प्रकार चन्द्रमा अंधकार समूह को नष्ट कर देता है। श्रेष्ठ नागों के आकार के तीरों से उसने राम देव की सेना को अवरुद्ध कर दिया।

घत्ता—उसका शत्रुसैन्य कृपण की तरह, मग्गणविंद (बाणों का समूह, याचकों का समूह) की व्याप्त देखकर हट गया। वह नववधू की तरह आवरण करती है और शरीर को ढकती है। अपनी रक्षा करती है।

(11)

तब प्रचुर कोप से पूर्ण विद्याधर राजा रावण तैयार हुआ और महासुभट कुंभकर्ण भी।

प्रभु कुंभ और अप्रमेय शक्ति निकुंभ, इन्द्रजीत, इन्द्रायुध, इन्द्रकीर्ति, इंदीवर लोचन, इन्द्रवर्मा, इतदेह, सूर दुर्मुख, अगम्य महवंत, महामधु, बुधमुख, बलकेतु, महाबल, धूम्रचक्षु,

6. A खुरुप्पेहि; P खुरुप्पोह° । 7. AP °घट्टणुत्थग्गि° । 8. A घराहिंडमाणेहि । 9. A विरुद्धं । 10. AP किविणु ।

(11) 1. A पवर° । 2. P इंदधम्मु । 3. P अमम्मु । 4. P महुवंतु ।

खरदूसणु मउ हत्थप्पहत्थु संणज्झइ भडयणु रणसमत्थु ।
असिधेणु व केण वि दढणिबद्ध[5] परसासाहारहु किर पयद्ध[6] ।
रणदिक्खहि थाइवि दिट्ठिरम्मु केण वि धरियउ गुणवंतु धम्मु ।
संधइ समाणसरकोडि केव परलोउ महइ वायरणु जेव ।
केण वि चिंतिवि णियनृवहु[7] कुसलु रिउकणकंडणु कड्ढिउं मुसलु ।
केण वि असिवाणिइ णयण दिट्ठ मीणा इव बेण्णि रमंति इट्ठ ।
केण वि दरिसाविउ अद्धयंदु थिउ धरिवि णाइं णहभायछंदु[8] ।
संगामखेत्तकरणुज्जमेण केण वि हलु गहिउ[9] सविक्कमेण ।
केण वि गहियउ[10] फणिपासु सारु सोहइ णं संगरसिरिहि[11] हारु ।

घत्ता—मायंगतुरगविमाणधयरहवरवाहणदूसंचारें ।।
संणद्ध कुद्ध जयलुद्ध भड उब्भड णिग्गय णयरदुवारें ।।11।।

12

हेला—अमरसमरभरुव्वहो थिरकिणंकखंधो[1] ।।
कुलधवलो धुरंधरो वइरिबाहुबंधो ।।छ।।

---

खरदूषण, मद, हस्त, प्रहस्त आदि युद्ध में समर्थ योद्धाजन तैयार होने लगे। किसी ने असि को धेनु की तरह मजबूती से पकड़ लिया था और उसका प्रयोग परसासाहार (दूसरों की सांसों के आहार, परशस्याहार—दूसरों के धान्य के आहार) के लिए किया। किसी ने रणदीक्षा में स्थित होकर दृष्टिरम्य डोरी सहित धनुष (गुण सहित धर्म) धारण कर लिया। वह वैयाकरण के समान बाण कोटि (स्वर कोटि) को साधता है और व्याकरण के समान शत्रु (उत्तर वर्ण) का लोप चाहता है। किसी ने अपने राजा की कुशलता का विचार कर, शत्रु रूपी कणों को कूटने वाले मूसल को निकाल लिया। किसी ने तलवार के पानी में मत्स्यों की तरह रमण करते हुए अपने दोनों इष्ट नेत्रों को देखा। किसी ने अर्धेन्दु को बताया, जो ऐसा लगता था मानो आकाश भाग ने ही अर्धचन्द्र धारण कर रखा हो। युद्ध के क्षेत्र में उद्यम करने के लिए किसी सुभट ने अपने पराक्रम के साथ हल ग्रहण कर लिया। किसी ने श्रेष्ठ नागपाश ले लिया जो मानो युद्धलक्ष्मी के हार की तरह शोभित था।

घत्ता—हाथी, घोड़ा, विमान-ध्वज और रथ श्रेष्ठ वाहनों से, जिसमें चलना मुश्किल है ऐसे नगरद्वार से क्रुद्ध संनद्ध और जय के लोभी वे उद्भट सुभट निकले।

(12)

जो देवयुद्ध का भार उठाने में समर्थ है, जिसका कंधा स्थिर और घर्षण चिह्नों से युक्त है, जो कुल-धवल है, धुरंधर है, जो शत्रुओं के बाहुओं को बाँधने वाला है, जो रत्नों से निर्मित

---

5. A दड्ढणिबद्ध । 6. AP पइद्ध । 7. AP °णिवहु । 8. AP णहभाइ चंदु; K णहभायचंदु but gloss सादृश्यं; T णहभायछंदु नभोभागसादृश्यं । 9. P गहिउ विक्कमेण । 10. AP लइयउ । 11. A संगरि ।
(12) 1. AP थिरु ।

रयणणिम्मवियरयणियरधयभीयरो
विक्कमक्कमियमहिवलयगिरिसायरो[2]।
पवणवइसवणजमवरुणवलभंजणो
असुरसुरखयरफणितरुणिमणरंजणो।
गरलतमपडलकालिंदिजलसामलो
सुरहिमयणाहिउच्छलियतणुपरिमलो।
कोवगुरुजलणजालोलिजालियदिसो
सरलरत्तच्छिविच्छोहणिज्जियविसो।
वीरपरिहवपरो[3] रइयरणपरियरो
मुक्कगुणरावधणुदंडमंडियकरो।
णिहिलजगगिलणकालो[4] व्व ढुक्को सयं
छत्तछण्णो महंतो जणंतो भयं।
कढिणभुयफलिहसयलिंदकंपावणो
कसणघणकरिवरारूढओ रावणो।
असमपरविसमसाहसणिही णिग्गओ
विमलकमलाहिसेयस्स णं दिग्गओ।
हरिकरिकमाहया हल्लिया मेइणी
रणरुहिरलंपडी णच्चिया डाइणी।
कुलिसकुडिलंकुरारावलीराइयं
धगधगंतं पुरो चक्कमुद्धाइयं।

निशाचर-ध्वजों से भयंकर है, जिसने अपने विक्रम से महीवलय, गिरि और समुद्र को आक्रांत किया है; जो पवन, वैश्रवण, यम और वरुण के बल का नाश करने वाला है; जो असुर, सुर, विद्याधर, नाग और तरुणियों के मन का रंजन करने वाला है, जो विष, तमपटल और यमुना के जल के समान श्याम है, कस्तूरीमृग के समान जिसके शरीर से परिमल उछलता है, जिसने क्रोध रूपी ज्वालावलि से दिशाओं को जला दिया है, अपनी सरल और लाल आँखों की कांति से जिसने वृषभ को विजित कर लिया है, जो वीरों के पराभव में तत्पर है, जिसने युद्ध का परिकर बना रखा है, छोड़ी गई प्रत्यंचा के शब्द वाले धनुषदंड से जिसका कर शोभित है, ऐसा महान् छत्रों से आच्छादित, भय पैदा करता हुआ, अपने बाहुफलकों के द्वारा शैलेन्द्र को कँपाने वाला, काले मेघ के समान महागज पर बैठा हुआ रावण समस्त विश्व को निगलने वाले काल के समान स्वय वहाँ आ पहुँचा। असम और शत्रु के लिए विषम साहस की निधिवाला वह इस प्रकार निकला मानो विमल कमला (लक्ष्मी) के अभिषेक के लिए दिग्गज निकला हो। नारायण के हाथी से आहत धरती हिल उठी। युद्ध के रक्त की लालची डायन नाच उठी। उसने कुटिल वज्रांकुरों के समान आराओं की आवली से शोभित तथा धक-धक करता हुआ चक्र सामने उठा लिया।

2. P विक्कमाक्कमिय°। 3. AP धीर°। 4. A °गलिण°।

घत्ता—फेडियमुहवडधुयधयवडहं दावियदूसहगयघडघायहं ॥
दलवट्टियहरिवरभडथडहं मुसुमूरियसामंतणिहायहं ॥12॥

13

हेला—विज्जाबलरउद्दहं जायगारवाणं ॥
वाहियरहविमद्दहं सद्दरउरवाणं ॥छ॥

जयकारियराहवरावणाहं जयलच्छिरमणरंजियमणाहं ।
समुहागयाहं सपसाहणासं जुज्झंतहं दोहं मि साहणाहं ।
असिणिहसणसिहिजालउ जलंति[1] गुडपक्खरपल्लाणइं जलंति ।
णीवंति ताइं वणरुहजलेण केण वि पइसिवि आहवि छलेण ।
परिमुक्कसंकु पिहुपिंछफारु[2] लग्गउ[3] णं गयवरगिरिहि मोरु ।
गंडयलि विलग्गउ बाणपुंखु दीसइ णं छप्पउ दाणकंखु ।
केण वि गयणंगणि देवि करणु ककिकुंभवीढि थिरु थविवि[4] चरणु ।
लोट्टिवि आरोहु णिबद्धकोहु कडिछुरियइ[5] पहणिवि घित्तु जोहु ।
अरिणरकरघल्लिय लउडिदंड[6] चूरिय संदण संगामचंड[7] ।
मणिजडिय पडिय मंडलियमउड उच्छलिय रयणकरणियर पयड ।

---

घत्ता—जिन्होंने मुखपटों और उड़ते हुए ध्वजपटों को नष्ट कर दिया है, जिन्होंने दु:सह गज समूह को द्रवित कर दिया है, जिन्होंने अश्ववरों और योद्धा-समूह को चकनाचूर कर दिया है और सामंत-समूह को कुचल दिया है,

(13)

जो विद्याबल से भयंकर हैं, जिन्हें गौरव उत्पन्न हुआ है, जो हाँके गए रथों से विमर्दित हैं, जो शब्द करते हुए वाणों से भयकर हैं,

जिन्होंने राम और रावण का जय-जयकार किया है, जिनका मन विजयलक्ष्मी के साथ रमण करने से रंजित है, आमने-सामने आई हुई, प्रसाधनों से युक्त युद्ध करती हुई ऐसी दोनों सेनाओं के तलवारों से उत्पन्न अग्नि ज्वालाएँ जलने लगती हैं, गजों और अश्वों के कवच जलने लगते हैं। उन्हें घावों से निकलते हुए रक्तजल से शांत किया जा रहा था। किसी ने छल से युद्ध में प्रवेश कर विशाल पुंख वाला तीक्ष्ण शंकु छोड़ा जो इस तरह लग रहा था, मानो गजराज रूपी पर्वत पर मयूर हो। गंडतल पर लगा हुआ तीर पुंख ऐसा प्रतीत होता था, मानो दान (मदजल) का आकांक्षी भ्रमर हो। किसी ने आकाश के प्रांगण में करण (आसन) देकर हाथी के कुंभपीठ पर अपना दृढ़ पैर स्थापित कर, तथा लौटकर, आरोहण करने वाले बद्ध-क्रोध योद्धा को कमर की छुरी से प्रहार कर नष्ट कर दिया। शत्रु-मनुष्यों द्वारा फेंके गए लकुटिदंडों ने युद्ध में प्रचंड स्यंदनों को चूर-चूर कर दिया। मणियों से विजटित मांडलीक राजाओं के मुकुट गिर गए। रत्नों का किरण समूह प्रकट रूप में उछल पड़ा। किसी के द्वारा

---

(13) 1. A चलंति। 2. A पिच्छभारु। 3. A उग्गउ। 4. A देवि। 5. A करि छुरियइ। 6. P °दंडि। 7. P °चंडि।

केण वि कासु वि पविमुट्ठिहयउं सीसक्कें सहुं सिरु चुण्णु कयउं।
गउ वियलियासु कंकालसिद्धु कासु वि लोहियरसु रसिवि गिद्धु।
उड्डेप्पिणु वच्चइ गयणमग्गु णं पोरिसु वण्णइ गंपि सग्गु।
तहिं अवसरि बहुतत्तिल्लएहिं[8] जायवि कयजणमणसल्लएहिं।

घत्ता—णिउ णिग्गउ भरहद्धाहिवइ चारहिं रामहु कहिउ वियारिवि ॥
थिउ ता रणदिक्खहि दासरहि पुप्फयंतु जिणवरु जयकारिवि ॥13॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे राहवरावणबलसंणहणं
णाम सत्तहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥77॥

---

किसी का वज्रमुष्टि से आहत शिरस्त्राण से सहित सिर चूर-चूर कर दिया गया। बेचारा कापालिक निराश होकर चला गया। किसी के रक्त रूपी रस का आस्वाद लेकर गीध उड़कर आकाशमार्ग में जा रहा था, मानो स्वर्ग में जाकर उसके पौरुष का वर्णन करने जा रहा हो। उस अवसर पर अत्यन्त चितायुक्त और जिन्होंने जन-मानस में शल्य पैदा कर दी है, ऐसे चरों ने जाकर,

घत्ता—राम से विचार कर कहा कि भारत का अर्धचक्रवर्ती राजा (युद्ध के लिए) निकल पड़ा है, तब राम भी पुष्पदंत जिनवर की जयकार कर रणदीक्षा में स्थित हो गए।

इस प्रकार, त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में, महाकवि पुष्पदंत
द्वारा रचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्य का राघव-रावण-
बल-सहनन नामक सतहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

8. A बहुभत्तिल्लएहिं। 9. A उभयबलभिडणं; P उभयबलाभिडणं।

## अट्ठहत्तरिमो संधि

पडिभडकालाणलु जोइयभुयबलु विप्फुरंतु मच्छरि चडिउ ।।
महिकरिणिकयग्गहु[1] पसरियविग्गहु कण्हु दसासहु अब्भिडिउ ।। ध्रुवकं ।।

1

दुवई—पहय गहीर भेरि सिरिरमणीमाणियदेहलक्खणा ।।
संणज्झंति हणुव सुग्गीव महापहुरामलक्खणा[2] ।।छ।।

माणिक्कंसुजालविण्णासइं चंदकवयचंदियसंकासइं ।
आणियाइं कवयइं रहुरायहु णउ विसंति रोमंचियकायहु ।
बाहुजुयलु पुलएण विसट्टइ रिउसरीरबंधणइं व तुट्टइ ।
आहवरोलहरिसपडहच्छहु[3] उरि संणाहु दिण्णु सिरिवच्छहु ।
माइ ण सीयहि मणि णं रावणु फुट्टिवि[4] गउ सयदलु णं दुज्जणु ।

---

## अठहत्तरवीं संधि

शत्रु-योद्धाओं के लिए कालानल, जिसने अपना बाहुबल देखा है ऐसा तथा विस्फुरित होता हुआ लक्ष्मण मत्सर से भर उठा। धरती रूपी गृहिणी के लिए आग्रह करने वाला और युद्ध का विस्तार करने वाला वह रावण से भिड़ गया।

(1)

युद्ध की भेरि बजा दी गई। जिनके शरीर-लक्षण लक्ष्मी रूपी रमणी से मान्य हैं, ऐसे महाप्रभु राम, लक्ष्मण, हनुमान् और सुग्रीव तैयार होने लगे। माणिक्यों के किरणजाल से विरचित, मयूरपंख की चन्द्रिका के आकार वाले कवच रघुराज के लिए दिए गए। वे रोमांचित शरीर में प्रवेश नहीं करते। रोमांच से उनका भुजयुगल विकसित होता है, और शत्रु के शरीर-बंधन की तरह विघटित हो जाता है। युद्ध के शब्द से उत्पन्न हर्ष को धारण करने वाले लक्ष्मण के वक्ष पर कवच पहिना दिया गया। वह उसमें उसी प्रकार नहीं समाता जिस प्रकार सीता के मन में रावण नहीं समाता। वह सैकड़ों टुकड़ों में उसी प्रकार फट गया जैसे दल के साथ दुर्जन।

---

(1) 1 A महिघरिणिकयग्गहु। 2. A महपहु। 3. P आहवि रोल°। 4. A फट्टिवि। 5. P णियंति।

सुग्गीवहु गीयहु रणभरधुर णिहिय करंति[5] काइं किर परणर।
संणज्झंतु काइं सो सुच्चइ हणुवंतु वि वम्महु जहिं वुच्चइ।
तहिं[6] जगु विंधिवि मारिवि मेल्लइ अंगउ[7] अंगइं वइरिहिं सल्लइ।
दहियदोव्वसिद्धत्थयमीसिउ सीमंतिणिकरघित्तउ सेसउ।
विरसिउ जुज्झडिंडिमाडंबरु वहिरिउ तेण विवरु दिसि अंबरु।
मत्ति विजयपव्वइ सइं माहउ[8] अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ[9]।
बलिपुत्तें तहु बलवित्थिण्णी विज्ज पहरणावरणि[10] विइण्णी।

घत्ता—सइ का वि पजंपइ किं पि ण कंपइ पिययम परबलु णिट्ठवहि॥
हणु करिकुंभयलइं हिमकणधवलइं मोत्तियाइं महु पट्ठवहि॥1॥

2

दुवई—का वि पुरंधि भणइ किं बहुवें अणुदिणु हियय जूरणं॥
णियसिरपंकएण[1] पिय फेडहि णरवइपियविसूरणं[2]॥छ॥

का वि भणइ एत्तडउं करेज्जसु पउ पच्छामुहुं णाह म देज्जसु।
गयपडियागयपयपरिठवणें सहइ कइंदु ण भडु भयगमणें।
का वि भणइ जं मइं थणमंडिउ तं[3] गयदंतहं संमुहुं उड्डिउं।

सुग्रीव की गर्दन पर युद्धभार की धुरी रख दी गई। शत्रु जन क्या कर सकते थे ? कवच पहनता हुआ वह क्या खेद करता है ? जहाँ हनुमान् को कामदेव कहा जाता है वहाँ वह विश्व को वेध कर और मारकर ही छोड़ता है। अंगद शत्रुओं के अगों को पीड़ित करता है। दही दूध और तिलों से मिश्रित तथा सीमंतिनियों के हाथों के द्वारा शेष (निर्माल्य) छोड़ा गया था। युद्ध के नगाड़ों का विस्तार बज उठा। उससे दिशा अंबर और विवर भर उठे। मतवाले विजयपर्वत गज पर स्वयं माधव (लक्ष्मण) और अंजनगिरि गजराज पर राम बैठ गए। बलिपुत्र (सुग्रीव) के द्वारा उनके लिए बल का विस्तार करने वाली और प्रहारों का आवरण करने वाली विद्या दे दी गई।

घत्ता—कोई एक सती कहती है, वह बिल्कुल भी नहीं काँपती कि, हे प्रियतम, शत्रु सेना को नष्ट कर दो। हाथियों के गंडस्थलों को मारो और हिमकणों के समान धवल मोती मुझे भेजो।

(2)

कोई इन्द्राणी कहती है—बहुत से क्या, हे प्रिय, प्रतिदिन का पीड़ित होना और राजा राम की प्रिया का विसूरना अपना सिरकमल देकर तुम नष्ट कर दो।

कोई कहती है—इतना करना, हे स्वामी, कि अपना पैर पीछे मत देना क्योंकि गत और प्रत्यागत पद (चरण, छंद) की स्थापना से कवीन्द्र शोभित होता है। भयपूर्वक (आगे-पीछे) गमन से सुभट शोभित नहीं होता। कोई कहती है कि मैंने जो स्तनमंडल किया वह हाथी दाँतों के सामने

6. A जगु तहिं। 7. A अंगउवंगइं। 8. A राहउ। 9. A माहउ। 10. A धरणि विदिण्णी।
(2) 1 AP °सिरकप्पिएण। 2. A °रिणविसूरणं। 3. A णं गय°।

किं वच्छयलु णाह णंदेसइ पुणु आलिंगणसुहुं[4] महु देसइ
का वि भणइ[5] रणि म करि णियत्तणु सुयरिज्जइ[5] पहुभुमिणियत्तणु।
किं पुणु महिमंडलु वित्थिण्णउं इच्छियचायभोयसंपण्णउं।
देज्जसु पत्थिवचिंतणिवारउं खग्गसलिलु वइरिहिं तिसगारउ।
का वि भणइ पिययम पेयालइ वसतुप्पें रिउसीसकवालइ।
हउ दीवउ बोहेसमि जइयहुं ओवाइउ[6] महु पूरइ तइयहुं।
का वि भणइ पडिएण वि पिंडें महिवि पिसल्लउ मासहु खंडें।
कासु वि सिद्धहु आणइ थंभिवि पासि धरिज्जसु[7] वायइ रुंभिवि।
पइं मुए वि हउं णडिय रइच्छइ त परिपुच्छिवि आवमि[8] पच्छइ।

घत्ता—सुहवत्तहु वंछहि णाह ण पेच्छहि चडहि वेयालालियहि॥
कयतुट्ठिपरिग्गहु परकंठग्गहु खग्गलट्ठिपुण्णालियहि॥2॥

3

दुवई— तुह एय सुवंसयं पिययम पणविण[1] विणीयं॥
सज्जीयं सरासणं समरि हरउ वइरिजीयं॥छ॥

णंदणवणु व णीलतालद्धउं णरवेसें णं सइं मयरद्धउ।
दीसइ णीसरंतु रइयाहउ अजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ।

---

उड़ गया। हे स्वामी, क्या वक्षतल बढ़ेगा और मुझे फिर से आलिंगन सुख देगा? कोई कहती है कि तुम युद्ध में पलायन नहीं करना। तुम स्वामी के भूमि के दान की याद करना। इच्छित त्याग और भोग से संपन्न विस्तीर्ण महीमंडल से क्या? तुम राजा (राम) की चिंता का निवारण करने वाला तथा शत्रुओं की प्यास बढ़ाने वाला अपना खड्गजल देना। कोई कहती है—हे प्रियतम, जब मैं प्रेतालय में शत्रु के सिर के कपाल (खप्पर) में चर्बी रूपी घी से दीप जलाऊँगी तभी मेरी याचना पूरी होगी। कोई कहती है कि पड़े हुए शरीर से भी मांसखंड से पिशाच की पूजा कर, किसी भी सिद्ध की आज्ञा से उसे स्तंभित कर, व्यंतर को वायु से रोककर अपने पास रखना। तुम्हारी मृत्यु होने पर रतिकामना से प्रवंचित मैं बाद में उससे (तुम्हारी बात) पूछने के लिए आऊँगी।

घत्ता—हे स्वामी, सुभगत्व चाहते हो? तुम प्रचंड वेग से चलाई गई खड्गलता रूपी वेश्या के तुष्टिपरिग्रह को करनेवाले शत्रु के कंठग्रह को नहीं देखते?

(3)

हे प्रियतम, तुम्हारा यह सुवंश में जन्मा नमनशील विनीत सज्जित धनुष युद्ध में शत्रु का जीवहरण कर ले।

नील और ताल वृक्षों से युक्त नंदन वन के समान वह (राम) ऐसे लगते हैं मानो मनुष्य रूप में स्वयं कामदेव हों। संग्राम रचनेवाले राम अंजनगिरि गजराज पर बैठकर निकलते हुए ऐसे

---

4. P आलिंगणु सहुं 5. A सुमरिज्जइ। 6. उववायउ। 7. AP धविज्जसु। 8. A आइवि।
(3) 1. A पणवियं।

णं णवजलहरसिहरि ससंकउ[2] णं अइरावइ इंदु असंकउ[3] ।
णं जसु तिजगसिहरिपंडुरतणु धम्मालोयलीणु णं मुणिमणु ।
कयसरसोहउ[4] णाइ मरालउ सूरपहाहरु णाइ मरालउ[5] ।
सीयाकंखउ विरहुण्हें[6] हउ[7] दाणालित्तपाणि[8] णं दिग्गउ ।
एत्तहि लक्खणु रोसवियंभिउ णं रणसिरिणच्चणकरु उब्भिउ ।
लच्छीललणालोलणलोहिउ पंचवण्णगरुडद्धयसोहिउ ।
विजयमहीहरि कुंजरि चडियउ कालसलोणउ जणि आवडियउ ।
मेहहु उवरि मेहु णं थक्कउ रिउहुं णाइं जमदूयउ ढुक्कउ ।

घत्ता—चोइयमायंगइं चलियतुरंगइं वाहियरहइं भयंकरइं ॥
संणिहियविमाणइं[9] जरजंपाणइं रोसुद्धाइयकिंकरइं ॥3॥

4

दुवई—लग्गइं रामरामणाणंदइं बलइं रुसाविसालइं[1] ॥छ॥
णरमुहकुहरमुक्कहुंकारुद्दीवियबाणजालइं ॥छ॥
मुक्कमुसलहलपट्टिससेल्लइं पसरियपाणिधरियधम्मेल्लइं ।

---

दिखाई देते हैं, मानो नव जलधर के शिखर पर चन्द्रमा हो। मानो ऐरावत महागज पर निशंक इन्द्र बैठा हो। मानो त्रैलोक्य के शिखर को शुभ्रतन कर देने वाला यश हो। मानो धर्मालोक में लीन मुनि का मन हो। जिसने सरोवर की शोभा बढ़ाई है मानो ऐसा हंस हो। मानो सूर्य की प्रभा का हरण करने वाला मेघ हो। विरह की ज्वाला से आहत सीता की आकांक्षा हो। जिसकी सूंड़ मदजल से लिप्त है, मानो ऐसा दिग्गज हो। दूसरी ओर क्रोध से विजृंभित लक्ष्मण था। मानो रणश्री का नाचता हुआ हाथ उठा हो, जो लक्ष्मी रूपी ललना के अवलोकन का लोभी है, और पंचरंग गरुडध्वज से शोभित है, जो त्रिजयपर्वत गज पर चढ़ा हुआ ऐसा लगता है जैसे काल के समान लोगों के बीच में आ गया हो। मानो मेघ के ऊपर मेघ स्थित हो, शत्रुओं के ऊपर मानो यमदूत आ पहुँचा हो।

घत्ता—गज प्रेरित किये गये, घोड़े चला दिये गये, भयकर रथ हाँक दिये गये, विमान जंपान तैयार किये गये। अनुचर क्रोधित हो दौड़ पड़े।

(4)

राम और रावण को आनद देने वाली, क्रोध से विशाल, मनुष्यों के मुख रूपी कुहर से मुक्त हुंकार से जिसमें बाणों की ज्वाला उद्दीपित है, ऐसी दोनों सेनाएँ भिड़ गईं। मूसल, हल, पट्टिस और सेल छोड़े जाने लगे। फैले हुए हाथों से चोटियाँ पकड़ी जाने लगीं। जो कटे हुए हाथ सिर, उर

---

2. AP मयंकउ। 3. AP आसंकउ। 4. A कयसरिसोहउ। 5. AP वियालउ। 6. A °कंखउ णं उण्हालउ; P °कंखउ विरहु उण्हाउ। 7. A adds after this अण्णेसंतु रामु णं णिग्गउ; K also has this line but scores it off. 8. दाणविलित्त°। 9. AP °विवाणइं।

(4) 1 P रोसविसालइं।

लुयकरसिरउरजण्णुयजुत्तइं मग्गणगणविच्छेइयछत्तइं ।
कलिकेलासवाससंतासइं वइरिविलासहासणिण्णासइं ।
मायाभावगावविस्थारइं हुयवहुवरुणपवणसंचारइं ।
किलिकिलिरवसोसियकीलालइं दिसविदिसुट्ठिउग्गवेयालइं[2] ।
मिलियदलियपक्कलपाइक्कइं[3] वसकद्दमणिमण्णरहचक्कइं ।
अंतमिलंतथंतकायउलइं वालपूलणीलियधरणियलइं ।
तणुवियलंतसेयसित्तंगइं पक्खिपक्खमरुहयसमसंगइं ।
मयगलमलणमलियधयसंडइं[4] हित्तारोहजोहकोदंडइं ।
सुरहरघिवणघित्तखयरिंदइं खग्गकंपकंपावियचंदइं ।

घत्ता—असिदंडु लएप्पिणु देहि भणेप्पिणु परबलि परिसक्कइ वियडु ॥
फरपत्तधिहत्थउ[5] को वि समत्थउ जुज्झभिक्ख[6] मग्गइ सुहडु ॥4॥

5

दुवई—को वि भडु[1] करेहिं णिहएहिं कमिहिं वि हुंकरंतइं ॥
कोक्कइ मासगासरसियाइं पिसायइं गयणि जंतइं ॥छ॥

को वि सुहडु मुउ करिदंततरि णावइ सुत्तउ णियजसपंजरि ।
को वि सुहडु अद्धिदें मंडिउ[2] भूयहिं रुद्दु[2] व णिविसु ण छंडिउ ।

और जानुओं से युक्त है, जहाँ तीर समूह से छत्र काट दिए गए हैं, जो यम और शंकर को संत्रास देने वाली है, जो शत्रुओं के विलास और हास का नाश करने वाली, मायाभाव और गर्व का विस्तार करनेवाली, अग्नि पवन और वरुण के पथ पर संचार करनेवाली, किलकिल शब्द से रक्त का शोषण करनेवाली है, जिसमें दिशा-विदिशा में उग्र वैताल उठ रहे हैं, जिसमें समर्थ सैनिक मिलकर एक दूसरे को चकनाचूर कर रहे हैं, जहाँ रथचक्र चर्बी की कीचड़ में निमग्न हो रहे हैं; जहाँ काककुल आँतों से मिलकर स्थित हैं, जहाँ धरणीतल केश समूह से नीला है, शरीर से विगलित स्वेद से जो गीला हो गया है, पक्षियों के पंखों की हवा से जहाँ श्रम संगम दूर हो गया है, जिसमें मदमाते गजों के मदजल से ध्वज समूह मलिन हो गए हैं, जिसमें योद्धाओं के चढ़े हुए धनुष छीन लिये गए हैं, जिसमें देवविमानों के पतन से विद्याधर राजा मुग्ध हो रहे हैं, जहाँ खड्ग के कंप से चन्द्रमा प्रकंपित है (ऐसी उस युद्धभूमि में)

घत्ता—कोई विकट सुभट तलवार रूपी दंड लेकर 'दो' यह कहकर शत्रुसेना में घूमता है, धनुष हाथ में लिये हुए कोई समर्थ सुभट युद्ध की भीख माँग रहा है।

(5)

कोई सुभट, कटे हुए हाथों पैरों के होने पर भी हुंकार करता हुआ मांस के कौर का आस्वाद लेने वाले आकाश में जाते हुए पिशाचों को ललकारता है। कोई सुभट हाथी के दाँतों के भीतर मरा हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपने यश रूपी पिंजड़े में सोया हुआ हो। कोई सुभट अर्द्धेन्दु से मंडित भूतों के द्वारा रुद्र के समान, एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा गया।

2. दिसिविदिसुट्ठियउग्ग° । 3. P °पक्खल° । 4. P °गयमलणमलिय° । 5. AP करपत्त° । 6. मग्गइ जुज्झभिक्खइ ।

(5) 1 P सुभडु । 2. A खंडिउ ।

को वि सुहडु सिरु पडिउ ण चिंतइ   असिवरु अरिवरकंठहु[4] घत्तइ।
को वि सुहडु रत्तद्दहि ण्हायउ   सत्तु सिरत्थु णिएप्पिणु आयउ।
कायरदोसिण हुउ[5] ण विहिण्णउ   पहरणु दीवु धरिवि उत्तिण्णउ।
को वि सुहडु परिवड्ढियसाहउ[6]   णं पारोहएहिं णग्गोहउ।
रिउबाणहिं उच्चाइउ वट्टइ   [7]पंखुत्तिण्णरुहिरु सिव चट्टइ।
कासु वि सुहडहु गुज्झु ण रक्खइ   कण्णालग्गु गिद्धु णं अक्खइ।
पइ समुंडु[8] पत्थिवरिणि छूढउ   लोहिउ णाइ कलंतरि[9] बूढउ।
देहमासु वायसहं विहित्तउ   उत्तमपुरिसहं[10] एउ जि जुत्तउ।
कासु वि अंगि रहंगु पइट्ठउ   अब्भगब्भि रविबिंबु व दिट्ठउ।

घत्ता—सवहेणोसारिवि[11] अवर[12] णिवारिवि जुज्झि वि मड्डु देहु छिवइ।
कासु वि सुरकामिणि लीलागामिणि माल सयंवरि सइं घिवइ ॥5॥

6

दुवई—जायइ संगरम्मि वरखयरकवालचुए वसारसे ॥
णरकंकालमहुरवीणासरगाइयरामसाहसे ॥छ॥

---

कोई सुभट अपने पड़े हुए शिर की चिंता नहीं करता और तलवार को प्रबल शत्रु के कंठ पर दे मारता है। कोई सुभट रक्त के सरोवर में नहा गया और शिरस्थ शत्रु को देखकर आ गया। कायरता के दोष के कारण मैं खंडित नहीं हुआ, (यह सोचकर) प्रहरण का दीप लेकर वह उत्तीर्ण हो गया। कोई सुभट अपनी चढ़ी हुई बाहों से ऐसा लगता है, मानो तनों से युक्त वट वृक्ष हो। शत्रुओं के बाणों के द्वारा ऊँचा किया गया वह विद्यमान है। उसके पंखों से रिसते रक्त को शिवा (सियारिन) चाट रही है। गीध किसी भी सुभट के रहस्य को सुरक्षित नहीं रखता मानो इसीलिए कानों से लगकर वह कहता है, तुम्हारा सिर राजा के ऋण में चुक गया है। रक्त मानो ब्याज में रख लिया गया है, देह का मांस कौओं में विभक्त कर दिया गया है। उत्तम पुरुषों के लिए यही उपयुक्त है। किसी के शरीर में चक्र घुस गया है, जो मेघों के बीच सूर्य बिम्ब के समान दिखाई देता है।

घत्ता—कोई देवी शपथ पूर्वक दूसरी देवी को हटाकर युद्ध में भी बलपूर्वक शरीर को छूती है। तथा लीलागामिनी वह देवकामिनी स्वयं किसी (योद्धा) को स्वयंवर में माला डालती है।

(6)

जिसमें नरकंकालों की मधुर वीणा के स्वरों में राम के साहस का गान किया गया है, तथा जिसमें वर विद्याधरों के कपाल से च्युत चर्बी का रस है—

---

3. A कंदु व but gloss रुद्र इव। 4. AP अरिवरणियरहु। 5. A वण्णविहिण्णउ। 6. A °सोहउ। 7. A पंखुत्तिण्णु P पुंखुत्तिण्णु। 8. A समुद्दु। 9. AP कलंतरु। 10. AP उत्तिम°। 11. A सरवहेण। 12. P अवरउ वारिवि।

पवर जयसिरिहरो अरिहरिणहरिवरो।
कुलकमलदिणयरो अणयजणभययरो।
रणियगुणधणुरवो[1] जणियखलपरिहवो।
अमियअमरिसवसो तिजगपसरियजसो।
सयणुकसणियदिसो फणि व विसरिसविसो।
कुइयवइवसणिहो सिहि व विलसियसिहो।
थरहरियमहियलो धयपिहियणहयलो।
करकलियपहरणो पवरबलजियरणो।
दढकढिणथिरकरो[2] पडिसुहडमयहरो।

घत्ता—तिहुयणजूरावणु रूसिवि रावणु धाइउ रामहु संमुहु किह ॥
णवमेहु व मेहहु सीहु व सीहहु दिसहत्थिहि दिसहत्थि जिह ॥6॥

7

दुवई—ता करिकरसमाणकरकड्ढियगुणधणुदंडमंडलो[1] ॥
कणयपिसक्कपुंखरुइ-[2]रंजियमाणिमयकण्णकुंडलो ॥छ॥

उक्खयदुक्खलक्खतरुकंदहु इंदइ इंदसरिसु गोविंदहु।
विडवि चिंधु किक्किधणिवासहु वालिकंठकंदलजमपासहु।
णिद्धहु णियकुलभवणपईवहु भिडियउ कुंभयण्णु सुग्गीवहु।

ऐसे उस युद्ध के होने पर केवल जयश्री का धारण करने वाला, शत्रु रूपी हरिणों के लिए सिंह, कुल कमलों के लिए दिवाकर, अविनीतजनों के लिए भयंकर धनुष और प्रत्यंचा को ध्वनित करनेवाला, अमित अमर्ष के वशीभूत, त्रिजग में प्रसारित यश वाला, अपने शरीर से दिशाओं को काला करने वाला, नाग के समान असमान्य विष (द्वेष) वाला, क्रुद्ध यम के सदृश, आग के समान विलसित शिखा वाला, महीतल को थरथराने वाला, ध्वज से नभ तल को ढकने वाला, हाथ में हथियार धारण करने वाला, प्रबल बल से शत्रु को रण में जीतने वाला, दृढ़ और स्थूल बाहों वाला, शत्रु-योद्धा का मद हरने वाला,

घत्ता—त्रिभुवन का संतापदायक रावण क्रुद्ध होकर राम के सम्मुख इस प्रकार दौड़ा जैसे नवमेघ मेघ के ऊपर, सिंह सिंह के ऊपर और दिग्गज दिग्गज के ऊपर दौड़ता है।

(7)

तब हाथी की सूंड़ के समान हाथ से जिसने प्रत्यंचा और धनुष मंडल खींचा है, तथा स्वर्ण बाणों की पुंखकांति से जिसके मणिमय कर्णकुंडल रंजित हैं, ऐसा इन्द्रजीत, इन्द्र के समान जिसने सैकड़ों दुःख रूपी वृक्षों को उखाड़ डाला है ऐसे लक्ष्मण से, वृक्षध्वजी किष्किन्धा-निवासी बालि के कंठ रूपी प्ररोह (अंकुर) के लिए यम-पाश के समान, स्निग्ध और अपने कुल रूपी भवन के प्रदीप सुग्रीव से कुंभकर्ण भिड़ गया। मही और महीधर के संचालन में बलवान् और

(6) 1 AP रणियधणुगुणरवो। 2. A °थियकरो।
(7) 1. A °मंडणो। 2. P °पुंखरइ°

महिमहिहरचालणबलवंतहु रणि रविकिति वीरहणुवंतहु ।
खरकिरणु व तमतिमिरणिहायहु णलिणकेउ लग्गउ खररायहु ।
अंगयभडु आहंडलकेउहि णावइ मुणिवरिंदु झसकेउहि ।
इंदवम्मु कुमुयहु दूसीलहु कयबहुदूसणु दूसणु णीलहु[3] ।
[4]संदणचलणवलणसंफेडहिं लउडिघायजज्जरियकिरीडहिं ।
दंतिदंतसंघट्टणघोरहिं सेलसिलायलघित्तपहारहिं ।
सव्वलमुसलकुलिसझसकोंतहिं भिंडिवालकरवालफुरंतहिं[5] ।

घत्ता—रयछइयदियंतहिं भडसामंतहिं जुज्झंतिहिं[6] खयरामरहिं ॥
संचूरियमउडहिं णिवडियसयडहिं महि मंडिय धयचामरहिं ॥

8

दुवई—ता लंकाहिवेण हलहेइहि[1] रिछसुपिंछसज्जिया[2] ॥
एक्क दुवीस[3] तीस पण्णास सरा सहसा विसज्जिया ॥छ॥

धरियलोह तेण जि ते गुणचुय उज्जुय तेण जि ते मोक्खुज्जुय[4] ।
चित्तविचित्त तेण ते चलयर पेहुणवंत तेण ते णहयर ।
धम्मविमुक्क तेण ते हयपर रोसवसिल्ल तेण ते दुद्धर ।
तिक्ख तेण ते वम्मुल्लूरण सहल तेण ते आसापूरण ।

हनुमान से युद्ध में अर्ककीर्ति, अंधकार के समूह खरराज से सूर्य की किरण की तरह नलिनकेतु भिड़ गया। इन्द्रकेतु से भट अंगद भिड़ गया जैसे कामदेव से मुनिवरेन्द्र भिड़ जाता है। इन्द्रवर्मा दुशील कुमुद से, अनेक दूषण करने वाले दूषण से नील (भिड़ गया)। रथचक्रों के चलने और मुड़ने के धक्कों, लकुटियों के आघातों, जर्जर मुकुटों, हाथियों के दाँतों के संघट्टनों से भयंकर, शैल शिलातलों पर दिए गए प्रहारों, सब्बलों, मूसलों, कुलिसों, झसों और कोंतों से, चमकते हुए भिंदि-पालों और करवालों से,

घत्ता—धूल से दिगंतों को आच्छादित करने वाले, युद्ध करते हुए, विद्याधरों और अमरों से संचूरित मुकुटों से, गिरे हुए रथों और ध्वज-चामरों से धरती मंडित हो गई।

(8)

तब रावण ने राम पर रीछ के बालों के पुंख से सज्जित एक दो बीस तीस और पचास तीर सहसा छोड़े। वे धरियलोह (लोभ धारण करने वाले, लोहा धारण करने वाले) थे इसीलिए वे गुणच्युत (गुण, डोरी से च्युत) थे। वे ऋजुक (सीधे) थे इसीलिए मोक्ष के लिए उद्यत थे। चित्र-विचित्र थे इसलिए चंचल थे। पेहुण (पंख) से सहित थे, इसीलिए नभचर थे। धर्म से विमुक्त थे, इसीलिए पर को आहत करने वाले थे। क्रोध के वशीभूत थे, इसीलिए कठोर थे। तीखे (पैने) थे इसलिए मर्म का उच्छेद करने वाले थे। सफल थे, इस आशा को पूरा करने वाले

3. A लीलहु। 4. A दंसणचलण°। 5. AP °करवाल मुयंतहिं। 6. A जुज्झिहिति।
(8) 1. A हलएवहि। 2. A °सुपुंछ°। 3. A दुतीसवीस। 4. मोक्खज्जुय।

रयगय तेण जि ते पलचक्खिर वहियजोह तेण जि जयकंखिर ।
दीहायार णाय णं आया पत्तदाण[5] जिह सयगुण आया ।
एंत णहंतें महंत भयंकर जिगिजिगंत पडिवक्खखयंकर ।
बाणहिं बाण हणिवि काकुत्थें रावणु विहसिवि भणिउ समत्थें ।

घत्ता—णियघरिणिहि अग्गइ सयणसमग्गइ घरि बाणासणु गुणिउं जिह ॥
भडरुहिररसारुणि आहवि दारुणि को विंधइ दहवयण तिह ॥8॥

9

दुवई—हो हो जाहि जाहि तुहुं णासहि धणुसिक्खाविवज्जिओ ॥
मा णिवडहि करालि कालाणलि लक्खणसरि परज्जिओ ॥छ॥

कहिं विट्ठि मुट्ठि कहिं चावलट्ठिं ।
कहिं[1] वद्धु ठाणु कहिं[1] णिहिउ बाणु ।
धणुवेयणाणु बुज्झहि[2] पहाणु ।
गुरुगेहु गंपि अण्णवउ[3] किं पि ।
पुणु देहि जुज्झु महुं तुहुं सुसज्झु ।
सीयावहार[4] जज्जाहि जार ।
तहिं रणवमालि सुहडंतरालि ।
खरकरपवट्ठु दट्ठोट्ठु रुट्ठु ।
णिट्ठवियदुट्ठु इंदइ पइट्ठु ।

थे। पापगत (वेगवाले) थे, इसीलिए मांस खाने वाले थे। योद्धाओं को मारने वाले थे, इसीलिए विजय के आकांक्षी थे। लम्बे आकार वाले वे मानो सांप हों, पात्रदान की तरह सौ गुने हो गए। आकाश के मध्य से आते हुए, महान् भयंकर चमकते हुए और प्रतिपक्ष के लिए भयंकर बाणों को बाणों से आहत कर, समर्थ राम ने रावण से हँसकर कहा—

घत्ता—रे रावण, स्वजनों से परिपूर्ण अपने घर में गृहिणी के सम्मुख जिस तरह तुमने धनुष को समझा है, भटों के रक्त रस से अरुण दारुण युद्ध में उस प्रकार कौन विद्ध करता है?

(9)

हो हो रे रावण, तू जा-जा। धनुर्वेद शिक्षा से रहित तू जा-जा। लक्ष्मण के तीरों से पराजित तू कराल कालाग्नि में मत पड़।

कहाँ दृष्टि-मुष्टि, और कहाँ धनुर्यष्टि? कहाँ लक्ष्य बाँधा और कहाँ बाण रखा? धनुर्वेद के ज्ञान को किसी प्रधान गुरु के घर जाकर कुछ और सीख लो। फिर युद्ध करो। मेरे लिए तुम सुसाध्य हो। सीता का अपहरण करने वाले रे जार, तू जा-जा। तब वहाँ युद्ध के कोलाहल से पूर्ण सुभटों के बीच, खरकरों से स्पृष्ट होठ चबाता हुआ, क्रुद्ध तथा दुष्टों का नाश करने वाला

5. PA पत्तदाणु।

(9) 1. P किह। 2. A बुज्झिउ। 3. A अण्णमउ; P अण्णविउ। 4. P reads this line as: जज्जाहि जार, सीयावहार। 5. P पइट्ठु।

ता कुद्धएण धूमद्धएण ।
णं जलियजाल णं विज्जुमाल ।
चलजलहरेण वरिसियसरेण ।
कयआहवेण तहु राहवेण ।
धगधगधगंति उम्मुक्क[6] सत्ति ।
वच्छयलि खुत्त रत्तावलित्त ।
णं रत्त वेस मुच्छाविसेस ।
पसवणु[7] कुणंति हियवउं लुणंति ।

घत्ता—जं इंदइ जित्तउ कोवपलित्तउ तं दहमुहुं णं खयजलणु ।।
ओत्थरिउं समत्थहिं णाणासत्थहिं दुज्जयपडिबलपक्खिलणु ।।9।।

10

दुवई—पभणइ णत्थि एण इंदइणा तुह णिहएण रणजओ[1] ।।
भो भो राम राम मइं पहरहि संचोयहि महागओ ।।छ।।
हो हो एण सुट्ठु लज्जिज्जइ कुलसामिहिं किह असि कड्ढिज्जइ ।
तुहुं वेहाविउ ताराकंतें अण्णु वि मुक्खएण[2] हणुवंतें ।
हउं देविंदेण[3] वि णउ छिप्पमि तुम्हहिं माणुसेहिं किं जिप्पमि ।
जाहि जाहि जा बंधवगत्तइं णउ णिवडंति[4] खुरुप्पविहत्तइं ।
जाहि जाहि जा चक्कु ण मेल्लमि तुह सिरकमलु ण लुंचिवि घल्लमि ।
दप्पुब्भडभडवंदविमद्दें तं णिसुणेवि पवुत्तु वलहद्दें ।

---

इन्द्रजीत प्रविष्ट हुआ। तब धूमध्वजी क्रुद्ध युद्ध करने वाले राम ने उस पर धक-धक करती हुई शक्ति छोड़ी जो मानो जलती हुई ज्वाला अथवा विद्युन्माला हो। रक्त से लिप्त वह वक्षस्थल पर जाकर इस प्रकार लगी, मानो लाल (परिधान में) वेश्या हो या मूर्च्छाविशेष हो, क्षरण करती हुई या हृदय को काटती हुई।

घत्ता—जब इन्द्रजीत जीत लिया गया, तब क्रोध से प्रदीप्त, अपने समर्थ नाना शास्त्रों से अजेय प्रतिपक्ष को स्खलित करने वाला वह दशमुख उछल पड़ा, मानो दुष्ट जन उछला हो।

(10)

रावण कहता है—तुम्हारे द्वारा इस इन्द्रजीत के मारे जाने से युद्ध विजय नहीं है। अरे राम मुझ पर प्रहार करो। अपना महागज आगे बढ़ाओ। हो हो, उसे लज्जित होना ही चाहिए, कुलस्वामी पर इसके द्वारा भला कैसे तलवार निकाली जाएगी? तारापति सुग्रीव और मूर्ख हनुमान् के द्वारा तुम प्रवंचित किए गए हो। मैं देव-देवेन्द्र के द्वारा भी स्पृश्य नहीं किया जा सकता, तुम जैसे मनुष्यों द्वारा तो कैसे जीता जाऊँगा? जब तक खुरपों से विभक्त होकर भाइयों के शरीर नहीं गिरते, जाओ-जाओ, मैं चक्र नहीं छोड़ता और तुम्हारे सिरकमल को काटकर नहीं फेंकता। यह सुनकर, दर्प से उद्भट भटसमूह का

---

6. A पविमुक्क। 7. AP पसरणु।

(10) 1. AP रणजुओ। 2. P मुक्कएण। 3. A देविंदें णविउ छिप्पमि। 4. AP णिवडंति।

परमणीथणसिहरणिरिक्खण मरु मरु खल अयाण दुवियक्खण ।
किं सीहेण[6] सरहु दारिज्जइ पइं मि काइं[7] लक्खणु मारिज्जइ ।
रूवविसेसपरज्जियमेणइ[8] जामि जामि जइ अप्पहि जाणइ ।
जामि जामि जइ सेव समिच्छहि महुं पयपंकय पणविवि अच्छहि ।

घत्ता—पइं रणउहि[9] मारिवि भिच्च वियारिवि ढोइवि लंक विहीसणहु ॥
बोल्लिउ[10] पालेसमि हउं जाएसमि सहुं सीयइ सणिहेलणहु ॥10॥

11

दुवई—ता दसकंधरेण[1] मणिकुंडलमंडियगंडएसयं ॥
छिण्णं असिसुयाइ णावणिसियइ[2] सीयाएविसीसयं ॥छ॥

रूसिवि रामहु अग्गइ घित्तउ[3] पुणु सखारु खलखुद्दें वुत्तउ ।
लइ लइ राहव घरिणि तुहारी एह ण होइ कया वि महारी ।
मुय पिय पेच्छिवि मुच्छिउ रहुवइ करपहरणु णिवडिउ ण विहावइ ।
सित्तउ हिमसीयलजलधारहिं[4] आसासिउ चमरिरुहसमीरहिं ।
कह व कह व संजाउ सचेयणु [5]कण्णामुहणिहित्तथिरलोयणु[6] ।
ताव विहीसणेण विण्णत्तउं सीयामरणु ण देव[7] णिरुत्तउं ।

---

विमर्दन करने वाले बलभद्र ने कहा—रे दूसरों की स्त्रियों के स्तन के अग्रभाग को घूरने वाले अपंडित अज्ञानी दुष्ट मर-मर, क्या सिंह के द्वारा शरभ विदीर्ण किया जाएगा? तुम्हारे द्वारा तो भला क्या लक्ष्मण मारा जाएगा? अपने रूप विशेष से मेनका को पराजित करने वाली जानकी यदि तुम दे दो तो मैं जाता हूँ। मैं जाता हूँ, जाता हूँ, यदि तुम मेरी सेवा करना मान लेते हो और मेरे चरणकमलों को प्रणाम करके बने रहते हो।

घत्ता—तुम्हें रणमुख में मारकर, भृत्य का विचार कर, विभीषण को लंका देकर, मैं अपने कहे हुए का पालन करूँगा और सीता देवी के साथ अपने घर जाऊँगा।

(11)

तब, मणिकुंडल से मंडित है गंडदेश जिसका ऐसे दशानन ने सीता देवी का सिर छुरी से काट दिया और क्रुद्ध होकर राम के आगे डाल दिया और फिर उस दुष्ट क्षुद्र ने कहा—रे राघव, ले लो अपनी गृहिणी, यह कभी भी हमारी नहीं होगी। अपनी प्रिया को मरा हुआ देखकर राम मूर्च्छित हो गए। उनके हाथ से शस्त्र गिर गया परन्तु वह नहीं जान सके। हिम से शीतल जल धारा से सिक्त वह चामरों की हवाओं से आश्वस्त हुए। वह किसी प्रकार बड़ी कठिनाई से सचेतन हुए। उन्होंने अपने स्थिर नेत्र कन्या के मुख पर कर लिए। इतने में विभीषण ने कहा—हे

---

5. P °थणविद° । 6. A सिहेण । 7. AP पाव । 8. A °परिज्जिय° 9. A रणमुहि । 10. AP बोल्लिउ ।

(11) 1. AP दहकंधरेण । 2. AP असिसुयाइ मायामयसीयाएवि° । 3. P वित्तउ । 4. AP °सीयलजल° । 5. AP कंतामुह° । 6. A °णिहित्त° 7. AP होइ ।

खयरिंदेण दिट्ठतुहघाएं इंदियालु[8] दरिसाविउ भाएं ।
ता दहमुहेण भाइ दुब्बोल्लिउ पइं णियवंसुम्मूलिवि[9] घल्लिउ ।
विणु अब्भासवसेण सरासइ गोत्तकलिइ लच्छि ध्रुवु[10] णासइ[11] ।
एउ ण चिंतिउ कुलविद्धंसण दुम्मुह दुट्ठ कट्ठ दुद्दंसण ।
परहं[12] मिलेवि काइं किर लद्धउं पइं अप्पाणउं अप्पणु खद्धउं ।
घत्ता—आरुट्ठइ[13] करिवरि चलपसरियकरि जो आसंघइ बालतणु ।।
महिहरु मेल्लेप्पिणु महि लंघेप्पिणु मरइ मणुउ सो मूढमणु ।।11।।

12

दुवई—मइं कुद्धें ण रामु किं रक्खइ भडहणहणरवालए ।।
भाइय आउ जइ सक्कहि भिडु इह समरकालए ।।छ।।

तं णिसुणेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु ।
णवघणणीसणु भणइ विहीसणु ।
जइ पिउ जंपहि सीय समप्पहि ।
णिवणयजुत्तहु दसरहपुत्तहु ।
होसि सहोयरु तो तुहुं भायरु ।
सामि महारउ सयणपियारउ ।
णं तो लज्जमि णउ[1] पडिवज्जमि ।
तुज्झु सुहित्तणु दुज्जसकित्तणु ।
होइ असारें इट्ठें जारें ।

देव, यह निश्चित रूप से सीता का मरण नहीं है। तुम्हारे घात के देखनेवाले मेरे भाई ने यह इन्द्रजाल दिखाया है। तब रावण ने अपने भाई (विभीषण) से कहा—तुमने अपने वंश की जड़ को उखाड़ कर डाल दिया। अभ्यास के बिना सरस्वती और गोत्र की कलह से लक्ष्मी निश्चित रूप से नष्ट हो जाती है। रे कुल के विध्वंसक दुष्ट दुर्मुख कठोर एवं दुदर्शनीय, तूने इसका विचार नहीं किया? दूसरों से मिलकर आखिर तूने क्या पा लिया? तूने अपने को अपने से खाया?

घत्ता—चंचल और प्रसरित सूंड़ वाले हाथी के क्रुद्ध होने पर, जो पर्वत छोड़कर और धरती का उल्लंघन कर बालतृण का आसरा लेता है, मूढ़मन वह व्यक्ति मारा जाता है।

(12)

मेरे क्रुद्ध होने पर जिसमें भटों का मारो-मारो शब्द हो रहा है, ऐसे समरकाल में क्या राम तुम्हें बचा सकता है? हे भाई आओ और जहाँ तक हो सके यहाँ से युद्ध करो। यह सुनकर और प्रभु को प्रणाम कर नवघन के समान शब्द वाला विभीषण कहता है—यदि तुम प्रिय कहते हो तो सीता को राजाके न्याय से युक्त दशरथपुत्र राम को सौंप दो। तभी तुम मेरे सगे भाई हो। तभी मेरे स्वामी और स्वजनप्रिय हो, नहीं तो मैं अपने को लज्जित मानता हूँ और अपयश के कीर्तन तुम्हारे स्वजनत्व को स्वीकार नहीं करता। असार इष्ट मित्र रहे, जिसमें धड़ घूम रहे हैं। पता-

8. AP इंदजालु। 9. A पइं णियकुलु उम्मूलिवि। 10. AP धुउ। 11. A add after this: एवमेव अप्पउ संतासइ; K writes the line but scores it off. 12. AP वइरिहिं। 13. A आरूढइ।

(12) 1. हउं।

भमियकबंधइ णिवडियचिंधइ ।
महिचुयलुयभुइ ता तहिं संजुइ ।
कयवीराहवि मेइणिराहवि ।
बहुदाराहवि लग्गउ राहवि ।
भीसणु रावणु परमारावणु ।
रंजियसुरसह बे वि महारह ।
रणभरधुरखम बे वि सविक्कम ।
पडिहरि हलहर धवलियकुलहर ।
बे वि महाजस णं आसीविस[2] ।
फणिकालाणण णं पंचाणण ।
हिमसमतमतणु[3] आयड्ढियधणु ।

घत्ता—कंपावियजलथल छाइयणहयल रणि मेलावियअमरयण[4] ॥
सहरिस गलगज्जिय खयभयवज्जिय णाइ दिसागय कुइयमण ॥12॥

13

दुवइ—रावण राम बे वि जुज्झंति सुरोसवसा[1] महाभडा ॥
छुडु छुडु ढुक्क मुक्क बाणावलि छुडु छुडु छिण्ण धयवडा ॥छ॥

छुडु छुडु णाणाजाणइं भिण्णइं छुडु छुडु धवलइं छत्तइं छिण्णइं ।
छुडु[2] णररुंडखंडमंडिय महि छुडु गय घट्टिय लोट्टिय[3] सारहि ।

काएँ गिर रही हैं, धरती पर कटी हुई भुजाएँ पड़ी हुई हैं, ऐसे उस युद्ध में—जिसने वीरों का आह्वान किया है, जो धरती की शोभा की रक्षा करने वाले हैं, जिन्होंने अनेक द्वारों की रक्षा की है, ऐसे राम के साथ रावण लग गया (भिड़ गया)। रावण भीषण था, शत्रुओं को मारने वाला था। वे दोनों महारथी सुर सभा को रंजित करने वाले थे। दोनों रणभार उठाने में सक्षम और पराक्रम से सहित थे। रावण और राम जैसे धवल मंदराचल हों। दोनों ही महायशस्वी मानो सांप हों। नाग जैसे काले मुखवाले थे। मानो सिंह थे। हिम और अंधकार के समान शरीर वाले अपने धनुष ताने हुए—

घत्ता—जिन्होंने जल-थल को कंपा दिया है, आकाश थल को आच्छादित कर दिया है, और युद्ध में देवों को इकट्ठा किया है, ऐसे वे दोनों स्वाभिमान से गरजते से हुए, क्षय भाव से रहित जैसे कुपितमन दिग्गज थे।

(13)

अत्यन्त क्रोध के वशीभूत होकर महाभट राम और रावण आपस में युद्ध करते हैं। वे शीघ्र ही बढ़े और बाणावली छोड़ी। शीघ्र ध्वज छिन्न हो गए। शीघ्र नाना यान छिन्न-भिन्न हो गए। धवल छत्र कट गए। शीघ्र धरती मनुष्यों के धड़ों के खंडों से पट गई। शीघ्र ही रथ चकनाचूर

2. P आसाविस । 3. AP हिमतमसमतणु । 4. P मेल्लाविय° ।
(13) 1. AP सरोस° 2. AP छुडु छुडु णर° । 3. A लुंटिय° ।

छुडु संदण मुसुमूरिवि घल्लिय पडिमयगल[4] मायंगहिं पेल्लिय ।
छुडु छुडु रामु थामु जा दावइ जाव खगिंदु रहंगु विहावइ ।
जाव जुज्झि वावरइ सहोयरु तावंतरि पइट्ठु दामोयरु ।
पभणइ णिसुणि[5] देव सीराउह वीर पउम चुंबियपउमामुह ।
राम राम रामामणहारण सुबलासुय अरिविंदवियारण ।
हउं किंकरु [6]कढोरपिहुकरयलु भाइ तुज्झ [7]पविरोलियपरबलु ।
जीवमि जाम वइरिमारणविहि जगि[8] रयणियरचिंधणिवतरुसिहि ।
ताव एउ पइं पहविच्छुरियउं सइं करेण किं पहरणु धरियउं ।

घत्ता—रक्खियकुलगिरिदरि हउं तेरउ हरि मुइ मुइ मइं आलद्धजउ ॥
पविखरसरणहरहिं अविरलपहरहि दारमि दहमुह मत्तगउ ॥13॥

14

दुवई—ता रामेण कण्हु मोक्कल्लिउ[1] बोल्लिउ तेण दहमुहो ॥
रे अपवित्त धुत्त परणारीरत्त म थाहि संमुहो ॥छ॥

विहिदुव्विलसिउं तुहुं वि महीसरु ओसरु ओसरु मा संधहि सरु ।
कुद्धइं तुह दहमुह णहईवइं राहवरायपायराईवइं ।

---

कर फेंक दिए गए। मदगजों के द्वारा प्रतिमदगज पीछे धकेल दिए गए। शीघ्र जब तक राम अपने थाम को दिखाते हैं और जब तक विद्याधरेन्द्र रावण चक्र दिखाता है। और जब राम युद्ध-व्यापार करते हैं, तब तक सहोदर लक्ष्मण वहाँ प्रविष्ट हुआ। उसने कहा—हे देव, लक्ष्मी का मुख चूमने वाले वीर पद्म (राम) श्री राघव, हे राम-राम, ललनाओं (स्त्रियों) के मन को हरण करने वाले, सुबला के सुत, शत्रु समूह का नाश करने वाले हे राम, विशाल और कठोर करतल वाला-शत्रुबल का मंथन करने वाला मैं तुम्हारा भाई जब तक जीवित हूँ तब तक शत्रुओं के लिए मारणविधि एवं निशाचर-ध्वजी नृप रूपी वृक्षों के लिए आग हूँ। तो फिर अपनी प्रभा से विच्छुरित यह अस्त्र भला आपने अपने हाथ में क्यों धारण किया ?

घत्ता—जिसने कुल रूपी गिरि की घाटी की रक्षा की है, ऐसा मैं तुम्हारा सिंह हूँ। आलब्ध-जय, तुम मुझे छोड़ो-छोड़ो, वज्र और तीव्र तीर रूपी नखों और अविरल प्रहारों से मत्तगज दशमुख का विदारण मैं करूँगा।

(14)

तब राम ने लक्ष्मण को मुक्त कर दिया। उसने रावण से कहा—रे अपवित्र धूर्त, परस्त्री में रत, तू मेरे सम्मुख मत ठहर। भाग्य से दुर्विलसित तू भी महीश्वर है। हट जा-हट जा, तू शर-संधान मत कर। राजा राघव के नखों से प्रदीप्त चरणकमल तुझ पर क्रुद्ध हैं। आज तेरी

4. AP पडिमयंग। 5. A देव णिसुणि 6. AP कठोर°। 7. A परितोलिय°। 8. A जणरय°।
(14) 1. A मोक्कलियउ।

अज्जु तुज्झु परमाउसु पुण्णउं जिह तूयरयणु[2] कुसील ण दिण्णउं।
मइं मुक्काइं दसास णियच्छहि तिह एवहिं पहरणइं पडिच्छहि।
कयसमरेण गहियरिउजीवें तं णिसुणेवि वुत्तु[3] दहगीवें।
तल्लरजलि कइलासु[4] वि जलयरु अदुमगामि एरंडु वि तरुवरु।
खलसुग्गीवरामणलहणुयहं तारकुंदकुमुयहं खगमणुयहं।
एयहं मज्झि तुहुं मि भडु भण्णहि तेण बप्प मइं रणि अवगण्णहि।
मुइ मुइ तेरउ आउहु केहउं महु मयंगमसयंतरु[5] जेहउं।
भणइ विहीसणु जुज्झसमत्थइं पहु मेल्लेसइ मायासत्थइं।
चिंतहि तुहुं पण्णत्ति जणद्दण लहु करि मायावाहण पहरण।

घत्ता—तं तेम करेप्पिणु भुय विहुणेप्पिणु अब्भिट्टउ दहमुहहु हरि।
कइयणवयणुत्तिहि महणपवित्तिहि णाइ समुद्दहु सुरसिहरि ॥14॥

15

दुवई—बेण्णि वि पीयवास बेण्णि वि णीलंजणगरलसामया ॥
दोहिं मि [1]कुलिसकक्कसंकुसवस चोइय मत्तसामया ॥छ॥

बे वि कुद्ध बद्धठाण मुक्क तेहिं दिव्व बाण।
रामणेण मुक्कु णाउ लक्खणेण पक्खिराउ।
रावणेण अंधयारु लक्खणेण मुक्क सूरु।

परम आयु पूर्ण हुई। रे कुशील, जिस प्रकार तू ने स्त्रीरत्न को नहीं दिया उसी प्रकार रे दशमुख, मेरे द्वारा छोड़े गए प्रहरणों को देख और उन्हें स्वीकार कर। यह सुनकर युद्ध करने वाले, तथा जिसने शत्रु के प्राण ग्रहण किए हैं, ऐसे दशानन ने कहा—छोटे तालाब में कछुआ भी कैलाश है! बिना पेड़ के गाँव में एरंड भी वृक्षवर है। दुष्ट सुग्रीव, राम, नल और हनुमान्, तारकुंद, कुमुद तथा विद्याधर मनुष्यों के मध्य तुम भी भट कहलाते हो! इसीलिए युद्ध में तुम मेरी उपेक्षा कर रहे हो। छोड़ो-छोड़ो, तुम्हारे आयुध में उतना ही अंतर है जितना कि हाथी और मशक में। विभीषण कहता है—स्वामी, युद्ध में समर्थ यह रावण मायावी अस्त्र छोड़ेगा। हे लक्ष्मण, तुम प्रज्ञप्ति विद्या का चिंतन करो, तुम शीघ्र ही मायावी अस्त्र ले लो।

घत्ता—तब उस प्रकार कर, अपनी भुजाओं को ठोक कर, लक्ष्मण दशमुख से भिड़ गया जैसे स्वरश्रेष्ठ कविजनों की उक्तियों से तथा मंथनप्रवृत्त देवपर्वत (सुमेरु) समुद्र से भिड़ जाता है।

(15)

दोनों के पीले वस्त्र थे। दोनों ही नीलांजना और गरल की तरह श्याम थे। दोनों ने ही वज्र के कठोर अंकुश से वशीभूत मतवाले श्याम गज प्रेरित किए।

वे दोनों ही बद्धलक्ष्य थे। दोनों ने दिव्य बाण छोड़े। रावण ने नागबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने गरुड़गज तीर छोड़ा। रावण ने अंधकार बाण छोड़ा, लक्ष्मण ने सूर्यबाण। रावण ने

2. AP तियरयणु। 3. AP वुत्तउ। 4. A किकलासु; T किकलासु परेवक: (?) अथवा किकासलु कुरुविल: (?); K records a p: अथवा किकलासु कुरुविल जीवं न तु गजमत्स्यादय:, 5. P मयंगसमयंतरु।
(15) 1. A कुलिसचक्कसंकुस°

रावणेण मेरु चंडु लक्खणेण वज्जदंडु ।
रावणेण आसु आसु लक्खणेण सेरिहीसु[2] ।
रावणेण वारिवाहु लक्खणेण गंधवाहु ।
रावणेण चिच्चिजाल लक्खणेण मेहमाल ।
रावणेण दंति दीहु लक्खणेण मुक्क सीहु ।
रावणेण रक्खसिंदु लक्खणेण खेउविंदु ।
रावणेण रत्तिणाहु लक्खणेण मुक्क राहु ।
रावणेण मुक्कु रुक्खु लक्खणेण दुण्णिरिक्खु ।
पज्जलंतु जायवेउ दिग्गयग्गलग्गतेउ ।

घत्ता—सुरसमरसमत्थें विज्जासत्थें जेण जेण रावणु हणइ ।।
पडिवक्खोहूएं भासुररूवें तं तं लक्खणु णिल्लुणइ ।।15।।

16

दुवई—ता धगधगधगंतु[1] खयजलणु व खेयरलच्छिमाणणो ।।
खणि बहुरूविणीइ[2] बहुरूवहिं उद्धाइउ दसाणणो ।।छ।।

गयवरि गयवरि हयवरि हयवरि रहवरि रहवरि णरवरि णरवरि ।
खेयरि अब्भिडंति पवरामरि[3] छत्ति विमाणि जाणि धइ चामरि ।
चउहुं मि पासहिं भडु भीसावणु[4] जलि थलि महियलि णहयलि रावणु ।
वीसपाणिपरिभामियपहरणु तिणयणगलतमालसंणिहतणु ।

प्रचंड मेरुबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने वज्रदंड । रावण ने शीघ्र अश्वबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने प्रचंड महिष बाण । रावण ने मेघबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने पवनबाण । रावण ने अग्निबाण, लक्ष्मण ने मेघमाल । रावण ने दीर्घगज छोड़ा, लक्ष्मण ने सिंहबाण । रावण ने राक्षसेन्द्र, लक्ष्मण ने क्षेमवृंद । रावण ने कामबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने राहु बाण । रावण ने रूक्ष बाण छोड़ा, लक्ष्मण भी, जिसका तेज दिग्गजों के अग्र भाग को लग रहा है ऐसा, अग्निबाण छोड़ा ।

घत्ता—देव-युद्ध में समर्थ जिस-जिस विद्याशस्त्र से रावण आक्रमण करता, उसके प्रतिपक्षीभूत तथा भास्वर रूप उस-उस बाण से लक्ष्मण उसे नष्ट कर देता ।

(16)

तब प्रलयाग्नि के समान धक-धक करता हुआ लक्ष्मी का अभिमानी, विद्याधर रावण क्षण-क्षण में बहुरूपिणी विद्या के साथ दौड़ा ।

गजवर-गजवर पर, अश्ववर अश्ववर पर, रथवर रथवर पर, नरवर नरवर पर, खेचर-प्रवर अमर, छत्र विमान यान ध्वज और चामरों पर जा भिड़े । चारों ओर भयंकर योद्धा रावण पल में जल, थल, महीतल और नभतल में था । अपने बीसों हाथों से अस्त्रों को घुमाता हुआ, शिव-कण्ठ और तमाल के समान शरीर वाला, गुंजाफलों के समान अरुण नेत्रवाला, मारो-मारो

2. A सेरिहासु; T सेरिहेसु ।

(16) 1. AP धगधगंतु । 2. AP °रूवणीए । 3. A पउरामरि; P पउरपवरामरि । 4. P भीसामणु ।

गुंजापुंजसरिसणयणारुणु हणु हणु हणु भणंतु रणदारुणु ।
अग्गइ पच्छइ चंचलु धावइ मणहु वि पासिउ वेएं पावइ[5] ।
गयकुंभयलइं पायहिं पेल्लइ झ त्ति दंत उम्मूलिवि घल्लइ ।
परिभमंतकरिवरकर[6] वंचइ रिक्खइं[7] गेज्जावलिय णिलुंचइ ।
सारिउ कसमसंति मुसुमूरइ अंतरसेणासणिय वियारइ ।
विलुलियकण्णचमर अच्छोडइ कच्छोलंबिय घंटिय[8] तोडइ ।
असिणा दारइ मारइ मयगल घिवइ णहंगणि चलमुत्ताहल ।

घत्ता—भीमाहवचंडहिं[9] दढभुयदंडहिं चप्पिवि हुंकरेवि धरइ ॥
करि रोहइ जोहइ करणहिं मोहइ दसणविहिण्णु[10] वि णीसरइ ॥16॥

17

दुवई—फोडिवि[1] आसवारसीसक्कइं सिरइं सकवयगत्तइं ॥
छिंदिवि पक्खराउ हय मारिवि परियाणइं विहित्तइं[2] ॥छ॥

गयणयलि लग्गेवि कहकहरवं हसिवि बहुरूविणी रामकेसवहं गय तसिवि ।
ता[3] रक्खधयलक्खणा गुलुगुलंतेहिं रिउदुज्जया लोहवढमढियदंतेहिं[4] ।
णवजलहरेहिं व जललव मुयंतेहिं चलकण्णतालेहिं सुरगिरिमहंतेहिं ।

कहता हुआ, युद्ध में भयंकर रावण चंचल हो आगे-पीछे दौड़ता है। मन से भी अधिक वेग से वह जाता है। गजकुंभ-स्थलों को वह पैर से पेल देता है, शीघ्र ही हाथी के दाँतों को उखाड़ देता है, घूमते हुए करिवरों को सूंड़ों से वंचित करता है, ग्रीवा से क्षुद्र घंटिका रूपी नक्षत्रों को तोड़ लेता है। कसमसाते हुए गज-पर्याणों को मसल डालता है। सेना के भीतर स्थित लोगों को विदीर्ण कर देता है। चंचल कर्ण रूपी चमरों को छिटक देता है। कच्छा (झूल) से लटकती हुई घंटियों को तोड़ डालता है। तलवार से हाथियों को विदारित कर मार डालता है और मुक्ता-फलों को आकाश में बिखेर देता है।

घत्ता—भीमयुद्ध में प्रचंड दृढ़ भुजदंडों से चाँपकर और हुंकार कर वह हाथी को पकड़ता है, उसे रोकता है, देखता है, आवर्तन आदि चेष्टाओं से उसे मोहित करता है और दाँतों से विभक्त होने पर भी उनमें से निकल आता है।

(17)

अश्वारोहियों के शिरस्त्राणों, सिरों और कवच सहित शरीरों को नष्ट कर, कवचों को काटकर, अश्वों को आहत कर, उनके पर्याणकों को विभक्त कर देता है। आकाशतल से लगकर कहकहाकर हँसता है। इस प्रकार वह अनेक रूपों में राम लक्ष्मण को त्रस्त करके चला। तब राक्षसध्वनियों के समान लक्षणवाले, शत्रु के लिए अजेय वे दोनों, जिनके दाँत लोहे से खूब मढ़े हुए हैं, जो मेघों के समान जलकण छोड़ रहे हैं, जो चंचल कर्णतालों से युक्त हैं, जो सुमेर

5. PA धावइ । 6. A °करि वंचइ । 7. AP. रिक्खं । 8. AP घंटउ । 9. A भीमाउह । 10. P °विहित्तु ।
(17) 1. AP तोडिवि । 2. विहत्तइं । 3. A तारररक्खय°; P तो रक्खसयं । 4. P °मढिय° ।

झणझणियमणिकिंकिणीसोहमाणेहिं[5] अणवरयकरडयलपरिगलियदाणेहिं[6] ।
सोवणसारीणिबद्ध द्धचिंधेहिं करणासियागहियगयणाहगंधेहिं ।
दंतग्गभिण्णग्गखगरहतुरंगेहिं[7] भड बे वि थिय गयणि मायामयंगेहिं ।
ता मुक्क दहमुहिण[8] पच्छइय णहभाय विसविसम गुरुविसहरायार णाराय ।
तप्पंजरे छूढु[9] तेणारिविद्दवणु अलिकसणु हणवसणु बीभवणु[10] सिरिरमणु ।
पुणु पहरणावरणि मणि विज्ज संभरिवि सरणियरु जज्जरिवि हुंकरिवि णीसरिवि ।
जा वीरु उत्थरिवि चप्परिवि पइसरइ स रहंगु तहिं ताम धरणीसरो सरइ ।
घत्ता—णवचंदणचच्चिउ कुसुमहिं अंचिउ रयणाराकिरणोहदलु ॥
णं रावणलच्छिहि कमलदलच्छिहि करयलाउ णिवडिउ कमलु ॥17॥

18

दुवई—रूसंतेण तेण महुमहणमहासुहडे णिओइयं ॥
तं कुडिलयरचडुलतडिवलयणिहं गयणे पधाइयं ॥छ॥
ता दिट्ठु णहि एंतु सहस त्ति णिवडंतु ।
धाराकरालेहिं करवालसूलेहिं[1] ।
झसमुसलसेल्लेहिं वावल्लभल्लेहिं ।

पर्वत की तरह महान् हैं, जो झन-झन करती हुई मणि रूपी किंकणियों से शोभित हैं, जिनके गंड-स्थल से अनवरत मदजल झर रहा है, जिनके स्वर्ण-पर्याणों पर ऊँचे ध्वज बँधे हुए हैं, कानों के कारण भ्रमर जिन महागजों से गंध ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं, जिनके दाँतों के अग्र भागों से विद्याधरों के रथ और अश्व भग्न हैं, ऐसे मायागजों से आकाश में स्थित हो गए। तब उस रावण द्वारा मुक्त, विशाल विषधर आकारवाले, विष से विषम तीर आकाश में आच्छादित हो गए। उस तीरपंजर में शीघ्र ही जब शत्रु का विदारक, भ्रमर की तरह श्याम, दुःख का नाश करने वाला भयंकर वीर लक्ष्मण, फिर अपने मन में प्रहरणावरणी विद्या का स्मरण कर, शरसमूह को जर्जर कर, हुंकार कर निकलकर, उछलकर चाँपकर प्रवेश करता है तब वह धरणीश्वर रावण चक्र का ध्यान करता है।

घत्ता—नव चंदन से चर्चित, फूलों से अंचित, रत्नों की आराओं के किरणसमूह के दल वाला चक्र इस प्रकार गिर पड़ा मानो कमलदल के समान आँखों वाली रावण की लक्ष्मी के करतल से कमल गिर पड़ा हो।

(18)

क्रुद्ध होते हुए रावण ने उसे महासुभट लक्ष्मण में नियोजित किया। कुटिलतर और चंचल विद्युद्वलय के समान वह चक्र आकाश में दौड़ा।

तब वह आकाश में आता हुआ और सहसा गिरता हुआ देखा गया। धाराओं से कराल करवालों और शूलों, झसों, मूसलों, सेलों वावल्लों और भालों से तथा शत्रुजनों के लिए कृतांत

5. AP रुणरुणिय°। 6. A अणवरयपरिगलियकरडयलदाणेहिं । 7. A दंतग्गिणिभिण्णखग । 8. A दहवयण° । 9. P छट्टु । 10. A झीभवणु ।
(18) 1. A करवालवालेहिं । 2. A °मुसलसल्लेहिं ।

अरिणरकयंतेहिं कंपणहिं कोंतेहिं ।
कयकण्हपक्खेण गवएं गवक्खेण ।
कुमुएण कुंदेण चंदें महिंदेण[3] ।
सत्तुहणभरहेण णीलेण सरहेण ।
सुग्गीवणामेण हणुवेण[4] रामेण ।
पडिखलिउ णउ[5] वलिउ अमरत्थु संचलिउ ।
रणसिरिहि कुंडलु व णवरविहि मंडलु व ।
जसवल्लरीदलु व भुयजुयलतरुफलु व ।
माणिक्कगणजडिउ लक्खणहु करि चडिउ ।

घत्ता—जं चक्कसमिद्धउ[6] कण्हें लद्धउं तं णारउ णहि णच्चियउ[7] ।।
आणंदरसोल्लिउ सिरिथणपेल्लिउ राउ[8] रामु रोमंचियउ[9] ।।18।।

19

दुवई—णिवडिय कुसुमविट्ठि कउ कलयलु हरिसिय उरयसुरणरा ।।
भामिवि चक्कु भणिउ गोविंदें विसरिस णिसुणि दससिरा ।।छ।।

संदण तुरंग मयमुइयभिंग[1] ।
करि गलियगंड मेइणि तिखंड ।
असि चंदहासु लंकाणिवासु ।
ससहरसमाणु[2] पुप्फयविमाणु ।
वइदेहि देहि मा खयहु जाहि ।

कंपनों और कोंतों के साथ लक्ष्मण का पक्ष लेने वाले गवय, गवाक्ष, कुमुद, कुंद, चन्द्र, महेन्द्र, शत्रुघ्न, भरत, सरथ, नील, सुग्रीव, हनुमान् और राम के द्वारा वह चक्र प्रतिस्खलित नहीं हुआ, वह मुड़ गया। अमरशस्त्र (चक्र) चल पड़ा। रणलक्ष्मी के कुंडल के समान, नव रविमंडल के समान, यशरूपी लतादल के समान, बाहुयुगल के तरुफल के समान, माणिक्यसमूह से विजड़ित वह चक्र लक्ष्मण के हाथ पर चढ़ गया।

घत्ता—जब चक्र की समृद्धि को लक्ष्मण ने धारण कर लिया तो आकाश में नारद नृत्य कर उठे। आनंदरस से उद्वेलित तथा लक्ष्मी के स्तनों से प्रेरित राजा राम भी रोमांचित हो उठे।

(19)

कुसुमवृष्टि होने लगी। कल-कल होने लगा। नाग, सुर और मनुष्य हर्षित हुए। चक्र घुमाते हुए गोविंद ने कहा—रे दशमुख, यह विशेष बात सुन ! स्यंदन, तुरंग, मद से मुदित भ्रमर जिस पर है ऐसा गलितगंड हाथी, त्रिखंड धरती, चन्द्रहास कृपाण, लंका निवास, चन्द्रमा के समान पुष्पक विमान और वैदेही दे दो, विनाश को प्राप्त मत होओ, राम को संतुष्ट करो, उनके चरणों में प्रणाम करो। तेज रहित अपनी पत्नी के साथ जीवित रहो। तब ओंठ चाबते

3. A मयंदेण। 4. A omits this foot. 5. A णहुवडिउ। 6. AP चक्कु। 7. AA णच्चिउ। 8. A रामु राउ। 9. AP रोमंचिउ।

(19) 1. PA °मुइयसिंग। 2. P ससहर।

तूसवहि रामु करि[3] पयपणामु।
जीवहि अतेउ कंतासमेउ।
दट्ठाहरेण असिवरकरेण।
असमंजसेण अमरिसवसेण।
ता भणिउं तेण णिसियरधएण।
पाइक्कतणय णिम्मुक्कविणय।
तुम्हहं वराय किं मज्झु राय।
णियजीवधरणु सुग्गीवसरणु।
पइसरहु जइ वि णुव्वरहु[4] तइ वि।
विगयावलेव देव वि अदेव।
भडभिडणसंगि महुं जुज्झरंगि।
किं गणिउ रामु[5] तुहुं हीणथामु[6]।
जज्जाहि रंक मग्गंतु लंक।
लज्जहि ण केव हिय सीय जेव।
अवराउ तेव परिचत्तसेव[7]।
रामाणियाउ रायाणियाउ।
लेसमि छलेण णियभुयबलेण।
इय भणिवि भीमु दुल्लंघधामु।
आबद्धकोहु[8] मेल्लइ सरोहु।
आइड्ढचाउ[9] रायाहिराउ।
जा[10] उग्गभाउ वीसद्धगीउ।
ता तक्खणेण तहिं लक्खणेण।
णं खयपयंगु मुक्कउ रहंगु।
आयउ तुरंतु धाराफुरंतु।

हुए, हाथ में तलवार लिए हुए, उस निशाचरध्वजी ने कहा—जो दुर्विनीत मानवपुत्र है क्या वह तुम्हारा बेचारा (राम) हमारा राजा होगा? अपना जीवधारण करने वाला यदि वह सुग्रीव की भी शरण में जाए, तो भी उसका उद्धार नहीं हो सकता। देव और अदेव भी, भटों की जिसमें भिड़ंत है, ऐसे युद्धरंग में अहंकार शून्य हो जाते हैं, हीनशक्ति तुम्हें और राम को मैं क्या गिनूं? रे दरिद्र जा-जा, लंका मांगते हुए तुझे शर्म नहीं आती। रे सेवा का परित्याग करने वाले, जिस प्रकार सीता को अपहृत किया गया है, उसी प्रकार दूसरी भी रानियों को मैं अपने भुजबल और छल से ग्रहण करूँगा। यह कहकर भयंकर, राजाधिराज अलंघ्यधाम रावण क्रोध से भरकर धनुष तानकर उग्र भाव से शर समूह छोड़ता है। तब उसी क्षण लक्ष्मण ने क्षयकाल के सूर्य के समान चक्र छोड़ दिया। धाराओं से स्फुरित होता हुआ वह तुरंत आया।

3. कयपय°। 4. A णउ उव्वरहु तइ वि; P णउ उव्वुरहो तइ वि। 5. P adds after this: णिण्णट्ठणामु, संगामकामु। 6. A तुहुं दिण्णधामु, 7. A परचिण्णसेव। 8. P आबद्ध। 9. AP आइड्ढचाउ। 10. AP आमुक्क।

अरितावणेण  तं रावणेण।
भुयखलिउ जइ वि  बलि[11] मइड तइ वि।
वच्छयलि लग्गु  को किर ण भग्गु।
णिवसिरिपमत्तु  परणारिरत्तु।

घत्ता—दहवयणहु केरउ दुहइं जणेरउ तिक्खइ धारइ सल्लियउं ॥
परघरिणीमंदिरु हियउ असुंदरु चक्कें फाडिवि घल्लियउं ॥ 19॥

20

दुवई—ता दहवयणि पडिइ पडियइं सुरकुसुमइं सिरि उविंदहो ॥
हउ दुंदुहि गहीरु जउ घोसिउ पसरिय दिहि सुरिंदहो ॥छ॥
ता सुहडेहिं दिट्ठु रणमहियलु[1]  वणवियल्गियलोहियजलजंजलु।
भग्ग रहंग रहहिं सहुं रहियहिं  फट्टधयग्गहिं वंसविरहियहिं।
चामर पडिय हंस णं मारिय  घुलिय जोह पडिजोहवियारिय।
मोडियदंडइं छत्तइं धवलइं  दिट्ठइं णाइ अणालइं कमलइं।
छिण्णगुणइं महिलुलियइं चावइं  णं खलचित्तइं भंगुरभावइं।
धम्मगुणुज्झिय सुद्धिइ जुत्ता  बाण रिसि व्व मोक्खुं[2] संपत्ता।
दाणवंत मत्थयखणणुज्जय[3]  णावइं पिसुण[4] सढ णिरु दुज्जय।

शत्रुओं को सताने वाले रावण ने यद्यपि बलपूर्वक (पकड़ना चाहा) तब भी भुजाओं से स्खलित होकर उसके वक्षस्थल से जा लगा। उससे कौन भग्न नहीं होता? राज्यलक्ष्मी से प्रमत्त, परस्त्री में अनुरक्त,

घत्ता—दुःखों का जनक, परस्त्रियों का घर स्वरूप, तीखे शल्यों से भेदा गया, रावण का असुन्दर चित्त चक्र ने फाड़कर डाल दिया।

(20)

रावण के धरती पर पड़ते ही लक्ष्मण के सिर पर दिव्य पुष्पों की वृष्टि होने लगी। गंभीर दुंदुभि बज उठी। जय घोषित होने लगी। देवेन्द्र का भाग्य प्रसारित होने लगा।

उस समय योद्धाओं ने युद्धभूमि को देखा जो घावों से रिसते रक्त रूपी जल का तालाब था। रथों रथिकों, बांसों से रहित, फटे हुए ध्वजाग्रों के साथ चक्र भग्न हो गए। चामर गिर गए, मानो हंस मारे गए। विदारित योद्धा और प्रतियोद्धा पड़े हुए थे। टूटे हुए दंडों वाले धवल छत्र ऐसे लगते थे मानो बिना मृणाल के कमल हों। डोर कटे धनुष धरती पर पड़े हुए थे मानो भंगुर भाव वाले दुष्टों के चित्त हों। धर्म गुण से रहित तथा शुद्धि से युक्त ऋषि की तरह बाण मुक्ति पा गये थे। अंकुश से युक्त गज ऐसे प्रतीत होते थे, मानो अत्यन्त दुर्जेय दुष्ट हों।

11. A बलवंडइ; P बलिवंडु।

(20) 1 A रणि महियलु। 2. AP मोक्खु णं पत्ता। 3. A °मंमय°। 4. A पिसुणसल्यु।

कुडिल लोहणिम्मिय पडिअंकुस दिट्ठातुरय जंत तोडियकुस।
खलिणइं णिवडियाइं पल्लाणइं दिट्ठइं बिहडियाइं[5] जंपाणइं।
दिट्ठइं णिवकवोलकंकालइं[6] मासगासु लेंतइं वेयालइं।
कडयमउडकोंडलकडिसुत्तइं[7] दिट्ठइं दसदिसासु पविहत्तइं।

घत्ता—भडभालविणिहियइं[8] विहिणा लिहियइं अचलइं भवियव्वक्खरइं॥
जाइवि[9] गयचम्मइं संदणरम्मइं[10] कावालिउ वायइ वरइं॥20॥

## 21

दुवई—पडिवारणविसाणजुयपेल्लियघल्लियमत्तवारणे[1]॥
होही रिउहुं मरणु हरिहत्थें[2] सीयाकारणे रणे॥छ॥

तहिं हिंडंतहिं विहिविच्छोइय घरिणिहिं णियणियपिययम जोइय।
काइ वि पिउ सरसयणि[3] पसुत्तउ दिट्ठउ णं रणलच्छिहि रत्तउ।
काइ वि पिउ लुलियंतहिं रुद्धउ दिट्ठउ णं जमसंकलबद्धउ।
खंडखंडु[4] हुउ मुउ णोलक्खिउ काइ वि पिउ पयखंडें लक्खिउ[5]।
उज्जएण[6] पडिएण महाहवि क वि अंगुलियउ भंजइ राहवि।
का वि भणइ हलि जूरइ[7] महु मणु लक्खणेण महु रंडालक्खणु।

---

कुटिल, लोह से निर्मित प्रति-अंकुश तथा तर्जक (कोड़ा) तोड़कर जाते हुए अश्वों को देखा। पल्यान स्खलित होकर गिर पड़े। जंपानों को विघटित होते हुए देखा। राजाओं के कपोल कंकाल दिखाई दिए। मांस का कौर खाते हुए बेताल देखे। कटक, मुकुट, कुंडल और कटिसूत्र दसों दिशाओं में बिखरे हुए देखे।

घत्ता—विधाता के द्वारा लिखे गए देखने में सुन्दर, चर्म रहित, भटों के भालों पर स्थित, भवितव्यता के अचल श्रेष्ठ अक्षर जाकर, कापालिक पढ़ता है।

## (21)

शत्रुगजों के दंतयुगल से आहत और पतित है मत्तगज जिसमें ऐसे उस युद्ध में, सीता के कारण लक्ष्मण के हाथों शत्रुओं की मृत्यु हो गई।

वहाँ भ्रमण करती हुई गृहिणियाँ विधाता के द्वारा वियुक्त अपने-अपने प्रियतमों को देखने लगीं। किसी ने प्रिय को शरशैया पर सोते हुए इस प्रकार देखा मानो, वह युद्ध-लक्ष्मी में अनुरक्त हो। किसी ने कटे हुए आंत्रजाल से रुद्ध प्रिय को इस प्रकार देखा मानो यम की सांकलों से बँधा हुआ हो। किसी के द्वारा खड-खंड हुआ, मरा हुआ और नहीं पहिचाना गया प्रिय पड़े हुए सरल पादखंड के द्वारा महायुद्ध में पहिचाना गया। कोई प्रिय की अंगूठी को तोड़ती है। कोई कहती है—हे सखी, मेरा मन (यह देखकर) पीड़ित होता है कि मुझे लक्ष्मण द्वारा वैधव्य के लक्षण

---

5. A विहलियाइं। 6. A °कवाल°। 7. AP °कुंडल°। 8. P भडसाल°। 9. A जोइवि। 10. AP दंसणरम्मइं।

(21) 1. A पेल्लिवि। 2. P हरिअत्थें। 3. AP सरसयणइ सुत्तउ। 4. P खंडखंड। 5. P लक्खियउ। 6. A उज्जुएण। 7. A झूरइ।

पायडियउं एवहिं किं किज्जइ वर णियणाहें समउं मरिज्जइ।
का वि भणइ णिअणियइ ण याणिय पहुणा गोत्तमारि कहिं आणिय।
डज्झउ सीय सुविप्पियगारिणि खलदइवें संजोइय वइरिणि।
का वि भणइ उव्वसि पिउ मेल्लहि रंभि तिलोत्तमि किं पि म बोल्लहि।
कण्णावरु इहु[8] णाहु महारउ अत्थक्कइ[9] किह होइ तुहारउ।
कासु वि सिवपयगमणविसेसें समरदिक्ख दक्खालिय सीसें।

घत्ता—ता तहिं मंदोयरि देवि किसोयरि थण अंसुयधारहिं धुवइ ॥
णिवडिय गुणजलसरि खगपरमेसरि हा हा पिय भणंति रुयइ ॥21॥

22

दुवई—हा केलाससेलसंचालण हा दुज्जयपरक्कमा ॥
हा हा अमरसमरडिंडिमहर हा हरिणारिविक्कमा ॥छ॥

हा भत्तार हार मणरंजण[1] हा भालयलतिलय णयणंजण।
हा मुहसररुहरसरयमहुयर[2] हा रमणीयणणिलय मणोहर।
हा सूहव सुरहियसिरसेहर हा रिउरमणीकरकंकणहर।
हा थणकलसविहूसणपल्लव हा हा हिययहारि णिच्चं णव।
हा करफंसजणियरोमंचुय [4]आलिंगणकीलाभूसियभुय।
पेसलवयणविहियसंभासण[5] हा माणंसिणिमाणविणासण।

प्रगट किए गए। अच्छा है, इस समय प्रिय स्वामी के साथ मरा जाए। कोई कहती है—मैं अपनी नियति नहीं जानती, प्रिय यह गोत्रमारि कहाँ से ले आये। अत्यन्त बुरा करने वाली सीता देवी में आग लगे, दुष्ट विधाता ने उस वैरिन का संयोग कराया। कोई कहती है—हे प्रिय, उर्वशी को छोड़ दो, रंभा और तिलोत्तमा के विषय में भी कुछ मत बोलो। कन्या का वर, यह मेरा स्वामी है, इस समय यह तुम्हारा कैसे हो सकता है? शिवपदगमनविशेष (शिवा के पैर के गमन विशेष, मोक्ष पद पर गमन विशेष वाले) सिर के द्वारा किसी की समर दीक्षा दिखाई जा रही थी।

घत्ता—उस अवसर पर वहाँ कृशोदरी देवी मंदोदरी अपने स्तनों को अश्रुधारा से धोती है। गिरी हुई गुणजल रूपी नदी वह विद्याधर परमेश्वरी हा प्रिय हा प्रिय कह कर रो उठती है।

(22)

हा, कैलाश पर्वत का संचालन करने वाले, हा सिंह के समान पराक्रमवाले, हा स्वामी, हा सुंदर मनरंजन, हा भालतल के तिलक, आँखों के अंजन, हा मुख रूपी कमल के गुनगुनाते भ्रमर, हा सुन्दर रमणीजनों के घर, हा सुभग सुरभित शिरशेखर, हा शत्रुस्त्रियों के कंगन का हरण करने वाले, हा स्तनरूपी कलश के अलंकरण पल्लव, हा हा हृदय हरण करने वाले नित्य नव, हा कर-स्पर्श से रोमांच उत्पन्न करने वाले, हा आलिंगन की क्रीड़ा से भूषितबाहु, हा हा कुशल वचनों से संभाषण करने वाले और मनस्विनियों के मान का विनाश करने वाले, हा पंचेन्द्रिय

8. A पहु। 9. A अच्छइ कह वि; P अथक्कए किह।

(22) 1. P मणरंजण। 2. A बुहसररुह°। 3. AP रमणीमण° 4. A हालिंगण°। 5. AP विहियवयण°।

हा पंचेंदियविसयसुहावह हा पिय पूरियसयणमणोरह।
हा लंकाहिव खेयरसामिय देव गंधमायणगिरिगामिय।
हा मंदरकंदरकयमंदिर दिव्वपोमसरपोमिंदिदिर[6]।
पइं विणु जगि दसास जं जिज्जइ तं परदुक्खसमूहु सहिज्जइ।
हा पिययम भणंतु सोयाउरु कंदइ णिरवसेसु अंतेउरु।

घत्ता—ता णियकुलभूसणु ढुक्कु विहीसणु तहिं तक्खणि सुविसण्णमइ।
जगकाणणमाणणु भडपंचाणणु जहिं णिवडिउ लंकाहिवइ ॥22॥

23

दुवई—अप्पउ रयणकिरणविप्फुरियइ[1] छुरियइ हणइ जावहिं ॥
जीविउ विद्दवंतु कयसंतिहिं मंतिहिं धरिउ तावहिं ॥छ॥
हा हा कयउं कम्मु मइं भीसणु णियतणु पहणिवि रुयइ विहीसणु।
अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ अज्जु कित्ति दसदिसहिं ण वियरइ।
जयसिरि पत्त[2] अज्जु विहवत्तणु गयउ अज्जु पहु सत्तिपवत्तणु।
अज्जु इंदु भयवसहु म गच्छउ अज्जु चंदु सहुं कंतिइ अच्छउ।
अज्जु तिव्वु णहि तवउ दिणेसरु अज्जु सुयउ णिच्चिंतु फणीसरु।
अज्जु जलणु जालउ[3] वित्थारउ वइवसु अज्जु सइच्छइ मारउ।
णेरिउ अज्जु रिछु आवाहउ दिक्करिउलु मा कासु वि बीहउ।

विषयों के लिए सुखावह, हा प्रिय स्वजनों का मनोरथ पूरा करने वाले, हा लंकानरेश, विद्याधरों के स्वामी, हा गंधमदन पर्वतगामी देव, हा मंदराचल की कंदरा में गृह बनानेवाले, हा दिव्य पद्म सरोवर की पद्मिनी के भ्रमर दशमुख, यदि तुम्हारे बिना जग में जिया जाता है तो परम दुःख समूह को सहन करना है। हा प्रियतम कहता हुआ शोक से व्याकुल समूचा अन्तःपुर क्रंदन करता है।

घत्ता—इतने में विषण्णमति, अपने कुल का आभूषण विभीषण तत्काल वहाँ पहुँचा कि जहाँ मनुष्य रूपी मानस का मान्य भटसिंह लंकाराज पड़ा हुआ था।

23

रत्नकिरणों से चमकती हुई छुरी से जब तक वह अपने को मारता है, तब तक जीवन का नाश करने में तत्पर उसे शांति स्थापित करनेवाले मंत्रियों ने पकड़ लिया। अपने शरीर को पीटते हुए विभीषण रोता है—मैंने अत्यन्त बुरा कर्म किया। आज सरस्वती शास्त्र की याद नहीं करती, आज कीर्ति दसों दिशाओं में विचरण नहीं करती, विजयश्री आज वैधव्य को प्राप्त हो गई। शक्ति का प्रवर्तन करने वाला स्वामी आज चला गया। आज इन्द्र भय को प्राप्त न हो, आज चन्द्रमा अपनी कांति के साथ रहे, आज सूर्य आकाश में खूब तपे, आज नागराज खूब सोए, आज आग ज्वाला का विस्तार करे। यम आज स्वेच्छा से लोगों को मारे। नैऋत्य आज रीछ पर सवारी करे। दिग्गज कुल अब किसी से न डरे। आज वरुण अपनी प्रशंसा कर ले। आज पवन

6. A °पोमंदिदिर।

(23) 1. A विच्छुरियइ। 2. AP अज्जु पत्त। 3. A जालावित्थारउ।

अज्जु वरुणु अप्पाणु पसंसउ अज्जु वाउ उववणइं विहंसउ[4]।
अज्जु कुबेरु कोसु मा ढोवउ अज्जु कामु अप्पाणउं जोवउ।
भायर पइं गइ णारयठाणहु[5] अज्जु णयरि णंदउ ईसाणहु।

घत्ता—पइं मुइ धरणीसर खगपरमेसर सुरवरु[6] जयदुंदुहि रसउ॥
तिय[7] राहवचंदहु सिय[8] गोविंदहु अज्जु णिरंकुस[9] उरि वसउ॥23॥

24

दुवई—अज्जु मिलंतु मच्छ मंदाइणि बहउ ससंकपंडुरा॥
पइं मुइ खेयरिंद कह[1] होसइ सा णवघुसिणपिंजरा॥छ॥

णारउ णाउ[2] आउ णासणविहि सीय ण[3] हित्त हित्त परियणदिहि।
रामु ण कुद्धु कुद्धु जगभक्खउ लक्खणु ण भिडिउ भिडिउ कुलक्खउ।
चक्कु ण मुक्कु मुक्कु जमसासणु तं णउ लग्गउ लग्गु हुयासणु।
वच्छु ण भिण्णु भिण्णु धरणीयलु रुहिरु ण गलिउ गलिउ सज्जणबलु।
तुहुं णउ पडिउ पडिउ कामिणिगणु तुहुं ण मुओ सि मुउ विहलियजणु।
चेट्ठ ण भग्ग भग्ग लंकाउरि दिट्ठि ण सुण्ण सुण्ण मंदोयरि।
हा भायर किं ण किउ णिवारिउ किं महुं तणउं वयणु अवहेरिउ।
लक्खण राम काइं णउ मण्णिय किं सुग्गीव हणुव अवगण्णिय।

---

उपवनों का ध्वंस कर ले। आज कुबेर कोश को धारण करे। आज काम अपने को देख ले। हे भाई, तुम्हारे नरक-स्थान पर जाने पर ईशान आज नगर में आनन्द मना ले।

घत्ता—हे धरणीश्वर विद्याधरेश्वर, तुम्हारे मरने पर देववर अपनी जय डुगडुगी बजा लें। स्त्री (सीता) राघवचन्द्र के और लक्ष्मी लक्ष्मण के उर में निवास कर लें।

(24)

आज मत्स्यों से मिलती हुई गंगा नदी चन्द्रमा की तरह सफेद होकर बहे। वह तुम्हारे बिना हे खेचरेन्द्र, नव-केशर से पिंजरित कैसे होगी?

वह नारद नहीं आया, नाश का विधाता आया था। सीता का अपहरण नहीं किया गया, परिजनों के भाग्य का अपहरण किया गया। राम क्रुद्ध नहीं हुए, जग-भक्षक क्रुद्ध हुए। लक्ष्मण नहीं लड़ा, कुल-क्षय ही लड़ा। चक्र नहीं छोड़ा गया, यम-शासन ही छोड़ा गया। वह नहीं लगा वरन् हुताशन ही लगा। भाई भग्न नहीं हुआ, धरणीतल भग्न हो गया। रक्त नहीं गला, सज्जन-बल गल गया। तुम नहीं गिरे, कामिनीजन गिरा। तुम नहीं मरे, समस्त विकलित जन मर गया। तुम्हारी चेष्टा भग्न नहीं हुई, लंकापुरी भग्न हो गई। दृष्टि सूनी नहीं हुई, मंदोदरी सूनी हो गई। हे भाई, तुमने मेरे मना किए हुए को क्यों नहीं माना? तुमने मेरे वचनों की अवहेलना क्यों की? तुमने राम और लक्ष्मण को क्यों नहीं माना? तुमने सुग्रीव और हनुमान् का अपमान क्यों किया?

---

4. A विहंसउ। 5. A णारयगमणहु। 6. A सुरवइ। 7. AP तिय। 8. AP सिय 9. A णिरंकुसि।
(24) 1. A कहिं। 2. A आउ णाइ। 3. A णिहित्त।

दुज्जसकारिणि णयगुणवंतहं[4] किं ण दिण्ण पणइणि मग्गंतहं ।
किह कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउं तुज्झु वि मरणु[5] केव संपण्णउं ।
हा पइं विणु मइं काइं जियंतें हा हउं कवलिउ किं ण कयंतें ।
घत्ता—कायर मब्भीसिवि अभउ पघोसिवि विजयसंखु पूरिवि लहु ।।
तामायउ लक्खणु राउ[6] वियक्खणु सुग्गीउ वि हणुएण सहुं ।।24।।

25

दुवई—भासिउ राहवेण दहमुहु तुहुं सोयहि किं विहीसणा ।।
जासु खगिंदवंदवंदारय विरइयपायपेसणा[1] ।।छ।।
विलसियचंदसूरणक्खत्तइ एयहु को समाणु भुयणत्तइ ।
एक्कु जि णवर दासु दमियारिहि जं अहिलासु गयउ परणारिहि ।
जइ[2] ण वि किउ जिणधम्मुवएसणु वारिवि करुण[3] रुवंतु विहीसणु ।
रामाएसें जगकंपावणु चउहिं जणहिं उच्चाइउ रावणु ।
होइ सुरिंदु वि गयगुणसारउ परयारेण सव्वु लहुयारउ ।
कंचणमइ विमाणि संणिहियउ पेयभूसणायारु वि विहियउ ।
उब्भिय कयलिखंभ सुहसुंभइ णं मसाणघरकरणारंभइ ।

न्याय गुण से उचित माँगते हुए भी उन्हें अपयश करने वाली प्रणयिनी (सीता) क्यों नहीं दी ? क्या वज्र भी घनों से क्षय को प्राप्त होता है ? तुम्हारा भी मरण किस प्रकार हो गया ? हा तुम्हारे बिना मेरे जीवित रहने से क्या ! हा मुझे कृतांत ने कवलित क्यों नहीं कर लिया ?

घत्ता—कातरों को अभय वचन देकर, अभय की घोषणा कर शीघ्र विजय शंख बजाकर तब तक राजा लक्ष्मण और विचक्षण सुग्रीव भी हनुमान् के साथ आ गये ।

(25)

राघव ने कहा—हे विभीषण, तुम उस रावण के लिए अफसोस क्यों करते हो, जिसकी खगेन्द्रवृंद रूपी चारण चरणसेवा करते रहे हैं ।

चन्द्र, सूर्य और नक्षत्रों से विलसित इस भुवनत्रय में इसके समान कौन है ? शत्रुओं का दमन करने वाले उसका एकमात्र दोष है (और वह यह) कि उसकी इच्छा परस्त्री में हुई और उसने जिनधर्म के उपदेश को नहीं माना । इस प्रकार करुण विलाप करते हुए विभीषण को मनाकर, राम के आदेश से विश्व को कँपाने वाले रावण को चार लोगों ने उठा लिया । चाहे गुणगण से श्रेष्ठ सुरेन्द्र ही क्यों न हो, परस्त्री के कारण सबको हलका होना पड़ता है । उसे स्वर्णमय विमान में रखा गया । उसके शव का शृंगाराचार किया गया । केले के खम्भे उठा लिए गए । सुख का नाश करने वाले मरघट-गृह का निर्माण प्रारम्भ हुआ । उसके ऊपर वर्ण विचित्र दुःखरूपी लता के

4. A णिय° । 5. AP केम मरणु । 6. P रामु ।

(25) 1. A विरइयाणिच्चपेसणा । 2. A जेहिं ण किउ; P जइ णहि किउ । 3. AP करुणु । 4. A हलुआरउ ।

धरियइं उप्परि वण्णविचित्तइं दुक्खवेल्लिपत्ताइं व छत्तइं ।
पविलंबियउ पडायउ दीहउ णावइ सोयमहातरुसाहउ ।
पसरिय चंदोवय णं खलयण[5] थिय बंधव काला णं णवधण ।
बाहसलिलधारहिं वरसंति व तूरइं दुहभिण्णाइं रसंति व ।

घत्ता—हउं कट्ठें घडियउ चम्में मढियउ परकरताडणु जं सहमि ।
णं[6] एउं सुजुत्तउं पडहें वुत्तउं तं दसासु महिवइ महमि ॥25॥

26

दुवई—एमहिं तेण मुक्कु किं[1] वज्जमि वज्जमि[2] परणरिंदहं ।
लक्खणरामचंदसुग्गीवहं णीलमहिंदकुंदहं ॥छ॥

रत्तउ णं विरहग्गें तत्तउ णं रुयंति वित्थारियवत्तउ ।
बहुयउ काहलाउ तुरुतुरियउ सद्दु मुयंति जीउ णं तुरियउ ।
भणइ व संखु अणाहु ण णीवमि परसासाऊरिउ[3] किं जीवमि ।
वंसु भणइ हउं काणणि पइसमि छिद्दवंतु मुइ सामि ण विरसमि ।
डज्झउ मद्दलु कूरें गज्जइ पहुमरणि व भोयणि णउ लज्जइ ।
कट्ठहं मज्झि णिवेसिउ उत्तमु परकलत्तहरणें णासिउ कमु ।

पत्तों के समान छत्र रख दिए गए। लम्बी पताकाएँ लटका दी गईं। जैसे वे लोकरूपी महावृक्ष की शाखाएँ हों। चंदोवा दुष्टजनों की तरह फैला दिया गया। बंधुजन इस प्रकार स्थित थे, मानो वाष्पजल (अश्रु) धाराओं से बरसते हुए काले नवघन हों। दुःख से आहत के समान तूर्य बज रहे थे।

घत्ता—काठ का बना तथा चमड़े से मढ़ा गया मैं जो दूसरों के हाथ का ताड़न सहता हूँ, यह ठीक नहीं है—मानो यह पटई ने कहा, मैं रावण महीपति की पूजा करता हूँ।

(26)

इस समय मैं उसके द्वारा छोड़ दिया गया हूँ, अब क्या बजूं ? मैं शत्रु-राजाओं लक्ष्मण, रामचन्द्र, सुग्रीव, नील, महेन्द्र और कुंद को छोड़ देता हूँ।

वह लाल था, मानो विरहाग्नि से संतप्त हो। मानो अपना मुंह फैलाकर रो रहा हो। बहुत से वाद्य तुरतुर छोड़ते हैं, मानो जल्दी-जल्दी अपने प्राण छोड़ रहे हों। शंख कहता है कि मैं अनाथ जीवित नहीं रहूँगा। दूसरे के प्रश्वासों से आपूरित होकर क्या जीवित रहूँ ? वंश (बाँसुरी) कहती है कि मैं कानन में प्रवेश करूँगी। छिद्रों सहित होते हुए भी, मैं स्वामी के मरने पर नहीं बजूँगी। मर्दन (मृदंग) में आग लगे, यह दुष्टता से गरजता है। स्वामी के मरने पर भी भोजन से लज्जित नहीं होता। उस श्रेष्ठ को लकड़ियों के बीच रख दिया गया। परस्त्री के हरण से उसका कुलद्रुम नष्ट हो गया। आग दे दी गई। ज्वालाओं से अग्नि टेढ़ी जाती है, मानो

5. A दुज्जण । 6. A तं एउ ण जुत्तउं ।
(26) 1. P किह । 2. P omits वज्जमि । 3. P °सासाऊरिय ।

दिण्णु हुयासु सिहालिउ चंकइ दससिरदेहु छिवहुं णं संकइ।
णं पवणें कड्ढिज्जइ लग्गउ पहुउप्परि चडंतु णं भग्गउ।

घत्ता—जो सीयासावें[4] णियमणकोवें दूसहविरहें जालियउ[5]॥
सो राउ हुयासें पेयपलासें जालकरग्गें[6] लालियउ॥26॥

27

दुवई—जाणिवि मुउ णरिदचूडामणि सव्वंगहिं समुग्गओ[1]॥
तहु सत्तच्चि सत्तधाऊहरु[2] झ त्ति धग त्ति लग्गओ॥छ॥

वइरिविहंडणु कालें लद्धउ तिहुयणकंटउ जलणें खद्धउ॥
तासु सरीरु तेण उवजीविउ तो[3] वि ण पोरिसेण जगु दीविउ।
जं जासु वि तं तासु जि छज्जइ करहचरणि किं णेउरु जुज्जइ।
ण्हाइवि सयणहिं दिण्णउं पाणिउं दुत्थिउ बंधुविंदु[4] संमाणिउ।
एत्थंतरि असोयवणि पइसिवि रामाएसें देवि पसंसिवि।
अंगंगयणलणीलविहीसहिं अंजणेयकिक्किधणरेसिहिं[5]।
पणविवि जणयवसुंधरिधीयहि केसवविजउ समासिउ सीयहि।
आणिय मिलिय[6] देवि बलहद्दहु अमरतरंगिणि णाइ समुद्दहु।
हेमसिद्धि णावइ रससिद्धहु केवलणाणरिद्धि णं बुद्धहु।

रावण के शरीर को छूने में सकुचाती है, मानो पवन के द्वारा वह खींची जाने लगी, मानो प्रभु (रावण) के ऊपर चढ़ती हुई नष्ट हो गयी।

घत्ता—सीता के शाप, अपने मन के कोप और असह्य विरह से जो जला दिया गया था वह राजा (रावण) प्रेत मांस खानेवाले अनल के द्वारा ज्वाला रूपी कराग्र से छू लिया गया।

(27)

यह जानकर कि नरेन्द्र-चूड़ामणि (रावण) मर चुका है, समस्त शरीर से निकलती हुई सात धातुओं का हरण करनेवाली आग उसे शीघ्र ही धक् करके लग गई।

शत्रुओं के विघटन करनेवाले को काल ने ले लिया। त्रिभुवन के कंटक को आग ने खा लिया। उसके शरीर को उसी ने आश्रय दिया, फिर भी पौरुष से विश्व आलोकित नहीं हुआ। जिसका जो है उसको वही शोभा देता है। ऊँट के पैर में क्या घुँघरू बाँधा जाता है? स्नान कर स्वजनों ने पानी दिया और दुःस्थित बंधुजनों को समाश्वस्त किया। इसी बीच अशोक वन में प्रवेश कर राम के आदेश से देवी की प्रशंसा कर अंग, अंगद, नल, नील, विभीषण, हनुमान् और सुग्रीव ने प्रणाम कर जनक और वसुंधरा की बेटी सीता को संक्षेप में राम की विजय को बताया और वे उसे ले आए। देवी बलभद्र से मिली जैसे गंगा नदी समुद्र से मिली हो, जैसे हेमसिद्धि रससिद्धि से मिली हो, केवलज्ञान सिद्धि मानो पंडित को मिली हो, परमार्थ को जानने वाले

4. A सीयासोएं। 5. AP तावियउ। 6. AP °करग्गहिं जालियउ; T लालिउ स्पृष्टः।

(27) 1. AP समग्गओ। 2. P °धाहुहरु। 3. A तो उण। 4. A बंधुवग्गु। 5. AP किक्किंध- पुरेसिहिं। 6. AP देवि मिलिय।

दिव्वबाणि जाणियपरमत्थहु[7] वरकइमइ णं पंडियसत्थहु ।
चित्तसुद्धि णं चारुमुणिदहु णं संपुण्णकंति छणयंदहु ।
णं वरमोक्खलच्छि[8] अरहंतहु बहुगुणसंपय णं गुणवंतहु ।

घत्ता—जं दिट्ठु समाहउ णियपइ राहउ तं सीयहि तणुकंचुइउ ।।
पुलएण विसट्टउ उद्ध जि फुट्टउ पिसुणु व सयखंडइं गयउ ।।27।।

28

दुवई—तोरणविविहदारपायारघरावलिसिहरसोहिए ।।
अरिवरपुरि पइट्ठ हरिहलहर धयमालापसाहिए ।।छ।।

मंदोयरि रुयंति साहारिवि इंदइ सोयविसंठुलु[1] धीरिवि[2] ।
बंधव सयण सयल हक्कारिवि णायरणरहं संक णीसारिवि ।
मंति महंतमंति संचारिवि विग्घकारि सयल[3] वि णीसारिवि ।
पढमजिणाहिसेउ णिव्वत्तिवि होम विविहदाणाइं वत्तिवि ।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि चिंतिवि समइ सव्वसामंत णियंतिवि ।
अवणिदविणपुरलोहु[4] विवज्जिवि गह बंभण णेमित्तिय पुज्जिवि ।

को दिव्यवाणी मिली हो, मानो पंडित समूह को श्रेष्ठ कविमति मिली हो। भव्य मुनियों को मानो चित्तशुद्धि मिली हो। मानो पूर्ण चन्द्र को सम्पूर्ण कान्ति मिली हो। मानो अरहंत को चरम मोक्ष लक्ष्मी मिली हो। मानो गुणवान् को बहुगुण संपत्ति मिली हो।

घत्ता—जब अपने पति राघव को लक्ष्मण के साथ देखा तो सीता की देह पर कंचुकी पुलक से विकसित होकर ऊपर-ऊपर फट गयी और दुष्ट की तरह सैंकड़ों खण्डों में विभक्त हो गयी।

(28)

जो तोरणों, विविध द्वारों, प्राकारों और गृहावलियों की शिखरों से शोभित है, ध्वजमालाओं से प्रसारित ऐसी लंकानगरी में राम और लक्ष्मण ने प्रवेश किया।

रोती हुई मंदोदरी को ढाढस बँधाकर शोक से अस्त-व्यस्त इन्द्रजीत को धीरज देकर, समस्त स्वजनों और बांधवों को बुलाकर, नागर-नरों की शंका दूर कर, छोटे-बड़े मंत्रियों से मंत्रणा कर, समस्त विघ्न करनेवालों को निकाल बाहर कर, सबसे पहिले जिनेन्द्र का अभिषेक कर, होम और विविध दानों का संपादन कर, शत्रु और मित्र में मध्यस्थता के भाव का विचार कर, समस्त सामन्तों को अपने मत में नियन्त्रित कर, धरती, वन और पुर लोक को छोड़कर, ग्रह, ब्राह्मणों और नैमित्तिकों की पूजा कर, प्रवर पुरुषों के परिहास की इच्छा कर, धर्म का पालन

7. AP णं जगपरम°। 8. A णं तिल्लोक्कलच्छि।
(28) 1. P मोयविसंठुलु। 2. AP वारिवि। 3. AP विग्घकारि णीसेस णिवारिवि। 4. A अवणि दविणु पुरलोहु; अवणिदविणपरलोहु।

पवरपुरिसपरिहास समीहिवि पालिवि धम्मु अधम्महु बीहिवि ।
लोयदिण्णहियइच्छियकामें रामारामें[5] राएं रामें ।

घत्ता—पविमगलियंभहिं कंचणकुंभहिं ण्हाणिवि[6] पट्टबंधु विहिउ ।।
रणि मारिवि रावणु भुवणभयावणु रज्जि विहीसणु संणिहिउ ।।28।।

29

दुवई—इय को करइ भिडइ[1] वि भडगोंदलि भुवणंगणमरावणं ।।
छज्जइ एम कासु णिव्वहइ वि सुहिपडिवण्णपालणं ।।छ।।

एह रूढि एहउं गरुयत्तणु मेल्लिवि पउमु कासु सुयणत्तणु ।
कोसु देसु सो तं पुरु परियणु तं पणियंगणकुलु पीवरथणु ।
ताइं आयवत्तइं वाइत्तइं जाणइं जंपाणइं सुविचित्तइं ।
ताइं वणाइं अमरतरुगंधइं ताइं जि जाउहाणनृवचिंधइं[2] ।
ते असिकर दुक्करकर किंकर ते हयवर ते गयवर रहवर ।
लंकादीउ तं जि सो जलणिहि ते चामीयरभरिय महाणिहि ।
णिहिलइं हियवइ तणु व वियप्पिवि दहमुहाणुजायहु जि समप्पिवि ।
मेइणिसाहणि तिजगजयाणउं लक्खणरामहिं दिण्णु पयाणउं ।

कर, अधर्म से डरकर, जिन्होंने लोकहित और दीनहित के अनुकूल काम किया है, तथा स्त्रियों के लिए रमणीय राजा राम ने,

घत्ता—जिनसे पवित्र जल गिर रहा है, ऐसे स्वर्ण-कलशों से स्नान कराकर, पट्ट बांध दिया। युद्ध में भुवन-भयंकर रावण को मारकर राज्य पर विभीषण को प्रतिष्ठित कर दिया।

(29)

ऐसा और कौन है जो योद्धाओं के कोलाहल में लड़ता है और विश्व के प्रांगण को रावण रहित करता है ! ऐसा और किसे शोभा देता है जो सज्जनों को दिए गए वचन का प्रतिपालन करता है ! यह प्रसिद्धि, यह गुरुता और सुजनता राम को छोड़कर और किसके पास है ? वह कोष, देश, वह परिजन और पुर, स्थूल स्तनोंवाला वह वैश्याकुल, वे आतपत्र और बाजें, सुविचित्र यान और जंपान, कल्पवृक्षों से सुगंधित वन और राक्षसकुल के वे नृपचिह्न, तलवार हाथ में लिये हुए कठोरकर वे अनुचर, वे अश्ववर, गजवर और रथवर, वही लंकाद्वीप और वही समुद्र, स्वर्णों से भरी हुई वे महानिधियाँ, इन सबको अपने मन में तृण के समान समझकर तथा दशमुख के छोटे भाई को देकर धरती की सिद्धि के लिए राम और लक्ष्मण ने तीनों लोकों को जीतने वाला प्रस्थान किया।

5. पुरि पइसेप्पिणु लक्खणरामें । 6. P ण्हाविवि ।
(29) 1. AP भिडेवि भड° । 2. AP °णिव° ।

घत्ता—ते रामजणद्दण दणुयविमद्दण परिभमंति भुवणयलइ ॥
आवाहियचलरह णावइ सभरह पुप्फयंत गयणयलइ ॥29॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रावणणिहणणं[3] विहीसण-
पट्टबंधो[4] णाम अट्ठहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥78॥

---

घत्ता—राक्षसों का दलन करनेवाले वे राम और लक्ष्मण भुवनतल में परिभ्रमण करते हैं, जिन्होंने चंचल रथों को हाँका है ऐसे—मानो सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों सहित, आकाशतल में चल रहे हों।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का रावण-निधन एवं विभीषण-
पट्टबंध नाम का अठहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

3. A °णिग्गहणं। 4. AP °पट्टबंधणं।

## एक्कूणासीमोसंधि

णिहणिवि भीमु रणि दुज्जउ रावणु मयमत्तउ ।।
महि हिंडंतु पहु पीढइरि[1] रामु संपत्तउ ।।ध्रुवकं।।

1

गिरि सोहइ हरिणा भउ जणंतु पहु सोहइ हरिणा महि जिणंतु ।
गिरि सोहइ मत्तमऊरणाउ पहु सोहइ णायमऊरणाउ ।
गिरि सोहइ वरवणवारणेहिं पहु सोहइ वारिणिवारणेहिं ।
गिरि सोहइ उड्डियवाणरेहिं[2] पहु सोहइ खगधयवाणरेहिं ।
गिरि सोहइ णवबाणासणेहिं पहु सोहइ भडबाणासणेहिं ।
तहिं[3] पुव्वकोडिसिल दिट्ठ तेहिं पुज्जिय वंदिय हरिहलहरेहिं[4] ।
मंतिहिं पउत्तु भो[5] धम्मरासि उद्धरिय तिविट्ठें एह आसि ।
एवहिं जइ लक्खणु भुयहिं धरइ तो देव तिखंडधरत्ति हरइ ।

---

## उन्यासीवीं संधि

युद्ध में भयंकर दुर्जेय और मदमत्त रावण का वध कर, धरती पर भ्रमण करते हुए प्रभु राम पीठगिरि पर पहुँचे ।

(1)

गिरि सिंह से भय उत्पन्न करता हुआ शोभित है, राम हरि (लक्ष्मण) के द्वारा धरती जीतते हुए शोभित हैं । गिरि मयूर और नागों से शोभित है, प्रभु (राम) किन्नरों की सुख्यात हृदयध्वनि से शोभित हैं । गिरि उत्तम वनगजों से शोभित है, प्रभु छत्रों (वारि निवारणों) से शोभित हैं । गिरि उछलते हुए वानरों से शोभित है, प्रभु विद्याधरों तथा वानरध्वजों से शोभित हैं । गिरि बाण और आसन वृक्षों से शोभित है, प्रभु (राम) योद्धाओं और धनुषों से शोभित हैं । वहाँ उन्होंने एक पूर्वकोटि शिला को देखा । राम और लक्ष्मण ने उसकी वंदना और पूजा की । मंत्रियों ने कहा—हे धर्मराशि, यह शिला त्रिपृष्ठ के द्वारा उठाई गई थी । यदि लक्ष्मण इसे अपनी भुजाओं से उठाता है, तो हे देव, यह तीन खण्ड धरती का हरण करने

---

(1) P पीयलइरि । 2. A उट्ठिय° । 3. AP सिलकोडिपुव्व तहिं दिट्ठुतेहिं । 4. P omits हरि° । 5. A णं धम्मरासि ।

तं णिसुणिवि पभणइ रामु एव    अज्जु वि तुम्हहं मणि भंति केव।
जांव वि रणि णिद्दलियउ दसासु    जाव[6] वि सिरि दिण्ण विहीसणासु।
तांव वि तुम्हहं संदेहबुद्धि    लइ किज्जइ सव्वहं हिययसुद्धि।

घत्ता—जो अतुलइं तुलइ बलवंत वि रिउ विणिवायइ ॥
सो हरि कुलधवलु सिल एह किं ण उच्चायइ ॥1॥

2

दढकढिणथोरदीहरकरासु    दहवयणवालिजीवियहरासु।
विहसिवि रामें[1] लच्छीहरासु    आएसु दिण्णु णियबंधवासु।
ता भाइवयणतोसियमणेण    उच्चाइय सिल लहु लक्खणेण।
पविउलभुयचालिय णं धरित्ति[2]    णावइ तिखंडमहिरायवित्ति।
णं रामहु केरी विमल कित्ति    णं णिरु असज्झसाहणसमित्ति[3]।
दीसंति लोयणयणहं सुहाइ    भद्दियभुयदंडुद्धरिउ णाइ।
उप्परि सीरिहि कसणायवत्तु    णं जयजसवेल्लिहि[4] तणउं पत्तु।
सोहइ सिलग्गु कण्हेण धरिउं    बहुपोमरायकरजालफुरिउं।
उययम्मि अरुणकिरणोहतंबु    उययाचलभाणुहि णाइ बिंबु।
वीरेंहि वि मुक्कउ सीहणाउ    सउणंदउ णामें जक्खु आउ।

वाला होगा। यह सुनकर राम इस प्रकार कहते हैं—क्या आज भी आप लोगों के मन में भ्रान्ति है! जब उसने युद्ध में रावण का निर्दलन किया, जबकि विभीषण को लक्ष्मी प्रदान की गई, तब भी तुम लोगों में सन्देह बुद्धि है! लो आप लोग अपने मन की शुद्धि कर लें।

घत्ता—जो अतुलों को तौल लेता है, जो बलवान् शत्रु को भी मार गिराता है ऐसा वह श्रेष्ठ नारायण लक्ष्मण क्या यह शिला नहीं उठा सकता? ॥1॥

(2)

दृढ, कठिन, स्थूल और दीर्घ हाथोंवाले, रावण और बालि के जीवन का अपहरण करनेवाले, लक्ष्मी को धारण करनेवाले अपने भाई लक्ष्मण को राम ने आदेश दिया। तब अपने भाई के वचन से संतुष्ट मन होकर लक्ष्मण ने उस शिला को उठा लिया, मानो वह विशाल भुजाओं से चालित धरती हो, मानो त्रिखण्ड महीराज की वृत्ति हो, मानो राम की विमलकीर्ति हो, मानो अत्यन्त असाध्य साधन का परमोत्कर्ष हो। लोगों के नेत्रों को ऐसी दिखाई देती थी जैसे विष्णु द्वारा बाहुदण्ड से उद्धृत, बलभद्र के ऊपर कृष्ण-आतपत्र (छत्र) शोभित हो। मानो जय और यश रूपी लता का पत्र हो। अनेक पद्मराग मणियों के किरणजाल से स्फुरित लक्ष्मण के द्वारा उठाया गया शिलाग्र ऐसा शोभित होता था, मानो उदयाचल के सूर्य का अरुण-किरण-समूह से आरक्त बिम्ब हो। वहाँ वीरों ने सिंहनाद किया, वहाँ सौनन्द नाम का यक्ष आया। उसने चक्रवर्ती के

6. AP पुणरवि सिरि।
(2) 1. A रामु। 2. P धरत्ति। 3. AP समित्ति। 4. A जसजय°। 5. AP बालजडिउ।

चक्किहि पय वंदिवि वइरितासि तें दिण्णु तासु सउणंदयासि ।

घत्ता—लक्खणकयथुइहिं णरदेवहिं कण्हु पउत्तउ ॥
सजलहेमघडहं अट्ठुत्तरसहसें सित्तउ ॥2॥

3

संचलिउ राउ[1] अरितिमिरभाणु अणुगंग[2] पुणु वि दिण्णउं पयाणु ।
कल्लोललुलियझससुंसुमारु[3] दियहेहिं पत्तु सुरसरिदुवारु ।
हयगयवरखंधाइण्णजोहु[4] थिउ काणणि[5] बलु[6] दूसोहसोहु ।
हरिणा रहु वाहिउ जलहिणीरि पायालमूलपूरणगहीरि ।
धणुगुणविमुक्कु सरु सुद्धिवंतु संप्रायउ[7] मागहु पय णवंतु ।
तें देवहु दाणवमद्दणासु दिण्णउ अहिसेउ जणद्दणासु ।
कुंडलजुयलउं मणिकिरणणीडु ससिकंतु हारु मणहरु किरीडु ।
तहिं होंतउ गउ अणुजलहितीरु साहिउ वरतणु पणवियसरीरु ।
केऊरमउडकंकणपवित्तु चूडामणिकंठाहरणजुत्तु ।
तहिं लहिवि विणिग्गउ गउ तुरंतु सिंधुहि पइसरिवि पहासु जित्तु ।
संताणमाल सेयायवत्तु मुत्ताहलदामु मलोहचत्तु ।
पालेप्पिणु[8] पुणु परियलियगव्व[9] साहिय वरुणासामेच्छ सव्व ।

चरणों की वन्दना कर, उसे शत्रुओं को त्रस्त करनेवाली सौनन्दक नाम की तलवार दी ।

घत्ता—जिन्होंने लक्ष्मण की स्तुति की है ऐसे लोगों ने उसे नारायण कहा और एकसौ आठ सजल स्वर्णकलशों से उसका अभिषेक किया ॥2॥

(3)

शत्रु रूपी अंधकार के लिए सूर्य वह राजा चला। उसने गंगा के किनारे-किनारे प्रस्थान किया। कुछ ही दिनों में वह, जिसकी लहरों में मत्स्य और शिशुमार उछल रहे हैं ऐसी गंगानदी के द्वार पर पहुँचा। जहाँ योद्धा हाथियों और घोड़ों के कंधों से उतर गये हैं, ऐसा तम्बुओं से शोभित सैन्य कानन में ठहर गया। लक्ष्मण ने पाताललोक तक सम्पूर्ण रूप से गम्भीर समुद्र के जल में रथ को और धनुष की डोरी से मुक्त शुद्धिवंत तीर को चलाया। मागध पैर पड़ता हुआ आया। उसने दानवों का नाश करनेवाले देव जनार्दन का अभिषेक किया और कुण्डलयुगल मणि किरणों का घर चन्द्रकान्त हार तथा सुन्दर मुकुट दिया। वहाँ से होता हुआ वह समुद्र के किनारे गया, और प्रणतशरीर वरतनु को सिद्ध किया। केयूर मुकुट तथा कंकणों से पवित्र एवं कण्ठाभरण युक्त चूड़ामणि लेकर वह शीघ्र निकला और प्रस्थान कर दिया। सिंधुनदी में प्रवेशकर प्रभास-तीर्थ को जीता। संत्राणमाला, श्वेत आतपत्र, मलसमूह से रहित मुक्तामाला को प्राप्त कर, पश्चिम दिशा के परिगलित-गर्व समस्त म्लेच्छों को सिद्ध कर लिया।

(3) 1. P रामु । 2. AP अणुमग्गें । 3. P °सुसुभारु । 4. AP °गयरहखंधा° । 5. AP उववणि । 6. बलदूसोह° । 7. AP संपाइउ । 8. AP पावेप्पिणु गउ । 9. A परिगलिय° ।

घत्ता—गउ वेयड्ढगिरि खगसेढिउ बे वि जिणेप्पिणु ॥
हयमायंगवरखेयरकण्णाउ लएप्पिणु ॥3॥

4

पुणु वसिकिउ सुरदिसि मेच्छखंडु    महिमंडलि हिंडिवि रायदंडु[1] ।
गय जइयहुं दोचालीस वरिस    तइयहुं हरि हलहर दिव्वपुरिस ।
साहिवि तिखंडमेइणि दुगिज्झ    जयजयसद्दें ण पइट्ठ उज्झ ।
हरिवीढि णिवेसिवि वरजलेहिं    हयतूरहिं गाइयमंगलेहिं ।
मंडलियहिं णं मेहहिं गिरिंद    अहिसित्त रामलक्खणणरिंद ।
जहिं[2] दिव्वइं सत्थइं संचरंति    तहिं अवसें रणि अरिवर मरंति ।
जहिं देव वि घरि पेसणु करंति    तहिं अवसें णर भयथरहरंति[3] ।
को वण्णइ हरिबलएवरिद्धि    वाएसिइ दिण्णी कासु सिद्धि ।
जं विजयतिविट्ठहं तणउ पुण्णु    तं एयहं[4] दोहिं मि समवइण्णु ।
हो पूरइ वण्णवि काइं एत्थु    किं तुच्छबुद्धि जंपमि णिरत्थु ।

घत्ता—सेविय गोमिणिइ रइलोहइ कीलणसीलइ ॥
रज्जु करंत थिय ते बे वि पुरंदरलीलइ ॥4॥

---

घत्ता—वह विजयार्धगिरि गया और उसकी दोनों श्रेणियों को जीतकर; अश्व, गज और उत्तम विद्याधर कन्याओं को लेकर ॥3॥

(4)

फिर उसने पूर्व दिशा के म्लेच्छ खण्ड को वश में किया। भूमिमण्डल में राजदण्ड घुमाकर जब बयालीस वर्ष बीत गए तब राम और लक्ष्मण दोनों महापुरुषों ने दुर्ग्राह्य तीन खण्ड धरती को जीतकर जय-जय शब्द के साथ अयोध्या नगरी में प्रवेश किया। सिंहासन पर बैठाकर, राम लक्ष्मण राजाओं का उत्तमजलों, आहत तूर्यों, गाये गए मंगलों के द्वारा इस प्रकार अभिषेक किया गया, मानो मण्डलित मेघों के द्वारा गिरीन्द्र का अभिषेक किया गया हो। जहाँ दिव्य शस्त्रों का संचार होता है वहाँ युद्ध में अवश्य शत्रुप्रवर मरते हैं। जहाँ देव गण घर में सेवा करते हैं, वहाँ अवश्य मनुष्य भय से थरथर काँपते हैं। बलभद्र और नारायण की ऋद्धि का वर्णन कौन कर सकता है? वागेश्वरी द्वारा दी गई सिद्धि किसके पास है? जो पुण्य विजय और त्रिपृष्ठ का था, वही पुण्य इन दोनों को प्राप्त हुआ था। वर्णन करने से वह क्या यहाँ पूरा होता है? मैं तुच्छबुद्धि व्यर्थ क्यों कथन करता हूँ!

घत्ता—रति की लोभी क्रीड़ाशील लक्ष्मी के द्वारा सेवित वे दोनों इन्द्र की लीला से राज्य करते हुए रहने लगे।

---

(4) 1. P रायचंडु । 2. A reads *a* as *b* and *b* as *a* in this line । 3. A भय थर°; P भड थर° 4. P एयहं ।

5

सुमणोहरणामि सयावसंति[1] अण्णहिं दिणि णंदणवणवणंति ।
सिरिसिरिहररामणराहिवेहिं सिवगुत्तु जिणेसरु दिट्ठु तेहिं ।
वंदेप्पिणु पुच्छिउ परमधम्मु जिणु कहइ उयारवियारगम्मु[2] ।
मिच्छत्तासंजम चउकसाय छंडंतहं सुहु रायाहिराय ।
एयहिं ओहट्टइ णाणतेउ ए दुस्सहदुद्दमबंधहेउ ।
बंधेण कम्मु कम्मेण जम्मु जम्मेण दुक्खु सोक्खु वि सुरम्मु ।
इंदियसोक्खें पुणु पुणु विसालु संपज्जइ जीवहु मोहजालु ।
मोहें मुज्झइ संसारि भमइ अण्णण्णहिं देहहिं देहि रमइ ।
णारयतिरिक्खदेवत्तणेहिं [3]बहुभेयभिण्णमणुयत्तणेहिं ।
संसरइ मरइ णउ लहइ बोहि ण कयाइ वि पावइ जिणसमाहि ।
सम्मत्तु ण गेण्हइ मंदमूढु लोइयवेइयसमएहिं छूढु[4] ।
आसंककंखविदिगिंछवंतु जडु मिच्छादिट्ठि पसंस देंतु ।

घत्ता—चंगउ परिहरइ जं णिंदणिज्जु तहिं भत्तउ ॥
राहव जीवगणु जगि पउरु विहुरु संपत्तउ ॥5॥

---

(5)

दूसरे दिन, जिसमें सदा वसंत रहता है ऐसे मनोहर नामक नंदन वन के भीतर उन श्रीविष्णु और श्रीराम (लक्ष्मण और राम) ने शिवगुप्त नामक जिनेश्वर के दर्शन किए। उनकी वन्दना कर उन्होंने परमधर्म पूछा। उदारविचारों से गम्य जिनेश्वर कहते हैं—राजाधिराज ! मिथ्यात्व, असंयम और चार कषायों को छोड़नेवालों को सुख होता है। इनसे ज्ञान का तेज कम होता है। ये असह्य और दुर्दम बन्ध के कारण हैं। बन्ध से कर्म होता है, कर्म से जन्म होता है, जन्म से सुरम्य सुख और दुःख होता है। इन्द्रियसुख से फिर-फिर, जीव को विशाल मोहजाल पैदा होता है। मोह से मूर्च्छा को प्राप्त होकर संसार में परिभ्रमण करता है। और फिर शरीरधारी अन्य-अन्य शरीरों से रमण करता है। नरक, तिर्यंच और देवत्व के अनेक भेदों से भिन्न मनुष्य शरीरों में संसरण करता है, मरता है। न तो ज्ञान प्राप्त करता और न कभी समाधि को पाता। मन्द-मूर्ख सम्यकत्व ग्रहण नहीं करता। वह लौकिक और वैदिक मतों से व्याप्त रहता है। आशंका, आकांक्षा और घृणा से युक्त जड़ मिथ्यादृष्टि की प्रशंसा करता हुआ,

घत्ता—जो भला है उसे छोड़ता है और जो निंदनीय है उसका भक्त बनता है। हे राघव, जीवसमूह जग में प्रचुर दुःख को प्राप्त होता है ॥5॥

---

(5) 1. A सयवसंति । 2. P ओयार° । 3. A बहुभेय° । 4. AP मूढु ।

**6**

अणुदिणु परिणामहु जाइ लोउ खणि आणंदिउ खणि करइ सोउ ।
खणि खणि अण्णत्तहु[1] जाइ केव सिहिगहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव ।
उप्पत्तिवित्तिपलएहिं गत्थु पेच्छहि अप्पउ पोग्गलपयत्थु ।
पज्जाउ जाइ दव्वु जि पयासु घड मउड[2] सुवण्णहु णत्थि णासु ।
जं रुच्चइ तं तहिं होउ बप्प णिज्जीवणिरण्णइ[3] कहिं वियप्प ।
जो मणुयलोइ सो णत्थि सग्गि जो सग्गि ण सो पायालमग्गि ।
जो घरि सो किं णीसेसणामि[4] जो गामि ण सो आरामथामि[5] ।
एवत्थिणत्थिणिव्वूढसच्चु अरहंतें साहिउ परमतच्चु ।
जइ जगि सव्वत्थ वि सव्वु अत्थि तो किं गयणंगणि कुसुमु णत्थि ।
जइ एक्कु[6] जि सयलु जि जगु णियाणि तो को णारउ को सुरविमाणि ।
को खंडिउ को वरइत्तु थक्कु सामण्णु अमरु को[7] कवणु सक्कु ।

घत्ता—जइ खणि खणि जि खउ सइंबुद्धें जीवहु दिट्ठउ ॥
ता चिरु महिणिहिउ वसुसंचउ केण गविट्ठउ ॥6॥

---

(6)

प्रतिदिन लोक परिणमन को प्राप्त होता है, क्षण में आनन्दित होता है और क्षण में शोक को प्राप्त होता है। क्षण-क्षण में वह अन्यत्व को उसी प्रकार प्राप्त होता है जिस प्रकार आग से जलता हुआ तेल अग्नित्व को प्राप्त होता है। उत्पत्ति, वृत्ति (ध्रुवत्व) और प्रलय के द्वारा ग्रस्त जीव अपने को (पुद्गल) पदार्थ समझता है। पर्याय होती है और स्पष्ट ही द्रव्य है। घट और मुकुट में मिट्टी और स्वर्ण का नाश नहीं होता। जहाँ जो रुचता है वहाँ बेचारा वही होता है: निर्जीव और निरन्वय (जीवन रहित, अन्वय रहित) में विकल्प कहाँ? जो मनुष्यलोक में है, वह स्वर्गलोक में नहीं है, और जो स्वर्गलोक में है, वह नरकलोक में नहीं है। जो घर में है, क्या वह सर्वपदार्थों में है? जो ग्राम में है, वह आराम स्थान में नहीं है। इस प्रकार जिसमें अस्ति नास्ति के द्वारा सत्य प्रतिपादित है, ऐसा परमतत्त्व अरहंत के द्वारा कहा गया है। यदि जग में सर्वार्थ भी सब है, तो आकाश के आँगन में कुसुम क्यों नहीं होता? यदि अन्तिम समय, समस्त विश्व एक है, तो कौन नारकीय है और कौन सुरविमान में? कौन खण्डित है और कौन पूर्ण? सामान्य देव कौन और इन्द्र कौन?

घत्ता—यदि स्वयंबुद्ध द्वारा जीव का क्षण-क्षण में क्षय देखा जाता है तो प्राचीनकाल में धरती में रखे गए धनसंचय की खोज किसने की?

---

(6) 1. AP अण्णण्णहु । 2. A मउडि । 3. AP °णिण्णय । 4. AP णीसेसगामि । 5. AP आरामि । 6. AP एक्कु वि सयलु वि । 7. AP सो ।

7

जइ जाणइ सो किर वासणाइ तो ताइ केम्व खणधंसणाइ।
जइ इंदजालु तिहुयणु असेसु तो किं किर चीवरधरणवेसु।
सिविणोवमु जइ णीसेसु सुण्णु तो गुरु ण सीसु णउ[1] पाउ पुण्णु।
जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु सिवु णिक्कलु णिप्परिणामवंतु।
सयलु वि संसारिउ गोरिकंतु णच्चइ गायइ तो[2] किं महंतु।
जो आहवि वइरिहिं मलइ माणु धणुगुणि संधिवि अग्गेयबाणु[3]।
पुरु[4] विद्धउ जेण रइवि ठाणु किं तासु वयणु होसइ पमाणु।
विणु वत्तारें सिद्धंतु केत्थु सिद्धंतें विणु किह मुणइ वत्थु।
अप्पउं अंबरि[5] संजोयमाणु कउलु वि भावइ महु मुक्कणाणु।
णिच्चेयणि सुसिरि सिवत्तु थवइ पसुमासु खाइ महु सीहु[6] पिबइ।
परु मोहइ सइं तमणियरभरिउ इंदियवसु णिंदियसाहुचरिउ।
णिवडइ[7] रउद्दि घणि घणि तमंधि णारयहणहणरवि णरयरंधि।

घत्ता—झायहि जिणधवलु अण्णेण ण दुक्किउ जिप्पइ॥
करयलकंतिहरु पंकेण पंकु किं[8] धुप्पइ॥7॥

(7)

यदि वह वासना (सूक्ष्म संस्कार) से उसे जानता है तो क्षण में ध्वंस को प्राप्त होनेवाली उससे यह कैसे संभव? यदि समस्त त्रिभुवन इन्द्रजाल है तो फिर चीवर धारण करनेवाले वेष से क्या? यदि निःशेष वस्तु स्वप्नतुल्य और शून्य है तो न गुरु है और न शिष्य है, और न पाप-पुण्य है। जिनवचनों के विपरीतजनों का ऐसा अपना ही कथन यम के समान है कि शिव निष्फल और परिणाम रहित है। यदि समस्त संसार गौरीकांत (शिव) मय है तो वह महान् नाचता और गाता क्यों है? जो युद्ध में शत्रुओं का मानमर्दन करता है, धनुष की डोरी पर आग्नेय बाण का संधान करता है, जिसने स्थान की रचना करने के लिए पुर का विनाश किया, क्या उसका वचन प्रामाणिक हो सकता है? वक्ता के बिना सिद्धान्त कैसा? सिद्धान्त के बिना वस्तु का विचार कैसा? स्वयं को आकाश में संयुक्त करता हुआ कौल (अभेदवादी वेदान्ती) भी मुझे ज्ञान से रहित दिखाई देता है। अचेतन आकाश में वह शिव की स्थापना करता है, वह पशुमांस खाता है, मधु और सुरा का पान करता है। दूसरों को मुग्ध करता है, स्वयं अज्ञान-अन्धकार से भरा हुआ है। इन्द्रियों के वशीभूत है, और साधुओं के चरित की निंदा करनेवाला है। वह भयंकर तमान्ध सघन रौद्र नरक में गिरता है, जिसमें नारकियों का 'मारो-मारो' शब्द हो रहा है, ऐसे नरकबिल में।

घत्ता—इसलिए तुम जिनवर का ध्यान करो। दूसरे के द्वारा पाप नहीं जीता जा सकता, करतल की कान्ति का अपहरण करनेवाला पंक, क्या पंक से ही धुल सकता है? ॥7॥

(7) 1. A णो पाउ। 2. A किं सो महंतु; P किं तो महंतु। 3. A अग्गेउ बाणु। 4. P पुरउ विद्धउ। 5. A अंतरि। 6. A मज्जु। 7. A घणघणरउद्दि णिवडइ तमंधि। 8. AP किह धुप्पइ।

8

जइ काउ सरंतहं जाइ गरलु[1] तइ पावेण जि जणु होइ विमलु।
जो सेवइ गुरु पाविट्ठु दुट्ठु देउ वि णिट्ठुरु दट्ठोट्ठु[2] रुट्ठु।
सो सइं जि पाव पावहु जि सरणु पइसउ ण लहइ संसारतरणु।
सो[3] गुरु जो मित्तु व गणइ सत्तु सो गुरु जो मायाभावचत्तु।
सो गुरु जो मुक्काहरणवत्थु सो गुरु जो महिमागुणमहत्थु[4]।
सो गुरु जो तिणु[5] कंचणु समाणु सो गुरु जो णिरहुप्पण्णणाणु।
णिच्चलखमदमसंजमसमेण गुरुरयणु भणिउ एएं कमेण।
दूरुज्झियदुज्जयरायरोसु अरहंतु देउ परिहरियदोसु।
तहु धम्मु अहिंसालक्खणिल्लु मयमारउ विप्पु वि होइ भिल्लु।
अहवा सो भण्णइ सूणयारु जण्णें कहिं लब्भइ सग्गदारु।

घत्ता—मेल्लिवि विसयविसु जिणभावें हियवउ भावह॥
पालिवि जीवदय सग्गापवग्गसुहु पावह॥8॥

9

तं णिसुणिवि परिरक्खियमयाइं धरियइं[1] रामें सावयवयाइं।
सम्मद्दंसणविप्फुरियएहिं अवरेहिं मि भव्वपुंडरियएहिं।

(8)

यदि कौए का स्मरण करने से पाप जाता है, तो पाप से भी मनुष्य पवित्र हो जाय। जो (व्यक्ति) पापिष्ठ और दुष्ट गुरु की सेवा करता है, तथा निष्ठुर ओठों को चबानेवाले रुष्ट देव की सेवा करता है वह स्वयं पापी है, और पापी की शरण में पहुँचा हुआ संसार से तरण नहीं पा सकता। गुरु वह है जो मित्र और शत्रु को नहीं गिनता (भेद नहीं करता)। गुरु वह है जो माया भाव से रहित है। गुरु वह है जो आभरण वस्तुओं से मुक्त है। गुरु वह है, जो महिमा और गुण में महान् हो। गुरु वह है, जो तृण और स्वर्ण में समान है, जिसका ज्ञान अपाप से उत्पन्न हुआ है। निश्चल, क्षमा, दम, संयम और शम के इसी क्रम से मैंने गुरुरत्न कहा। जिन्होंने दुर्जेय राग द्वेष को दूर से छोड़ दिया है और जो दोषों से रहित हैं, उनका धर्म अहिंसा लक्षणवाला है। पशुओं को मारनेवाला विप्र भील होता है अथवा वह हत्यारा (कसाई) कहा जाता है। यज्ञ से कहीं स्वर्गद्वार मिलता है?

घत्ता—विषय रूपी विष को छोड़कर, जिनभाव से आत्मा का ध्यान करो। जीवदया का पालन कर स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का सुख प्राप्त करो।

(9)

यह सुनकर राम ने, जिसमें पशुओं की रक्षा की गई है ऐसा श्रावकव्रत स्वीकार कर लिया। सम्यग्दर्शन से विस्फुरित दूसरे भव्य श्रेष्ठजनों ने भी श्रावकव्रत ग्रहण किए। लक्ष्मण का हृदय

(8) 1. A गरलु। 2. A दुट्ठुट्ठु। 3. A omits this foot. 4. AP गुणमहिमामहंतु। 5. A तणकंचणसमाणु।

(9) 1. P सरियइं।

लक्खणहियवउं दुणियाणसहिउं तेण जि व्रउ[2] तेण ण किं पि गहिउं।
दसरहि[3] मुइ णिहिय णिरूढसयरि सत्तुहण भरह साकेयणयरि।
गय भायर वाणारसि[4] तुरंत थिय रज्जु करंत हली अणंत।
रामें सुउ जायउ विजयरामु सीयहि रूवें णं देउ कामु।
अहिमाणणाणविण्णाणजुत्त अवर वि संजाया[5] सत्त पुत्त।
गोविंदहु णंदणु पुहइचंदु पुहइहि हूयउ पुहईसवंदु।
अण्ण वि णं मत्तमहागइंद सुय संभूया जियरिउणरिंद।
गुणगणरंजियभुवणत्तएहिं परिवारिय पुत्तपउत्तएहिं।
घत्ता—थिय भुजंत महि गउ[6] कालु अकलियपरिवत्तउ[7]॥
एक्कहिं णिसिसमइ हरि फणिसयणि[8] पसुत्तउ॥9॥

10

पेच्छइ सिविणंतरि पयहिं मलिउ णग्गोहु दंतिदंतग्गदलिउ।
कवलेवि[1] विडप्पें तिमिरजूरु कड्ढिवि पायालि णिहित्तु सूरु।
पासायसिहरणिवडणु[2] णियंतु उट्ठिउ महिवइ अंगइं धुणंतु।
अक्खिउ दुद्दंसणु भायरासु ता भणइ पुरोहिउ ढुक्कु णासु।
जिह वडतरुवरु चूरिउ गएण तिह सिरिवइ भंजेव्वउ गएण[3]।

खोटे निदान से युक्त था। इस कारण उसने कोई व्रत नहीं लिया। दशरथ के मरने पर, जिसमें राजा सगर प्रसिद्ध था, ऐसे साकेतनगर में शत्रुघ्न और भरत को स्थापित कर दिया गया। तब दोनों भाई तुरन्त वाराणसी चले गए। राम और लक्ष्मण वहाँ राज्य करते हुए रहने लगे। सीता से राम के विजयराम नाम का पुत्र हुआ, जो रूप में कामदेव था। गौरव, ज्ञान और विज्ञान से युक्त और भी उनके सात पुत्र हुए। रानी पृथ्वी से लक्ष्मण के पृथ्वीचन्द्र पुत्र हुआ जो पृथ्वी में और राजाओं में श्रेष्ठ था। उसके और भी पुत्र उत्पन्न हुए, शत्रु राजाओं को जीतनेवाले जो मानो मतवाले महागज थे। इस प्रकार अपने गुणों से भुवनत्रय को रंजित करनेवाले पुत्र और प्रपौत्रों से घिरे हुए—

घत्ता—धरती का उपभोग करने लगे। उनका अगणित समय बीत गया। एक रात्रि के के समय लक्ष्मण नागशय्या पर सोए हुए थे।

(10)

स्वप्न में वह देखते हैं कि वटवृक्ष हाथी के दाँतों के अग्रभाग से दलित और पैरों से कुचला गया है। राहु ने चन्द्रमा को निगल कर और सूर्य को खींचकर पाताललोक में डाल दिया है। इस प्रकार राजा प्रासाद के शिखर का पतन देखता हुआ और अपने अंगों को पीटता हुआ उठा। उसने वह दुःस्वप्न और भाईयों को बताया। उस समय पुरोहित कहता है—नाश आ पहुँचा है। जिस प्रकार गज के द्वारा वटवृक्ष नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, उसी प्रकार लक्ष्मण रोग से मारे

2 AP वउ। 3. A दसरहसुयविहिय°। 4. AP बाराणसि। 5. P अवर वि जाया तहु सत्त पुत्त। 6. P. गयउ। 7. A अहियपरिचत्तउ। 8. A फणिसयणयलि; P मणिसयणि।

(10) 1. A कवलियउ। 2. P °णियडणु। 3. A वमेण; P मएण।

जं अब्भपिसाएं गिलिउ भाणु   चप्पिवि पाविउ महिविवरठाणु ।
तं संचियचिरसुकयावसाणु[4]   परिपुण्णउं वट्टइ आउमाणु ।
जं णिवडिउं वरधवलहरसिंगु   तं ध्रुवु[5] पोमामुहपोमभिंगु ।
माहउ पावेसइ देव मरणु   पइसेव्वउ जिणवरचरणसरणु ।
तवचरणु चरेव्वउं पइं रउद्दु   लंघेव्वउ भीसणु भवसमुद्दु ॥
तं णिसुणिवि जयभीमाहवेण[6]   पुरि अभयघोसु किउ राहवेण ।
अहिसित्तइं जिणबिंबइं जलेहिं   दुद्धेहिं धवलधारुज्जलेहिं ।
दहिएहिं[7] कुंभपल्लत्थिएहिं   वरकामिणिकरथिम्मत्थिएहिं ।

घत्ता—ण्हवियइं पुज्जियइं जिणवरपडिबिंबइं रामें ॥
भत्तिइ वंदियइं परिवड्ढियसुहपरिणामें ॥10॥

11

पुरु घरु परिहाणु[1] हिरण्णु धण्णु   जो[2] जं मग्गइ तं तासु दिण्णु ।
संति वि[3] विरयंतहं विहुरहम्मु   ढुक्कउं चिरसंचिउ घोरकम्मु ।
पुण्णक्खइ दुक्खु दुपेक्खु देंतु   हयपरबलु भुयबलु णिक्खवंतु ।
कइवयदिणेहिं सुहिदिण्णसोउ   लच्छीहरंगि संभूउ रोउ ।
उप्पाइयबंधवहिययसल्लि   माहम्मि मासि दिणि अंतिमिल्लि ।
कालें कवलिउ महिअद्धराउ   णं हित्तउ कामिणिरइणिहाउ[4] ।

---

जाएँगे। राहु के द्वारा चांपकर निगले गए सूर्य ने जो महाविवर (पाताललोक) में स्थान पाया, वह जिसमें संचित चिरपुण्य का अंत है ऐसे (लक्ष्मण की) आयु के मान का अन्त है, और जो श्रेष्ठ धवलगृह का शिखर गिरा है, उससे लक्ष्मी के मुख रूपी कमल के भ्रमर लक्ष्मण निश्चित रूप मृत्यु को प्राप्त होंगे। हे देव, आप जिनवर के चरण में प्रवेश करेंगे, भयंकर तपश्चरण करेंगे, और भीषण भवसमुद्र को पार करेंगे। यह सुनकर, भयंकर संग्राम वाले राम ने नगर में अभय घोषणा करवा दी। जल से, धवलधाराओं से उज्ज्वल दूध से, तथा उत्तम स्त्रियों के करों से निर्मित दही से,

घत्ता—जिनका शुभ परिणाम बढ़ रहा है, ऐसे राम ने जिनप्रतिमाओं का भक्तिभाव से अभिषेक किया, पूजा और वंदना की ॥10॥

(11)

पुर, घर, परिधान, स्वर्ण और धान्य, जिसने जो माँगा वह दिया। शान्ति का विधान करते हुए भी उनको दुःख का घर चिरसंचित घोर कर्म आ पहुँचा। पुण्य का क्षय होने पर कुछ ही दिनों में दुर्दर्शनीय दुःख देता हुआ, शत्रुबल का नाश करनेवाले भुजबल को क्षीण करता हुआ, सुधीजनों को शोक देता हुआ रोग लक्ष्मण के शरीर में उत्पन्न हो गया। जिसने बन्धुओं के हृदय में वेदना उत्पन्न की है ऐसे माघ माह के अन्तिम दिन, धरती का अर्ध-चक्रवर्ती राजा लक्ष्मण काल के द्वारा कवलित कर लिया गया, मानो कामनियों का रतिसमूह ही छीन लिया गया हो।

---

4. A °सुकिया° । 5. AP धुउ । 6. AP जिय° । 7. A दहिएण ।

(11) 1. P परिहणु । 2. AP जं जें मग्गिउ । 3. A संतिहि । 4. AP °रयणिहाउ ।

णं णासिउ बंधवसोक्खहेउ अच्छोडिउ णं रहुवंसकेउ।
णं मोडिउ सुरतरुवरु फलंतु उल्हविउ पयावाणलु जलंतु।
रिउसीसणिवेसियपायपंसु उड्डाविउ जगसररायहंसु।
जहिं रावणु तहिं सो दुहपएसि[5] उप्पण्णु चउत्थइ णरयवासि।
विहिणा सोसिउ[6] गुणणिहिगहीरु सोएण पमुच्छिउ रामु वीरु।
सिंचिउ सलिलें माणवमहंतु उम्मुच्छिउ हा भायर भणंतु।

घत्ता—हा दहमुहणिहण हा लक्खण हा लच्छीहर।।
हा रयणाहिवइ हा वालिहरिणकंठीरव ।।11।।

## 12

धाहावइ सीय मणोहिरामु एक्कल्लउ छंडिउ काइं रामु।
हा[1] हे देवर महु देहि वाय पइं विणु जीवंतहं कवण छाय।
पूएप्पिणु[2] दड्ढउं हरिसरीरु अवलंबिउ सीरें हियइ धीरु।
करहयसिरु हाहारउ मुयंतु संबोहिउ अंतेउरु रुयंतु।
लक्खणसुउ णामें पुहइचंदु सइं अहिसिंचिवि किउ कुलि णरिंदु।
सत्तहिं जणेहिं सीयासुएहिं ण समिच्छिय सिरि पीवरभुएहिं।
लहुयारउ ताहं पयग्गि णविउ अजियंजउ मिहिलाणयरि थविउ।

मानो बन्धुओं के सुख का कारण नष्ट हो गया हो, मानो रघुवंश का ध्वज ही नष्ट हो गया हो, मानो फला हुआ कल्पवृक्ष ही तोड़ दिया गया हो, मानो जलता हुआ प्रतापानल शान्त कर दिया गया हो। जिसने शत्रु के सिर पर अपने चरणों की धूल स्थापित की ऐसा विश्वरूपी सरोवर का वह राजहंस उड़ गया। जहाँ रावण है, उसी दुःख प्रदेश चौथे नरक में उत्पन्न हुआ। गुणनिधियों से गंभीर, विधाता के द्वारा शोषित राम शोक से मूर्च्छित हो गए। पानी छिड़कने पर वह मानव-महान्, 'हे भाई' कहते हुए मूर्च्छा से दूर हुए।

घत्ता—हा दशमुख का अंत करनेवाले, हा लक्ष्मण, हा लक्ष्मीधर, रत्नाधिपति, हा बालि-रूपी हरिण के लिए सिंह ।।11।।

## (12)

सीता ने चीख कर कहा—तुमने राम को अकेला क्यों छोड़ दिया? हा देवर, मुझसे बात करो। तुम्हारे बिना जीने में कौन-सी शोभा है? पूजा करके लक्ष्मण का शरीर जला दिया गया। राम ने अपने मन में धैर्यधारण किया। अपने हाथों सिर पीटते और हा-हा शब्द कर रोते हुए उन्होंने अन्तःपुर को सम्बोधित किया। लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वीचंद का अपने हाथ से अभिषेक कर उसे कुल का राजा बनाया। स्थूल बाहुवाले सीतादेवी के सातों पुत्रों ने लक्ष्मी की इच्छा नहीं की। उनमें सबसे छोटा तथा चरणों में नमित अजितंजय मिथिला नगरी का राजा बनाया गया।

5. A °पयासि। 6. A सोहिउ।

(12) 1. P हा देवर महु दे देहि वाय। 2. A जूरेप्पिणु।

साकेयणयरि सिद्धत्थणामि वणि परिभमंतचलभसलसामि ।
सीराउहेण मयमोहणासि तवचरणु लइउ सिवगुत्तपासि[3] ।
घत्ता—तहिं रामेण सहुं सुग्गीउ वि सुद्धविवेयउ[4] ॥
हणुउ विहीसणु वि पावइयउ जायणिव्वेयउ ॥12॥

13

राएं जाएं इसिसीसएण तणयहं तउ लइउ असीसएण ।
सीयापुहइहिं सुयवइहि पाय आसंघिय भावें चत्तराय[1] ।
भुवणुट्ठिउ[2] तिट्ठावज्जियाउ जायाउ ताउ तहिं अज्जियाउ ।
पत्ता बेण्णि वि णिम्महियकाम सुयकेवलित्तु हणुयंतु राम ।
इयर वि संजाया रिद्धिवंत मुणिवर णिट्ठुरतवतावसंत ।
आहुट्ठसयाइं गयाइं तासु संवच्छराहं पालियवयासु ।
पंचहिं वरिसेहिं विवज्जियाइं जइयहुं तइयहुं ध्रुवु[3] णिज्जियाइं ।
रामें चउकम्मइं घाइयाइं अमररिं कुसुमाइं णिवेइयाइं ।
उप्पण्णउं केवलु विमलणाणु दिट्ठउं तिहुयणु गयणु[4] वि अमाणु ।
खणि सुरयणु संप्रायउ[5] णवंतु[6] जय णंद वद्ध रहुवइ भणंतु ।
घत्ता—एक्कु जि छत्तु तहु पोमासणु चमरइं चवलइं[7] ॥
देवहिं णिम्मियइं तारातारावइधवलइं ॥13॥

साकेत नगर के, भ्रमणशील चंचल भ्रमरों से से श्याम सिद्धार्थ नामक वन में राम ने शिवगुप्त मुनि के पास मद-मोह का नाश करने वाला तपश्चरण ग्रहण कर लिया।

घत्ता—वहाँ राम के साथ शुद्ध विवेकी सुग्रीव, हनुमान् और विभीषण ने भी वैराग्य उत्पन्न होने से संन्यास ग्रहण कर लिया ॥12॥

(13)

राजा राम के ऋषि-शिष्य होने पर, एक सौ अस्सी पुत्रों ने भी तप ग्रहण कर लिया। सीता और पृथ्वी देवी ने भी श्रुतव्रता आर्यिका के रागशून्य चरणों का भावपूर्वक आश्रय लिया। संसार से विरक्त, तृष्णा से रहित वे दोनों वहीं आर्यिकाएँ बन गईं। कामदेव का नाश करनेवाले हनुमान् और राम दोनों श्रुतकेवलित्व को प्राप्त हुए। दूसरे मुनिवर भी निष्ठुर तप का आचरण करते हुए ऋद्धियों से पूर्ण हुए। व्रतों का पालन करते हुए उनके साढ़े-तीन सौ वर्ष बीत गए। जब पाँच वर्ष शेष रह गए तब राम ने निश्चित रूप से चार घातिया कर्मों को जीत लिया। देवों ने पुष्पों की वर्षा की। उन्हें पवित्र केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। निःसीम गगन के समान उन्होंने त्रिभुवन को देख लिया। क्षण भर में, प्रणाम करते हुए तथा हे राम आपकी जय हो, आप प्रसन्न हों और बढ़ें—यह कहते हुए देव आए।

घत्ता—उनका एक ही छत्र, कमलासन था। देवों ने ताराओं और चन्द्रमा के समान धवल चंचल चामर निर्मित कर दिए ॥13॥

3. AP सिवगोत्त° । 4. P अइसुविवेयउ ।

(13) 1. AP चुक्कमाय । 2. AP भवणुय तिट्ठाणिज्जियाउ । 3. AP धुउ । 4. A सयलु वि ।
5. AP संपाइउ । 6. A णमंतु । 7. AP धवलइं ।

14

मुसुमूरंतहु भववइरिवम्मु जणवइ साहंतहु परमधम्मु[1]।
छसयाइं सयद्धविमीसियाइं महियलि विहरंतहु तहु गयाइं।
संमेयसिहरि सो रामभिक्खु हणुवंतें सहुं संपत्तु मोक्खु।
अवर वि सुग्गीवविहीसणाइ चारित्तवंत जे दिव्व[2] जोइ।
ते सयल भडारा वीयराय अणुदिसणिवासि अहमिंद जाय।
सा सीय पुहइ सा विमलगत्तु पत्ताउ कप्पि कप्पामरत्तु।
लच्छीहरु णरयहु णीसरेवि पावेसइ सिवपउ तउ चरेवि।
भासंति एव परमत्थवाइ संपय कासु वि णउ समउं जाइ।
हरिणा समाण णिवखयणिसीइ के के ण खद्ध महिरक्खसीइ।

घत्ता—सुयरह[4] गुरुवयणु मा लक्खणपंथें वच्चह।।
भरहणरिंदथुउ सिरिपुप्फयंतु जिणु अंचह।।14।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयतित्थसंभूयहरिसेण[5]-
चक्कवट्टिरामबलएवलक्खण-[6]वासुदेवरावणपडिवासुदेव[7]-
गुणकित्तणं णाम एक्कूणासीमो परिच्छेओ
समत्तो।।79।।
।।मुणिसुव्वयचरियं समत्तं।।

(14)

भवशत्रु के मर्म का छेदन करते हुए, जनपदों में जिनधर्म का कथन करते हुए, और धरतीतल पर विहार करते हुए जब उनके साढ़े छह सौ साल बीत गए, तब मुनि राम सम्मेद शिखर पर हनुमान् के साथ मोक्ष को प्राप्त हुए। और भी सुग्रीव तथा विभीषण, जो चारित्र से संपन्न दिव्य योगी थे, समस्त आदरणीय वीतराग, अनुदिशोत्तर विमान में अहमेन्द्र हुए। पवित्र शरीर वह सीता और सती पृथ्वी कल्पस्वर्ग में कल्पामरत्व को प्राप्त हुईं। लक्ष्मण नरक से निकलकर तप कर शिवपद को प्राप्त करेगा। परमार्थवादी (अध्यात्मवादी) यह कहते हैं कि संपत्ति किसी के भी साथ नहीं जाती। नृपक्षय के लिए निशा के समान भूमिरूपी राक्षसी के द्वारा हरिणों के समान कौन-कौन राजा नहीं खाए गए?

घत्ता—इसलिए गुरुवचनों का स्मरण करो, लक्ष्मण के रास्ते मत जाओ, भरत नरेन्द्र द्वारा संस्तुत श्रीपुष्पदंत जिनवर की अर्चा करो।।14।।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में, महाकवि पुष्पदंत द्वारा
विरचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का मुनिसुव्रत तीर्थंकर
संभूत हरिषेण चक्रवर्ती, राम बलदेव लक्ष्मण वासुदेव, प्रतिवासुदेव
गुणकीर्तन नामक उन्यासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

(14) 1. P परममम्मु। 2. AP दिट्ठजोइ। 3. AP °णिव° 4. A सुमहुर; P समरहु। 5. A omits हरिसेणचक्कवट्टि° 6. AP omit °लक्खण°। 7. AP omit °रावणपडिवासुदेव°।

## असीतिमो संधि

विअसावियभुवणसरोरुहहो केवलणाणकिरणधरहो ॥
पणवेप्पिणु णमिजिणदिणयरहो जणमणतिमिरभारहरहो ॥ध्रुवकं॥

1

दुवई—जेण जिया रउद्द चल पंच वि वम्महमुक्कसायया ॥
भवसंसरणकरणविसवेयसमा विसमा कसायया ॥छ॥

मुक्क मही णिवसंगया समसिद्धंतवसंगया ।
उज्झियजीवसचासणा विहिया जेण सवासणा ।
जस्स सुधी पिसुणेहले सरिसा सहले णेहले ।
छिण्णं जेणुद्दामयं आसारइयं दामयं ।
णिच्चं वणयरकंदरे जो णिवसइ गिरिकंदरे ।
ण महइ[1] धम्मे मंदयं इच्छइ सासयमं दयं ।

---

## अस्सीवीं संधि

जिन्होंने भुवनरूपी कमल को विकसित किया है, जो केवलज्ञानरूपी किरण को धारण करनेवाले हैं, जो जन-मन के अन्धकार को दूर करनेवाले हैं ऐसे नमिरूपी दिनकर को प्रणाम कर,

(1)

जिन्होंने भयंकर और चंचल, कामदेव के पाँचों तीरों को जीत लिया है, और भवसंसरण करानेवाली विषवेग के समान कषायों से विषम नृपसंगत भूमि को छोड़ दिया है, जो शम सिद्धान्त के वशीभूत हैं, जिन्होंने अपने स्वभाव को मृतकभक्षण को छोड़ने के संस्कारवाला बना लिया है, जिसकी शोभना बुद्धि निष्फल दुर्जन और सफल स्नेही जन में समान है, जिसने उद्दाम आशा द्वारा रचित महान् वचन को तोड़ दिया है, जिसमें कंदमूल खानेवाले भील रहते हैं, ऐसी गिरि-गुफा में जो नित्य निवास करते हैं, जो धर्म में शिथिलता को महत्त्व नहीं देते, जो शाश्वत

---

All Mss. have, at the beginning of this samdhi, the following staza :—

लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णावशे नीरसे
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांप्रतं
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥1॥

(1) 1. P वहइ ।

जम्मि थिए सुइजाणए जम्मजलहिजलजाणए।
किं पढंति मयमारया कामंधा सामारया।
सइ हंसम्मि सगारवं कीस कुणंति बगा रवं[2]।
तं णमिऊण णमीसरं तवसिहिहुयवम्मीसरं।

घत्ता—पुणु तासु जि चरिउ किं पि कहमि सज्जणकोऊहलजणणु ॥
कहिएण जेण दिहि वित्थरइ सुहुं उप्पज्जइ णाणतणु ॥1॥

2

दुवई—जंबूदीवि भरहि सुच्छायउ वच्छउ विसउ[1] बहुधणा ॥
तहिं कोसंबि णयरि चउदारविलंबियरयणतोरणा ॥छ॥

घरगयमोरहंसआहरणहि कुंकुमपंकपसाहियचरणहि[2]।
मणिविक्कयमुत्ताहलहारहि दोसियदंसियचीरवियारहि।
लोहहट्टलोहेण णिबद्धहि विक्कमाणणाणारसणिद्धहि।
वलयारा-णपयडियवलयहि[3] णिच्चभुयंगसंगकयपुलयहि।
विविहधयवडुप्परियणचवलहि महिलायणकमणेउरमुहलहि।
मंदिरकणयकलसथणवंतहि पविमलपाणियछायाकंतहि।

---

लक्ष्मी की इच्छा करते हैं, शास्त्रों के ज्ञाता, तथा जन्म रूपी जलधि के जलयान नमि तीर्थंकर के स्थित होते हुए; पशुओं की हत्या करनेवाले, काम से अन्धे, श्यामा में रत (मिथ्यादृष्टि) लोग क्या पढ़ते हैं? हंस के रहते हुए बगुले भला क्या गौरवपूर्ण शब्द करते हैं? अत: कामदेव को भस्म करनेवाले उन नमीश्वर को प्रणाम कर,

घत्ता—फिर उन्हीं का कुछ चरित कहता हूँ जो कि सज्जनों के हृदय में कुतूहल उत्पन्न करनेवाला है, जिसके कहने से भाग्य का विस्तार होता है और ज्ञानस्वरूप सुख उत्पन्न होता है ॥1॥

(2)

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सुन्दर छायावाला और सम्पन्न वत्स नाम का देश है। उसमें, जिसके चारों द्वारों पर रत्नतोरण लटक रहे हैं ऐसी कौशाम्बी नगरी है, जो गृहस्थित मयूरों और हंसों रूपी आभरणों से युक्त है, जिसके चरण केशर-पराग से प्रसाधित हैं, जो मणियों द्वारा बेचे गए मोतियों को धारण करनेवाली है, जो दोसिय (कपड़े का व्यापारी, दोषी) व्यक्ति को वस्त्रों का विकार दिखाती है, जो लोह के हाट के लोह (लोहा, लोभ) से निबद्ध है, जो बिकते हुए नाना रसों से स्निग्ध है, जिसके वलयाकार बाजार में बलय प्रगट हैं, जो नित्य भुजंगों (भोगी लोग, कामी लोग) के साथ रोमांच करनेवाली है, जो विविध ध्वजपट रूपी उपरितन वस्त्र से चंचल है, जो महिलाजनों के चरणों के नूपुरों से मुखर है, जो मन्दिर के कनक-कलश रूपी स्तनों से युक्त है, जो स्वच्छ जल की छायाकान्ति से युक्त है, जो वंदना किए गए जिनालयों

---

2. A वि गारवं।

(2) 1. AP देसु। 2. A कुंकुमपंकहि सोहिय°; P कुंकुमपंकपसोहिय°। 3. A बलयारोवण°।

वंदियधवलजिणालयसेसहिं  उववणि[4] णिवडियअलिउलकेसहिं ।
देउलदंतपंतिदावंतिहिं  णयरीकामिणीहिं णंदंतिहिं ।
जणि जाणिउ इक्खाउ पहाणउ  पत्थिउ णामें णिवसइ राणउ ।
सइ कलहंसवंससवीणाझुणि  णामेण[5] जि तहु सुंदरि पणइणि ।
वासपवेसु[6] व पुण्णपसत्थहं  सुउ सिद्धत्थु सव्वपुरिसत्थहं ।
घत्ता—ता णरेण णरिंदहु विण्णविउं विद्धं सियजणदुच्चरिउ ।।
मणहरि[7] णंदणवणि अवयरिउ मुणिवरु णामें आयरिउ[8] ।।2।।

3

दुवई—ता सहुं सुंदरीइ सहुं तणएं सहुं परिवाररिद्धिए ।।
गउ णरवइ वणंतु वंदिउ मुणि मणवयकायसुद्धिए ।।छ।।
राएं भुवणंभोरुहणेसरु  पुच्छिउ तच्चु कहइ परमेसरु ।
अप्पउ एक्कु णाणदंसणतणु  णिज्जरु दुविहु दलियदुक्कियमणु[1] ।
जोय तिण्णि गारव असुहिल्लइं  जीवगईउ तिण्णि मणसल्लइं ।
तिण्णि[2] गुणव्वय चउ सिक्खावय  चउ कसाय कयचउगइसंपय ।
चउ विण्णासवयइं चउ झाणइं  पंच सरीरइं पंच[3] वि णाणइं ।

के निर्माल्य से सहित है, जो उपवन में आते हुए अलिरूपी केशकुलवाली है, जो देवकुल रूपी दाँतों की पंक्ति दिखानेवाली है, ऐसी आनन्द करती हुई नगरी रूपी कामिनी के लोगों में इक्ष्वाकु कुल का प्रधान पार्थिव नाम का राजा था। उसकी कलहंस और वीणा के समान स्वरवाली सुन्दरी नामकी सती पत्नी थी। पुण्य से प्रशस्त सर्वपुरुषार्थों में अभिनव गृहप्रवेश के समान सिद्धार्थ नाम का पुत्र था।

घत्ता—तब किसी आदमी ने आकर राजा से निवेदन किया—जिन्होंने लोगों के दुश्चरित्र का विध्वंस कर दिया है, ऐसे आचार्य नाम के मुनिवर मनोहर उद्यान में अवतरित हुए हैं।

(3)

तब सुन्दरी के साथ, पुत्र के साथ और परिवार की ऋद्धि के साथ, राजा वन में गया। उसने मन-वचन-काय की शुद्धि से मुनिवर की वन्दना की। राजा के द्वारा पूछे जाने पर विश्व-रूपी कमल के सूर्य परमेश्वर ने तत्त्व का कथन किया—आत्मा ज्ञान-दर्शनस्वरूप है, दुष्कृत मन का नाश करनेवाली निर्जरा दो प्रकार की है। योग तीन प्रकार का है (मनोयोग, वचनयोग और काययोग)। तीन अशुभ गर्व हैं। जीव की तीन गति हैं (पाणिमुक्त, गोमूत्रिका और लांगलिका)। मन की तीन शल्य हैं। गुणव्रत तीन हैं। शिक्षाव्रत चार हैं। चार गतियों को प्राप्त करानेवाली चार कषायें हैं। विन्यासव्रत चार प्रकार के हैं (नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव के भेद से)। चार ध्यान हैं, पाँच शरीर और पाँच ज्ञान हैं। पाँच महाव्रत और पाँच आचार हैं। विश्व में श्रेष्ठ

4. A उववणणिवडिय° । 5. A तहु णामें सुंदरि पहुपणइणि; P तहु णामें सुंदरि पियपणइणि । 6. A वासुपवेसु । 7. A मणहर° । 8. P आइरिउ ।

(3) 1. P दुक्कियगणु । 2. P तिण्णि वि गुणवय । 3. P पंच जि ।

पंच महव्वयाइं आयारइं पंचाणुव्वयाइं अगसारइं ।
समिदीउ पंच रइयगुणछायउ भणियउ पंचवीस वयभायउ ।
जे लोउत्तमणाहें[4] सिट्ठा ते पंचत्थिकाय उवइट्ठा ।
भासियाइं पंचासवदारइं पंचिंदियइं गहीरवियारइं ।
जीवणिकायभेय छावासय छद्दव्वइं छव्विह लेसासय ।
तच्चइं सत्त सत्त णय संसिय सत्त वि भय रिसिणा उवएसिय ।
कम्मइं अट्ठ अट्ठ मय कयमल अट्ठ महीउ अवठ वितरकुल ।
णव पयत्थ णव बलणारायण धम्मभेय दह पसमुप्पायण ।
एयारह सावयगुणठाणइं बारह अंगइं सत्थणिहाणइं ।
बारह तव तेरह चारित्तइं चोद्दह पुव्वइं मुणिणा वुत्तइं ।

घत्ता—पायालु[5] सग्गु णरवरभुवणु भयवंतेण पयासियउं ॥
जं किं पि जिणागमि लक्खियउं तं णीसेसु वि भासियउं ॥3॥

4

दुवई—राएं रायपट्टु सिद्धत्थहु भालयले णिवेसिओ ॥
णिसुणिवि चारु धम्मु अरहंतहु अप्पुणु लवु समासिओ ॥छ॥

लइय दिक्ख जिणवरु पणवेप्पिणु पायपुज्जगुरुपाय णवेप्पिणु ।
सिद्धत्थु वि घरवयअइसइयउ थिउ सम्मत्तरयणचिंचइयउ[1] ।
जलणिहिजलवलइयजयसिरिसहि[2] भुंजंतेण तेण सयल वि महि ।

पाँच गुणव्रत हैं। पाँच समितियां, जो गुणों को आश्रय देनेवाली हैं, व्रत के हिसाब से पच्चीस कही जाती हैं। लोकोत्तर स्वामी ने जिनका कथन किया है उन पंचास्तिकाय का भी उपदेश उन्होंने किया। पाँच आस्रवद्वारों और गम्भीर विचरित पाँच इन्द्रियों का कथन किया। जीवनिकाय के भेद, छह आस्रव, छह द्रव्य और छह प्रकार के लेश्याभाव, सात तत्त्व और सात नयों की प्रशंसा की। महामुनि ने सप्तभय का भी उपदेश किया। कर्म आठ और मल उत्पन्न करनेवाले आठ मद हैं। आठ भूमियाँ और आठ व्यंतरकुल हैं। नौ पदार्थ हैं। नौ बलभद्र, नौ नारायण हैं। शांति उत्पन्न करनेवाले दस धर्म हैं। श्रावक के ग्यारह गुण और स्थान हैं। शास्त्रों का समूह बारह अंग वाला है। बारह तप, तेरह प्रकार के चरित्र हैं। चौदह पूर्वों का भी मुनि ने कथन किया।

घत्ता—ज्ञानवान् उन्होंने पाताल, स्वर्ग, नरलोक का प्रकाशन किया। जो कुछ भी जिनागम में लिखा है, उस सबका निःशेष भाव से कथन किया।

(4)

राजा ने सिद्धार्थ के भालतल पर राजपट्ट रख दिया और अरहंत का मनोज्ञ धर्म सुनकर स्वयं ने तप स्वीकार कर लिया। जिनवर को प्रणाम कर और पूज्यपाद गुरु के चरणों को नमस्कार कर उन्होंने दीक्षा ले ली। सिद्धार्थ भी गृहव्रतों में अतिशय सम्यक्दर्शन से शोभित होकर स्थित हो गया। जलनिधि जल तक विस्तृत विजयश्री की सखी धरती का भोग करते हुए उसने

4. A लोयतत्तणाहें। 5. A पायाल।
(4) 1. A समत्तु रयणु। 2. P °जलवलइय°।

णिसुय बत्त जिह जणणु जईसरु मुउ संणासें णिण्णासियसरु।
तणयहु विणयपणयवित्थिण्णहु ढोइवि णियकुलसिरि सिरिदिण्णहु।
वग्गुरबंधु गाढु मणहरिणहु किउ तवचरणु[3] हरणु जमकरणहु।
तहिं जि मणोहरवणि तणुताविउ[4] मुणिवरु गुरु सब्भावें सेविउ।
सो अप्पउं जिणभावें रंजइ लद्धउं कालि सुणीरसु भुंजइ।
मउणु[5] करइ अह थोवउं जंपइ बंधमोक्खु संसारु वियप्पइ।
विकहउ ण कहइ ण सुणइ ण सुणइ धम्मझाणु रिसि णिमिसु[6] वि ण मुयइ।
जग्गइ इंदियचोरहं एंतहं सीलदविणु बलि मडुं[7] हरंतहं।
रत्तिदिवसु उब्भुब्भउ अच्छइ सत्तु वि मित्तु वि सरिसउ पेच्छइ।
देहि णेहु किं पि वि ण समारइ पुव्वभुत्तु मणि[8] ण सरइ मारइ।
मलपविलित्तइं अट्ठइं अंगइं धरियइं तेणेयारह अंगइं।
धीरें[9] सच्चु तच्चु णिज्झायउं खाइउ दंसणु खणि उप्पाइउं।
सोलह थिर हियएण धरेप्पिणु जिणजम्मणकारणइं चरेप्पिणु।

घत्ता—सो अणसणु करिवि पसण्णमइ मुणि पंडियमरणेण मुउ॥
अवराइउ ससहरकरधवलि मणिविमाणि अहमिंदु हुउ॥4॥

---

जैसे ही सुना कि कामदेव का नाश करनेवाले योगीश्वर पिता संन्यासपूर्वक को मृत्यु प्राप्त हुए, विनय और प्रणय से विस्तीर्ण पुत्र श्रीदत्त को अपनी कुलश्री देकर उसने तपश्चरण ले लिया, जो मनरूपी हरिण के लिए अत्यंत वागुर का बंध और रोग का हरण करनेवाला था। उसी मनोहर उद्यान में शरीर से संतप्त गुरु की सद्भाव से सेवा की। वह स्वयं को जिनभाव से रंजित करता है, समय से प्राप्त नीरस भोजन करता है, या तो वह मौन रहता है या थोड़ा बोलता है। बन्ध, मोक्ष और संसार का विचार करता है। विकथा न वह कहता है, न सुनता है। वह मुनि एक पल के लिए भी धर्मध्यान नहीं छोड़ता। शील रूपी धन का जबरदस्ती अपहरण करने आते हुए इन्द्रिय रूपी चोरों से जागता रहता है। रात-दिन दोनों हाथ उठाए रहता है, शत्रु और मित्र को समान-भाव से देखता है। देह में वह नख के बराबर भी समादर नहीं करता। पूर्व में भोगी गई रति और लक्ष्मी को वह बिल्कुल भी याद नहीं करता। मल से निर्लिप्त आठों अंगों और ग्यारह अंगों को उसने धारण किया है। उस धीर ने सत्य और तत्त्व का ध्यान किया। एक क्षण में उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो गया। जिनजन्म की कारणस्वरूप सोलह स्थिर भावनाओं को हृदय में धारण कर और आचरण कर,

घत्ता—अनशन कर वह प्रसन्नमति मुनि पण्डितमरण से मृत्यु को प्राप्त हुआ। वह चन्द्र-किरणों के समान धवल मणिमय अपराजित विमान में अहमेन्द्र हुआ।

---

3. A तवयरणु। 4. AP तवताविउ। 4 AP मोणु। 6. A णिमिसु। 7. AP मंड। 8. P रणि।
9 P वीरें।

5

दुवई—वरणीहारहारपंडुरयर रयणिपमाणियंगओ ।।
णिप्पडियारसारसुहरसणिहि गयरमणीपसंगओ[1] ।।छ।।

जो णीसासवाउ कयसंखहिं मुयइ कहिं मि तेत्तीसहिं पक्खहिं ।
माणियअमरालयसिरिहद्दइं आउ जासु तेत्तीससमुद्दइं ।
तेत्तियवरिससहासहिं भोयणु जो अहिलसइ सोक्खसंपायणु ।
सुक्कलेसु मज्झत्थु महाहिउ तहु छम्मासकालु जइयहुं थिउ ।
तइयहुं घरसिरिसंठियखयरिहि[2] वंगदेसि वरमिहिलाणयरिहि[3] ।
इंदाएसें धणएं रइयहु विविहमहामाणिक्कहिं खइयहु ।
विविहहट्टटेंटारमणीयहि विविहमाणिणीयणसंगीयहि ।
विविहारामहि विविहणिवासहि विविहसिहरआलिहियायासहि ।

घत्ता—तहिं विजयराउ णामें णूवइ[4] णिवसइ णवणिसियासिकरु ।।
छायायरु जणसंतावहरु णं वरिसंतउ अंबुहरु ।।5।।

6

दुवई—तहु घरि घरणि[1] देवि परमेसरि वप्पिल चारुचारिणी ।।
हिरिसिरिकंतिकित्तिदिहिलच्छिहिं सेविय हिययहारिणी ।।छ।।

---

(5)

वह श्रेष्ठ नीहार और हार के समान धवल, एक हाथ प्रमाण देहवाला, प्रतिकार से रहित श्रेष्ठ सुख, रसनिधि और रमणी-प्रसंग से रहित था। वह तेतीस पक्षों में कभी निःश्वास वायु छोड़ता। उसकी आयु अमरालय के कल्याणों को मानने वाली तेतीस सागर प्रमाण थी। तेतीस हजार वर्ष में वह सुख को सम्पादन करनेवाले भोजन की इच्छा करता था। वह शुक्ल लेश्या-वाला और मध्यस्थ था। जब उसकी अधिक-से-अधिक आयु छह माह शेष रह गई, तब बंग देश की, जिसके गृह-शिखरों पर विद्याधरियाँ स्थित हैं, इन्द्र के आदेश से धनद के द्वारा रचित, विविध महामाणिक्यों से विजड़ित, विविध हाटों और द्यूतगृहों से रमणीय, विविध मानिनी-जनों द्वारा संगीयमान, विविध उद्यानों, विविध गृहों-शिखरों से जिसके आकाश प्रदेश आलिखित हैं—ऐसी उस मिथिला नगरी में—

घत्ता—विजय नामक नवीन तलवार अपने हाथ में लेनेवाला विजयराज नामक राजा था। मानो वह छाया करनेवाला तथा लोगों का संताप दूर करनेवाला बरसता हुआ मेघ हो।

(6)

हे देव, उसके घर में सुन्दर आचरण करनेवाली वप्रिल नाम की परमेश्वरी गृहिणी थी। जो ह्री, श्री, कान्ति, कीर्ति, धृति और लक्ष्मी द्वारा सेवित तथा हृदयहारिणी थी। सुख

---

(5) 1. AP °रमणीयसंगहो । 2. P खगसिरि° । 3. AP °मिहला° । 4. P णिवइ ।
(6) 1. AP घरिणि ।

सुहं सुत्ताइ ताइ अलिमालिउ सिविणइ णिसिहि विरामि णिहालिउ ।
करि करडयलगलियचुय[2]मयजलु[3] अणडुहु खरखुरजुयखयधरयलु ।
हरि हरिकुलिसकढिणणहहयगिरि गयकरकलससलिलण्हावियसिरि[4] ।
पसरिय परिमलमहुयरसबलिय सर कुसुममय मिलिय णहविलुलिय ।
कुवलयदलविलसियकरु[5] ससहरु मिहिरु गयणमहीदिसिगयतमहरु ।
झस भमिर रमिर रइववसिय घड जलभरिय हरियकिसलयंचिय ।
सरवरु सकमलु सरिवइ समयरु मणिहरियासणु जियसुरमहिहरु ।
विसहरभवणु सुमहु सयमहघरु[6] ।
रयणणियरु पहहयरवियरविडु हुयवहु कणयकविलदीहरसिहु ।

घत्ता—इय जोइवि सिविणय सोलह वि अक्खिउ मुद्धइ[7] णियपइहि[8] ।।
तेण वि देसावहिलोयणिण फलु वियरिउ[9] गयवरगइहि ।।9।।

7

दुवई—सयलसुरिंदवंदु गुणगणणिहि णिरुवमु णिसुणि सुंदरी ।।
होही तुज्झु पुत्तु गुरुहुं मि गुरु कामकरिंदकेसरी[1] ।।छ।।
हुउ अद्धु[2] वरिसु घरि रयणवरिसु ।
सरयावयासि भद्दवयमासि[3] ।

से सोई हुई उसने रात्रि के विरामकाल में स्वप्नमाला देखी। जिसके गण्डस्थल से मदजल चू रहा है ऐसा हाथी, अपने तीव्र दोनों खुरों से धरतीतल को खोदता हुआ बैल, इन्द्र के वज्र के समान कठोर नखों से गिरि को आहत करनेवाला सिंह, हाथियों की सूड़ों के कलश-जल से अभिषिक्त लक्ष्मी, परिमल और मधुकरों से मिश्रित जुड़ी हुईं आकाश में झूलती मालाएँ, जिसकी किरणें कुमुददलों को विकसित करनेवाली हैं ऐसा चन्द्रमा, आकाश धरती और दिशाओं में अन्धकार को दूर करनेवाला दिनकर, रति के लिए उद्यत एवं क्रीड़ा करता हुआ भ्रमणशील मत्स्य, हरे कोंपलों से आच्छादित जल से भरा घड़ा, कमल सहित सरोवर, मगर सहित समुद्र, देवपर्वत को जीतनेवाला रत्नों का सिंहासन, नागभवन, अत्यन्त विशाल इन्द्रभवन, प्रभा से सूर्य की किरणों की विभा को आहत करनेवाला रत्नसमूह तथा कनक और कपिल रंग की लम्बी ज्वाला वाली आग।

घत्ता—इस प्रकार सोलह स्वप्नों को देखकर उस मुग्धा ने अपने पति से कहा। उसने भी देशावधिज्ञान के लोचन से उस गजगामिनी को फल बताया ।।6।।

(7)

हे सुन्दरी सुनो, तुम्हारा पुत्र सकल सुरेन्द्रों के द्वारा वंदनीय, गुणगण की निधि और अनुपम, गुरुओं का गुरु तथा कामरूपी करीन्द्र के लिए सिंह होगा। आधे वर्ष तक घर में रत्नों की वर्षा

2. AP °चल° । 3. P °मयइलु । 4. A °सुण्हविसिरि; P °सुण्हविय । 5. P °वियसियकर । 6. P सयमखघरु । 7. A सुद्धइ । 8. AP णियमइहि । 9. AP वियरिउ गरवर° ।

(7) 1. P कालकरिंद° । 2. A अद्धवरिसु । 3. AP अस्सणहु मासि ।

ससिधवलपक्खि[4] आसिणिसुरिक्खि।
बीयहि जिणिंदु जगकुमुयचंदु।
थिउ गब्भवासि संसारणासि।
आयामरेहिं चलचामरेहिं।
झुल्लइ णहंतु ढंकिउ दियंतु।
णहणिवडमाणु[5] वसु अप्पमाणु।
जोइउ णरेहिं पणवियसिरेहिं।
णिवभवणि ताव णवमास जाव।
मुणिसुव्वयम्मि पालियवयम्मि।
भवभावचत्ति[6] णिव्वाणपत्ति[7]।
गय सट्ठि[8] लक्ख वरिसहं ससंख।
तइयहुं अउण्ह- आसाढकण्ह-
पक्खंतरालि कयअमररोलि।
आणंदपुण्णि दिम्मुहि पसण्णि।
अइसुरहिवाइ दुंदुहिणिणाइ।
वुयगंधसलिलि सुरखित्तकमलि।
कंतीइ[9] कंति दहमइ दिणंति।
सुहसंगमेण जायउ कमेण।
तेलोक्कणाहु अहयंदराहु।
पयपणयघणउ वप्पिलहि[10] तणउ।

घत्ता—णिउ देवहिं मंदरमहिहरहु पुज्जाविहि संमाणियउ।।
पडुपडहभेरिमंगलरविण जयजयसद्दें ण्हाणियउ ।।7।।

हुई। जिसमें मेघों को अवकाश है इसे भाद्र माह के कृष्ण पक्ष में अश्विनी नक्षत्र में द्वितीया के दिन, संसार का नाश करनेवाले, विश्वरूपी कुमुद के लिए चन्द्र, जिनेन्द्र गर्भ में स्थित हुए। चंचल चमरों वाले आए हुए अमरों से आकाश आन्दोलित हो उठा, दिगन्त आच्छादित हो गया। लोगों ने प्रणत सिरों से आकाश से गिरते हुए अप्रमाण धन को देखा। तब तक कि जब तक नौ माह हुए, जिन्होंने व्रत का पालन किया है ऐसे मुनिसुव्रत तीर्थंकर के, संसार भावना से परित्यक्त निर्वाण प्राप्त कर लेने के बाद जब साठ लाख वर्ष बीत गए, तब आषाढ़ माह के, जिसमें देवों का शब्द हो रहा है, जो आनन्द से पूर्ण है, जिसमें दिशामुख प्रसन्न हैं, जिसमें सुरों से अति-आहत दुंदुभि का निनाद हो रहा है, सुगंधि जल बह रहा है, देवों द्वारा कमल बरसाए जा रहे हैं, जो कांति से सुन्दर है, ऐसे दसवीं के दिन, क्रम से शुभ संगम होने पर, त्रिलोक का स्वामी और जिसके चरणों में अहमेन्द्र प्रणत है, वप्पिला को ऐसा पुत्र हुआ।

घत्ता—देवों के द्वारा उसे मन्दराचल पर्वत पर ले जाया गया, वहाँ पूजाविधि की गई। पटु, पटह और भेरि के मंगल स्वर और जय-जय शब्द के साथ उन्हें अभिषिक्त किया गया।

4. AP ससिखीणपक्खि। 5. AP णहि णिवडमाणु। 6. A °वसे। 7. AP णिव्वाणु। 8. AP गय सेक्कक्ख। 9. P कंतीसकंति। 10. AP वप्पिल्लहि।

8

दुवई—पुज्जिवि ण्हविवि भणिउ णमिजिणवरु गुणमणिरुइरवण्णओ[1] ।।
णाणत्तयसमेउ परमेसरु उज्जलकणयवण्णओ ।।छ।।

आणिवि[2] पुणु वि णिहिउ जणणहु घरि वड्ढिउ जिणु कुमारु हंस व सरि
वड्ढिउ तवसंताउ[3] व कामहु वड्ढिउ दाहु व इंदियगामहु ।
वड्ढिउ मेहु व कोवहुयासहु वड्ढिउ मंतु व भवभयतासहु ।
वड्ढिउ हेउ व पवरसुहेल्लिहि वड्ढिउ णवकंदु व दयवेल्लिहि ।
वड्ढिउ देवदेउ वररूवउ पण्णारहधणुदेहु पहूयउ ।
दससहास वरिसहं परमाउसु अड्ढाइज्ज ताइं कीलावसु ।
थिउ कुमारु कुमरत्तणलीलइ पट्टु णिबद्धउ वियलियकालइ ।
वरिसहं पंचसहासइं खीणइं[4] रज्जु करंतहु तहु वोलीणइं ।

घत्ता—ता णवघणसमइ पराइयइं सुरधणु जणकोड्डावणउं ।।
सोहइ उवरित्थु पयोहरहं णं णहसिरिउप्परियणउं ।।8।।

9

दुवई—णच्चियमत्तमोरगलकलरवि पसरियमेहजालए ।।
पवसियपियहि[1] दीहणीसासरुहाणलधूमकालए ।।छ।।

---

(8)

पूजा कर स्नान कराकर, गुणरूपी मणियों की कान्ति से रमणीय, तीन ज्ञान से युक्त और उज्ज्वल स्वर्ण वर्णवाले परमेश्वर को नमि जिनवर कहा गया। उन्हें लाकर, फिर से माता के गृह में स्थापित कर दिया गया। सरोवर में हंस की तरह कुमार बढ़ने लगा। काम के संताप की तरह वह बढ़ने लगा, इन्द्रिय समूह के दाह के समान वह बढ़ने लगा। कोपरूपी हुताशन के लिए मेघ के समान वह बढ़ने लगा। भवभय के संत्रास के लिए मन्त्र के समान वह बढ़ने लगा। प्रवर सुख क्रीड़ाओं के कारण की तरह वह बढ़ने लगा। दयारूपी लता के नव अंकुर के समान वह बढ़ने लगा। सुन्दर रूपवाले देवाधिदेव बढ़ते गए और पन्द्रह धनुष प्रमाण शरीर वाले हो गए। उनकी परमायु दस हजार वर्ष की थी, उसमें ढाई हजार वर्ष क्रीड़ा में निकल गए। कुमार कौमार्य की लीला में रत हो गए। समय बीतने पर उन्हें पट्ट बाँध दिया गया। पाँच हजार वर्ष क्षीण हो गए, राज्य करते हुए उनका (इतना) समय चला गया।

घत्ता—तब नवघन का समय आने पर, मेघों के ऊपर स्थित, लोगों को कुतूहल उत्पन्न करनेवाला इन्द्रधनुष ऐसा शोभित हो रहा था मानो आकाश रूपी लक्ष्मी का उपरितन वस्त्र (दुपट्टा) हो।।8।।

(9)

जिसमें मतवाले मयूर सुन्दर कण्ठ-ध्वनि से नृत्य कर रहे हैं, जिसमें मेघजाल प्रसरित हो रहा है तथा प्रवसतपतिका के लिए जो दीर्घ निःश्वासों से उत्पन्न अग्निधूम का समय है, ऐसे

---

(8) 1. AP रुइवण्णओ। 2. A आणेप्पिणु णिहिउ। 3. तणुसंताउ। 4. AP झीणइं।
(9) 1. AP पवसियमुक्कदीह°।

तडिविप्फुरणफुरियपविउलणहि वारिपूरपेल्लियदसदिसिवहि ।
छुडु जि छुडु जि बप्पीहें घोसिउ छुडु जि छुडु जि केयइवणु[2] वियसिउ ।
छुडु जि कयंबगंधु[3] उच्छलियउ छुडु पप्फुल्लउ मालइकलियउ ।
छुडु पंथियपिययम उक्कंठिय छुडु छुडु वायस वासपरिट्ठिय ।
हरियतिणंकुरोहदिण्णाउसि[4] वरिसमाणि छुडु पत्तइ पाउसि ।
लीलाचरणचारचोइयगउ वणकीलाविहारि पहु णिग्गउ ।
कडयकिरीडहारकुंडलधर[5] ता थिय सुरवर णहि मउलियकर ।
विण्णवंति पणवंति कयायर णिसुणि णिसुणि भो गुणरयणायर ।
इह दीवंतरि पुव्वविदेहइ तहिं वच्छावइविजइ सुगेहइ ।
दविणणिवेइयकामुयकामहि णयरिहि [6]सुहलियसीमसुसीमहि ।
आयउ वम्महबाणकयंतउ अवराइयहु विमाणहु होंतउ ।

घत्ता—णिज्जियमणु तवसिहितत्ततणु कम्मबंधणिण्णासयरु ।।
अवराइउ णामें लोयगुरु तहिं उप्पण्णउ तित्थयरु ।।9।।

10

दुवई—असरिसविसमविरसविससंणिहदुक्कियजलणजलहरा ।।
आया तस्स चरणपणवणमण रविससहरसुरासुरा[1] ।।छ।।

काल में जबकि बिजलियों की चमक से विशाल आकाश चमक रहा है और सभी दिशापथ जलप्रवाहों से आपूरित हैं। चातक ने शीघ्र से शीघ्र घोषणा की, शीघ्र से शीघ्र केतकी वन खिल उठा। शीघ्र ही कदम्ब की गन्ध उछल पड़ी, शीघ्र ही मालती की कलियाँ खिल गईं। शीघ्र ही पथिक प्रियतम उत्कण्ठित हो उठे। शीघ्र ही वायस घरों के ऊपरी भागों पर स्थित हो गए। जिसने हरे-हरे तिनकों के लिए आयु प्रदान की है ऐसे बरसते हुए पावस के प्राप्त होने पर; जिसने खेल-खेल में चरण के चलाने से गज को प्रेरित किया है ऐसा राजा वन-क्रीड़ा के लिए चला। तब कटक, मुकुट, हार और कुंडल को धारण करनेवाले और हाथ जोड़े हुए देव आकाश में स्थित हो गए। किया है आदर जिन्होंने ऐसे वे प्रणाम करते हैं और निवेदन करते हैं—हे गुणरत्नाकर देव, सुनिए, सुनिए। इस द्वीप के पूर्व विदेह में सुन्दर गृहोंवाला वत्सकावती नाम का देश है। जिसमें कामुकों की कामनाएँ धन से निवेदित की जाती हैं तथा जिसकी सीमा अच्छी तरह फलित है ऐसी सुसीमा नगरी में कामदेव के बाणों के लिए यम के समान तथा अपराजित विमान से होता हुआ—

घत्ता—अपने मन को जीतनेवाला, तप की ज्वाला से संतप्त-शरीर, कर्मबन्धन का नाश करनेवाला, अपराजित नामक लोकगुरु तीर्थंकर उत्पन्न हुआ है।

(10)

असदृश विषम और विरस विष के समान दुष्कृत रूपी ज्वाला के लिए मेघ के समान, रवि, चन्द्रमा, सुर और असुर उनके चरणों में प्रणमन करने की इच्छा से आए। जिसमें अमर विला-

2. AP केइयवणु। 3. P कमलगंधु। 4. AP °तणंकुरोह। 5. AP °कुंडलहर। 6. A सुललिय°।
(10) 1. AP णरविसहरसुरासुरा।

अमरविलासिणिणच्चणतंडवि जंपिउ केण वि तहु सहमंडवि ।
संपइ देहिदेहहुयमयजरु[2] जंबूदीवभरहि को जिणवरु ।
केवलणाणसमुग्गयणयणें भणिउं जिणेण विणासियमयणें ।
वंगदेसि कुसुमरयसुकविलहि णववणणीलहि णयरिहि मिहिलहि ।
उप्पण्णउ अच्छइ जगसंकरु णमिणामंकु भावितित्थंकरु ।
पवरविमाणहु हिमयरधामहु अवइण्णउ अवराइयणामहु ।
भावाभावइं चित्तइं[3] जाणइ देवविइण्णइं सुक्खइं माणइ ।
धादइसंडि दीवि तउ[4] चिण्णउं दोहिं मि देवत्तणु संपण्णउं ।
पढमि सग्गि सोहम्मि मणोहरि रयणकिरणजालंचियसुरहरि ।
तं णिसुणेप्पिणु मइमल धोयहुं अम्हइं आया तुह पय जोयहुं ।
तं[5] हियउल्लइ धरिवि णरेसरु णयरि पइट्ठु ललियगब्भेसरु ।
तहु जिणवरहु जम्मसंबंधइं सुयरेप्पिणु[6] णियभवइं सचिंधइं ।
घत्ता—चिंतइ वसुहाहिउ णियहियइ बुद्धु सबोहिइ बुद्धउ ॥
जगि जीउ जहिं जि हुउ तहिं तहिं जि रमइ सकम्मणिबद्धउ ॥10॥

11

दुवई—हिंडइ भवसमुद्दि अण्णाणविलुंटियणाणलोयणो ॥
पुत्तकलत्तमित्तवित्तासापासणिरुद्धचेयणो[1] ॥छ॥

---

सिनियों के नृत्य का विस्तार हो रहा है, ऐसे उनके सभा-मण्डप में किसी ने पूछा—"इस समय जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में शरीरधारियों के कामज्वर को नष्ट करनेवाले कौन जिनवर हैं? जिसने कामदेव का नाश कर दिया है ऐसे केवलज्ञान से उत्पन्न नेत्र वाले अपराजित ने कहा—बंग देश की पुष्पधूलि से अत्यन्त कपिल, नववन से नीली मिथिला नगरी में उत्पन्न, विश्व के लिए सुख देनेवाले नमि नाम के भावि तीर्थंकर हैं। चन्द्रकिरण के समान धामवाले अपराजित नाम के विशाल विमान से अवतीर्ण वह विचित्र भाव-अभावों को जानते हैं, देवों द्वारा प्रदत्त सुखों का भोग करते हैं। धातकीखण्ड द्वीप में दोनों ने तप ग्रहण किया था और दोनों ने प्रथम स्वर्ग सुन्दर सौधर्म के रत्नकिरणों के जाल से अंचित देवविमान में देवत्व प्राप्त किया था। यह सुनकर हम दोनों अपना मतिमल धोने और तुम्हारे चरणकमल देखने के लिए आए हैं। यह बात अपने हृदय में धारण कर, सुन्दर गर्वेश्वर राजा ने अपनी नगरी में प्रवेश किया। उन जिनवर के संबंधों और चिह्न सहित अपने जन्मान्तरों की याद कर—

घत्ता—राजा विचार करता है कि जानकार ही जानकार को सम्बोधित कर सकता है। यह जीव जग में जहाँ भी उत्पन्न होता है, अपने कर्म से निबद्ध होकर वहीं रमण करता है।

जिसका ज्ञानरूपी नेत्र अज्ञान से बन्द है तथा पुत्र-कलत्र-मित्र और वित्त के आशारूपी

---

2. AP देहि देउ। 3. AP चितइ। 4. AP वउ। 5. A तहि हिय°। 6. P सुमरेप्पिणु।
(11) 1. A °वितासापास°।

इय झायंतु देउ उम्मोहिउ सारस्सयसुरवरहिं[2] संबोहिउ।
तणयहु वरसरीरसुहकारिणि दिण्ण तेण सधराधर धारिणि।
सुप्पहणामहु पट्टु णिबंधिवि धम्मझाणु हियउल्लइ संधिवि।
अमरवराहिसेउ पावेप्पिणु धणु परियणु तणु जिह मिल्लेप्पिणु।
सुमहिउ सयमहेण महिरूढउ उत्तरकुरुसिवियहि आरूढउ।
गउ आसाढमासि घणसामलि अस्सिणिरिक्खि पक्खिससिउज्जलि।
दसमइ दिवसि मुहुत्ति पहाणइ फलपणविइ चित्तवणुज्जाणइ।
लइय दिक्ख सिद्धाण णवंतें धरपुरवरमहिमोहु मुयंतें।
मुक्कंबरइ[3] विलुंचियकेसइ पहु आलिंगिउ दिक्खावेसइ।
लइयएण छट्ठेणुववासें सहुं सुसीलखत्तियहं सहासें।
इंदचंदणाइंदणमंसिउ[4] मणपज्जवणाणेण विहूसिउ।
वीरणयरि दत्तहु णरणाहहु वीरलच्छिसुपसाहियबाहहु।
घरि पारणउं कयउं परमेसें सुरकयपंचच्छरियविलासें।
घत्ता—णववरिसइं दुद्धरु[5] तउ चरिवि तिण्णि वि सल्लइं वज्जियइं।।
रसगंधफाससुइलोयणइं पंचिंदियइं परज्जियइं।।11।।

## 12

दुवई—वसुहं हिंडिऊण गउ पुण रवि तं दिक्खावणं घणं।।
कुसुमियफलियललियतरुसाहाकीलियहंसबरहणं।।छ।।

---

## (11)

पाश में निरुद्धचेतन यह जीव संसार-समुद्र में भ्रमण करता है यह विचार करते हुए देव मोह से दूर हो गये। लोकांतिक देवों ने आकर उन्हें सम्बोधित किया। श्रेष्ठ शरीर का शुभ करनेवाली सधराधर धरती उन्होंने अपने पुत्र के लिए प्रदान कर दी। सुप्रभ नामक पुत्र को पट्ट बाँधकर हृदय में धर्म का सधान कर, देवों द्वारा वर-अभिषेक पाकर, धन और परिजन को तृण की तरह त्यागकर, इन्द्र के द्वारा पूजित धरती पर प्रसिद्ध, उत्तर कुरु शिविका पर आरूढ़ होकर, आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की दसवीं के दिन आश्विन नक्षत्र में, फलों से विनम्र चित्र-वन उद्यान में सिद्धों को नमस्कार करते हुए; घर, पुरवर और धरती का मोह छोड़ते हुए प्रभु मुक्ताम्बर (मुक्तवस्त्र) वाली और विलुंचित केशवाली दीक्षा रूपी वेश्या के द्वारा आलिंगित किए गए। छठा उपवास ग्रहण करते हुए, एक हजार सुशील क्षत्रियों के साथ; इन्द्र, चन्द्र और नागेन्द्रों के द्वारा वन्दनीय, मनःपर्ययज्ञान से विभूषित, वीर नगर में वीरलक्ष्मी से सुप्रसाधित-बाहु राजा दत्त के घर, परमेश्वर ने देवी द्वारा किये गये पाँच आश्चर्य विलास के साथ पारणा की।

घत्ता—नौ वर्षों तक दुर्धर तप कर उन्होंने तीन शल्यों को छोड़ दिया। रस, गन्ध, स्पर्श, श्रुति और लोचन—पाँचों इन्द्रियों को जीत लिया गया।।11।।

धरती पर विहार कर वह पुनः उसी दीक्षा-वन में गए कि जहाँ कुसुमित फलित वृक्षों की

---

2. AP सारस्सयसुरेहिं। 3. A मुक्कंबरपविलुंचिय°। 4. AP °णायंद°। 5. AP दुच्चरु चरिवि तउ।

तहिं रिसि तवसंतावें खीणउ बउलमहीरुहतलि आसीणउ ।
मग्गसिरइ सिसिरइ संपत्तइ पक्खि मियंककरावलिवित्तइ ।
तइयइ सासिणिक्खियहिं वियालइ णिल्लूरियमहंततमजालइ ।
उप्पण्णेण णवियणिव्वाणें दिट्ठइं देवें केवलणाणें ।
सुहुमइं अवरंतरियइं[1] दूरइं पच्चक्खाइं सुभेयगहीरइं[2] ।
पोग्गलाइं पूरियगलियंगइं गंधवण्णपरिणामवसंगइं[3] ।
मल्लयमुरयवज्जणिहु तिहुवणु ओग्गाहण लक्खणु गयणंगणु ।
कालु वि लक्खिउ जायपवत्तणु अप्पउं सयणु अयणु चेयणगुणु ।
धम्माधम्मु बे वि गइठाणइं बुज्झिय संतें सुद्धपमाणइं ।
ता दसदिसिवहेहिं[4] आवंतहिं जय जय जय[5] मुणिणाह भणंतहिं ।

घत्ता—पूएप्पिणु वियसियसुरहियहिं कुसुमहिं कुसुमसरत्तिहरु ॥
चउदेवणिकायहिं णमिउ णमि पसमपरिग्गहु परमपरु ॥12॥

13

दुवई—रेहइ तुज्झु णाह भुवणत्तयसीहासणविलासओ ॥
जस्साहोवयम्मि देविंदु[1] वि बइसइ णवियसीसओ ॥छ॥

दड्ढउ[2] धणधरतिट्ठावाहिइ जगु जीवइ तुह छत्तहं छाहिइ ।
पइं दिट्ठइ पाविट्ठु वि सुज्झइ तुह वायइ मृगु[3] मंदु वि बुज्झइ ।

(12)

शाखाओं पर हंस और मयूर क्रीड़ा कर रहे थे। वहाँ तप के संताप से क्षीण वह ऋषि मौलश्री वृक्ष के नीचे स्थित हो गए। वहाँ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्र में सध्या समय महान तमोजाल को नष्ट करने पर, जिसे देवता नमस्कार करते हैं ऐसे उत्पन्न हुए केवल-ज्ञान के द्वारा देव ने सूक्ष्मतर और अंतरित दूरियाँ, तथा भेदों से गंभीर प्रत्यक्षों को देख लिया। गंधवर्ण और परिणमन के वशीभूत, पूरित और गलितांग पुद्गलों को देख लिया। सकोरा और मुरज वाद्य के समान त्रिभुवन को, अवगाहनस्वरूप आकाश को, प्रवर्तनमूलक काल को, आत्मा, सशरीर जड़ और चेतन गुण को, धर्म और अधर्म—दोनों गति और ठहराव के कारण को, उन शान्त ने शुद्ध प्रमाण से जान लिया। तब दसों दिशा पथों से आते हुए, 'हे मुनिनाथ आपकी जय हो, जय हो' कहते हुए—

घत्ता—चारों निकायों के देवों द्वारा विकसित एवं सुरभित कुसुमों से कामदेव की पीड़ा का हरण करनेवाले प्रशांत-परिग्रह, परमपर नमि की पूजा कर, उन्हें नमन किया गया।

(13)

हे स्वामी, तुम्हारे भुवनत्रय का सिंहासन-विलास शोभित है कि जिसके नीचे देवेन्द्र भी अपना सिर झुकाकर बैठता है। धन और तृष्णा की व्याधि से दग्ध विश्व तुम्हारे छत्रों की छाया में जीता है। आपको देख लेने पर पापिष्ठ भी शुद्ध हो जाता है। तुम्हारी वाणी से मंद पशु भी

(12) 1. P अंबरतरियइं। 2 A समेय°। 3 AP वण्णगंधपरि°। 4. A दसदिसिवहेण; P दसदिसिवहि णहि आवंतहिं। 5. P omits जय।

(13) 1. A देविंदु पइसई। 2. A दड्ढवंभणघर°। 3. AP मिगु।

तुह धम्महु ण लील संपावइ विज्जुज्जोएं[4] अंगउ दावइ ।
णिग्गुणधम्में केत्तिउं गज्जइ घणु तुह दुंदुहिरवहु ण लज्जइ ।
जिण तुह भामंडलवित्थारें लोउ ण घिप्पइ मोहंधारें ।
तुह चामरहिं चलंतहिं पेल्लिउ कम्मरेणु उड्डाविवि घल्लिउ ।
रंजिय कुसुमविट्ठिरुइरंगें[5] महुयर मत्ता तुज्झु जि संगें ।
तुज्झु असोउ सोयणिण्णासणु णंदउ णाह तुहारउ सासणु ।
घत्ता—जय जय परमप्पय परमगुरु[6] जम्मि जम्मि तुहुं महु सरणु ॥
रिसिचरणमूलि सल्लेहणिण महु देज्जसु समाहिमरणु ॥13॥

14

दुवई—इय संथुउ जिणिंदु देविंदहिं सेवियघोरकाणणो ॥
ववगयकामकोहमयमोहमहातवलच्छिमाणणो ॥छ॥
देउ एक्कवीसमउ जिणेसरु उग्गउ णं गयणंगणि णेसरु ।
सच्चु[1] सधम्मु अहम्मु वियारइ भवसमुद्दि बुड्डंतइ तारइ ।
उवसंतइं पयपंकयणवियइं पियवायइ संबोहियभवियइं[2] ।
तहु उप्पण्णा पुण्णमणोरह सुप्पहाइ सत्तारह[3] गणहर ।
पुव्वधरहं पण्णास समेयइं चउसयाइं ससिदिणयरतेयइं ।
उड्डसयाइं बारहसहसालइं सिक्खुयरिसिहिं समुज्जलसीलइं ।
पुणु छसयाइं बारहसहसालइं णाणत्तयवंतहुं मुणिउत्तइं ।

---

समझ जाता है । मेघ तुम्हारे धर्म (धनुष) की लीला नहीं पा पाता इसीलिए विद्युत् के प्रकाश से अपना शरीर दिखाता है । अपने निर्गुण (डोरी रहित) धनुष से वह कितना गरजता है ! घन तुम्हारे दुंदुभि के शब्द से लज्जित नहीं होता ? हे जिन, तुम्हारे भामण्डल के विस्तार से लोग मोहान्धकार की गिरफ्त में नहीं पड़ते । तुम्हारे चलते हुए चमरों से प्रेरित कर्मधूलि उड़ाकर फेंक दी जाती है । कुसुमवृष्टि की कांति में रंगे हुए भ्रमर तुम्हारे साथ ही मत्त रहते हैं । तुम्हारा अशोक शोक का नाश करनेवाला है । हे नाथ, तुम्हारा शासन बढ़ता रहे ।

घत्ता—हे परमात्म आपकी जय हो; हे परमगुरु, जन्म-जन्म में तुम मेरे लिए शरण हो; मुझे मुनिवर के पादमूल में सल्लेखना और समाधिमरण देना ।

(14)

जिन्होंने घोर कानन का सेवन किया है, जो काम, क्रोध, मद, मोह से रहित और तपरूपी महालक्ष्मी को मानने वाले हैं, ऐसे जिनेन्द्र की देवेन्द्रों ने स्तुति की । इक्कीसवें जिनेश्वर देव मानो आकाश में सूर्य के रूप में उगे । वह धर्म-अधर्म का सच्चा विचार करते हैं, संसार रूपी समुद्र में गिरते हुओं को तारते हैं, प्रिय वचनों से भव्यों को सम्बोधित करते हैं । उनके पुण्य मनोरथ सुप्रभ आदि सत्रह गणधर हुए । चन्द्र और सूर्य के समान तेजस्वी पूर्वधारी चार सौ पचास थे । बारह हजार छह सौ शील से समुज्जवल शिक्षक मुनि थे । फिर बारह हजार छह सौ तीन ज्ञान के

---

4. A विज्जाजोएं । 5. AP °रइरंगें; K records a p : रय इति पाठे रजः । 6. P परमपरु ।

(14) 1. P सच्चु सुतच्चु सुधम्मु । 2. P संबोहइ । 3. AP गणहर सत्तारह ।

तेत्तिय केवलणाणपहायर मुणिवरिंद तणुविक्किरियायर।
पंचसयाइं एक्कसहसिल्लइं मणपज्जवणाणिहिं णीसल्लइं।
साहहुं[4] सहुं सहसेण गविट्ठइं दोसयाइं पण्णास जि दिट्ठइं।
जिणवरमग्गि[5] णिवेसियसीसहं एक्कु सहासु महावाईसहं।
मंगिणिपमुहहं हयमइमइयहं[6] पणचालीससहस[7] संजइयहं।
एक्कु लक्खु सावयहं समासिउ तिउणउ सो सावइहिं पयासिउ।
अमर असंख संख खग मृग जहिं अरुहरिद्धि वण्णिज्जइ किं तहिं।

घत्ता—दोसहसइं पंचसयाहियइं महि विहरिवि संवच्छरहं॥
पसुसुरणरखेयरविसहरहं धम्मु कहिवि मउलियकरहं॥14॥

15

दुवई—णमि संमेयसिहरिसिहरोवरि दूरुज्झियणियंगओ[1]॥
अच्छिउ मासमेत्तु णिरु णिच्चलु पडिमाजोयसंगओ॥छ॥

किरियाछिंदणु झाणु रएप्पिणु तिण्णि वि अंगइं झ त्ति मुएप्पिणु।
थियउ अजोइदेहु आसंघिवि पंचमंतकालंतरु[2] लंघिवि।
रिसिहिं सहासें[3] सहुं णिव्वाणहु गउ परमप्पउ अच्चुयठाणहु।
महिमंडलि रविकिरणहिं तत्तइ तहिं वइसाहमासि संपत्तइ।
[4]कसणचउद्दसिदिवसि समायइ णिसिविरामि छुडु छुडु जि पहायइ।
णिक्कलु जायउ चंदफणिंदहिं पुज्जिउ देवदेउ देविंदहिं।

धारी नियुक्त थे। केवल ज्ञान के धारी भी। विक्रियाधारक मुनिवरेन्द्र भी एक हजार पाँच सौ थे। मन:पर्ययज्ञानी साधु बारह सौ पचास थे। शिष्यों को जिनवर के मार्ग में निवेशित करनेवाले एक हजार वादी मुनि थे। मंगिनी को प्रमुख मानकर मतिमद को नाश करने वाली पैंतालीस हजार आर्यिकाएँ थीं। संक्षेप में एक लाख श्रावक, और तीन लाख श्राविकाएँ प्रकाशित की गई हैं। अमर असंख्यात थे। तिर्यंच (खग मृग) जहाँ संख्यात थे, वहाँ अरहंत की ऋद्धि का क्या वर्णन किया जा सकता है!

घत्ता—दो हजार पाँच सौ वर्षों तक धरती पर विहार कर, हाथ जोड़े हुए पशु सुर नर विद्याधरों और नागदेवों को धर्म कहकर—

(15)

अपने शरीर का दूर से परित्याग करने वाले नमि जिनेश सम्मेदशिखर पर एक माह तक प्रतिमा योग में एकदम निश्चल रहे। वहाँ क्रिया-छेदोपस्थापना ध्यान कर तीनों शरीरों का सहसा परित्याग कर, अयोगदेह योग का आश्रय लेकर स्थित हो गए। फिर पंचम कालांतर का अतिक्रमण कर एक हजार मुनियों के साथ, वह परमात्मा अच्युत स्थान निर्वाण चले गए। भूमिमंडल के सूर्य की किरणों से संतप्त होने पर वैशाख माह के आने पर, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन, रात्रि का अन्त होने पर प्रभात में वह निकलंक (निष्पाप) हो गए। चन्द्र, फणेन्द्र और देवेन्द्रों

4. P सीहुहुं। 4. AP जिणवयमग्गें। 6. AP वयमयमइयहं। 7. A पंचसट्ठिसहसइं संजइयहं। 8. AP मिग।
(15) 1. P णियगओ। 2. AP पंचमत्त°। 3. AP सहासहिं। 4. A कसिण°।

पहयतूररवपूरिउं[5] णहयलु गेयथोत्तझुणि उट्ठिउ कलयलु ।
उब्भिय धय रयणइं विच्छिण्णइं[6] दीणाणाहहं दाणइं दिण्णइं ।
धरिय चारुचंदोवय चामर णच्चिय धरणिरंगि विविहामर ।
दरिसंतेहिं[7] तेहिं तहिं णवरस णवचालीसभावपसरियजस ।
छत्तीस वि दिट्ठिउ पयडंतहिं कर चउसट्ठि तेत्थु दरिसंतहिं ।
णच्चिवि विविहणट्टरूवें वर सिद्धखेत्तु पणवेप्पिणु सुरवर ।
समउ सुराहिवेण गय णहयलि अरुण वरुण वइसवण सुणिम्मलि ।
घत्ता— हरि सुरइं समासइ जंतु णहि णियचरिएं मुणिवच्छलिण ।।
उज्जोइउ भरहु जि णमिजिणिण पुप्फयंतकिरणुज्जलिण ।।15।।

16

दुवई—हुइ[1] णिव्वाणगमणि णमिणाहहु सासयसिवणिवासहो ।।
अक्खमि चरिउ चक्किजयसेणहु सयलजणाहिरामहो ।।छ।।
जंबूदीवि एत्थु सुमहंतइ मेरुहु उत्तरेण गुणवंतइ ।

ने देवाधिदेव की पूजा की। आहत तूर्यों के शब्दों से आकाश आपूरित हो गया। गाये गये स्तोत्रों की ध्वनि का कल-कल शब्द होने लगा। ध्वज उड़ने लगे। रत्न बिखेर दिए गए। दीन अनाथों को दान दिया गया। सुन्दर चन्द्रमा के समान चामर धारण कर लिए गए। धरती के रंगमंच पर विविध देवों ने नृत्य किया। जिनका यश उनचास भावों तक प्रसरित है ऐसे नव रसों का प्रदर्शन करते हुए, छत्तीस दृष्टियों को प्रगट करते हुए, चौसठ हाथों का प्रदर्शन करते हुए, विविध नृत्य रूप से नृत्य कर सुरवर सिद्ध क्षेत्र को प्रणाम कर देववर देवेन्द्र के साथ आकाश मार्ग से चल दिए।

घत्ता—आकाश में जाते हुए हरि देवों से संक्षेप में कहता है कि मुनियों के लिए वत्सल भाव रखने वाले, अपने चरित से सूर्य और चन्द्रमा की किरणों के समान उज्ज्वल नमि जिनेश्वर ने इस भारतवर्ष को आलोकित किया।

(16)

शाश्वत शिव में निवास करने वाले नमिनाथ का निर्वाणगमन होने पर, समस्त जनों के लिए सुन्दर, चक्रवर्ती जयसेन का मैं चरित कहता हूँ। इस जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के उत्तर में गुण-

5. AP °पूरिय-णहयलु। 6. AP विक्खिण्णइं। 7. AP read in place of this line and the three following as follows :—

चवचंदणलवंगविरइयसल कुसुमणिवह णहणिवडिय सभसल।
णाहहु पयपणामु विरयंतहिं जयजयजय अरहंत भणंतहिं।
दिण्णउ उरयलघोलिरहारहिं चूडामणिसिहि जलणकुमारहिं।
भव्वीभावजायतणुलट्ठिहि वंदिवि देहभप्पु परमेट्ठिहि।
(A वंदिवि देउ भव्वपरमेट्ठिहि)

(16) 1. A हुयं।

अत्थि खेत्तु णामें अइरावउं जणधणकणगोसंपयअइरावउं[2]।
बहुमणोज्जु[3] सिरिउरु तहि पट्टणु अमरणयरसोहादलवट्टणु[4]।
तहिं णामें भूवालु वसुंधरु[5] अतुलपरक्कमु पवरधणुद्धरु।
पउमावइ णामें तहु गेहिणि रण्ण व रविहि ससिहि णं रोहिणि।
तहि विओयसोएं णिव्विण्णउ रज्जु सुविणयंधरि सुइ दिण्णउं।
मणहरि वणि धम्ममुणीसपासि लइयउं तउ पावासवविणासि।
जिणकहिइ विहिइ संणासु करिवि महसुक्कसग्गि हुउ अमरु मरिवि।
भासुरतणु पावियअवहिणाणु सोलहसायरजीवियपमाणु।
अह वच्छाविसइ विलासठाणु कोसंबीपरवरु सुहणिहाणु।
तहिं विजउ राउ अखलियपयाणु णियतेओहामियसरयभाणु।
पिय तासु पहंकरि सुहणिवास सूहवगुणपूरियदसदिसास।
वरकणयवण्ण विच्छिण्णकाय णं सग्गहु अच्छर[6] का वि आय।
घत्ता—सग्गाउ चवेप्पिणु[7] सो अमरु ताहि गब्भि अवइण्णउ॥
परिओसिउ सयलु वि बंधुयणु सत्तुवग्गु अइण्णउ[8]॥16॥

17

दुवई—सोहणदिणि सुरिक्खि णवमासहि पवरोयरविणिग्गओ॥
पुणु जयसेणु णामु तहु विहियउं णियगइविजियदिग्गओ॥छ॥

---

वान् महान् ऐरावत क्षेत्र है जो जन-धन-कण और गोसंपदा से अतिशय रमणीय है। वहाँ पण्डितों के लिए सुन्दर, श्रीपुर नाम का पट्टन है जो इन्द्रपुरी की शोभा का दलन करनेवाला है। उसमें भूपाल नाम का राजा अतुल पराक्रमी और प्रबल धनुष का धारण करने वाला था। उसकी पद्मावती नाम की गृहिणी थी। वैसे ही, जैसे रवि की रण्णा और चन्द्रमा की रोहिणी। उसके वियोग शोक से विरक्त होकर, उसने अपने पुत्र विनयंधर को राज्य दे दिया। मनोहर वन में धर्ममुनीश्वर के पास, पापाश्रव का नाश करनेवाला तप ग्रहण कर लिया। जिनेन्द्र द्वारा कथित विधि से संन्यास ग्रहण कर, वह मरकर महाशुक्र स्वर्ग में अत्यन्त भास्वर-शरीर देव हुआ। अवधि-ज्ञान को प्राप्त किया है जिसने ऐसे उसकी सोलह सागर प्रमाण आयु थी। इसके बाद वत्सावती देश में विलास का स्थान तथा सुख का निधान कौशाम्बीपुर था। उसमें अस्खलित प्रमाण राजा विजय था जिसने अपने तेज से शरद्-सूर्य को तिरस्कृत कर दिया था। उसकी प्रिया प्रभंकरी थी जो सुख की घर और अपने सुभगगुणों से दसों दिशामुखों को पूरित करनेवाली थी। श्रेष्ठ स्वर्ण रंगवाली कान्तशरीर वह ऐसी लगती थी मानो स्वर्ग से कोई अप्सरा आई हो।

घत्ता—वह देव स्वर्ग से चलकर, उसके गर्भ में अवतीर्ण हुआ। समस्त बन्धु गण संतुष्ट हुआ, शत्रुगण खिन्नता को प्राप्त हुआ॥16॥

एक शोभन दिन और सुन्दर नक्षत्र में नव माह में वह प्रवर उदर से निकला। उसका जय

---

2. AP गोसंपयसारउं। 3. बहुमणोज्जु। 4. P °णवर°। 5. A णरेसरु। 6. A अंछर। 7. P चएप्पिणु। 8. AP आदण्णउ।

णिच्छियतिण्णिसहसवरिसाउसु[1] सव्वपियारउ णं णवपाउसु।
वरइक्खाउवंसणहससहरु बंदिणजणविहंगसुरतरुवरु।
कणययवण्णु करसट्ठि समुण्णउ[2] सयलकलाकलावसंपुण्णउ।
रज्जि णिविट्ठहु चक्कुप्पण्णउं रविबिंबु व सेवइ अवइण्णउं[3]।
परिसाहिय छक्खंड वसुंधर सेव कराविय सुर वि सुदुद्धर।
एक्कहिं दिणि सउहयलि वसंतें विज्जुवडणु[4] गयणाउ णियंतें।
कारणु तें वइरग्गहु पाविउ सव्वु अणिच्चु मणेण परिभाविउ।
रज्जु पढमपुत्तहि ण वि मण्णिउं जिह णिवेण तिह तें अवगण्णिउं।
णिरवसेसु लहुसुयहु समप्पिवि सत्तुमित्तु सममइ संकप्पिवि।
केवलिवरयत्तहु[5] णिवणेसरु जाउ समीवि साहु परमेसरु।
संमेयइ कयसंणासुत्तमु हुयउ जयंतदेउ[6] लयसत्तमु[7]।
घत्ता—संणासमरणि भरहेसरहु णरसुरवरहिं अणेयहिं॥
पुज्जाविहाणु णिव्वत्तियउं पुप्फयंतसमतेयहिं[8]॥17॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे [9]णमितित्थयर[10]जयसेणचक्कहर-[11]
कहंतरं णाम असीतिमो परिच्छेओ समत्तो॥80॥

(17)

सेन नाम रखा गया। वह अपनी गति से दिग्गज को जीतने वाला था। उसकी निश्चित तीन हजार वर्ष की आयु थी। नवपावस के समान वह सबका प्यारा था। वह श्रेष्ठ इक्ष्वाकुवंश के आकाश का चन्द्रमा था। बन्दीजन रूपी विहंगों के लिए कल्पवृक्ष था। उसका स्वर्ण वर्ण शरीर साठ हाथ ऊँचा था। वह समस्त कला कलाप से पूर्ण था। राज्य में बैठे हुए उसे चक्ररत्न उत्पन्न हुआ, मानो सूर्य बिम्ब ही अवतीर्ण होकर उसकी सेवा कर रहा था। उसने छह खंड धरती सिद्ध की। दुर्धर देवों से उसने सेवा करवाई। एक दिन सौधतल पर बैठे हुए उसने आकाश से बिजली को गिरते हुए देखा। इस कारण से उसे वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने मन में सब कुछ अनित्य समझा। प्रथम पुत्र ने भी राज्य को नहीं माना, जिस प्रकार पिता ने, उस प्रकार पुत्र ने, उसकी अवहेलना की। अपने छोटे पुत्र को समस्त राज्य देकर, शत्रुमित्र में समबुद्धि कर, वह नृपसूर्य केवली वरदत्त के पास जाकर, साधु हो गया। सम्मेदशिखर पर उत्तम संन्यास ग्रहण कर वह वैजयन्त अहमेन्द्र हुआ।

घत्ता—उस भरतेश्वर के संन्यास-मरण पर सूर्य-चन्द्रमा के समान तेज वाले अनेक नरपतियों और देव-देवेन्द्रों के द्वारा उसका पूजा-विधान किया गया॥17॥

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का नमि तीर्थंकर,
चक्रवर्ती जयसेन-कथान्तर नाम अस्सीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

(17) 1. A वरिससहसाउसु। 2. A समुग्गउ। 3. AP उवइण्णउं। 4. AP विज्जुपडणु। 5. AP वरइत्तहु। 6. AP जयति देउ। 7. A सयलुत्तमु। 8. AP पुप्फदंत°। 9. AP णमिणाहणिव्वाणगमणं। 10. A omits जयसेणचक्कहरकहंतरं। 11. P °चक्कवट्टि°।

# NOTES

[The references in these notes are to Saṁdhis in Raman figures and kaḍavakas and lines ia Arabic figures. T stands for Tippaṇa of Prabhacandra]

## LXVIII

2. 13 पयडइ जायइं कालहु चिंधइ, the sings of (coming) death or fall from heaven became manifest.

9. 3*b* गयियकुणयवयणवहित्थि, (अनन्ततीर्थ or teaching of अनन्तजिन) which kept off or made ineffective the systems of heretic schools.

## LXIX

1. 2 हरिहलहरगुणयोत्त, जं जायउं रामायणु. The रामायण is the glorification of the virtues or qualities of हरि (वासुदेव) and हलधर (बलदेव). 4*a* णिव्वाहमि भरहुब्भत्थियउं, I (Poet) want to carry out the wishes of भरत, my patron. 6*a* सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महुं, I possess no material or facilities for undertaking the task of composing a रामायण. 6*b* किर कवण लीह चिरकइहिं सहुं, how can I compete with older poets ? 7*a* कइराउ सयंभु, the great poet स्वयंभू who wrote on the theme of रामायण had the help of a thousand friends. 8*a* चउमुहु, the great poet चतुर्मुख स्वयंभू, as his name implies, had four mouths. 9*a* महु एक्कु तं पि मुहुं खंडियउं, the poet पुष्पदन्त says that he has only one mouth as against four of चतुर्मुख, and that even this mouth is broken (खण्डित). Elsewhere पुष्पदन्त calls himself to be खण्ड or खण्डकवि, and mentions that his face or mouth was वक्र. 13 सुकइपयासियमग्गि, on the path, brightened by great poets like स्वयंभू and चतुर्मुख; or on the path, i.e., सेतु, built or manifested by the good monkey, i.e. हनूमान्.

3. :-10 These lines record some strange notions or superstitious beliefs about persons figuring in the रामायण. King श्रेणिक asks गौतम इन्द्रभूति to explain to him the truth about them. They are : (1) रावण (दशमुख) has ten mouths or faces; (2) his son इन्द्रजित् was older in age than his father, or in other words, इन्द्रजित्, though a son of रावण, was born before him; (3) रावण was a demon and not a human being ; (4) he had twenty eyes and twenty hands and that he worshipped god शिव with his heads; (5) रावण was killed by the arrows of राम; (6) the arms of श्रीरमण, i.e. लक्ष्मण, were long and unbending (थिर); (7) सुग्रीव and others were monkeys and not human beings; (8) विभीषण is still living or is a चिरजीविन्; (9) कुम्भकर्ण sleeps for six months and feels satiated only by eating one thousand buffalos. Those that are conversant with the Hindu version of the रामायण will see that except No. 2, all other beliefs have some sort of support in the various of Hindu रामायण. About No. 2, I have not come across any support for it. But before we proceed further we have to note a basic difference in the conception of personalities of राम

and लक्ष्मण with the Hindus and the Jainas. राम, according to Hindu version and the Jain version is the elder of the two sons, राम and लक्ष्मण, of दशरथ; but राम who is the eighth बलदेव of the Jainas, has white complexion as against the dark complexion according to Hindus. On the other hand, लक्ष्मण who is the eighth वासुदेव of the Jainas, has dark complexion as against white complexion according to Hindus. Besides लक्ष्मण, being a वासुदेव with the Jainas, kills रावण who is a प्रतिवासुदेव with them. Other differences in the two versions will be noted as we proceed. 11*a*—*b* All Jain versions known to us say, as here, that व्यास and वाल्मीकि are responsible for creating wrong notions about the personalities of रामायण. It is clear from this statement that Jain poets, one and all, who tried their hands on the story of रामायण, have been acquainted with the versions of व्यास and वाल्मीकि, and think that they gave an altogether new interpretation of the lives of राम and लक्ष्मण.

4. 2—13 These lines mention the तृतीयभव of राम and लक्ष्मण. In the city of रत्नपुर in the मलयदेश, there was a king named प्रजापति. His queen, कान्ता by name, gave birth to a son who was called चन्द्रचूल (who is destined to be लक्ष्मण subsequently). विजय, the son of the king's minister, was a friend of चन्द्रचूल.

5. 5*b* कलहस्स ण चारुकरिणीइ, like a young elephant (कलह, कलभ) born of a beautiful she-elephant. A marchant named गोत्तम h d a son, श्रीदत्त by name, by his wife वैश्रवणा. This श्रीदत्त was married to कुबेरदत्ता, daughter of कुबेर. 10*b* ती सणिहा का कुबेराइदत्ताइ what lady (ती, स्त्री) is comparable (सणिहा, सनिभा) to कुबेरदत्ता in beauty? चन्द्रचूल carried off this कुबेरदत्ता by force.

8. 4*a* सिसु चवंति गहिर, the two boys, चन्द्रचूल and विजय said in deep voice, i.e., full of repentance. These two were destined to be लक्ष्मण and राम in their third subsequent birth.

9. 9*a* भइरहसें, rashly, in haste.

10. 4*b* बालरिसि, the young monks चन्द्रचूल and विजय. Of these चन्द्रचूल formed a निदान on seeing सुप्रभबलदेव and पुरुषोत्तम वासुदेव to enjoy prowess similar to theirs. 9—10 विजय was born in the सनत्कुमार heaven and was called सुवर्णचूल, and चन्द्रचूल was born in the कमलप्रभ विमान and was named मणिचूल.

11. 11 कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ, although king दशरथ (णाहु) was a friend (बन्धु) to the whole earth, he was not a seat or soucre (आयर, आकर) of faults (दोस, दोष) like the moon who is a friend of night lotuses (कुवलय) and is the maker of night (दोषा).

12. Note that राम (in former births विजय and सुवर्णचूल) is the son of king दशरथ of वाराणसी (and not of अयोध्या) by his queen सुबला (and not कौसल्या) and that the day of his birth is फाल्गुनकृष्णत्रयोदशी, मघा नक्षत्र (and not चैत्रशुक्ल नवमी); and that लक्ष्मण (in former birth चन्द्रचूल and मणिचूल) is the son of कैकेयी (and not of सुमित्रा) and is born on माघ शुक्ल प्रतिपद्, विशाखानक्षत्र. It is only subsequently that king दशरथ went over to अयोध्या as metioned in 14. 6*b* below.

16. 1*a* जं जुजिवि सग्गहु सयरु गउ, king सगर went to heaven by performing a sacrifice. According to Jain version of the story of सगर, there is no mention of this sacrifice. 5*b* सिसु i.e. राम

20. 10 पिंगलु, i.e., मधुपिंगल, the son of तृणपिंगल and अतिथिदेवी. In 22. 3*b* he is called पिंगदिट्ठ.

28. 10*a* णारउ अय जव तिवरिस चवइ, नारद says that अज means the जव (यव) corn three years old. This is the famous explanation of अज (goat) according to Jainas.

33. 8—9 These lines mention गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श etc., as meritorious acts according to superstitious beliefs; but the poet says that if they secure merit, a bull who touches the body of the cow and the crow that sits on the पिप्पल tree would be gods.

## LXX

1. 11 *a—b* ए अट्ठम, these two sons of yours are the eighth बलदेव and वासुदेव, as I heard in the पुराणs and will occupy a place among the शलाकापुरुषs.

2. This कडवक and the two following give the history of the past life of रावण. There was in the city of नागपुर a king called नरदेव. He renounced the world and practised penance. On seeing a विद्याधर he formed a निदान that he should have the fortune similar to that विद्याधर. He was then born as a god in the सौधर्म heaven. King सहस्रग्रीव of the city of विद्याधरs, got somehow displeased with his relatives, quarrelled with them and shifted to त्रिकूटगिरि. There he built the city of लंका. After him came शतग्रीव and पञ्चाशद्ग्रीव. His son was पुलस्ति whose wife मेघलक्ष्मी gave birth to दशग्रीव. He married मन्दोदरी, the daughter of मय.

6. 7*a—b* The line means that मणिवती got disturbed in her meditation on the बीजाक्षरमन्त्र, and thought that दशग्रीव, though a विद्याधर, had characteristics (चिन्ह, चिह्न) of a demon. 8*a—b* मणिवती formed a निदान that he should be her father in her next birth, carry her off in the forest and die on her account. This मणिवती becomes सीता in her next birth.

8. 1*b* तें होतें होसइ अवर धूय, if दशग्रीव is alive, you (मन्दोदरी) will have another daughter. मारीच asked मन्दोदरी to abandon सीता as she was destined to bring calamity on the family.

9. 11 रामणरामहं णाइ कलि, a source of quarrel between रावण and राम.

12. 3*a* ससुरणयरु, i.e., मिथिला, the city of राम's father-in-law.

13. 9*a* अवराउ सत्त कण्णाउ, Over and above सीता, राम was married to seven other girls. 10*a* लक्ष्मण was married to sixteen girls. Note that राम in the Jain mythology has eight wives and not one.

16. 6*b* जाणेवा (ज्ञातव्या). For this form see हेमचन्द्र iv. 438.

## LXXI

1. 1 कहिं त भंडणु एम भणंतु जि संचरइ, नारद wanders over the earth finding out places where there is, or has a chance of, a quarrel. This characteristic of नारद is well-known to Hindu Mythology. Here he is approaching रावण to start the quarrel.

2. 6*b* पर पइं जिणिवि एक्कु जसु ईहइ, but one, i.e., राम, desires to obtain fame by conquering you.

5. 6*a* सेलसिहरसंचालणचंडहिं, with my arms, terrific in shaking the mountain peaks. This is a reference to the belief that रावण shook the कैलास mountain with his arms.

6—10. These कडवकs refer to the description of the characteristics of ladies as mentioned in कामसूत्र of वात्स्यायन.

11. 7*a* चंदणहि (चन्द्रनखी), otherwise known as शूर्पणखा.

15. 2*a* बउलु परिक्खइ णियतणुगंधें, a lady compares the scent of बकुल flower to see if it is similar to the scent of her body. 11*a* सपहि एह वि बोल्लण सीली, now in this spring, this (cuckoo) also has become talkative.

18. 2*a* कंचुइ होएप्पिणु, assuming the form of a कंचुकिन् or rather कञ्चुकिनी an old lady.

20. 1*a* विहववत्तणि पुणु सिरु मुंडेव्वउं. It appears that Jainism recommends the shaving of the head by widows.

## LXXII

1. 1 मुक्कदेसजइसजमु, abandoning the restraint which a householder (देसजइ, देशयति, गृहस्थ) should practise, namely स्वदारसंतोष रावण now starts in his पुष्पकविमान to carry off सीता against the rules of a Jain householder, for सीता is not his wife. He is not still aware of the fact that सीता is his own daughter. 19 दिट्ठउ तेल्लु etc. रावण saw there the forest and also one more thing, viz., the bloom of youth of सीता. The next कडवक compares these two in similar terms.

4. A fine description of the movements of an antilop.

5. 5*a* कसणवाससोहियणियअंगो, who wore a blue or dark garment. बलदेव is called नीलाम्बर in Hindu as well as in Jain Mythology.

8. 11-12 These lines mean : If I (रावण) touch this lady who is now helpless but chaste, the lore which enables me to move through the air (अम्बरचारिणी विद्या) will go away from me. रावण was unwilling to dally with the unwilling सीता, as in that case he would lose all the prowess he had.

12. 4-6 These lines mention that रावण became an अर्धचक्रिन् about the time of the arrival of सीता at लंका.

## LXXIII

1. 3 एत्तहि etc. Three things occurred simultaneously, viz., राम followed the deer in the forest, सीता was carried off, and the attendents of सीता were filled with grief on her account.

2 3*b*—6*b* It appears that the Jain society recommends the wearing of red-coloured saris for widows, breaking of bracelets, and not wearing ornaments like a necklace.

5. 9*a* Acccrding to the Jain version, दशरथ is still living when सीता was carried off by रावण. He saw a dream just at that moment that रोहिणी, the consort of the moon, was carried off by राहु, which dream indicated that a similar calamity had befallen राम,

6. 11*a* जणद्दणेण, by लक्ष्मण.

7. 4*a* बेण्णि खग, i. e., सुग्रीव and हनूमत् who were विद्याधरs and not monkeys.

8. 6*b* हनूमत् is in Jain Mythology the 20th कामदेव and hence he is mentioned as मयरकेउ (मकरकेतु) and by its synonyms. Compare 25. 9*b* below.

10. 3*a* सेस लेवि, having taken the शेषा, i. e., flowers etc, offered to the deity. When a devotee visits a temple, he takes home with him some portion of the निर्माल्य or ashes or some article dedicated to the deity.

15. 2 पावणि, i. e., हनूमान्. 12 सुवण्णभिंगारयहु खप्परु दिण्णउ ढंकणु, broken earthen plate is placed as a cover to close the mouth of a golden vessel. भिंगार is भृंगार, known as झारी in Marathi.

22. 12*a* ओलक्खिय पयजुयलछणेण, मन्दोदरी recognised सीता as her daughter by signs or marks on her feet.

24. 13*b* वाणरायारु, हनूमत् who was a विद्याधर, assumed the form of a monkey and stood before सीता. This explains, according to Jain Mythology, the reason for the belief that हनूमत् was a monkey.

26. 8*b* गूढइ अहिणाणवयाइ देमि, I shall mention certain very confidential happenings between you and राम so that you will recognise me to have come from him. This अभिज्ञान is supplied in the following lines of this कडवक and a few lines of the next कडवक.

28. 10*a*-*b* णियकुलु वि etc. When fire burns its own race, i. e. trees or wood from which it is born. how can it forgive its enemy, i. e , water ? Water is heated by fire on this account.

29. 13*b* ण दहमुहरमणहु कोसपाणु, as if सीता swore that she would never dally with रावण. कोशपान is a शपथ or दिव्य, ordeal, which one solemnly undertakes. Compare गाथासप्तशती, 448, सज्झासमए जलपूरिअजलि विहडिएक्कवामअरं, गोरीअ कोसपाणुज्जअं व पमहाहिव णमह.

## LXXIV

4. 16 जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो ज्जि धवलु, हनूमत् was again askedto go to लंका as a दूत, and the poet humourously compares him to a bull (धवल) that is yoked to a cart a second time. According to Hindu Mythology अंगद was the दूत of राम.

6. 4*b* तिण्णि वि एयउ, i. e., श्रीः, सीता and वसुधरा (पृथ्वी) as mentioned in 5. 11 above, and 13. 9*b* below.

8. 15 वलइयउच्छुधणु, God of love bears a low made of sugar-cane.

15. 3*b* रत्तउ हयगीउ सयंपहहि, a reference to अश्वग्रीव the first प्रतिवासुदेव who made love to स्वयंप्रभा and was killed by त्रिपृष्ठ the first वासुदेव of the Jain Mythology.

16. 7*a* णील, one of the friends of सुग्रीव; *b* कुमुय, another friend of सुग्रीव. 9 and 10 mention कुन्द and नल who are allies of सुग्रीव.

## LXXV

1. 8*b* णिकुंभु कुंभु, names of रावण's followers.

2. 9*b* महु समउ खगाहिउ एउ ताव, Let first वालि (खगाहिउ) come with me to लंका. 10*b* करिवरु महामेहक्खु देउ, Let him give me the excellent elephant called महामेघ.

3. 7*b* अणउत्तु वि, even though it is not expressly said.

4. 1*b* एक्कु जि सिहि अण्णु जि वायवेउ, there is already one calamity, viz., fire, and to add to it there comes the gust of wind. 12 मइं कुइइ, when I am angry.

6, 10*b* किक्किकिलिपुरिंदु, the lord of the किलिकिलिपुर. i. e., वालि.

9. 2*b* एवड्डु फुरणु, such valour or activity.

## LXXVI

2. 6*b* अज्जु कल्लि ढुक्कइ, will reach this place (लंका) today or tomorrow. 8*a* विणविवसु, रावण was born in the विद्याधर race founded by विनमि (विणवि) who was the brother of नमि.

3. 5*a* वज्जावत्तसरासणहत्थहु, The name of the bow of राम is वज्रावर्त. 9*a* पंचयण्णु, the conch पांचजन्य of वासुदेव, here of लक्ष्मण. 14 कुंभयण्णु महु बीयउ, रावण says to बिभीषण that if बिभीषण leaves him, he (रावण) will have कुम्भकर्ण to help him.

4. 5*a* तणुसीयइ, by a blade of grass one cleanses one's teeth. The form तणु for तृण is irregular.

6. 10*a* वाणरविज्जइ वाणर होइवि, All विद्याधरs assumed the form of monkeys and then visited लंका.

9. 9*a* गमणे जासु होइ काली गइ. fire, the movements of which leave a black passage or smoke. अग्नि is often called धूमध्वज.

## LXXVII

2. 8*b* चंदहासु, the sword of रावण. 14 अम्हइं बलवंतइं हरिबलहं तसहुं, we are afraid of हरि (लक्ष्मण) and बल (राम) who are very strong.

3. 13 विहुरि वि धीरु, रावण was full of courage (धीर) even in adversity (विहुरि, विधुरे सति, संकटकाले सति).

6. 1 भुवणुत्तरंडिणिवणे किं हुओ णिग्घोसो, Is there a noise of falling of worlds standing one upon the other ? There are several भुवनs which stand one upon the other and thus form an उत्तरंडि, उतरंड, as it is called in Marathi. 6*b* वइवसु, god of death (यम).

9. 5-17 A fine description of the dust raised by the fight.

13. 5*a* असिणिहसणसिहिजालउ, flames of fire produced from the clashing of swords. 13*b* सीसक्कें सहु सिरु, head along with the crown or cap (शिरस्त्राण).

## LXXVIII

1. 2 कण्हु, कृष्ण, i. e, लक्ष्मण who has a dark complexion. 15*a-b* विजयपर्वत् and अंजनगिरि are the names of elephants of लक्ष्मण and राम. See also 3. 4*b* and 3. 11*a* below.

5. 11*a-b* पइं समुंइ etc. A warrior says to another warrior, "You have given your head (as capital) in paying the debt of your master, and are using your blood as interest on the capital."

8. 3*a* घरियलोह तेण जि ते गुणचुय, the arrows are घरियलोह, i. e., have an iron edge or have greed (लोह, लोभ) and therefore they are गुणचुय, discharged by bow-string (गुण) or are destitute of virtues (गुण).

9. 21 ओत्थरिउ, arrived on the scene.

10. 14 बोल्लिउ पालेसमि, I shall keep my word.

11. 3*b* सखार, jarring words, words mixed with salt as it were. Compare क्षते क्षारनिक्षेपणम्.

13. 8*b* धीर पउम, राम who had a white complexion simiar to that of a white lotus is called पउम (पद्म) and पुराणs describing his story are called पद्मचरित, पद्मपुराण etc.

14. 8*a-b* तल्लरजलि etc. The line records two popular sayings that in a small lake a crab is called a जलचर although the term means मकर, while in a place where there are no trees, एरण्ड becomes a big tree Compare: निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते.

15. 1 बेण्णि वि पीयवास, Both रावण and लक्ष्मण wore yellow garments. In Hindu mythology कृष्ण is called पीताम्बर.

16 6*a* वीसपाणि, i. e , रावण, although रावण according to Jain Mythology had only two arms, still he is called वीसपाणि owing to the influence of Hindu Mythology.

18. 1 महुमहणमहासुहडे, on the great warrior who killed मधु Note there are two प्रतिवासुदेवs, viz., मधु and मधुसूदन or महसूयण.

20. 14 भडभालविणिहयइ...भवियव्वक्खरइ, writings about she future of warriors which were written on their forehead. 15 जाइवि (याचित्वा), having obtained by begging.

21. 7*b* अंगुलियउ भजइ राहवि, cracking of fingers on some one indicates disrespect for him. बोटें मोडणे is found in modern Marathi. 13*a* कण्णावरु इहु णाहु महारउ, this husband of mine has married me when I was quite young; so our love is unbroken, Compare : य. कौमारहर: स एव हि वर:.

23. 4*a* अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ, today the goddess of learning (सरस्वती) will not remember or recite the शास्त्र, owing to the death of रावण. रावण is know for his learning. In Hindu Mythology he is the son of a famous sage पुलस्त्य who is a Brahmin.

24. 3*a* णारउ णाउ आउ णासणविहि, It was not नारद who arrived (and induced your mind to carry off सीता), but it was your destiny bringing death upon you that had come. Note that रावण made up his mind to carry off सीता on the mischievous advice of नारद. 12 *a* कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउ, even hard adamant (वज्र) was bored by insects. Death of रावण from the hand of लक्ष्मण is an unexpected as the boring of वज्र by insects.

25. 1 दहमुहु तुहुं, राम says to विभीषण that he should now take the place of दशमुख (रावण). 6*b*-12*b* These lines describe the removal of the dead body of रावण, on a palanquin decked by columns of plantain trees, with umbrella held over it.

29. 3*b* मेल्लिवि पउमु काहु सुयणत्तणु, who but राम is so noble ?

## LXXIX

2. 11*b* संउणंदयासि, a sword called सौनन्दक because it was a gift from सौनन्दवन. Of the seven gems which a वासुदेव as अर्धचक्रिन् possesses, sword is one and it is called सौनन्दक as the गदा is called कौमोदकी. According to Jain Mythology वासुदेवs and बलदेवs have seven and four marks respectively. They are given in the following verses :

असि: शंखो धनुश्चक्रं शक्तिर्दण्डो गदाभवत् ।
रत्नानि सप्त चक्रेशो रक्षितानि मरुद्गणै: ।।
रत्नमाला हलं भास्वद्रामस्य मुशलं गदा ।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भाविनिर्वृते: ।।

गुणभद्र—उत्तरपुराण-62. 148-149.

3. 8*a* तहिं होंतउ गउ, he went fiom that place. Note the use of होंतउ with तहिं rather than तहां. Compare हेमचन्द्र, iv. 355.

6. 10*b* को णारउ को सुरविमाणि, who will, in that case, be born in hell and who will be bron in heaven ? 12 जइ खणि खणि जि खउ etc. This is the famous doctrine of क्षणिकत्व of the Buddhists. सयबुद्धें, by self-enlightened Buddha

9. 6-9 These lines tell us that राम had eight sons विजयराम and others, and लक्ष्मण had several, पृथ्वीचन्द्र and others, from his wife पृथिवी.

11. 4*a* लच्छीहरयि, in the body of लक्ष्मीधर, i. e., लक्ष्मण.

## LXXX

9. A fire desription of the Rainy Season.

16. 7*b* रण्ण व रविहिं, the name of the sun is रण्ण or as. T says रन्नादेवी.

# अँगरेजी टिप्पणियों का हिन्दी अनुवाद

### अड़सठवीं सन्धि

(2) 13 आने वाली मृत्यु की सूचना अथवा स्वर्ग से च्युत होना।

(9) 3b अनन्ततीर्थ या अनन्तनाथ का शासन (आम्नाय) जिसने अन्य आम्नायों को निरस्त या प्रभावहीन कर दिया।

### उनहत्तरवीं सन्धि

(1) 2 वासुदेव और बलराम के गुणों की स्तुति के लिए जो रामायण काव्य हुआ। रामायण वासुदेव (लक्ष्मण) और हलधर (राम) के गुणों और विशेषताओं का गौरवीकरण है। 4a भरत के द्वारा आकर्षित मैं निर्वाह करूँगा। मैं (कवि) अपने आश्रयदाता भरत की इच्छाओं को पूरा करना चाहता हूँ। 5a मेरे पास कुछ भी सामग्री नहीं। मेरे पास साधन और सुविधाएँ नहीं हैं कि मैं वह कार्य पूरा कर सकूँ। 7a कविराज स्वयंभू। (महान् कवि स्वयंभू) जिन्होंने हजारों मित्रों की सहायता से राम के इतिवृत्त पर काव्य की रचना की। 8a चतुर्मुख, महाकवि चतुर्मुख जैसा कि स्वयंभू कवि का नाम बतलाया है। चतुर्मुख यानी चार मुखवाला। 9a मेरा एक मुँह है वह भी खंडित है। कवि पुष्पदंत कहता है कि उसका एक ही मुख है जब कि चतुर्मुख के चार मुख थे। इतने पर भी मेरा यह मुख खंडित है। एक अन्य जगह पुष्पदंत ने स्वयं को खंडकवि कहा है और लिखा है कि उनका मुख वक्र (टेढ़ा) था। 13 सुकवियों द्वारा प्रकाशित मार्ग पर, उस मार्ग पर जिसे चतुर्मुख स्वयंभू जैसे कवियों ने आलोकित किया है। मार्ग यानी सेतु जो वानर यानी हनुमान् द्वारा निर्मित है।

(3) 3-10 ये पंक्तियाँ रामायण में आए पात्रों के बारे में विचित्र विश्वासों या धारणाओं का वर्णन करती हैं। राजा श्रेणिक गौतम इन्द्रभूति से पूछता है कि वह इनके बारे में सच बात बताए। ये हैं— (1) रावण (दशमुख) के दस मुँह थे। (2) पुत्र इंद्रजित् उम्र में अपने पिता से बड़ा था। दूसरे शब्दों में इन्द्रजित् यद्यपि रावण का पुत्र था, परन्तु उससे पहले पैदा हुआ था। (3) रावण मनुष्य नहीं, राक्षस था। (4) उसकी बीस आँखें और बीस हाथ थे, और यह कि वह शिव की उपासना अपने सिरों से करता था। (5) रावण राम के तीरों से मारा गया। (6) श्रीरमण (लक्ष्मण) के हाथ लंबे और स्थिर थे, झुकते नहीं थे। (7) सुग्रीव और दूसरे बन्दर थे, वे मनुष्य नहीं थे। (8) विभीषण अब भी रह रहा है, या वह चिरंजीवी है। (9) कुम्भकर्ण छह माह सोता है और एक हजार भैंसे खाकर उसकी भूख शान्त होती है।

जो हिन्दू रामायण से परिचित हैं वे पाएंगे कि क्रमांक 2 को छोड़कर, हिन्दू रामायण का दूसरी धारणाओं में काफी कुछ समर्थन है। लेकिन क्रमांक 2 में इस प्रकार का कोई समर्थन मेरे देखने में नहीं

आया। परन्तु आगे बढ़ने के पहले यह नोट कर लेना जरूरी है कि जैनों और हिन्दुओं की रामायणों में राम और लक्ष्मण के चरित्रों के बारे में मूलभूत अन्तर यह है कि दशरथ के दो बड़े बेटे थे राम और लक्ष्मण। परन्तु राम का, जो जैनों के आठवें बलभद्र हैं, रंग गोरा था जबकि हिन्दू परम्परा मे वे श्याम वर्ण के थे। इसी प्रकार हिन्दू परम्परा के गौर वर्ण लक्ष्मण का, जो जैनो के आठवें वासुदेव हैं, जैन परम्परा के अनुसार रंग श्याम था। इसके सिवा, जैनों के अनुसार वासुदेव होने के कारण लक्ष्मण ने प्रतिवासुदेव रावण का वध किया, राम ने नहीं। रामायण के दोनों वर्णनों की भिन्नता मालूम होती जाएगी जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाएँगे। 11a-b हमें ज्ञात सभी जैन वर्णन बताते हैं कि व्यास और वाल्मीकि ही, रामायण के पात्रों के बारे में गलत धारणाएँ फैलाने के लिए उत्तरदायी हैं। इस कथन से यह स्पष्ट है कि सभी जैन कवि, जिन्होने रामायण के कथानक पर काव्य की रचना का प्रयास किया है, रामायण और व्यास के कथानकों से परिचित हैं, और वे सोचते है कि उन्होंने राम और लक्ष्मण के जीवन को एक दम नया रूप प्रदान किया है।

(4) 2-13 ये पंक्तियां राम और लक्ष्मण के तीसरे भव का वर्णन करती हैं। मलयदेश में रत्नपुर नगर है। उसमें प्रजापति नामक राजा था। उसकी रानी कांता ने एक पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम चन्द्रचूल था (जो आगे चलकर लक्ष्मण के रूप में होने वाला है)। विजय, जो राजा के मंत्री का पुत्र है, चन्द्रचूल का मित्र था।

(5) 5b जैसे सुन्दर हथिनी से जन्मा हाथी का बच्चा, एक सुन्दर युवा हाथी। एक गौतम नामक व्यापारी उसकी पत्नी वैश्रवणा से श्रीदत्त नाम का पुत्र था, श्रीदत्त का विवाह कुबेरदत्ता से हुआ जो कुबेर की कन्या थी। 10b कुबेरदत्ता के समान कौन स्त्री थी? कुबेरदत्ता से कौन स्त्री तुलनीय थी सुन्दरता में? चन्द्रचूल ने बल से कुबेरदत्ता का अपहरण कर लिया।

(8) 4a दोनों बालकों (चन्द्रचूल और विजय) ने गंभीर ध्वनि में कहा—पश्चाताप के स्वर में। ये दोनों तीसरे जन्म में लक्ष्मण और राम होने वाले हैं।

(9) 9a तेजी से या जल्दी में।

(10) 4b छोटे मुनि (चन्द्रचूल और विजय)। इनमें से चन्द्रचूल ने, सुप्रभ बलदेव और पुरुषोत्तम वासुदेव का वैभव देखकर यह निदान किया : मैं भी उनके समान शक्ति को प्राप्त करूँ। 9-10 विजय सनत्कुमार स्वर्ग में उत्पन्न हुआ जहाँ उसका नाम सुवर्णचूल था। चन्द्रचूल कमलप्रभ विमान में उत्पन्न हुआ और उसका नाम मणिचूल हुआ।

(11) यद्यपि राजा दशरथ पूरी धरती के मित्र थे, लेकिन दोषों के आकर नहीं थे। चन्द्रमा के समान, जो कुमुदिनियों का मित्र होता है और रात्रि का जनक होता है।

(12) नोट कीजिए कि राम (पूर्व जन्म के विजय और स्वर्णचूल) वाराणसी के (अयोध्या के नहीं) राजा दशरथ के पुत्र हैं, जो सुबला रानी से (कौसल्या से नहीं), फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, मघा नक्षत्र (चैत्र शुक्ल नवमी नहीं) में हुए और लक्ष्मण (पूर्वजन्म का चन्द्रचूल और मणिचूल) कैकेयी का पुत्र है (सुमित्रा का नहीं) और माघ शुक्ल प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र में उसका जन्म हुआ। यह इसके अनंतर ही हुआ कि राजा दशरथ अयोध्या गये जिसका कि 14 (6b) में वर्णन है।

(16) 1a राजा सगर यज्ञ करके स्वर्ग पहुंचते हैं। सगर की जो कहानी जैनों में प्रचलित है, उसमें यज्ञ का उल्लेख नहीं है। 5b सिसु अर्थात् राम।

(20) 10 पिंगलु अर्थात् मधुपिंगल—तृणपिंगल और अतिथिदेवी का पुत्र।

(28) नारद अज का अर्थ तीन वर्ष का जौ (यव) करते हैं। जैनों के अनुसार यह अज का प्रसिद्ध अर्थ है।

(33) 8-9 ये पंक्तियां गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श आदि का वर्णन करती हैं, अन्धविश्वासों के अनुसार। परन्तु कवि का कहना है कि यदि ऐसे लोग पुण्य की योग्यता पाते हैं तो बैल जो गाय का स्पर्श करता है, और कौआ जो पीपल के पेड़ पर बैठता है, दोनों को देव होना चाहिए।

### सत्तरवीं सन्धि

(1) 11a-b ये तुम्हारे दोनों पुत्र आठवें बलदेव और वासुदेव हैं। जैसा कि मैंने पुराणों में सुना है, ये शलाकापुरुषों में स्थान पाएँगे।

(2) यह कड़वक और इसके बाद के दो कड़वकों में रावण की पूर्व जन्मों की कथा कही गई है। नागपुर नगर में नरदेव नाम का राजा था। उसने संसार का त्याग कर तपस्या की। एक विद्याधर को देखकर उसने निदान किया कि उसका भाग्य भी उस विद्याधर के समान हो। वह सौधर्म स्वर्ग में इन्द्र हुआ। विद्याधरों के नगर का राजा सहस्रग्रीव अपने संबंधियों से नाराज हो गया। वह झगड़ा करके, त्रिकूट पर्वत पर चला गया। वहाँ उसने लंका नगर का निर्माण किया। उसके बाद शतग्रीव आया, और तब पंचाशद्ग्रीव। उसका पुत्र पुलस्ति था, जिसकी पत्नी मेघलक्ष्मी ने दशग्रीव को जन्म दिया। उसने मंदोदरी से विवाह किया जो मय की कन्या थी।

(6) 7a-b इस पंक्ति का अर्थ है कि मणिवती विचलित हो गई जब वह बीजाक्षर मंत्र का ध्यान कर रही थी। उसने सोचा कि रावण यद्यपि विद्याधर है, राक्षस के चिह्न रखता है। 8a-b मणिवती ने यह निदान किया कि वह अगले जन्म में उसका पिता हो। वह उसे जंगल में ले जाए, और वह उसके कारण मृत्यु क प्राप्त हो। यही मणिवती अगले जन्म में सीता बनती है।

(8) 1b उसके होने पर दूसरी कन्या होगी। यदि रावण जीवित रहता है, तुम्हें (मन्दोदरी को) दूसरी कन्या होगी। मारीच ने सीता के परित्याग की बात कही क्योंकि उसके कारण परिवार पर निश्चित रूप से संकट आएगा।

(9) 11 राम और रावण के बीच कलह का कारण।

(12) 3a राम के ससुर का नगर मिथिला।

(13) 9a राम ने सात दूसरी कन्याओं से विवाह किया, 10a लक्ष्मण ने सोलह दूसरी कन्याओं से विवाह किया। ध्यान दीजिए, जैन पौराणिक परंपरा में राम की एक नहीं, आठ पत्नियां थीं।

(16) 6b जाणेवा (ज्ञातव्या) इस रूप के लिए देखिए हेमचन्द्र iv. 438.

### इकहत्तरवीं सन्धि

(1) नारद धरती पर परिभ्रमण करते हैं—यह जानने के लिए कि कहीं लड़ाई हो रही है या लड़ाई होने का अवसर है। नारद की यह विशेषता हिंदू पौराणिक परंपरा में ज्ञात है। यहाँ वह लड़ाई कराने के लिए रावण के पास पहुँच रहा है।

(2) 6 b परन्तु एक अर्थात् राम यश प्राप्त करना चाहते हैं आपको जीतकर।

(5) 6a अपनी भयंकर भुजाओं से, जो पर्वत-शिखरों को हिला सकती हैं। यह संदर्भ उस विश्वास से संबद्ध है कि रावण ने कैलाश पर्वत को हिला दिया था है अपनी भुजाओं से।

(6-10) यह कड़वक वात्स्यायन कामसूत्र के अनुसार स्त्रियों की विशेषताओं का वर्णन करता है।

(11) 7a चन्द्रनखी या फिर शूर्पणखा।

(15) 2a एक स्त्री बकुल की गंध की तुलना करती है कि क्या वह उसकी देह की गंध के समान है। 11a इस वसंत में कोयल भी बातूनी हो गई है।

(18) 2a कंचुकी के रूप को धारण करते हुए। या फिर कंचुकिनी—एक वृद्धा।

(20) 1a इससे लगता है कि जैनधर्म भी विधवाओं के सिरों के मुण्डन का अनुमोदन करता है।

## बहत्तरवीं सन्धि

(1) 1 उन प्रतिबंधों का परित्याग करते हुए, जिनका गृहस्थ को पालन करना चाहिए। जैसे स्वदारसंतोष। रावण अब सीता को पुष्पक विमान में ले जाता है। यह जैन गृहस्थ धर्म के प्रतिकूल है, क्योंकि सीता इसकी पत्नी नहीं है। उसे अभी तक इस तथ्य की जानकारी नहीं है कि सीता उसकी लड़की है। 1a रावण ने देखा कि यहां वन है, और भी एक चीज—सीता के यौवन का पुष्प। अगले कड़वक में इन दोनों की तुलना है।

(4) हिरण की गति का एक सुन्दर चित्रण है।

(5) 5a जो नीले या काले वस्त्र पहनते हों। बलदेव नीलाम्बर कहे जाते हैं, जैन और हिंदू—दोनों पुराणों में।

(8) 11-12 इन पंक्तियों का अर्थ है कि यदि मैं (रावण) इस स्त्री को छूता हूँ, जो असहाय है पर शील संपन्न है तो वह विद्या जो मुझे आकाशतल में घुमाती है, छोड़ देगी। सीता की इच्छा के विरुद्ध रावण कुछ नहीं करना चाहता था क्योंकि ऐसी स्थिति में विद्या उसे छोड़ देती।

(12) 4-6 ये पंक्तियां बताती हैं कि रावण अर्धचक्रवर्ती है।

## तिहत्तरवीं सन्धि

(1) 3 तीन चीजें एक साथ हुईं—राम ने वन में मृग का पीछा किया, सीता का अपहरण हुआ, और सीता की रक्षा करने वालों को गम्भीर दुख हुआ सीता के अपहरण के कारण।

(2) 3b-6b ऐसा प्रतीत होता है कि जैन समाज अनुमोदन करता था कि विधवा स्त्री को लाल साड़ी पहनना चाहिए, चूड़ियां फोड़ देना चाहिए और हार बगैरह नही पहनना चाहिए,।

(5) 9aजैन पुराणों के अनुसार, दशरथ जीवित हैं, जब रावण के द्वारा सीता का अपहरण किया जाता है। दशरथ ठीक उसी समय एक स्वप्न देखते हैं कि चन्द्र की प्रेमिका रोहिणी को राहू ले जा रहा है। इससे यह सकेत मिलता है कि राम पर भी इस प्रकार का संकट आना चाहिए।

(6) जनार्दन अर्थात् लक्ष्मण के द्वारा।

(7-8) 4a सुग्रीव और हनूमत् जो कि जैन विद्या के अनुसार विद्याधर थे, वानर नहीं। हनूमत् बीसवें कामदेव हैं। इसलिए उसका वर्णन मकरकेतु के रूप में है।

(10) 3a फूल आदि लेकर प्रतिमा को अर्पित किए। जब भक्त मंदिर जाता है, तो वह उसका

थोड़ा भाग अपने साथ घर ले जाता है, निर्माल्य का भाग जो प्रतिमा को अर्पित किया जाता है।

(15) 2 जैसे स्वर्णभांड पर खप्पर का ढक्कन दिया जाए। भिंगार भृंगार झारी के रूप में ज्ञात है।

(22) 12a मंदोदरी ने सीता को अपनी कन्या के रूप में पहचान लिया उसके पैरों के चिह्नों से।

(24) 13b हनुमत् ने, जो विद्याधर था, वानर का रूप धारण कर लिया और सीता के सामने खड़ा हो गया। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि जैन पुराण विद्या के अनुसार, यही कारण है कि जिससे हनुमान् को वानर समझा गया।

(26) 8b मैं आपके और राम के बीच की गुप्त बातें बताऊँगा जिससे आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं राम की तरफ से आया हूँ। बाद की पंक्तियों में अभिज्ञान के कुछ चिह्न हैं, कुछ दूसरे कड़वक की पंक्तियों में हैं।

(28) 10a-b जब आग अपनी ही जाति को जला देती है, वृक्ष और लकड़ी कि जिनसे उसका जन्म होता है, तब यह अपने शत्रुओं को कब क्षमा करेगी ? यही कारण है कि आग जल को गरम करती है।

(29) 13b सीता प्रतिज्ञा करती है कि रावण के साथ समय नष्ट नहीं करेगी। कोशपान एक शपथ है, जिसे कोई गंभीरता से लेता है।

## बहुत्तरवीं सन्धि

(4) 16 हनुमान् से दूत बनकर फिर लंका जाने के लिए कहा गया। कवि व्यंग के साथ उसकी बल से तुलना करता है जिसे दुबारा गाड़ी में जोता गया हो। हिन्दू पुराण विद्या के अनुसार राम का दूत अंगद था।

(6) 4b अर्थात् श्री, सीता और वसुन्धरा (पृथ्वी)।

(8) 15 प्रेम के देवता कामदेव इक्षुदंड का धनुष रखते हैं।

(15) 3b अश्वग्रीव का संदर्भ जो पहला वासुदेव है जिसने स्वयप्रभा से प्रेम किया और जो प्रथम वासुदेव त्रिपृष्ठ के द्वारा मारा गया।

(16) 7a नील सुग्रीव के मित्रों में से एक था। b सुग्रीव का एक अन्य मित्र कुमुद था। कुन्द और नल सुग्रीव के ही नाम हैं।

## चवहत्तरवीं सन्धि

(1) 8b रावण के अनुयायियों के नाम।

(2) 9b पहले बालि को लंका आने दीजिए। 10b वह मुझे महामेघ नाम का हाथी दे।

(3) 7b तथापि दबाव से नहीं कहा गया।

(4) 1b एक आपत्ति पहले से है यानी आग और इसे बढ़ाने के लिए हवा की लहर आ रही है। 12 जब मैं क्रुद्ध होता हूँ।

(6) 10b किलकिलपुर का स्वामी यानी बालि।

(9) 2b शक्ति का इतना बड़ा विस्तार।

## छिहत्तरवीं सन्धि

(2) 6b आजकल में यह लंका पहुँचेगा। रावण विद्याधर जाति में उत्पन्न हुआ था जो नमि के भाई विनमि को प्राप्त हुआ।

(3) राम के धनुष का नाम वज्रावर्त था। 9a लक्ष्मण के के धनुष का नाम पांचजन्य था। 14 रावण विभीषण से कहता है कि यदि विभीषण उसे छोड़ देता है तो वह(रावण)कुम्भकर्ण की सहायता लेगा।

(4) 5a तृण की सीक से कोई अपने दांतों को साफ करता है। तृण के लिए तणु, तणु प्रयोग अनियमित है।

(6) 10a सब विद्याधरों ने वानर का रूप बनाया और तब लंका की सैर की।

(9) 9a अग्नि जिसकी गति काली धूम्र रेखा का विसर्जन करती है अर्थात् धूम्रध्वज।

## सतहत्तरवीं सन्धि

(2) 8b चंदहासु—रावण की तलवार। 14 हम हरि (लक्ष्मण) और बल (राम) से डरते है। वे बहुत शक्तिशाली हैं।

(3) 13 रावण संकटकाल मे भी पूरा धैर्य बनाए रखता था।

(6) 1 क्या यह एक के ऊपर एक गिर रहे भुवनो की आवाज है? ऐसे कितने ही भुवन होते है जो एक के ऊपर एक आधारित हैं जिसे मराठी में उतरंड कहा जाता है। 6b वइवसु—यम।

(9) 5-17 युद्ध से उठी हुई धूलि का एक सुन्दर चित्रण।

(13) 5a तलवारो के परस्पर घर्षण से निकलती हुई चिंगारियाँ। 13b शिरस्त्राण।

## अठहत्तरवीं सन्धि

(1) 2 कृष्ण अर्थात् लक्ष्मण जिनका रग काला है। 15a-b विजयपर्वत और अजनगिरि, लक्ष्मण और राम के हाथियों के नाम हैं।

(5) 11a-b एक सैनिक दूसरे सैनिक से कहता है, तुमने अपने स्वामी का ऋण चुकाने में अपना सिर दे दिया है और अपना रक्त उसका व्याज चुकाने में दे रहे हो।

(8) 3a तीर लोह या लोभ धारण करते हैं इसीलिए वे डोरी से च्युत अथवा गुणों से च्युत होते हैं।

(9) 21 दृश्य पर उपस्थित हुआ।

(10) 14 मैं अपने शब्दों पर कायम रहूँगा।

(11) 3b कटु शब्द खार युक्त। तीखे शब्द।

(13) 8b राम जिनका रंग गोरा है, सफेद पद्म के समान। इसलिए वे पद्म कहलाए। उनके चरित का वर्णन करने वाले पुराणचरित कहलाये पद्मचरित, पद्मपुराण आदि।

(14) 8a-b यह पंक्ति दो कहावतों को अंकित करती है—झील में कर्कट भी जलचर कहलाता है यद्यपि इसका अर्थ मगर है। जहाँ वृक्ष नही होते वहाँ एरंड भी बड़ा पेड़ कहलाता है।

(15) 1 रावण और लक्ष्मण दोनों के पीतवसन हैं। हिन्दू पुराणो मे कृष्ण को पीताम्बर कहा गया है।

(16) 6a वीसपाणि अर्थात् रावण। यद्यपि जैन पुराणों के अनुसार रावण के दो हाथ हैं फिर भी उसे बीस हाथों वाला कहा जाता है। यह हिन्दू पुराणों का प्रभाव है।

(18) 1 उस वीर योद्धा पर जिसने मधु को मारा। नोट कीजिए, प्रतिवासुदेव दो हैं—मधु और मधुसूदन।

(20) 14 योद्धाओ के भविष्य के बारे मे लिखते हुए जो कि उनके मस्तिष्क पर लिखा हुआ था। 15 जाइवि—यह उसने माँगकर प्राप्त किया है।

(21) 7b अंगुलियों को तोड़ना किसी पर उसके प्रति अनादर को सूचित करता है। बोटें मोडणें—यह प्रयोग आधुनिक मराठी में मिलता है। 13a मेरे इस पति ने मुझसे उस समय विवाह किया जब मैं बिलकुल छोटी कन्या थी। तुलना कीजिए —'यः कौमारहरः स एव हि वरः···'।

(23) 4a आज सरस्वती, विद्या की देवी, शास्त्रों को याद नही करेगी या उनका वाचन नहीं करेगी, रावण की मृत्यु के कारण। हिंदूपुराणों के अनुसार रावण पुलस्त्य का पुत्र था। पुलस्त्य ऋषि ब्राह्मण थे।

(24) 3a वह नारद नही था जो आ पहुँचा, वह तो दुर्दैव था जो तुम्हारे ऊपर मौत लाया था। (नारद ने रावण को सीता की प्राप्ति के लिए भड़काया।) रावण ने नारद की कपटपूर्ण सलाह से ही सीता के अपहरण का निश्चय किया था। 12a घुन के द्वारा वज्र भी जीर्ण हो गया। लक्ष्मण के हाथों रावण की मौत उसी तरह असभव लगती थी जिस प्रकार घुनों से वज्र का काटा जाना।

(25) 1 तुम्हें दशमुख का स्थान ग्रहण करना चाहिए। 6b-12b इन पंक्तियों मे रावण की शव-यात्रा का वर्णन है।

(29) 3b राम के सिवा और कौन उदार है ?

### उन्यासीवीं संधि

(2) 11b तलवार का नाम सौनदक है, क्योंकि वह सौनंदयक्ष का दान है। अर्द्धचक्री वासुदेव के सात रत्नों में से एक तलवार भी है जिसे सौनन्दक कहते हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गदा को कौमोदकी। जैन पुराणों में वासुदेव और बलदेव के क्रमशः सात और चार चिह्न होते हैं। गुणभद्र के 'उत्तरपुराण' (62/148-149) मे उनका उल्लेख इस प्रकार है—

असिः शंखो धनुश्चक्रं शक्तिर्दण्डो गदाभवत्।
रत्नानि सप्त चक्रेशो रक्षितानि मरुद्गणैः॥
रत्नमाला हलं भास्वद्रामस्य मुसलं गदा।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भाविनिर्वृतेः॥

(3) 8a वह उस स्थान से चला गया। ध्यान रखें कि 'तहां' की अपेक्षा 'तहिं' के साथ 'होंतउ' का प्रयोग किया गया है। हेमचन्द्र iv 355 से तुलना करें।

(6) 10 b उस स्थिति में कौन नरक में पैदा होगा और कौन स्वर्ग में ? 12 यह बौद्धदर्शन का क्षणिकवाद सिद्धान्त है। स्वयंबुद्ध के द्वारा।

(a) 6-9 ये पंक्तियां हमें बताती हैं कि राम के विजयराम आदि आठ पुत्र थे, और लक्ष्मण के उनकी पत्नी पृथिवी से पृथ्वीचन्द्र आदि अनेक पुत्र थे।

(11) 4b लच्छीहरंगि अर्थात् लक्ष्मीधर (लक्ष्मण) की देह में।

## अस्सीवीं संधि

(9) वर्षा ऋतु का सुन्दर वर्णन।

(16) 7 b सूर्य की पत्नी का नाम रण्ण या रत्नादेवी था।

# शुद्धि-पत्र

अनुवाद

| कड़वक-पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| | **भूमिका** | |
| 21. | ध्वनि के उत्पन्न होने की उक्त व्याख्या ध्वनि उत्पत्ति की पुष्पदन्त की | ध्वनि के उत्पन्न होने की पुष्पदन्त की उक्त व्याख्या ध्वनि उत्पत्ति की |
| 23. | कायाग्निमाहान्त | कायाग्निमाहन्ति |
| | **संधि-68** | |
| 1.4 | जिसने अहिंसा | जिन्होंने अहिंसा |
| 1.10 | भयंकर शब्दों | शब्दों |
| 4.5 | दोनों का सुख | दोनों के सुख |
| 5.6 | जिसने | जिन्होंने |
| 7.11 | मथन | मंथन |
| | **संधि-69** | |
| 2.3 | स्त्रियों के शिशुमुख को | स्त्रियों और शिशुओं के मुखों को |
| 3.9 | हज़ारों भैंसों से | हज़ारों भैंसाओं से |
| 10.10 | ऐसे मालूम | ऐसा मालूम |
| 14.1 | विश्वनाथ | ऋषभनाथ |
| 16.5 | को शीघ्र भेज दीजिए | को भेज दीजिए |
| | यह व्रत लेने पर | यह व्रत लेता हुआ |
| 27.3 | मेरे बच्चों को | मेरे बच्चे को |
| 27.7 | मेढे (ढेर) | मेढ़े |
| 27.8 | इसे | इन्हें |
| 27.10 | इसके दोनों कान | दोनों के कान |
| 29.8 | मगर और | नगर और |
| 30.6 | चाटी गई | चाँटी गई |

संधि-70

| | | |
|---|---|---|
| 16.5 | प्रभु की शक्ति | प्रभुशक्ति |
| 19.5 | जनपद लोगों | जनपद के लोगों |
| 20.3 | काम दस | काम दैत्य |

संधि-71

| | | |
|---|---|---|
| 1.14 | तुमसे मीत मन | तुमसे भीत मन |
| 3.6 | शृंगार | संहार |
| 13.15 | शाखाओं को | शाखाओं के |
| 15.3 | वाली | बाला |
| 15.12 | (मूल) महुरउ विसु | महुरउ पुसु |
| 15.11 | इसका मधुर मधु में रत विष | इसका मीठा शब्द और मधुर शुक |
| 15.12 | आहत करता है | आहत करते हैं |
| 15.16 | स्त्रियों के साथ | हथिनियों के साथ |
| 16.8 | लक्ष्मण की मुख की कान्ति से | लक्ष्मण की कान्ति से |
| 17.1 | हारावली को गीला करता हुआ वह उसके ऊपर गिरा, विधाता ने उसे क्यों नहीं जड़ दिया। | उससे हारावली गीली होकर गिर पड़ी, विधाता ने उसे वहीं क्यों नहीं जड़ दिया ? |
| 18.4 | प्रभा को देखकर | आहत प्रभा को देखकर |
| 18.7 | मल्लिका | भल्लिका |
| 18.8 | रावण को | रावण का |
| 19.7 | चंडालत्व (धूर्तपन) | चंडालत्व |
| 19.9 | दुष्ट कुल के द्वारा | दूसरे कुल के द्वारा |

संधि-72

| | | |
|---|---|---|
| 2.11 | धवलीलता | लवलीलता |
| 2.12 | हारावली गले | धवल हारावली गले |
| 3.2 | देखने पर | देखते है |
| 3·4 | कुमार्ग में निर्देशित | विचित्र कुमार्ग में निवेशित |
| 3.7 | अलंघ्य | यह अलंघ्य |
| 4.4 | पकड़ जाने | पकड़े जाने पर |
| 8.2 | उष्ण किरणों से यह कह रहा है | उष्ण आँसुओं से यह रो रहा है |
| 12.3 | बाहुबल | बहुत बाहुबल |
| 12.7 | गुणवाद | गुणवान् |

संधि-73

| | | |
|---|---|---|
| 2.12 | केशर से पीत शरीर है | केशर का पिण्ड है |

| | | |
|---|---|---|
| 5.9 | उसे सहसा उठाकर देव बलभद्र राम ने सिरे से | सहसा सिर से ऊँचाकर देव हलधर ने उसे पढ़ा |
| 5.10 | छतविलास | हतविलास |
| 21.2 | मृणाल | शृगाल |
| 23.10 | दूध हार | दूध मंदोदरी के हार के समान दौड़ा। |
| 26.5 | अनुवरत्व को प्राप्त हुआ पत्र | अनुचरत्व को प्राप्त हुआ |
| 27.12 | लेखपत्र | प्रिय का लेखपत्र |
| 27.14 | कोई नहीं जानता | कौन जानता है |

## संधि-74

| | | |
|---|---|---|
| 4.3 | समर्थन उसे | समर्थ उसे |
| 4.5 | जेठ | जेठे |
| 5.8 | (मूल) अन्णाणें | अण्णाणें |
| 6.4 | (मूल) देह | देइ |
| 11.2 | जग को कुतुहल उत्पन्न करने वाला राजा पूछता है | राजा पूछता है |

## संधि-75

| | | |
|---|---|---|
| 8.8 | दूसरे धनुष... | दूसरे धनुष छोड़ दिए गए, दूसरे ग्रहण कर लिये गये |

## संधि-76

| | | |
|---|---|---|
| 2.5 | ससुद्र | समुद्र |
| 2.9 | करा रहे हैं | कर पाते हैं |
| 2.10 | हट जाता हैं | हट जाता है, आपके होते हुए शत्रुसमूह में धीरज कहाँ ? |
| 2.13 | वांछा संग्रह करती है | संग्रह की वांछा करती है। |
| 2.15 | परस्त्री का रमण | परस्त्री में अनुरक्त मन |
| 6.1 | पुरुष के...बताता हूँ | तीव्र दुखरुपी लता अहितकर देह-व्याधि है, पुरुष के सुख को नष्ट करनेवाली, इसकी शून्य वन में सुखद यह औषधि किसी प्रकार करो |
| 6.3 | (मूल) रज्जदाणु | रज्जमाणु |
| 6.2 | राजा का घमण्ड विस्तृत हैं | राज्य का मान विस्तृत है |
| 7.12 | पिच गया | पिचल गया |
| 7.22 | सरवल | सब्वल |

**संधि**-77

| | | |
|---|---|---|
| 1.4 | तब विभीषण कहता है कि भय से निरीह | तब निष्पृह विभीषण कहता है |
| 10.7 | प्रवेश रकती हुई | प्रवेश करती हुई |

**संधि**-78

| | | |
|---|---|---|
| 2.5 | स्तन मंडल किया | स्तन मंडित किया |
| 5.10 | चाट रही है | चाँट रही है |
| 8.7 | पापगत | रजगत |
| 17.4 | राक्षस ध्वनियों | राक्षस-ध्वजियों |